# वार्षिक प्रतिवेदन

## 2017-2018

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति

# विषय सूची


1. प्रस्तावना
2. भूमिका
3. समिति की संरचना
4. कार्यक्रमों की समय रेखा
5. महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि
6. महत्वपूर्ण पहल
7. विशेष कार्यक्रम
8. चम्पारण सत्याग्रह की शताब्दी
9. बा–बापू : 150
10. आदिवासियों के लिए कार्यक्रम
11. बच्चों के लिए कार्यक्रम
12. युवाओं के लिए कार्यक्रम
13. महिलाओं के लिए कार्यक्रम
14. तिहाड़ में
15. चम्पारण में कार्यक्रम
16. परिचर्चा/संवाद/सम्मेलन
17. पूर्वोत्तर में कार्यक्रम
18. राष्ट्रभाषा हिन्दी–हमारी पहचान
19. ऑरिएंटेशन कार्यक्रम
20. महात्मा गांधी विनिमय कार्यक्रम
21. महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र
22. सृजन केन्द्र
23. विविध कार्यक्रम
24. पुस्तकें और प्रदर्शनी
25. पुस्तकालय और प्रलेखन
26. गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति में विशिष्ट अतिथि
27. सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों की विदाई और हार्दिक श्रद्धांजलि
28. मीडिया में।

# प्रस्तावना

21वीं सदी उस महान युग की ओर अग्रसर हैं, जहां हम मनुष्य, महात्मा गांधी की 150वीं जन्म जयंती के आयोजन के गवाह बनने का सौभाग्य प्राप्त करेंगे। भारत सरकार ने बापू की 150वीं जयंती को लेकर देश और दुनिया में बड़े कार्यक्रमों के आयोजन की योजना बनाई है, और इन कार्यक्रमों का शुभारंभ 2 अक्तूबर 2018 को गांधीजी की 149वीं जयंती से हो चुका है।

सरकार ने बार–बार लोगों से आपसी संपक्र में तेजी लाने, उनकी शिकायतों का निवारण करने और नागरिकों के कल्याण के लिए समाज के विभिन्न भागों से स्वयंसेवकों का मजबूत नेटवक्र तैयार करने पर जोर दिया है। यह नेटवक्र समाज, जातिगत बाधाओं, पंथ, धर्म व संप्रदायों से परे होकर बनाया जा रहा है, जो महात्मा गांधी की प्राथमिक सोच थी। गांधीजी ने अपने जीवन में समरसता स्थापित करने के लिए कार्य किए और वे इसी के लिए जिए।

गांधीवादी विचारों और दर्शन ने दुनिया भर के अनेक लोगों को प्रभावित किया है और उन लोगों ने प्रेरित होकर अपने जीवन को जनकल्याण के कार्यों में समर्पित किया है। गांधीवादी विचार आज भी प्रासंगिक हैं और ये निरंतर बढ़ रहे हैं।

आज, और शायद इससे पहले कभी नहीं, महात्मा गांधी के दर्शन को उस संभावित साधन के रूप में देखा जा रहा है, जो परिवर्तन के लिए विचारकों, योजनाकारों, गांधीवादी श्रमिकों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, छात्र और युवा समुदाय व अन्य में वैश्विक जागृति फैला रहा है। इससे महात्मा गांधी की प्रासंगिकता पहले की तुलना में कहीं अधिक हो जाती हैं। जाम्बिया के नायक केनेथ कौंडा, जिन्होंने 1964 में जाम्बिया की आज़ादी का नेतृत्व किया और 1991 तक देश के राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया, वे कहते हैं, "महात्मा गांधी असाधारण गुणों वाले व्यक्तित्व थे, जो गहरी दृष्टि, नम्रता और ज्ञान से सम्पन्न थे। वे न्याय के लिए अनुकरणीय जुनून से भरे थे, उनमें सच्चाई के लिए, अनिश्चितकाल के लिए लड़ने की भावना व किसी भी ज़ोखिम का सामना करने का साहस था और मानवता की सेवा में सर्वोच्च समर्पित करने की तत्परता थी।"

वह कहते हैं, "इसलिए यह आवश्यक है दुनिया के सभी पुरूष और महिलाओं को न केवल इतिहास को आकार देने में उनकी भूमिका को स्वीकार करना चाहिए बल्कि, जो मूल्य उन्होंने प्रतिपादित किए थे और शान्ति व सद्भाव का आनन्द लेने वाले और सभी के लिए न्याय की परिकल्पना करने वाले जिस विश्व के निर्माण की उन्होंने कल्पना की थी, हमें उनकी इस कल्पना को पूरा करने में प्रतिबद्धता दिखानी चाहिए।"

इसी प्रकार की भावनाओं को व्यक्त करते हुए पास्कल एलन नाजरेथ ने अपनी पुस्तक "गांधी का उत्कृष्ट नेतृत्व" में मोहनदास करमचंद गांधी के नेतृत्व गुणों का ज़िक्र किया है।

वे कहते हैं "गांधी का नेतृत्व, पूरी तरह आत्मनिर्भर, अंकुरित था, उन्होंने न तो व्यक्तित्व विकास, संचार, संगठन या नेतृत्व कार्यक्रमों का लाभ उठाया। वे न अच्छा दिखने वाले और न ही महान व्याख्या करने वाले थे। उनका एकमात्र मार्गदर्शन उनकी "आन्तरिक आवाज़" से आया था। अपनी जवानी में डरपोक से रहने वाले गांधी तब एक निर्भीक 'स्टार कलाकार' बन गए, जब उन्होंने सत्य की तलवार और अहिंसा की ढाल उठाई।

उनकी इसी सत्य की तलवार और अहिंसा की ढाल को लेकर समिति ने धर्मशाला हिमाचल प्रदेश में वैश्विक शान्ति के सम्मेलन के दौरान बौद्ध पथ में अहिंसा और शान्ति के मूल दर्शन को समझने में पूजनीय श्री दलाई लामा के परम पावन कदमों का अनुसरण किया।

सम्मेलन की अवधारणा को सत्य साबित करते हुए, महामहिम श्री दलाई लामा ने प्रतिभागियों से अहिंसा को अपने जीवन में उतारने का आग्रह किया। उन्होंने

**आज, और शायद इससे पहले कभी नहीं, महात्मा गांधी के दर्शन को एक संभावित साधन के रूप में देखा जा रहा है, जो परिवर्तन के लिए विचारकों, योजनाकारों, गांधीवादी श्रमिकों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं, छात्र और युवा समुदाय व अन्य में वैश्विक जागृति फैला रहा है। इससे महात्मा गांधी की प्रासंगिकता पहले की तुलना में कहीं अधिक हो जाती हैं।**

एक महत्वपूर्ण प्रश्न, जिसका आज सब सामना कर रहे हैं, उठाते हुए कहा, "हमें इस ग्रह पर शान्ति और खुशियां लाने के लिए क्या करने की आवश्यकता है? शान्ति की क्रान्ति का उद्घोष करते हुए उन्होंने सभी प्रतिभागियों को यह कहकर प्रेरित किया आप इन सब के पास अधिक शान्तिपूर्ण और प्रसन्न विश्व बनाने की अपेक्षित क्षमता और अवसर है। उन्होंने अहिंसा की नींव पर एक स्थिर विश्व बनाने की ज़िम्मेदारी के बारे में उपस्थित लोगों को पुनः स्मरण कराया। उन्होंने साफ किया कि हम ये केवल प्रार्थना के माध्यम से नहीं, अपितु सच्चे कार्यों के जरिए ही प्राप्त कर सकते हैं।

सम्मेलन में विभिन्न विषयों जैसे, समकालीन वैश्विक शान्ति नीति में बौद्ध और गांधीवादी विचार, बौद्ध और गांधीवादी तरीकों से विवादों के समाधान, विश्व शान्ति में बच्चों, युवाओं और महिलाओं की भूमिका, अहिंसा का प्रचार करने में बुद्ध व गांधी का शैक्षणिक दर्शन पर मंथन किया। इस प्रकार शान्ति और अहिंसा की शाश्वत अवधारणा को विभिन्न आयामों में मजबूत किया गया और सम्मेलन में भाग लेने वाले युवा समुदाय तक संदेश पहुंचाया गया। इसके अतिरिक्त समिति ने नेहरू युवा केन्द्र और लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद् के सौजन्य से तीन दिवसीय, "रचनात्मक कार्य हेतु राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक सम्मेलन" का आयोजन 10–12 जुलाई, 2017 को कारगिल में किया।

चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी समारोह के तहत चम्पारण में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 1917 में गांधीजी द्वारा आरम्भ की गई चम्पारण यात्रा का पुनः प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम में भारी संख्या में जनता ने भाग लिया। काफी तादाद में गांधीवादी समुदाय के सदस्य भी इसका हिस्सा बने, जिन्होंने प्रतिभागियों को रचनात्मक कार्यक्रमों को अपने जीवन में ढालने को प्रेरित किया। यह कार्यक्रम 13 से 17 अप्रैल, 2017 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और कृषि व किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित किया गया। चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में ही, मोतिहारी के ज़िला स्कूल में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री रामनाथ कोविन्द, समिति की पूर्व उपाध्यक्षा श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी और माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह जी विशेष तौर पर उपस्थित हुए।

यह छोटे से किसान राजकुमार शुक्ला द्वारा महात्मा गांधी को चम्पारण लाने के निरन्तर प्रयास और किसान संघर्ष की विस्तृत और गौरवशाली इतिहास के एक भाग को छूने की एक छोटी शुरूआत थी, जिसने अन्ततः भारतीयों में सत्याग्रह का बिगुल बजाया। यह एक अद्भुत अनुभव था, जो आगे 2018 में भी चम्पारण में जारी रहा, जब हमने इस ऐतिहासिक अवसर के स्मरणोत्सव के रूप में अनेक पहल की। सुलभ इंटरनेशनल सामाजिक सेवा संस्था जैसे संस्थानों ने इन अद्वितीय कार्यक्रमों में भाग लिया और मोतिहारी के विभिन्न स्थानों में सेनेटरी नेपकिन वेंडिंग मशीन और भस्मक स्थापित करने में समिति का सहयोग दिया।

इसके अतिरिक्त इस अवधि में मोतिहारी रेलवे स्टेशन, ज़िला स्कूल मोतिहारी में व्याख्या केन्द्रों की स्थापना की गई व चरखा चौक में प्रतीक चिन्ह लगाए गए।

यह वर्ष चम्पारण सत्याग्रह की शताब्दी को समर्पित था, समिति ने भी लोगों की भावनाओं को महसूस किया, जब हज़ारों लोगों ने तीन दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम कला संस्कृति संगम में भाग लिया। यह कार्यक्रम गरूड़ाचल विद्यापीठ, बेलबेरी, दक्षिण पश्चिम गारो हिल्स मेघालय में हुआ। यहां बरसात और तूफ़ान ने भी लोगों की इच्छाशक्ति को कम नही होने दिया। लोगों ने तूफ़ान से उखड़ी हुई दुकानों को फिर से लगाने में मदद की और आपस में मिलकर देशी सांस्कृतिक रिवाज़ों का प्रदर्शन पारंपरिक कला के माध्यम से किया।

वर्ष के दौरान समिति द्वारा विभिन्न विषयों पर सेमिनार के आयोजन के माध्यम से समकालीन संदर्भ में गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों के 18 बिन्दुओं के सार को रेखांकित किया गया। हमने न केवल सम्मानित संस्थाओं, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के साथ मिलकर काम किया, अपितु उत्साहित और आनंदित प्रतिभागियों के कार्य के गवाह भी बने, जिन्होंने 21वीं सदी के प्रासंगिक विषयों पर अपने दृष्टिकोण को साझा किया। इन प्रतिभागियों ने बा–बापू की 150वीं जयंती के समारोहों में भाग लेने में भी गहन रूचि दिखाई।

एक क्षेत्र जहां समिति ने इस साल अपनी गतिविधियों को प्रमुखता से संचालित किया, वह था "अहिंसात्मक तरीके से विवादों का समाधान ओर गैरहिंसक संचार।" समिति द्वारा कार्यरत शिक्षकों, रजिस्ट्रार, पुलिसकर्मी होमगार्डों के लिए इस क्षमता निर्माण कार्यक्रम की शुरूआत की गई।

इस कार्यक्रम के बारे में लोगों की क्या प्रतिक्रिया होगी, इस बारे में हम सशंकित थे। लेकिन संस्थानों और प्रशिक्षुओं, व सरकारी कार्यालयों से मिली शानदार प्रतिक्रियाओं से हमें समझ में आया कि अहिंसक संचार और अहिंसक तरीके

से विवादों के समाधान की प्रणाली से समकालीन स्थितियों से निपटा और विभिन्न सामाजिक मुद्दों को सुलझाया जा सकता है।

हम इस अवधारणा को बेहतर ढंग से डिज़ाइन करके और ठोस तरीके से विभिन्न राज्यों में और सामाजिक स्तर पर आगे ले जाने की योजना बना रहे है।

इस साल हम महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी की 150वीं जयंती मनाने की दहलीज पर खड़े है– दो किवदन्ती, दो व्यक्ति, दो गौरवशाली व्यक्तित्व, जिन्होंने अपनी सादगी, दृढ़ता, बुद्धिमत्ता और मानव के मूलभूत मुद्दों की समझ जैसे गुणों से लाखों लोगों को उनके अधूरे कार्यों को आगे ले जाने को प्रेरित किया।

'सत्य' गांधीजी का वह पसंदीदा मानव मूल्य था जिससे प्रेरित होकर उन्होंने "आत्मकथा, सत्य के साथ मेरे प्रयोग" लिखी। उनके मुताबिक सत्य ईश्वर है और यह सत्य विचारों, शब्दों और धर्मों में परिलक्षित होना चाहिए।

गांधीजी की कई शिक्षाएं आधुनिक युवाओं के लिए प्रासंगिक हैं। वह युवाओं की भावनाओं को समझते थे और उन्हें सामाजिक परिवर्तन का एक हथियार मानते थे।

महात्मा गांधी के शब्द आज भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितने ये तब थे, जब उन्होंने युवाओं को समाज के विनम्र सेवक के रूप में काम करने का आह्वान किया था।

**गांधी ने कहा था, "मैं तुमसे (युवा पुरूष व महिलाओं से) कहता हूँ कि तुम गाँव जाओं और वहाँ स्वयं को खपा दो, उनका मालिक या संरक्षक बनकर नहीं, अपितु उनका विनम्र सेवक बनकर। वहाँ जाकर उन्हें बताओ कि क्या करना है और कैसे उनके दैनिक आचरण और रहन–सहन के तरीके से अपनी जीवन शैली बदलनी है। केवल भावनाओं की कोई उपयोगिता नहीं हैं, ठीक उस भाप की तरह, जिसकी अकेले कोई हैसियत नहीं है, जब तक उसे शक्तिशाली बल बनने तक पर्याप्त नियन्त्रण में ना रखा जाए। मैं तुम्हारा आह्वान करता हूँ कि भगवान के संदेशवाहक बनकर और भारत की घायल आत्मा के लिए मरहम लेकर आगे बढ़ो।"**

वह आधुनिक युवा और विद्यार्थियों को आदर्शवादी विचारों का जनक बनाना चाहते थे। उन्होंने युवा मन को आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि वो इसे सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता मानते थे।

गांधी ने कहा था, "मैं तुमसे (युवा पुरूष व महिलाएं) कहता हूँ कि तुम गाँव जाओं और वहाँ स्वयं को खपा दो, उनका मालिक या संरक्षक बनकर नहीं, अपितु उनका विनम्र सेवक बनकर। वहाँ जाकर उन्हें बताओ कि क्या करना है और कैसे उनके दैनिक आचरण और रहन–सहन के तरीके से अपनी जीवन शैली बदलनी है। केवल भावनाओं की कोई उपयोगिता नहीं हैं, ठीक उस भाप की तरह, जिसकी अकेले कोई हैसियत नहीं है, जब तक उसे शक्तिशाली बल बनने तक पर्याप्त नियन्त्रण में ना रखा जाए। मैं तुम्हारा आह्वान करता हूँ कि भगवान के संदेशवाहक बनकर और भारत की घायल आत्मा के लिए मरहम लेकर आगे बढ़ो।"

गांधी स्मृति और दर्शन समिति में हम विनम्रता पूर्वक सामाजिक कार्यों के लिए युवाओं की अन्तर्निहित शक्ति का यथोचित उपयोग करने की कोशिश कर रहे हैं।

हम अपने छोटे से छोटे तरीके से इस कार्य को आगे ले जाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और जीवन्त युवा समुदाय से यह आग्रह करते हैं कि वो लोगों की सेवा करने के उद्देश्य से हमारे साथ आएं। यह महात्मा गांधी को उनकी 150वीं जयन्ती पर एक बड़ा उपहार व उपयुक्त श्रद्धांजलि होगी।

**दीपंकर श्री ज्ञान**

**निदेशक**

# भूमिका

5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली स्थित गांधी स्मृति संग्रहालय का एक दृश्य

### गांधी स्मृति एवं दर्शन समितिः एक रूपरेखा

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति का गठन 1984 में राजघाट स्थित गांधी दर्शन एवं 5, तीस जनवरी मार्ग पर स्थित गांधी स्मृति के विलय द्वारा 1984 में एक स्वायत्त निकाय के रूप में हुआ था और यह भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के रचनात्मक सुझाव और वित्तीय सहायता के तहत कार्यशील है। भारत के प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष हैं और इसके पास वरिष्ठ गांधीवादियों एवं सरकार के विभिन्न विभागों के प्रतिनिधियों का एक मनोनीत निकाय है, जो इसे इसकी गतिविधियों के लिए दिशानिर्देश देते हैं। समिति का मूलभूत उद्देश्य और लक्ष्य विभिन्न सामाजिक–शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के जरिये महात्मा गांधी के जीवन, मिशन एवं विचारों को प्रचारित करना है।

समिति के दो परिसर हैः

### (क) गांधी स्मृति

5, तीस जनवरी मार्ग, नई दिल्ली के पुराने बिड़ला भवन पर स्थित गांधी स्मृति वह पवित्र स्थल है जहां महात्मा गांधी ने अपने नश्वर शरीर का 30 जनवरी, 1948 को त्याग किया था। महात्मा गांधी इस घर में 9 सितंबर, 1947 से 30 जनवरी, 1948 तक रहे थे। इस भवन में उनके जीवन के अंतिम 144 दिनों की स्मृतियां संजोई हुई हैं। पुराने बिड़ला भवन को भारत सरकार ने 1971 में अधिग्रहित कर लिया और इसे राष्ट्रपिता के राष्ट्रीय स्मारक के रूप में परिवर्तित कर दिया जिसे 15 अगस्त 1973 को आम जनता के लिए खोल दिया गया।

यहां जो जगह संरक्षित हैं उनमें वह कमरा, जिसमें गांधीजी रहते थे और वह प्रार्थना स्थल जहां आम जनसभा होती थी, शामिल हैं। इसी स्थान पर गांधीजी हत्यारे की गोलियों के शिकार हुए। भवन और परिदृश्य को उसी प्रकार संरक्षित रखा गया है जिस प्रकार वे उन दिनों थे।

**इस स्मारक की संरचना में शामिल हैं :**

- महात्मा गांधी और उनके उन महान आदर्शों, जिनका वे प्रतिनिधित्व करते थे, की याद को बनाये रखने के लिए दृश्यात्मक पहलू
- जीवन के कुछ खास मूल्यों, जिन्होंने गांधी को महात्मा बनाया, पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शैक्षणिक पहलू और
- सेवा से संबंधित गतिविधियां।

संग्रहालय में जो चीजें प्रदर्शित की गई हैं, उनमें गांधी जी ने जितने वर्ष यहां व्यतीत किए हैं उनसे संबंधित तस्वीरें, वस्तुशिल्प, चित्र, भित्तिचित्र, शिलालेख और स्मृति चिन्ह शामिल हैं। गांधी जी की कुछ व्यक्तिगत ज़रूरत की चीज़ों को भी बहुत संभाल कर यहां संरक्षित किया गया है।

इसका प्रवेश द्वार भी बहुत ऐतिहासिक महत्व का है क्योंकि इसी द्वार के शीर्ष से प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने दुनिया को महात्मा गांधी की मृत्यु हो जाने की सूचना दी थी '....हमारे जीवन से प्रकाश चला गया है और हर जगह अंधेरा छा गया है....'

गांधी स्मृति में स्थित प्रार्थना स्थल, जहाँ महात्मा गांधी नियमित रूप से संध्या प्रार्थना सभा करते थे।

महात्मा गांधी की एक आदमकद प्रतिमा जिसमें खगोल से निकलते हुए एक लड़का और एक लड़की अपने हाथों में एक कबूतर को थाम कर उनकी बगल में दोनों तरफ खड़े हुए हैं, जो ग़रीबों और वंचितों के लिए उनकी सार्वभौमिक चिंता को दर्शाती है, गांधी स्मृति के मुख्य प्रवेश स्थल पर आगंतुकों का स्वागत करती है। यह विख्यात मूर्तिकार श्री राम सुतार की कृति है। मूर्ति के निचले हिस्से पर बापू का कथन उल्लिखित है, 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है।'

जहां राष्ट्रपिता की हत्या हुई थी, वहां एक शहीद स्तंभ बनाया गया है। यह स्तंभ महात्मा गांधी की शहादत की याद दिलाता है तथा उन सभी कष्टों और कुर्बानियों के मूर्त रूप का स्मरण करता है जो भारत की स्वतंत्रता की लंबी लड़ाई की विशेषता रही है।

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के बलिदान स्थल पर एक आगंतुक।

स्तंभ के चारों तरफ श्रद्धालुओं के लिए श्रद्धापूर्ण परिक्रमा करने के लिए पत्थर का एक विस्तृत मार्ग बनाया है। स्तंभ के सामने एक चौड़ी जगह बनाई गई है, जिस पर श्रद्धांजलि अर्पित कर सकें। स्तंभ के निकट निचले मैदान पर गुरूदेव टैगोर के शब्द हैं, 'वह प्रत्येक झोपड़ी की देहरी पर रूके थे।'

प्रार्थना स्थल के केंद्र में एक मंडप है जिसकी दीवारों पर भारत की सांस्कृतिक यात्रा की अनवरत्ता, दुनिया के साथ उसके संबंध एवं एक 'सार्वभौमिक व्यक्ति' के रूप में महात्मा गांधी के उद्भव और उनके व्यक्तित्व में सन्निहित मानव जीवन की सभी दैवीय चीजों का चित्रण करते भित्तिचित्र हैं। ठीक वैसा ही जैसा कि उन्होंने कहाः 'मेरी भौतिक आवश्यकताओं के लिए मेरा गांव ही मेरी दुनिया है, लेकिन मेरी आध्यात्मिक ज़रूरतों के लिए संपूर्ण दुनिया मेरा गांव है।'

मंडप के बाहर लाल बालुशाही पत्थर से निर्मित एक बेंच है, जिस पर महात्मा गांधी प्रार्थना के दौरान या विशाल जनसमूह से, जो उन कष्टकारी दिनों में उनसे सलाह लेने और शांति पाने के लिए पुराने बिड़ला भवन के लॉन में एकत्र होते थे, बातचीत के दौरान बैठा करते थे।

हरी घास का मैदान प्रार्थना स्थल की मुख्य विशेषता है जो सफेद फूलों की सजावटपूर्ण परिधि से चारों तरफ से घिरा हुआ है। स्मारक स्थल में प्रवेश के दाहिने लॉन के निकट खुदा हुआ है 'गांधीजी के सपनों का भारत।' प्रार्थना स्थल के निकट घुमावदार मार्ग पर अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्द लिखे हुए हैं "आने वाली पीढ़ियां मुश्किल से यकीन करेंगी....।" घुमावदार मार्ग के केन्द्र में विख्यात कलाकार शंख चौधरी की कांसे में एक कृति है जो गांधी जी द्वारा अपने बलिदान से जलाई गई 'शाश्वत शिखा' का प्रतीक है।

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के कक्ष का अवलोकन करती आगंतुक।

गांधी स्मृति में गांधीजी के कमरे को ठीक उसी प्रकार रखा गया है जैसा यह उनकी हत्या के दिन था। उनकी सारी चीज़ें, उनका चश्मा, टहलने की छड़ी, एक चाकू, कांटा और चम्मच, वह खुरदुरा पत्थर जिसका इस्तेमाल वह साबुन की जगह करते थे, प्रदर्शन के लिए रखी गई हैं। उनका बिस्तर फर्श पर बिछी एक चटाई पर था जो सफ़ेद और सादा था जिसकी बगल में लकड़ी की एक नीची तख्ती रखी रहती थी। भगवद्गीता की एक पुरानी और उनके द्वारा उपयोग में आ चुकी एक प्रति भी रखी हुई हैं।

पूरे भवन को अब विभिन्न खंडों में विभाजित कर दिया गया है। भवन के मुख्य प्रवेश के दोनों तरफ महात्मा द्वारा रचित 'ए सर्वेंट्स प्रेयर' यानी 'एक सेवक की प्रार्थना', और उनका शाश्वत–संदेश उनका जंतर प्रदर्शित किया गया है।

मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा गांधी के रूप में क्रमिक विकास का चित्रण सरल व्याख्यान के साथ श्वेत–श्याम चित्रों की एक पट्टी के जरिये किया गया है। दक्षिणी हिस्से में एक सभागार और एक समिति कक्ष भी है।

इसके अतिरिक्त, प्रदर्शनी का समायोजन इस प्रकार किया गया है कि दक्षिणी हिस्सा मोहनदास करमचंद गांधी नामक एक बालक की जीवन यात्रा और उसके क्रमिक विकास और किस प्रकार अपने 'सत्य के प्रयोगों' के जरिये उसने भारत और मानवता के उद्धार का नेतृत्व किया, का सरल चित्रण दर्शाता है।

उत्तरी हिस्से में पांच विभिन्न खंड हैं। पहला खंड, उस कमरे की ओर जाने वाली एक गैलरी है जिसमें गांधीजी ने अपने जीवन के अंतिम 144 दिन व्यतीत किए। यह खंड शांति और शहादत की उनकी यात्रा को समर्पित है। इसके आगे दूसरा खंड है, यह एक अन्य कक्ष है जिसमें उनके जीवन के अंतिम 48 घंटों पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है जिसकी परिणति उनकी शहादत में हुई। इस खंड में एक सभागार भी है, जिसमें महात्मा गांधी पर आधारित फिल्में दिखाने की सुविधाएँ मौजूद हैं।

उत्तरी हिस्से का तीसरा खंड 'गांधीजी के सपनों का भारत' और उन नियमों और सिद्धांतों को प्रदर्शित करता है जो इस सपने को साकार करने के लिए भावी पीढ़ियों के लिए वे अपनी विरासत के रूप में छोड़ कर गए हैं–18 सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम। गांधीजी दुनिया के सामने वैज्ञानिक सुस्पष्टता के

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी का कक्ष।

साथ भारत को विकास के एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे। उनकी जीवन यात्रा समाप्त हो चुकी, "राष्ट्रपिता दुनिया से चले गए हैं, लेकिन उनकी घरोहर अभी भी शेष हैं, और सबसे बढ़कर, एक अधूरा सपना एक चुनौती के रूप में हमारे सामने है, और वह है 'उनके सपनों के भारत का निर्माण करना।'

गांधी स्मृति संग्रहालय में लघु आकृति प्रभाग

गांधी स्मृति में चित्र प्रदर्शनी का एक दृश्य।

चौथा खंड सुमना में कुल मिलाकर 28 अहाते/पट्टियाँ हैं। इस खंड में त्रिआयामी लघुचित्र स्थित हैं। इनमें महात्मा गांधी के जीवन की, उनके बचपन की तथा उनके शहादत तक की महत्वपूर्ण घटनाओं का चित्रण है। श्रीमती सुशीला रजनी पटेल द्वारा सृजित संग्रहालय का यह हिस्सा एक समृद्ध अनुभव प्रदान करता है।

पाँचवा खंड सन्मति, गांधी स्मृति साहित्य केंद्र में एक छत के नीचे उपलब्ध गांधी साहित्य एवं अन्य संबंधित पुस्तकों का एक विशाल संकलन है। एक विशेष खंड इसका व्याख्यान करने को समर्पित है कि किस प्रकार दुनिया महात्मा गांधी का सम्मान करती है।

पहले हिस्से में महात्मा गांधी के शानदार जीवन को कलाकारों की नज़रों से प्रदर्शित किया गया है। दूसरा हिस्सा गांधीजी द्वारा स्वयं पर की गई चर्चा है।

दीर्घा के मध्य में, लोगों को 2 मिनट 30 सेकेंड के एक मल्टी मीडिया एनीमेशन के द्वारा समावेशित, आत्मलीन महात्मा गांधी की उपस्थिति का अहसास कराया जाता है, जिसमें उनके बलिदान की दिशा में राष्ट्रपिता की अंतिम यात्रा का वर्णन है। इसे विख्यात गायक कुमार गंधर्व के गायन द्वारा सुसज्जित किया गया है।

गांधी स्मृति परिसर में बने परगोला में सामयिक प्रदर्शनियाँ लगाई जाती हैं तथा अभी इसमें राष्ट्रीय अभिलेखागार द्वारा निर्मित विशेष प्रदर्शनी 'मोहन से महात्मा' प्रदर्शित है जिसको वरिष्ठ गांधीजन श्री अनुपम मिश्र के मार्गनिर्देशन में तैयार किया

गांधी स्मृति में स्थापित "मोहन से महात्मा" प्रदर्शनी का अवलोकन करते दर्शक।

गया है। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन गांधी जयन्ती, 2 अक्तूबर, 2015 को माननीय संस्कृति मंत्री तथा समिति के उपाध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा द्वारा किया गया।

अपनी यात्रा के दौरान आगंतुक एक भव्य 'विश्व शांति घंटा' का भी दर्शन करते हैं। इस स्थान पर 31 जनवरी, 1948 को राष्ट्रपिता के भौतिक अवशेष हज़ारों लोगों द्वारा श्रद्धांजलि दिए

जाने के लिए रखे गए थे। भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने गांधी स्मृति को यह विश्व शांति घंटा भेंटस्वरूप दिया था। विदेश मंत्रालय को शांति घंटा इंडोनेशिया की विश्व शांति घंटा समिति से प्राप्त हुआ था और इसका उद्घाटन 11 सितंबर, 2006 को सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर आयोजित एक विशेष समारोह में किया गया था। यह विश्व को दुनिया भर के शांतिदूतों द्वारा किए गए बेशुमार संघर्षों की याद दिलाता है और एक दूसरे के साथ शांति के साथ सद्भावपूर्ण तरीके से जीने का संदेश देता है।

यहां से आगंतुकों को उस कक्ष में ले जाया जाता है जहां बापू ने अपने जीवन के अंतिम 144 दिन व्यतीत किए। जब वे इस कक्ष से बाहर आते हैं तब वे फोटो प्रदर्शनी जिसके साथ–साथ प्रत्यक्षदर्शियों की आंखों देखी घटनाओं के विवरण भी शामिल होते हैं, के माध्यम से इन 144 दिनों के इतिहास से परिचित हो चुके होते हैं।

गांधी स्मृति, सृजन, खादी, कुटीर उद्योग एवं ग्रामीण विकास पर गांधीवादी दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।

शाश्वत गांधी मल्टीमीडिया संग्रहालय में विद्यार्थी।

गांधी स्मृति में शहीद स्तंभ के निकट कीर्ति मंडप, जिसका नाम विख्यात सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खान ने रखा है, के पास बड़े कार्यक्रमों के लिए 500 भागीदारों को समायोज़ित करने की क्षमता है।

समाज के वंचित वर्गों को कंप्यूटर, सिलाई एवं कशीदाकारी, प्रारंभिक शिशु देखभाल एवं शिक्षा, समुदाय स्वास्थ्य, कताई एवं बुनाई, स्वांग एवं संगीत का कौशल प्रदान करने के लिए सृजन एवं शैक्षणिक केंद्र की स्थापना गांधी स्मृति में की गई है। सृजन केन्द्र का उद्देश्य उन्हें इन व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को सीखने में सहायता करना है जिससे कि उनमें स्व–सहायता, आत्मविश्वास एवं आजीविका कमाने के प्रति सम्मान का भाव भरा जा सके।

2005 में संग्रहालय में 'शाश्वत गांधी' शीर्षक की एक मल्टीमीडिया प्रदर्शनी जोड़ी गई जो भवन की पहली मंजिल पर स्थित है।

शाश्वत गांधी मल्टीमीडिया संग्रहालय में विद्यार्थी

इसमें अत्याधुनिक इलैक्ट्रॉनिक हार्डवेयर एवं नवीन मीडिया का उपयोग किया गया है, जिससे कि गांधीजी के जीवन एवं दर्शन को जीवंत बनाया जा सके। दृष्टिकोण ऐतिहासिक एवं व्याख्यात्मक दोनों ही प्रकार का रहा है। 21वीं सदी की प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करती यह प्रदर्शनी गांधीवादी विचारों को रेखांकित करती है– सच के सिद्धांतों के प्रति सत्याग्रही की प्रतिबद्धता। फाइबर शीशे से निर्मित बा एवं बापू की दो प्रतिमाएं, जो थाईलैंड के दंपत्ति श्री डेचा सैसोमबून एवं श्रीमती विपा सैसोमबून की कृतियां हैं, को मल्टीमीडिया संग्रहालय में स्थापित किया गया है।

ये सभी तत्व गांधी स्मृति को एक संपूर्ण संग्रहालय बनाते हैं।

### (ख) गांधी दर्शनः राजघाट

दूसरा परिसर राजघाट पर महात्मा गांधी समाधि के निकट स्थित है।

महात्मा गांधी की शहादत के 21 वर्षों के बाद पूरी दुनिया ने 1969 में उनकी जन्म शताब्दी को उस प्रकार मनाना शुरू किया जो शांति के यात्री के अनुरूप है। उसके बाद महात्मा गांधी की जन्म शताब्दी मनाने के लिए 36 एकड़ में फैला परिसर अस्तित्व में आया। भारत के 13 राज्यों एवं सात दूसरे देशों ने गांधी दर्शन अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी का सृजन किया। प्रदर्शनी का मुख्य उद्देश्य गांधी के संदेश और आधुनिक विश्व की पृष्ठभूमि में सत्य एवं अहिंसा के सिद्धांत तथा जिस प्रकार इसने राष्ट्र के जीवन को तथा आधुनिक विश्व को प्रभावित किया है, उसकी व्याख्या करना है।

आज गांधी दर्शन में दो प्रदर्शनियों के मंडप है "मेरा जीवन ही मेरा संदेश" और मिट्टी मॉडल से निर्मित "स्वतंत्रता संग्राम"।

मेरा जीवन ही मेरा संदेश शीर्षक की पहली दीर्घा में दीवारों पर सैकड़ों पुरालेखीय चित्र संक्षिप्त व्याख्याओं के साथ लगाए गए हैं। इनमें से कुछ तस्वीरों में एक बच्चे एवं एक युवा व्यक्ति

के रूप में गांधीजी की दुर्लभ तस्वीरें हैं। एक अनुकृति उस घर की भी है जिसमें उनका जन्म हुआ था तथा सेना का वास्तविक वाहन भी है जिसमें उनके पार्थिव शरीर को अंत्येष्टि स्थल तक ले जाया गया था, जिसे अब राजघाट के नाम से जाना जाता है।

इसके अतिरिक्त, आगंतुक गांधीजी के स्कूल की रिपोर्ट कार्ड, अखबारों की कतरन तथा कार्टून जो समसामयिक रिपोर्ट एवं उनकी गतिविधियों की समीक्षाओं को प्रदर्शित करती हैं,

गांधीजी एवं लियो टॉल्सटॉय के बीच पत्रों का आदान–प्रदान, उनकी पत्नी तथा बच्चों की तस्वीरों एवं अन्य दिलचस्प सामग्रियां भी देख सकते है। इस प्रदर्शनी में गांधीजी की हत्या के बाद दुनिया भर के देशों में आने वाले वर्षों में जारी किए गए स्मारक टिकटों को प्रदर्शित किया गया है; दूसरी प्रदर्शनी में पत्रों को प्रदर्शित किया गया है जो उन्हें भेजे गए थे। विशेष रूप से ये पत्र दर्शाते हैं कि एक साधारण गुजराती वकील ने अपने जीवन काल में कितनी व्यापक प्रसिद्धि पाई। उदाहरण के लिए, एक पत्र 'गांधीजीः वे चाहे जहां भी हों' को

संबोधित किया गया है; दूसरे पत्र मे जो न्यूयॉक्र से पोस्ट किया गया था लिफाफे पर केवल गांधी जी का रेखाचित्र यानि स्केच भर था।

1994 में, गांधीजी की 125वीं जन्म शताब्दी के दौरान, राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव ने औपचारिक रूप से राजघाट स्थित गांधी दर्शन में अंतरराष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन केंद्र की स्थापना करने की घोषणा की। 30 जनवरी, 2000 को राष्ट्रपति के. आर. नारायणन ने प्रधानमंत्री तथा समिति के अध्यक्ष, श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में परिसर में अंतरराष्ट्रीय गांधीवादी अध्ययन एवं शांति अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की घोषणा करते हुए एक स्तंभ का अनावरण किया।

राजघाट पर स्थित गांधी दर्शन परिसर का चित्र।

गांधी दर्शन, राजघाट में स्थापित "मेरा जीवन ही मेरा संदेश है" प्रदर्शनी सभागार।

संक्षेप में, 274 पट्टिकाओं के साथ इस मंडप में निम्नलिखित हैः

1) पट्टिका संख्या 1 से 273 में गांधी जी के जन्म से लेकर हत्या तक की तस्वीरें हैं, जिनकी संख्या लगभग 1600 हैं।

2) पट्टिका संख्या 274 में महात्मा गांधी के जन्म शताब्दी वर्ष पर जारी की गई विभिन्न देशों के 75 टिकट हैं।

3) नमक सत्याग्रह के दौरान उपयोग में लाई गई नौका एवं तख्ती तथा बंदूक वाहन जिसमें महात्मा गांधी के पार्थिव अवशेष को बिड़ला भवन से राजघाट तक ले जाया गया, भी यहां रखा गया है।

4) यहां पर अनुकृतियां हैः

- गुजरात के पोरबंदर में गांधीजी का घर
- साबरमती आश्रम
- यरवदा जेल।

समिति के पूर्व अभिरक्षक स्वर्गीय श्री अनिल सेनगुप्त द्वारा संयोजित, निर्मित भारत के स्वाधीनता संग्राम पर आधारित चिकनी मिट्टी के पटल।

### ढांचागत सुविधाएं :

गांधी दर्शन, राजघाट पर उपलब्ध सुविधाएं

1. गांधीजी द्वारा और उन पर लिखी हुई तथा संबंधित विषयों पर 15000 किताबों के साथ एक पुस्तकालय तथा दस्तावेजीकरण केन्द्र।
2. 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' प्रदर्शनी मंडप।
3. सभी सुविधाओं से सुसज़्जित सम्मेलन, संगोष्ठी एवं भाषण कक्ष।
4. प्रवासी विद्वानों के लिए अंतरराष्ट्रीय छात्रावास।
5. महात्मा गांधी से संबंधित स्थायी चित्र एवं किताबें।
6. 100 व्यक्तियों को समायोजित करने की सुविधाओं के साथ शयनागार।
7. प्रकाशन विभागः किताबों के साथ यह पत्रिका तथा एक समाचार पत्रिका का भी प्रकाशन करता है।
8. चित्र इकाई।
9. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की बड़ी बैठकों के लिए शिविर की सुविधा।
10. संपक्र कार्यक्रमों के लिए खुली जगह।

**गांधी स्मृति, 5, तीस जनवरी मार्ग पर उपलब्ध सुविधाएँः–**

1. केन्द्रीय सभागार
2. दो बैठक सभागार
3. कीर्ति मंडप

गांधी स्मृति के मुख्य द्वार पर यात्रियों का स्वागत करती महात्मा गांधी की मूर्ति। इसमें बापू, कबूतर हाथ में लिए एक बालक व बालिका के साथ खड़े है। यह मूर्ति गरीबों व वंचितों के लिए गांधीजी की सार्वभौमिक चिंता का प्रतीक है।

प्रसिद्ध कलाकार सांखो चौधरी की कांस्य कलाकृति, गांधीजी द्वारा प्रज़्ज्वलित "अनन्त लौ" को दर्शाती हुई।

**समिति के उद्देश्य हैं:**

1. गांधीवादी आदर्शों एवं दर्शन को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियों की योजना बनाना एवं उन्हें आयोजित करना।
2. संग्रहालय से संबंधित मानक मानदंडों के अनुरूप गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति को खुला रखना तथा आगंतुकों को अधिकतम सुविधाएं प्रदान करने के लिए रखरखाव करना।
3. गांधी स्मृति संग्रहालय एवं गांधी दर्शन प्रदर्शनी दोनों में ही श्रोता विकास एवं संग्रहालय प्रबंधन संरचना को बढ़ावा देना।
4. प्रदर्शनी, फिल्मों, गांधीयाना, पोस्टरों एवं कला, संस्कृति एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न रूपों जैसे शैक्षणिक माध्यमों के जरिये महात्मा गांधी के जीवन एवं संदेश के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए कदमों को बढ़ावा देना।
5. दुर्लभ पुस्तकों, साहित्य, चित्रों, फिल्मों एवं दस्तावेज आदि समेत किताबों के पुस्तकालय को विकसित एवं संरक्षित करना।
6. महात्मा गांधी के महत्वपूर्ण स्मृति चिन्हों को एकत्रित, संरक्षित एवं प्रदर्शित करना।
7. गांधीवादी कार्य एवं समाज की बेहतरी के लिए स्वयं सेवकवाद को बढ़ावा देना।
8. महात्मा गांधी के दर्शन एवं आदर्शों से संबंधित विभिन्न गतिविधियों के जरिये अंतिम जनों को अधिकार संपन्न बनाने पर ज़ोर देना।
9. गांधीवादी मूल्यों एवं कार्यों को ग्रहण करने के लिए बच्चों, युवाओं, महिलाओं तथा अन्य समूहों की क्षमताओं का विकास करना जिससे कि गांधीवादी दर्शन को व्यावहारिक रूप से लागू करने के जरिये व्यवहारगत बदलाव/विकास लाया जा सके।
10. जरूरत के अनुरूप गांधी दर्शन एवं गांधी स्मृति के दोनों परिसरों तथा वहां की सभी चल एवं अचल संपत्तियों की पुर्नबहाली, सुरक्षा एवं प्रबंधन।
11. महात्मा गांधी के बारे में एवं जिन मूल्यों को उन्होंने प्रचारित किया, उसके बारे में लोगों के विभिन्न वर्गों की जानकारी बढ़ाने के लिए पत्रिकाओं का प्रकाशन।
12. समसामयिक मुद्दों के संदर्भ में गांधीवादी दर्शन पर अंतःविषय अनुसंधान का संचालन।
13. शिक्षा पर गांधीवादी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करना एवं उनका संवर्द्धन करना तथा शांति, पारिस्थितिकी सुरक्षा, समानता और न्याय के लिए शिक्षा को सुगम बनाना।
14. महात्मा गांधी एवं गांधीवादी दर्शन की बेहतर एवं गहरी समझ के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों तथा शैक्षणिक संस्थानों के साथ व्यापक तरीके से काम करना।
15. गांधीवादी रचनात्मक कार्य के एक हिस्से के रूप में व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं अन्य आजीविका पहलों के जरिये समाज के कमज़ोर वर्गों को अधिकार संपन्न बनाना।
16. समाज की चुनौतिपूर्ण समस्याओं पर विचार करना एवं उन्हें दूर करने के लिए कार्य करना।
17. सामूहिक जीवन, सामूहिक काम, शांति एवं अहिंसा की संस्कृति के लिए काम करने के लिए विभिन्न हितधारकों को शामिल करना।
18. खासकर सुदूर क्षेत्रों में महात्मा गांधी के जीवन एवं संदेश को पहुंचाना।
19. ऐसी अन्य गतिविधियां शुरू करना तथा सभी पूर्ववर्ती शासनादेशों को पूरा करना और उपरोक्त उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अन्य संस्थानों के साथ सहयोग करना।

# समिति की संरचना

**शासी निकाय**

**अध्यक्ष**
माननीय प्रधानमंत्री,
श्री नरेन्द्र मोदी,

**उपाध्यक्ष**
डॉ. महेश शर्मा, माननीय संस्कृति मंत्री,

**सदस्य**
प्रभारी मंत्री, संस्कृति मंत्रालय
दिल्ली के उपराज्यपाल
दिल्ली के मेयर
श्री लक्ष्मीदास
श्री शंकर कुमार सान्याल
सुश्री रजनी बख्शी
श्री त्रिदीप सुह्रद
श्री नारायण भाई भट्टाचार्जी
डॉ. हर्षवर्धन कामराह
सुश्री नीलिमा वर्धन
डॉ. सुपर्णा गोप्रु
श्री रजनी थॉमस
सचिव, संस्कृति मंत्रालय
प्रधानमंत्री के सूचना सलाहकार
प्रमुख इंजीनियर, सीपीडब्ल्यूडी
सचिव (व्यय), वित्त मंत्रालय
सचिव, शहरी विकास मंत्रालय
दिल्ली के आयुक्त, दिल्ली नगर निगम
अध्यक्ष/प्रशासक, नई दिल्ली पालिका समिति

**सदस्य सचिव**
संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय

**कार्यकारी समिति**
अध्यक्ष
डॉ. महेश शर्मा

**सदस्य**
श्री लक्ष्मीदास
श्री शंकर कुमार सान्याल
सुश्री रजनी बख्शी
श्री त्रिदीप सुह्रद

**सदस्य सचिव**
संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय

**निदेशक**
श्री दीपंकर श्री ज्ञान

# कार्यक्रमों की समय रेखा

**अप्रैल 2017–मार्च 2018**

| क्र. सं. | कार्यक्रम | दिनांक | स्थान | कार्यक्रम के संबंध में |
|---|---|---|---|---|
| 1 | स्वच्छाग्रह का शुभारंभ– बापू को कार्यांजलि, एक अभियान–एक प्रदर्शनी | 10 अप्रैल, 2017 | भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली | भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'स्वच्छाग्रह–बापू को कार्यांजलि' कार्यक्रम का उद्घाटन। इस अवसर पर एक 'लेजर शो' का भी प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम में संस्कृति मंत्री एवं गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा सहित अनेक गणमान्य लोग शामिल हुए। |
| 2 | एकता के लिए विश्व दौड़ आयोजित | 29 अप्रैल, 2017 | गांधी स्मृति, नई दिल्ली। | दिल्ली और एनसीआर के करीब 800 प्रतिभागी इस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का विषय था–अपना हृदय बदलो, विश्व बदलो। |
| 3 | सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह | 13–17 अप्रैल, 2017 | चम्पारण, बिहार | स्वच्छाग्रह के तहत चम्पारण, बिहार के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यक्रम। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति व केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित। |
| 4 | मोतिहारी, बेतिया और भीतिहरवा में राष्ट्रीय युवा शिविर | 10–15 अप्रैल, 2017 | चम्पारण, बिहार | समिति द्वारा राष्ट्रीय युवा परियोजना के सौजन्य से पद्मश्री डॉ. एस. एन. सुब्बाराव के सानिध्य में राष्ट्रीय युवा शिविर आयोजित। कार्यक्रम के माध्यम से चम्पारण के विभिन्न भागों में सौहार्द, शांति और राष्ट्रीय एकता का संदेश प्रसारित किया गया। |
| 5 | रचनात्मक कार्यक्रम और राष्ट्र निर्माण पर कार्यशाला | 6–7 अप्रैल, 2017 | मधुबाला इंस्टीच्यूट, नई दिल्ली। | समिति द्वारा गुरू गोविन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय से संबद्ध मधुबाला इंस्टीच्यूट ऑफ कम्यूनिकेशन एवं इलैक्ट्रोनिक मीडिया के सौजन्य से दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित। कार्यशाला में 150 युवाओं ने भाग लिया। |
| 6 | चकमा बौद्ध समाज के युवाओं का सम्मेलन | 13 अप्रैल, 2017 | गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली। | चकमा बौद्ध समाज और समिति के संयुक्त तत्वावधान में बीजू उत्सव के उपलक्ष्य में 'शांति सह सांस्कृतिक कार्यक्रम' विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 350 लोगों ने भाग लिया। |
| 7 | इग्नू मैदानगढ़ी में महात्मा गांधी पर प्रदर्शनी | 13 अप्रैल, 2017 | मैदानगढ़ी, नई दिल्ली | इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदानगढ़ी में दीक्षांत समारोह के दौरान महात्मा गांधी पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई। समिति द्वारा लगाई गई इस प्रदर्शनी में महात्मा गांधी के जीवन और संदेशों को प्रस्तुत किया गया। |
| 8 | स्वच्छता पखवाड़ा | 16–30 अप्रैल, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली। | समिति के स्टाफ सदस्यों ने स्वच्छता पखवाड़ा बहुत उत्साह से मनाया। इसके तहत समिति के दोनों परिसरों, गांधी स्मृति और गांधी दर्शन में सफाई अभियान चलाकर स्वच्छता का संदेश दिया गया। |
| 9 | लघु गांधी की खोज, चम्पारण सत्याग्रह के आलोक में। | 21 अप्रैल, 2017 | नई दिल्ली | गांधी दर्शन परिसर में समिति द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला 'लघु गांधी की खोज, चम्पारण सत्याग्रह के आलोक में' का आयोजन किया गया। चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरा होने के मौके पर आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन माननीय सांसद श्री बसवराज पाटिल सेदम ने किया। इसमें 110 प्रतिभागी शामिल हुए। |
| 10 | अंतर–पीढ़ी समन्वय पर सेमिनार | 22–23 अप्रैल, 2017 | नई दिल्ली | हैल्दी एजिंग इंडिया द्वारा एम्स के जराचिकित्सा विभाग और समिति के संयुक्त सौजन्य से एक सेमिनार का आयोजन किया गया। जिसमें लोगों को स्वच्छता और अन्य ज्वलंत विषयों के बारे में जागरूक किया गया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 11 | खादी दूतों की खोज पर सेमिनार | 29 अप्रैल, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | समिति द्वारा इनक्रेडिबल ट्रांसफोरमिंग चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से 'खादी दूतों की खोज' पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवा वर्ग में खादी के प्रति जागरूकता और रूचि बढ़ाना था। |
| 12 | अफ़गानिस्तान के युवाओं से परिचर्चा | 2 मई, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | नांगरहर विश्वविद्यालय अफ़गानिस्तान के 30 विद्यार्थी, कुलपति श्री नईम जन सरवारी के नेतृत्व में गांधी दर्शन, नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में पहुंचे। इस परिचर्चा का नेतृत्व समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने किया। विद्यार्थियों ने इस मौके पर राजघाट स्थित गांधी समाधि और गांधी दर्शन स्थित प्रदर्शनी 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' का अवलोकन किया। |
| 13 | गांधी शांति मिशन केरल के युवाओं से संवाद | 18 मई, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | 'गांधी को जानो' कार्यक्रम के तहत केरल स्थित गांधी शांति मिशन के 38 युवाओं ने गांधी दर्शन का दौरा किया और स्टाफ सदस्यों से बातचीत की। इस अवसर पर उन्होंने गांधी दर्शन स्थित महात्मा गांधी के जीवन और संघर्ष पर आधारित प्रदर्शनी और गांधी स्मृति में जाकर गांधीजी के बलिदान स्थल पर श्रद्धासुमन अर्पित किए। |
| 14 | गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति–इग्नू सुविधा केन्द्र | 19 मई, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | इग्नू और समिति के संयुक्त तत्वावधान में इग्नू के सुविधा केन्द्र का गांधी दर्शन स्थित बी. एन. पांडे सभागार में शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर इग्नू के कुलपति प्रो. रविन्द्र कुमार, समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत, डॉ. वेणुगोपाल रेड्डी, डॉ. के. डी. प्रसाद क्षेत्रीय निदेशक और समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान उपस्थित थे। |
| 15 | भारतीय संदर्भ में 'राष्ट्रवादी पत्रकारिता' पर राष्ट्रीय सेमिनार | 20 मई, 2017 | भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली | समिति की ओर से नीडिया स्कैन के सौजन्य से भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवादी पत्रकारिता पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन भारतीय जनसंचार संस्थान में आयोजित किया गया। सेमिनार में दिल्ली तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति योगेश सिंह, विकास भारती के संस्थापक पद्मश्री अशोक भगत, दिव्य प्रेम सेवा मिशन के संस्थापक श्री आशीष गौतान और भारतीय जनसंचार संस्थान के महानिदेशक श्री के.जी. सुरेश ने अपने विचार रखे। |
| 16 | तिहाड़ केन्द्रीय कारागार नंबर–2 में नेत्र रोग शिविर | 26 मई, 2017 | तिहाड़, दिल्ली | तिहाड़ जेल के कारागार नं.–2 में समिति के तत्वावधान में एम्स के सामुदायिक नेत्र विभाग और श्री आर. के. अग्रवाल स्मृति फाउण्डेशन द्वारा नेत्र रोग शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 147 कैदियों का परीक्षण किया गया, जिसमें 136 मरीजों को चश्मे की सलाह दी गई व 4 मरीजों को ऑपरेशन का परामर्श दिया गया। चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. विवेक गुप्ता के नेतृत्व में 14 चिकित्सा विशेषज्ञों की टीम ने मरीजों का इलाज किया। |
| 17 | 'बच्चों की दृष्टि से गांधी को समझना' एक परिचर्चात्मक सत्र | 27 मई, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | महात्मा गांधी के दर्शन और उनके संदेशों को समझने के उद्देश्य से इतिहास (इंडियन ट्रेडिशन हैरिटेज सोसायटी) के विद्यार्थियों ने गांधी दर्शन परिसर का दौरा किया। इस मौके पर उन्होंने गांधी दर्शन परिसर में प्रदर्शनियों का भी अवलोकन किया। |
| 18 | महिला सशक्तिकरण पर कार्यशाला | 23–24 मई, 2017 | उत्तर प्रदेश | समिति द्वारा संस्था 'विजन' के तत्वावधान में जमीनी स्तर के कार्यकर्त्ताओं के लिए महिला सशक्तिकरण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। सर्व सेवा संघ, वाराणसी के परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में कस्तूरबा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। करीब 100 प्रतिभागियों ने इसमें भाग लिया। |
| 19 | गांधी 150–बा और बापू व बुनियादी तालीम के 100 वर्ष | 7–12 जून, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | गांधी विनिमय कार्यक्रम के तहत महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय वर्धा के विद्यार्थियों के लिए एक ऑरिएंटेशन कार्यक्रम गांधी दर्शन में आयोजित हुआ। इस कार्यक्रम में डॉ. अनुपमा सिंह, डॉ. शिव सिंह बघेल और डॉ. मिथिलेश कुमार तिवारी, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला और इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. के. डी. प्रसाद उपस्थित थे। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 20 | थियेटर और कला पर बच्चों की कार्यशाला | 14–18 जून, 2017 | करोल बाग, दिल्ली | बच्चों के लिए थियेटर और कला पर 5 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन केन्द्रीय कर्मचारी कॉलोनी देवनगर, करोल बाग में किया गया। इस कार्यशाला में रंगकर्मी श्रीमती मधुमिता रॉय खान और समिति के श्री शिवदत्त ने नाटक और कॉमिक्स कला की बारीकियों के बारे में बताया। |
| 21 | सतत् विकास के मुद्दों पर सेमिनार | 17–18 जून, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | साबरमती आश्रम की स्थापना के सौ साल पूरे होने पर समिति की ओर से सतत् विकास के मुद्दों पर सेमिनार का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। ग्लोबल विलेज फाउण्डेशन के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य लोगों ने भाग लिया। |
| 22 | बच्चे और शांति निर्माण विषय पर कार्यशाला | 18–24 जून, 2017 | द्वारका, नई दिल्ली | समिति द्वारा 'मा पीस फाउंडेशन' के सौजन्य से 'बच्चे और शांति निर्माण' पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें द्वारका सेक्टर 3 की झुग्गियों के 100 बच्चों ने भाग लेकर गांधीजी के जीवन के बारे में जाना। |
| 23 | योग और पर्यावरण पर परिचर्चा | 21 जून, 2017 | दिल्ली | तीसरे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग और पर्यावरण पर परिचर्चा का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। समिति ने यह कार्यक्रम दिल्ली यातायात पुलिस, इग्नू व खादी और ग्रामोद्योग आयोग के सौजन्य से किया। योगाचार्य डॉ. नवदीप जोशी ने योग और ध्यान के लाभ के बारे में बताया तथा इस अवसर पर योगनिद्रा का अभ्यास भी करवाया गया। |
| 24 | गांधीवादी रचनात्मक कार्यों, नेतृत्व और सहानुभूति के जरिए युवाओं का विकास पर सेमिनार | 23 जून, 2017 | दिल्ली | गांधीवादी रचनात्मक कार्य, नेतृत्व के माध्यम से युवाओं के विकास विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें 175 लोगों ने भाग लिया। सेमिनार में राज्यसभा सांसद डॉ. संजय सिंह बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्रीमती नीरा शास्त्री और श्री विजय जॉली ने भी अपने विचार व्यक्त किए। |
| 25 | मुसाहर समाज के बच्चों के लिए योग कार्यक्रम | 21 जून, 2017 | पटना, बिहार | बिहार के मुसाहर समाज के बच्चों के लिए अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग कार्यक्रम का आयोजन पटना में समिति और अभियान संस्था द्वारा किया गया। इसमें बीबीपुर, जाहर बीघा, तिताही बीघा, रतन बीघा, गोकुलपुर, कोसियामा सहित 19 गांवों के लोगों ने भाग लिया। इसका उद्घाटन श्री आदित्य कुमार ने किया। |
| 26 | गांधी पर सेमिनार | 21 जून, 2017 | समस्तीपुर, बिहार | समिति द्वारा स्वस्थ भारत न्यास और सुंदरी देवी सरस्वती विद्या मंदिर समस्तीपुर के सौजन्य से 'स्वच्छता और स्वास्थ्य' पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बिहार के ग्रामीण इलाकों के 1500 बच्चों ने भाग लिया। वरिष्ठ गांधीवादी विचारक व पत्रकार श्री प्रसून लतांत ने अच्छे स्वास्थ्य के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि कैसे गांधीजी देश के लोगों के स्वास्थ्य के प्रति चिंतित रहते थे। |
| 27 | आदिवासी कला संस्कृति संगम, थारू | 22–24 जून, 2017 | थारू, बिहार | भारत के विभिन्न क्षेत्रों की आदिवासी संस्कृति और उनके रहन–सहन को दिखाने के लिए समिति द्वारा चम्पारण में आदिवासी कला संस्कृति संगम का आयोजन किया गया। इसमें थारू समाज के 600 लोगों ने भाग लिया। इसका आयोजन वाल्मीकि नगर में किया गया। |
| 28 | गांधीजी, चम्पारण सत्याग्रह और ग्रामीण युवा पर दो दिवसीय कार्यशाला | 28–29 जून, 2017 | पश्चिम बंगाल | समिति द्वारा गांधी मिशन ट्रस्ट के सौजन्य से गांधी मिशन ट्रस्ट आश्रम, मिदनापुर, बंगाल में गांधीजी, चम्पारण सत्याग्रह व ग्रामीण युवा पर कार्यशाला का आयोजन। इसमें समूह चर्चा, संवाद के अतिरिक्त रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन भी किया गया। |
| 29 | गांधी और प्राकृतिक स्वास्थ्य–एक सेमिनार | 25 जून, 2017 | गोरखपुर, उत्तर प्रदेश | समिति द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी संस्थान, आरोग्य मंदिर गोरखपुर में गांधी और प्राकृतिक स्वास्थ्य पर सेमिनार का आयोजन। संस्थान प्रमुख डॉ. विमल कुमार मोदी ने इस मौके पर प्राकृतिक चिकित्सा की खूबियों को दर्शाते हुए कहा कि महात्मा गांधी का प्रयास था कि प्राकृतिक दवाओं का लाभ अंतिम जन तक पहुंचे। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 30 | गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों पर सेमिनार का आयोजन | 27 जून, 2017 | लखनऊ | समिति और उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के संयुक्त तत्वावधान में 'महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम' विषय पर सेमिनार का आयोजन लखनऊ स्थित गांधी भवन में किया गया। स्व. श्री रघुनाथ कौल को उनकी पुण्य तिथि पर याद किया गया। पूर्व आईएएस अधिकारी श्री विनोद शंकर चौबे कार्यक्रम में मुख्य वक्ता थे, इसकी अध्यक्षता पं. रामप्यारे द्विवेदी ने की। |
| 31 | एक पत्रकार के रूप में गांधी– एक कार्यशाला | 24–25 जून, 2017 | वाराणसी, उत्तर प्रदेश | काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी के प्रांगण में एक पत्रकार के रूप में गांधी विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें गांधीजी के पत्रकार कौशल के बारे में चर्चा की गई। जाने–माने पत्रकार श्री जितेंद्र नाथ मिश्रा ने गांधीजी को आज के संपादकों और पत्रकारों से बेहतर बताया। समिति द्वारा प्रज्ञा इंस्टीच्यूट नई दिल्ली के सौजन्य से इस कार्यक्रन को आयोजित किया गया। |
| 32 | अंतर पीढ़ी व्याख्या केन्द्र की स्थापना | जुलाई, 2017 | नोएडा, उत्तर प्रदेश | समिति द्वारा नोएडा में हैल्दी एजिंग इंडिया के सौजन्य से अंतर पीढ़ी शिक्षा केन्द्र का आरंभ किया गया। |
| 33 | डॉ. वाई. पी. आनन्द की पुस्तक का विमोचन | 13 जुलाई, 2017 | गांधी स्मृति, नई दिल्ली | संस्कृति मंत्रालय, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति व गांधी आश्रम साबरमती द्वारा डॉ. वाई.पी. आनन्द की पुस्तक का विमोचन माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा ने किया। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में डॉ. शर्मा ने कहा कि चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री ने लोगों को स्वच्छाग्रही बनने पर जोर दिया था। अतः सब नागरिकों का कर्तव्य है कि वे स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें। |
| 34 | प्रसिद्ध पत्रकार स्व. श्री प्रभाष जोशी को श्रद्धांजलि अर्पित | 16 जुलाई, 2017 | गांधी दर्शन | जाने–माने पत्रकार स्व. श्री प्रभाष जोशी की 80वीं जयंती पर उन्हें याद किया गया। गांधी दर्शन में आयोजित एक कार्यक्रम में प्रभाष जोशी स्मृति व्याख्यान, 'किसानों का संकट और मीडिया' विषय पर प्रस्तुत किया गया। इसमें अनेक पत्रकार, साहित्यकार, गांधीवादी और गणमान्य लोग शामिल हुए। |
| 35 | चरखा सत्याग्रह पर सेमिनार सह व्याख्यान | 16 जुलाई, 2017 | जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली | लोकरंग और समिति के तत्वावधान में दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन हुआ। यह सेमिनार चरखा, सत्याग्रह, किसानों के मुद्दों और राष्ट्रीय आंदोलन पर आधारित था। इस अवसर पर आखर संस्था द्वारा भोजपुरी सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में 300 लोगों ने भाग लिया। |
| 36 | तिहाड़ में नेल्सन मंडेला दिवस आयोजित | 18 जुलाई, 2016 | तिहाड़ जेल, नई दिल्ली | समिति द्वारा नेल्सन मंडेला के 99वें जन्मदिवस पर केन्द्रीय कारागर–2 तिहाड़ में नेल्सन मंडेला दिवस का आयोजन किया गया। इस वर्ष कार्यक्रम का विषय था–आज़ादी, न्याय और लोकतंत्र के लिए। इस अवसर पर समिति द्वारा कैदियों को निःशुल्क चश्में वितरित किए गए। |
| 37 | स्वच्छाग्रह पर नुक्कड़ नाटक | 21 जुलाई, 2017 | नई दिल्ली | समिति द्वारा उदित आशा वेलफेयर सोसायटी के सौजन्य से स्वच्छाग्रह पर आधारित नुक्कड़ नाटकों की श्रृंखला का प्रदर्शन दिल्ली की विभिन्न झुग्गी बस्तियों में किया गया। इस अवसर पर समिति द्वारा चम्पारण सत्याग्रह पर प्रदर्शनी भी लगाई गई। |
| 38 | महिला सशक्तिकरण पर केन्द्रित युवा संसद का आयोजन | 29–30 जुलाई, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | समिति द्वारा सजल फाउण्डेशन व चाणक्य नीति राष्ट्रीय युवा संसद के सौजन्य से एक युवा संसद का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। जिसमें करीब 450 लोगों ने भाग लिया। महिला सशक्तिकरण पर आधारित इस युवा संसद में देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए युवा सम्मिलित हुए। |
| 39 | क्षमता निर्माण कार्यशाला आयोजित | 30 जुलाई, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | रामभाउ महलगी प्रबोधिनी और गैर विश्वविद्यालयी महिला शिक्षा बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में अध्यापकों और प्रभारियों के लिए ऑरिएंटेशन और क्षमता निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में अध्यापकों को नई तकनीक और कार्य क्षमता बढ़ाने के गुर सिखाए गए। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 40 | बा–बापू : 150 पूर्वावलोकन | 31 जुलाई, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | बापू की 150वीं जयंती को मनाने के क्रम में समिति द्वारा बा–बापू–150 विषय पर एक पूर्वावलोकन कार्यक्रम आयोजित किया गया। हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास, समिति के पूर्व निदेशक श्री एन. राधाकृष्णन, श्री बसंत, श्री रमेश शर्मा, इंदु बाला, श्री प्रसून लतांत, श्री अतुल प्रभाकर, श्री यू. सी. गौड़ एवं समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान आदि इस अवसर पर उपस्थित थे। |
| 41 | 'ग्रामीण और शहरी युवाओं के मध्य सेतु निर्माण' विषय पर युवा शिविर | 3–7 जुलाई, 2017 | मध्य प्रदेश | गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति एवं स्टेंडिंग टूगैदर टू इनेबल पीस ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में चार दिवसीय युवा शांति शिविर का आयोजन मध्य प्रदेश के कटनी में किया गया। 'ग्रामीण और शहरी युवाओं के मध्य सेतु निर्माण' विषय पर आधारित इस शिविर का मूल उद्देश्य ग्राम और नगर क्षेत्र के युवाओं की आपसी दूरी मिटाना और उन्हें समाजसेवा के क्षेत्र में मिलकर कार्य करने के लिए प्रेरित करना था। इसमें 30 युवाओं ने भाग लिया। |
| 42 | ग्राम स्वराज पर दो दिवसीय कार्यशाला | 14–15 जुलाई, 2017 | पश्चिम बंगाल | समिति द्वारा सार्बिक ग्राम उन्नयन संघ के साथ मिलकर ग्राम स्वराज पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन धनछायाबाड़ी सिस्टर निवेदिता समिति संघ, पश्चिम बंगाल में किया गया। कार्यक्रम में चांदीपुर खंड, जिला पूर्वी मिदनापुर के 17 गांवों की विभिन्न समुदायों की महिलाओं ने भाग लिया। |
| 43 | राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक सम्मेलन | 10–12 जुलाई, 2017 | कारगिल, जम्मू–कश्मीर | समिति द्वारा नेहरू युवा केन्द्र कारगिल व लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास संघ के सौजन्य से कारगिल में राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन जम्मू–कश्मीर के युवा और खेल मंत्री श्री सुनील शर्मा ने किया। कार्यक्रम में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक श्री के. डी. प्रसाद, सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे। कार्यक्रम में 200 युवा सम्मिलित हुए। |
| 44 | कारगिल में महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र का शुभारंभ | 10 जुलाई, 2017 | कारगिल, जम्मू–कश्मीर | समिति द्वारा कारगिल में महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र की शुरूआत की गई, जिसका उद्घाटन स्थानीय युवा एवं खेल मामलों के मंत्री श्री सुनील शर्मा ने किया। समिति बापू की 150वीं जयंती को देखते हुए उनके संदेशों को घर–घर प्रसारित करने के उद्देश्य से देश के विभिन्न भागों में व्याख्यान केन्द्र खोल रही है। इस केन्द्र का संचालन नेहरू युवा केन्द्र कारगिल करेगा। |
| 45 | चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्षों पर सेमिनार | 18–19 जुलाई, 2017 | झारखंड | जमशेदपुर महिला कॉलेज और समिति के संयुक्त तत्वावधान में 'चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं ने सत्याग्रह और सत्य अहिंसा के सिद्धांतों की व्याख्या की। |
| 46 | 'सामाजिक न्याय आंदोलन रे मालती चौधरायांका भूमिका' पर सम्मेलन | 26 जुलाई, 2017 | ओडिशा | समाज कल्याण बोर्ड ओडिशा और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा भुवनेश्वर में 'सामाजिक न्याय आन्दोलन रे मालती चौधरायांका भूमिका' (सामाजिक न्याय आंदोलन में मालती चौधरी की भूमिका) सम्मेलन का आयोजन किया गया। ओडिशा के महिला एवं बाल विकास मंत्री श्री प्रफुल्ल सामल ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। |
| 47 | हिन्दी साहित्य में गांधी और दिनकर की चेतना– एक राष्ट्रीय संवाद | 28 जुलाई, 2017 | गोवा | गोवा के पंजिम में 'हिन्दी साहित्य में गांधी और दिनकर की चेतना' विषय पर एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। समिति द्वारा जयते फाउण्डेशन के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में 600 लोगों ने भाग लिया। |
| 48 | गांधी–150 के लिए बैठक | 2 अगस्त, 2017 | नई दिल्ली | गांधीजी की 150वीं जयंती की तैयारियों को लेकर समिति की ओर से शिक्षाविदों, समाजसेवियों, कारीगर पंचायत के सदस्यों, लेखकों के साथ एक बैठक आयोजित की गई। गांधी दर्शन परिसर में आयोजित इस बैठक में गांधीजी की शिक्षाओं के प्रसार और उनके संदेशों को आम जन तक पहुंचाने के बारे में मंथन किया गया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 49 | भारत छोड़ो आन्दोलन पर प्रदर्शनी | 8–15 अगस्त, 2017 | गांधी स्मृति, नई दिल्ली। | भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर महात्मा गांधी की अखबार कतरन पर आधारित प्रदर्शनी गांधी स्मृति में लगाई गई। मौहम्मद सुभान की इस प्रदर्शनी में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय अखबारों में छपे समाचारों का संकलन किया गया था। |
| 50 | भारत छोड़ो आन्दोलन के 75 वर्ष | 9 अगस्त, 2017 | गांधी समाधि, राजघाट, नई दिल्ली | भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर समिति के स्टाफ सदस्यों ने निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में गांधी समाधि, राजघाट पर बापू को श्रद्धासुमन अर्पित किए। |
| 51 | 70वां स्वतंत्रता दिवस समारोह आयोजित। | 15 अगस्त, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | 70वां स्वतंत्रता दिवस गांधी दर्शन परिसर में उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने ध्वजारोहण कर उपस्थित स्टाफ सदस्यों व उनके परिवार को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी के सपनों को साकार करने की अपील की। |
| 52 | हम आज़ाद हैं–प्रदर्शनी | 13–15 अगस्त, 2017 | दिल्ली हाट, जनकपुरी | समिति द्वारा दिल्ली हाट में एक प्रदर्शनी लगाई गई। इसके अतिरिक्त गांधी स्मृति के सृजन केन्द्र की ओर से खादी के उत्पादों की स्टाल भी लगाई गई। |
| 53 | चम्पारण, बिहार के ऑटो ड्राइवरों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम | 16 अगस्त, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली। | चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर समिति द्वारा दिल्ली में कार्यरत चम्पारण के ऑटो चालकों के लिए कौशल विकास कार्यक्रम का आरंभ किया गया है। इसके तहत ऑटो चालकों को उनके कौशल को निखारने के अलावा बेहतर जीवन प्रबंधन के गुर सिखाए गए। |
| 54 | महात्मा गांधी के दर्शन पर श्रीलंका के न्यायविदों के साथ चर्चा। | 18 अगस्त, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | श्रीलंका के उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय एवं जिला न्यायालय के जजों का 35 सदस्यीय दल गांधी दर्शन पहुंचा। इसका नेतृत्व सुप्रीम कोर्ट के माननीय जज अनिल गुणरत्ने कर रहे थे। दिल्ली न्यायिक अकादमी के प्रमुख प्रशासनिक अधिकारी श्री चन्द्रसेन कुमार भी इस अवसर पर उनके साथ थे। |
| 55 | 'बच्चे–हिंसा–शांति निर्माण– एक संवाद | 10 अगस्त, 2017 | गांधी दर्शन, दिल्ली | समिति द्वारा शांति आश्रम कोयम्बटूर के सौजन्य से 'बच्चे–हिंसा–शांति निर्माण' विषय पर एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 11 देशों के 120 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और शांति आश्रम की संस्थापक निदेशक डॉ. सुश्री वीनू आरम भी इस मौके पर मौजूद थ। |
| 56 | तिहाड़ में कार्यक्रम | 5,14,16 व 18 अगस्त, 2017 | तिहाड जेल, नई दिल्ली | चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर समिति की ओर से तिहाड़ की विभिन्न जेलों में चित्रकला प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में कैदियों ने स्वच्छता, महिला उत्पीड़न, गांधी दर्शन आदि विषयों पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। |
| 57 | चिंतन बैठक | 24–27 अगस्त, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | समिति द्वारा प्रज्ञा प्रवाह के सौजन्य से तीन दिवसीय चिंतन बैठक का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। इस कार्यक्रम में प्रमुख रूप से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख श्री मोहन भागवत उपस्थित हुए। बैठक में लेखकों, शिक्षाविदों, समाजसेवियों और अन्य गणमान्य लोगों ने शिरकत की। |
| 58 | "प्रकृति–मानव–वन्यजीवन –परस्पर सहअस्तित्व" पर ऑरिएंटेशन कार्यक्रम | 7–8 अगस्त, 2017 | नागालैंड | समिति द्वारा एस. एम कॉलेज दीमापुर के सौजन्य से "प्रकृति–मानव–वन्यजीवन–परस्पर सहअस्तित्व" पर ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता उपस्थित हुए। |
| 59 | युवा सत्याग्रहियों का दो दिवसीय ऑरिएंटेशन कार्यक्रम | 12–13 अगस्त, 2017 | केरल | चम्पारण सत्याग्रह के सौ साल पूर्ण होने के अवसर पर युवा सत्याग्रहियों के लिए दो दिवसीय ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन केरल में किया गया। यह कार्यक्रम समिति द्वारा कालीकट विश्वविद्यालय की गांधीयन स्टडीज एंड रिसर्च चेयर के सौजन्य से आयोजित हुआ। |
| 60 | "गांधीवादी विचार और महिला सशक्तिकरण" एक कार्यशाला | 8–12 अगस्त, 2017 | धुलागिरी महिला समिति, पश्चिम बंगाल | समिति द्वारा धुलागिरी महिला समिति के सौजन्य से पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। "गांधीवादी विचार और महिला सशक्तिकरण" पर आधारित इस कार्यशाला में गांधीजी के महिला कल्याण संबंधी विचारों पर चर्चा की गई। |
| 61 | नई पीढ़ी के गांधी: एक युवा शिविर | 19–25 अगस्त, 2017 | पश्चिम बंगाल | गांधी पीस फाउण्डेशन द्वारा समिति के सौजन्य से "नई पीढ़ी के लिए गांधीजी" विषय पर एक युवा शिविर का आयोजन पश्चिम बंगाल के हावड़ा में किया गया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 62 | गांधीजी के विचारों का विद्यार्थियों, युवाओं और अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओं में प्रसार | 17–21 अगस्त, 2017 | पश्चिम बंगाल | गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और गोसाईधी आस्था वेलफेयर सोसायटी के तत्वावधान में पश्चिम बंगाल में "गांधीजी के विचारों का विद्यार्थियों, युवाओं और अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओं में प्रसार" विषय पर 5 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें 90 प्रतिभागियों ने भाग लिया। |
| 63 | गांधी स्मृति यात्रा | 14–22 अगस्त, 2017 | मध्य प्रदेश | समिति द्वारा गांधी भवन न्यास भोपाल के सौजन्य से गांधी स्मृति यात्रा निकाली गई। चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के मौके पर निकाली गई इस यात्रा का संयोजन श्री बी. सी. शर्मा ने किया। यात्रा ने मध्य प्रदेश के 19 जिलों का दौरा किया। |
| 64 | बच्चों की कार्यशाला | 23–24 अगस्त, 2017 | अलमोड़ा, उत्तराखंड | समिति द्वारा दैनिक सामाजिक संस्था द्वारहाट के सौजन्य से बच्चों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें नशाबंदी, महिला उत्पीड़न, स्वच्छता और स्वास्थ्य आदि मुद्दों को उठाया गया। इस अवसर पर कहानी लेखन, कविता और चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। विभिन्न स्कूलों के 90 प्रतिभागी इसमें शामिल हुए। |
| 65 | शांति के लिए दौड़ | 17 सितंबर, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | गांधी दर्शन परिसर में शांति के लिए दौड़ का आयोजन किया गया। जिसमें 600 लोगों ने भाग लिया। यह दौड़ 1 कि.मी, 5 कि. मी और 10 कि.मी. वर्ग में हुई। माननीय केन्द्रीय मंत्री चौ. बीरेंद्र सिंह ने इस शांति दौड़ का हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ किया। |
| 66 | कूड़े से बगीचा | 16 सितंबर, 2017 | नई दिल्ली | भारतीय फोटोग्राफी संस्थान द्वारा 'कूड़े से बगीचा' कार्यक्रम के तहत गीले कूड़े के प्रबंधन की तकनीक प्रतिभागियों को सिखाई गई। इसमें 150 लोगों ने शिरकत की। |
| 67 | महात्मा गांधी जयंती कार्यक्रम की रिहर्सल | 23 सितंबर से 1 अक्तूबर, 2017 | गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति | गांधी जयंती पर होने वाले कार्यक्रम के लिए रिहर्सल की गई, जिसमें 16 विभिन्न स्कूलों के 400 बच्चों ने भाग लिया। |
| 68 | मूल्य निर्माण शिविर | 22 सितंबर से 4 अक्तूबर 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | गांधी दर्शन में आयोजित मूल्य निर्माण शिविर में देश के विभिन्न भागों से आए 104 बच्चों ने भाग लिया। अहमदाबाद, गुजरात, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के स्कूली बच्चों ने इस शिविर में हिस्सा लेकर थियेटर, चरखा कताई, कॉमिक्स लेखन, प्राकृतिक चिकित्सा आदि के गुर सीखे। श्रीमती मधुमिता खान, श्री धर्मराज और श्री विवेक, डॉ. मंजू अग्रवाल, श्री शिवदत्त और श्री सुधांशु बहुगुणा ने इन बच्चों को प्रशिक्षित किया। |
| 69 | वनवासी कल्याण आश्रम | 9–10 सितंबर, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | इस कार्यक्रम में देश के अनेक आदिवासी क्षेत्रों से आए 100 लोग सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम के दौरान जल, जंगल और ज़मीन से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की गई। |
| 70 | स्वच्छता कार्यक्रम | 25 सितंबर, 2017 | हरिजन सेवक संघ, नई दिल्ली | समिति की ओर से हरिजन सेवक संघ के सौजन्य से बुराड़ी की हरिजन बस्ती में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसमें 100 लोगों ने भाग लिया। इस मौके पर चौपाल चर्चा भी आयोजित की गई। इस कार्यक्रम का उद्देश्य साफ–सफाई के बारे मे लोगों को जागरूक बनाना था। |
| 71 | शिक्षक दिवस कार्यक्रम | 5 सितंबर, 2017 | गांधी दर्शन, दिल्ली | समिति द्वारा इग्नू के सहयोग से शिक्षक दिवस का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। जिसमें करीब 100 लोगों ने भाग लिया। मुख्य वक्ता के रूप में वरिष्ठ गांधीजन श्री टी. के. थॉमस उपस्थित थे। |
| 72 | बी. एस. फाउण्डेशन कार्यक्रम | 5 सितंबर, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | यह कार्यक्रम गांधी दर्शन के सत्याग्रह मंडप में आयोजित किया गया। इसमें 200 से अधिक महिला प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। |
| 73 | विश्व साक्षरता दिवस | 8 सितंबर, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में साक्षरता के महत्व और शिक्षा के विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई। दिल्ली के 17 स्कूलों के 35 अध्यापकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। |
| 74 | विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर नुक्कड़ नाटक | 9–10 सितंबर, 2017 | दिल्ली की विभिन्न झुग्गी बस्तियां | चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के अवसर पर उदित आशा वेलफेयर सोसायटी द्वारा पहाड़गंज और मयूर विहार में नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया गया। इन नाटकों की विषय वस्तु चम्पारण सत्याग्रह थी। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 75 | प्राकृतिक चिकित्सा कार्यक्रम | 6 सितंबर, 2017 | गांधी दर्शन, दिल्ली | गांधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा समिति, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। |
| 76 | पूर्वोत्तर सांस्कृतिक कार्यक्रम | 8–10 सितंबर, 2017 | मेघालय | इस कार्यक्रम में मणिपुर, असम, अरूणाचल प्रदेश व मेघालय के 100 स्वयंसेवकों व 300 कलाकारों ने भाग लिया। तीन दिवसीय इस रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम के गवाह 10000 से भी ज्यादा दर्शक बने। |
| 77 | परस्पर सह अस्तित्व पर कार्यशाला | 11 सितंबर, 2017 | मेघालय | इस कार्यक्रम में 9वीं व 11वीं कक्षा के 120 बच्चों ने भाग लिया। श्री आनंद कोच ने बच्चों को गारो हिल्स और अपनी मातृभूमि के प्रति कर्तव्यों के बारे में जानकारी दी। श्री राहुल पारीख ने बच्चों को राष्ट्र निर्माण में महत्ती भूमिका निभाने का आह्वान किया। |
| 78 | गांधी के विचारों को युवाओं तक पहुंचाने के लिए कार्यक्रम | 23 सितंबर, 2017 | गोपालगंज, बिहार | इस सेमिनार का आयोजन गोपालगंज के कमला राय कॉलेज में किया गया। जिसमें 160 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर सम्मानित अतिथियों प्रो. विकास नारायण उपाध्याय, डॉ. मौहम्मद वसीम और अन्य गणमान्य लोगों ने महात्मा गांधी के संदेशों और विचारों पर अपना व्याख्यान दिया। |
| 79 | मानवता के लिए स्वयंसेविता | 15–16 सितंबर, 2017 | भोपाल, मध्यप्रदेश | मानवता के लिए स्वयंसेविता विषय पर आधारित इस कार्यशाला में 100 स्वयंसेवक शामिल हुए। इस मौके पर भोपाल शहर में स्वच्छता पर एक रैली का भी आयोजन किया गया। |
| 80 | महिला सशक्तिकरण पर एक दिवसीय सेमिनार | सितंबर 2017 | महाराष्ट्र | इस सेमिनार का आयोजन आचार्य काकासाहेब कालेलकर लोक सेवा केन्द्र नंदूरबार, महाराष्ट्र द्वारा किया गया। इस मौके पर सुश्री दया बहन बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थीं। कार्यक्रम में श्री रमनलाल शाह, प्रो. मृदुला वर्मा और प्रो. किरण सक्सेना विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। |
| 81 | स्वच्छता पर दो दिवसीय सेमिनार | 15 सितंबर, 2017 | उत्तर प्रदेश | स्वच्छता पर दो दिवसीय सेमिनार गुन्नूर उत्तर प्रदेश के डीएवी इंटर कॉलेज में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 800 युवाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में स्वच्छता अभियान जोर–शोर से चलाने और इस संबंध में जनता की भागीदारी बढ़ाने के उपायों पर चर्चा की गई। |
| 82 | सामाजिक कार्यकर्त्ताओं में महात्मा गांधी के संदेशों का प्रसार | 16–17 सितंबर, 2017 | मुरैना, मध्य प्रदेश | यह कार्यक्रम मध्य प्रदेश के मुरैना में महात्मा गांधी के संदेशों को जन–जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से किया गया। समिति की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में महात्मा गांधी सेवा आश्रम मुरैना ने सहयोग किया। |
| 83 | समाजिक न्याय और विकास में गांधीवादी दृष्टिकोण–एक सम्मेलन | 11–12 सितंबर, 2017 | ओडिशा | विनोबा सेवा प्रतिष्ठान ओडिशा के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में चम्पारण सत्याग्रह की शताब्दी का समारोह मनाया गया। विनोबा जी की 123वीं जयंती के मौके पर आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 600 लोग उपस्थित हुए। |
| 84 | स्वच्छता पखवाड़ा | 16 सितंबर, 2017 | चम्पारण, बिहार | चम्पारण के बृंदावन स्थित राजकीय बुनियादी विद्यालय में स्वच्छता पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर विद्यालय के बच्चों ने आसपास के कई इलाकों में स्वच्छता अभियान चलाया। विद्यार्थियों ने ग्रामीणों को शौचालय बनवाने के लिए प्रेरित भी किया। |
| 85 | गांधी जयंती समारोह | 2 अक्तूबर, 2017 | गांधी स्मृति | गांधी स्मृति में गांधी जयंती के मौके पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें माननीय उपराष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा सहित अनेक गणमान्य लोगों ने बापू को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस कार्यक्रम में 400 स्कूली बच्चों ने बापू को संगीतमय श्रद्धांजलि अर्पित की। |
| 86 | गांधी, गंगा, गिरिराज– जागरूकता यात्रा | 3 अक्तूबर, 2017 | गांधी स्मृति, नई दिल्ली | चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरे होने पर गंगा बचाओ आंदोलन के तत्वावधान में गांधी स्मृति से गांधी, गंगा, गिरिराज जागरूकता यात्रा का शुभारंभ समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ओर श्रीमती रमा राउत, संयोजक गंगा बचाओ आंदोलन ने किया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 87 | मूल्य निर्माण शिविर का समापन | 3 अक्तूबर, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | समिति की ओर से आयोजित 11 दिवसीय मूल्य निर्माण शिविर का समापन 3 अक्तूबर, 2017 को हुआ। इसमें 110 बच्चों ने प्रतिभागिता की। समापन समारोह में बच्चों ने अपने–अपने क्षेत्र के सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। |
| 88 | शिक्षा, कार्य एवं ग्रामीण विकास–एक वार्ता | 3–5 अक्तूबर, 2017 | दिल्ली | समिति की ओर से शिक्षा योजना और प्रशासन राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के सौजन्य से शिक्षा, कार्य एवं ग्रामीण विकास पर एक वार्ता का आयोजन किया गया। जिसमें वरिष्ठ गांधीवादी चिंतक व शिक्षाविद शामिल हुए। कार्यक्रम में शिक्षा और वर्तमान सामाजिक–आर्थिक संदर्भ में गांधीजी के आदर्शों की प्रासंगिकता पर मंथन किया गया। |
| 89 | चरखे के लाभ पर जागरूकता कार्यक्रम | 6 अक्तूबर, 2017 | दिल्ली विश्वविद्यालय | समिति द्वारा गांधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय के सौजन्य से 'चरखे के लाभ' पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में यह निर्णय लिया गया कि चरखे पर प्रशिक्षण कक्षाएं प्रति सप्ताह लगाई जाएगी। विद्यार्थियों ने इस मौके पर गांधी दर्शन का अवलोकन किया और समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान से विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। |
| 90 | "सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य का राज्याभिषेक और महात्मा गांधी के सपनों का भारत" पर परिचर्चा | 7 अक्तूबर, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | समिति द्वारा इंद्रप्रस्थ योगक्षेम सेवा न्यास के सौजन्य से "सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य का राज्याभिषेक और महात्मा गांधी के सपनों का भारत" पर परिचर्चा का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। जिसमें 500 लोगों ने भाग लिया। इस मौके पर श्री कृष्ण गोपाल, श्री बाल मुकुन्द और श्री विनायक राव देशपांडे विशिष्ट अतिथि थे। |
| 91 | चम्पारण की पुनः यात्रा : 21वीं सदी में सत्याग्रह की चुनौतियां | 16–17 अक्तूबर, 2017 | जाकिर हुसैन कॉलेज, नई दिल्ली | दिल्ली विश्वविद्यालय के ज़ाकिर हुसैन कॉलेज में दो दिवसीय गांधी जयंती राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का विषय "चम्पारण की पुनर्यात्राः 21 वीं सदी में सत्याग्रह की चुनौतियां" था। कार्यक्रम का आयोजन गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और ज़ाकिर हुसैन कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। विज़न इंडिया रिसर्च सेंटर इस कार्यक्रम का अकादमिक सहयोगी था। |
| 92 | दीवाली से पूर्व स्वच्छता अभियान | 17 अक्तूबर, 2017 | नई दिल्ली | स्वच्छ भारत अभियान के तहत, समिति की ओर से गांधी दर्शन और गांधी स्मृति परिसरों में स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया गया। समिति की ओर से दीवाली से पूर्व दोनों परिसरों में 17 अक्तूबर, 2017 को सघन सफाई अभियान चलाया, जिसमें स्टाफ के सभी सदस्यों ने भाग लिया। |
| 93 | स्वदेशी मेला | 11–15 अक्तूबर, 2017 | द्वारका, नई दिल्ली | समिति ने द्वारका के सीसीआरटी मैदान में 11 से 15 अक्तूबर तक चले स्वदेशी मेले में भाग लिया। स्वदेशी जागरण मंच द्वारा आयोजित इस मेले में श्री सुशील कुमार शुक्ला और श्री शकील खान ने सृजन स्वउद्यम केंद्र में बने खादी उत्पादों के साथ शिरकत की। मेले में नृत्य, पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन किया गया। |
| 94 | दिव्यांग बच्चों के लिए थियेटर और व्यक्तित्व विकास शिविर | 12–16 अक्तूबर, 2017 | कड़कड़डूमा, नई दिल्ली | नवीन जीविका वेलफेयर और शिक्षा समिति की ओर से दिव्यांग बच्चों के लिए जागृति एन्कलेव कड़कड़डूमा में पांच दिवसीय थियेटर और व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का मुख्य उद्देश्य थियेटर के माध्यम से इन बच्चों के व्यक्तित्व को निखारना और उनमें आत्मविश्वास भरना था। इसके अलावा इन बच्चों को समाज की मुख्यधारा में लाना और उन्हें महात्मा गांधी के जीवन की जानकारी देना भी इस शिविर का उद्देश्य रहा। |
| 95 | "बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ" पर सेमिनार – सह –कार्यशाला | 13 अक्तूबर, 2017 | बिंदापुर, नई दिल्ली | समिति द्वारा श्री ज्ञान गंगोत्री विकास संस्था और एलआईसी के सौजन्य से बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। कॉफी हाउस बिन्दापुर, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. हंसराज सुमन बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। इसमें करीब 300 लोगों ने भाग लिया। |
| 96 | बुद्ध और गांधी के पथ पर: एक संवाद | 21 अक्तूबर, 2017 | गांधी स्मृति, नई दिल्ली | समिति द्वारा अहिंसा ट्रस्ट के सौजन्य से 'बुद्ध और गांधी के पथ पर' विषय पर एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें वियतनाम के जेन गुरू थिच नैश के 80 अनुयायियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन धर्माचार्य शांतम सेठ और समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने किया। इस संवाद का उद्देश्य बुद्ध और गांधी की शिक्षाओं का विश्व शांति की दिशा में महत्व बताना था। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 97 | पुस्तक विमोचन कार्यक्रम आयोजित | 30 अक्तूबर, 2017 | इंडिया इंटरनेशनल सेंटर | सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री बी. पी. सिंह द्वारा लिखित "21वीं सदी की भौगोलिक राजनीति, लोकतंत्र और शांति" पुस्तक का विमोचन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इंडिया इंटरनेशल सेंटर में 30 अक्तूबर को आयोजित इस कार्यक्रम में जम्मू–कश्मीर के राज्यपाल श्री एन. एन. वोहरा और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। |
| 98 | राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर एकता मार्च का आयोजन | 31 अक्तूबर, 2017 | नई दिल्ली | राष्ट्रीय एकता दिवस के मौके पर 30 अक्तूबर, 2017 को एकता मार्च का आयोजन किया गया। इसमें वरिष्ठ गांधीजनों, कुलपतियों, प्राध्यापकों, शोध प्रशिक्षुओं, लेखकों, स्वयंसेवकों सहित 200 लोगों ने भाग लिया। यह मार्च गांधी समाधि, राजघाट से आरंभ होकर किसान घाट रोड़ होता हुआ गांधी दर्शन परिसर में आकर संपन्न हुआ। सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को हर वर्ष राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है, इसकी शुरूआत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में की थी। |
| 99 | गांधी मेला आयोजित | 31 अक्तूबर–2 नवंबर, 2017 | गांधी दर्शन, नई दिल्ली | इंडियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज़ के 40वें सम्मेलन के तहत 31 अक्तूबर से 2 नवंबर, 2017 तक आयोजित इस कार्यक्रम को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ गांधीवादी प्रो. रामजी सिंह, प्रो. के. वी. कृष्ण भट्ट, पूर्व प्राचार्य कुवैम्पू विश्वविद्यालय, श्री कुंवर विजेन्द्र सिंह, कुलपति शोभित विश्वविद्यालय और श्री प्रकाश मणि त्रिपाठी, दीनदयाल विश्वविद्यालय गोरखपुर ने भी गांधीवादी मूल्यों और प्राचीन भारतीय संस्कृति पर अपने विचार रखे। |
| 100 | "परस्पर सहअस्तित्व पर प्रकृति – मानव–वन्यजीवन श्रृखंला" पर दो दिवसीय सेमिनार | 6–7 अक्तूबर, 2017 | भरतपुर, राजस्थान | "परस्पर सहअस्तित्व पर प्रकृति–मानव–वन्यजीवन श्रृखंला" पर गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली और नारी मंच के तत्वावधान में दो दिवसीय सेमिनार दिनांक 6–7 अक्तूबर, 2017 को आयोजित किया गया। राजपूताना सोसायटी ऑफ नेचुरल हिस्ट्री के सहयोग से आयोजित यह कार्यक्रम राजपुताना शाकुंतलम रिजोर्ट गांव रामनगर, भरतपुर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में अनुसूचित जाति राष्ट्रीय आयोग के सदस्य डॉ. स्वराज विधान मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर श्री अभय सिंह, डी. डी. एम नाबार्ड, सुश्री साधना गौड़, नारी मंच, श्री सुरजीत सिंह बंजारा, सोसायटी फॉर कल्चरल एंड नेचुरल हैरिटेज, श्री उमेशचंद्र गौड़ सीसीबीओएस, डॉ. सरिता मेहरा, डॉ. बी. के. गुप्ता सहायक प्राध्यापक एमएसजे कॉलेज भरतपुर उपस्थित थे। |
| 101 | आज के युवाओं में गांधीवादी मूल्यों का प्रचार: एक सेमिनार | 16 अक्तूबर, 2017 | हिमाचल प्रदेश | समिति द्वारा हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के सौजन्य से "आज के युवाओं में गांधीवादी मूल्यों का प्रचार' विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन 16 अक्तूबर, 2017 को किया गया। इस अवसर पर समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने युवाओं को गांधीजी के नेतृत्व करने की क्षमता और अहिंसा के सिद्धांतों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। समाजशास्त्र की प्राध्यापिका डॉ. श्रेया बक्शी ने गांधीवादी विचारों के विभिन्न आयामों के बारे में प्रतिभागियों को बताया। करीब 70 प्रतिभागी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। |
| 102 | मीडिया और सूचना साक्षरता पर कार्यशाला | 13–14 अक्तूबर, 2017 | पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला | पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में 13–14 अक्तूबर, 2017 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। पर्यावरण और सतत विकास में गांधीवादी तरीके को बढ़ावा देने के लिए आयोजित इस कार्यशाला का विषय था– मीडिया और सूचना साक्षरता। इसमें विश्वविद्यालय के करीब 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया। |
| 103 | शराबबंदी और महिला सशक्तिकरण पर एक दिवसीय कार्यशाला | 8 अक्तूबर, 2017 | रूद्रप्रयाग, उत्तराखंड | समिति की ओर से शराबबंदी और महिला सशक्तिकरण पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 8 अक्तूबर, 2017 को उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग में आयोजित किया गया। इसमें 12 गांवों की 400 महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत यज्ञ के साथ की गई। इस मौके पर विभिन्न महिला मंगल दलों की महिलाओं ने अपने क्षेत्रों में शराबबंदी लागू करने के लिए किए गए प्रयासों का जिक्र किया। महिला मंगल दल बडासु की महिलाओं ने शराबबंदी पर लघु नाटिका प्रस्तुत की। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 104 | "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और पंचायती राज" पर सेमिनार | 13–14 अक्तूबर, 2017 | कौसानी, उत्तराखंड | समिति द्वारा "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और पंचायती राज" पर सेमिनार का आयोजन 13–14 अक्तूबर 2017 को, गांधी स्मारक निधि के सौजन्य से किया गया। अनासक्ति आश्रम कौसानी, उत्तराखंड में आयोजित इस कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्रों के करीब 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम में अनेक सामाजिक कार्यकर्त्ता, वरिष्ठ गांधीजन और अन्य गणमान्य वक्ताओं ने ग्राम स्वराज, पंचायती राज, महिला सशक्तिकरण, जैविक खेती, पर्यावरण और प्रकृति व भारत के प्रत्येक गांव के समग्र विकास पर अपने विचार रखे। |
| 105 | प्रकृति–मानव–वन्यजीव, परस्पर सह अस्तित्व पर बच्चों की कार्यशाला | 10 अक्तूबर, 2017 | गुप्तकाशी उत्तराखंड, | समिति की ओर से डॉ. जैक्स विग्ने नेशनल स्कूल, गुप्तकाशी उत्तराखंड, के बच्चों की एक कार्यशाला 10 अक्तूबर को आयोजित की गई। इस कार्यशाला का विषय था– प्रकृति–मानव–वन्यजीव, परस्पर सह अस्तित्व। इसमें करीब 120 विद्यार्थियों ने भाग लिया। सामाजिक कार्यकर्ता श्री सी. पी. जोशी ने कार्यक्रम में पर्यावरण बचाने में बच्चों की भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रतिभागी विद्यार्थियों ने भी महात्मा गांधी और पर्यावरण विषय पर अपने विचार रखे। |
| 106 | प्रकृति–मानव–वन्यजीव, परस्पर सह अस्तित्व पर युवाओं की कार्यशाला | 11 अक्तूबर, 2017 | रूद्रप्रयाग उत्तराखंड | श्री अनुसूया प्रसाद बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अगस्तयमुनि, रूद्रप्रयाग उत्तराखंड में 11 अक्तूबर, 2017 को प्रकृति–मानव–वन्यजीव, परस्पर सह अस्तित्व पर युवाओं की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का संचालन समिति के गुलशन गुप्ता और श्रीमती रीता कुमारी ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के करीब 100 युवाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया। |
| 107 | पत्रकारिता का गांधीवादी दृष्टिकोण पर सेमिनार | 24 अक्तूबर, 2017 | फरीदाबाद, हरियाणा | मानव रचना विश्वविद्यालय फरीदाबाद में 24 अक्तूबर, 2017 को समिति की ओर से पत्रकारिता का गांधीवादी दृष्टिकोण विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ गांधीवादी श्री रमेश शर्मा, समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू प्रमुख वक्ता थे। इस अवसर पर महात्मा गांधी की पत्रकारिता के आज़ादी के संघर्ष में प्रभाव, सत्याग्रह पर उनके लेखन के प्रभाव, गांधीजी द्वारा निकाले गए जर्नल की आज़ादी की लडाई में भूमिका आदि विषयों पर गहनता से चर्चा की गई। कार्यक्रम में मानव रचना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन. सी. वाधवा, मीडिया स्टडीज विभाग की डीन डॉ. नीमो घर ने भी अपने विचार रखे। करीब 100 प्रतिभागी इस कार्यक्रम में शामिल हुए। |
| 108 | प्रदर्शनी | 11 अक्तूबर, 2017 | बवाना, दिल्ली | समिति द्वारा दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज बवाना में "महात्मा गांधी का युग और उनका जीवन" और "क्रांति से गांधी–राज से स्वराज" विषय पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 11 अक्तूबर, 2017 को खादी संकल्प के सहयोग से किया गया। |
| 109 | गांधीवादी नीतियां और आज की मीडिया विषय पर ऑरिएंटेशन कार्यक्रम | 30 अक्तूबर, 2017 | केंद्रीय विश्वविद्यालय, गंगटोक | समिति की ओर से 30 अक्तूबर, 2017 को सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय, गंगटोक में जनसंचार के विद्यार्थियों के लिए गांधीवादी नीतियां और आज की मीडिया विषय पर ऑरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका संचालन समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू और पूर्वोत्तर संयोजक गुलशन गुप्ता ने किया। इस अवसर पर वक्ताओं ने गांधीजी के पत्रकार और जनसंचारक के रूप की विशेषताओं की चर्चा की गई। विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के प्रवक्ता डॉ. आशीष नायक सहित करीब 40 विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया। |
| 110 | शैक्षणिक अभ्यासों में एकीकृत अहिंसक संप्रेषण | 31 अक्तूबर, 2017 | गंगटोक सिक्किम | समिति द्वारा शैक्षणिक अभ्यासों में एकीकृत अहिंसक संप्रेषण विषय पर एक दिवसीय ऑरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। हरकाम्या कॉलेज ऑफ एजूकेशन, गंगटोक, सिक्किम में आयोजित इस कार्यक्रम में कॉलेज के 130 विद्यार्थियों ने क्लास रूम में अहिंसक तरीके से अपनी बात संप्रेषित करने के गुर सीखे। |
| 111 | चम्पारण सत्याग्रह पर मोतिहारी में प्रदर्शनी | 2 अक्तूबर, 2017 | मोतिहारी, बिहार | गांधी जयंती के अवसर पर समिति द्वारा बिहार के मोतिहारी में चम्पारण सत्याग्रह पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने किया। इस प्रदर्शनी में चम्पारण सत्याग्रह पर आधारित 21 पैनल लगाए गए थे। इसका संचालन समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने किया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 112 | व्याख्यान केंद्र का शुभारंभ | 12 अक्तूबर, 2017 | सिवान, बिहार | सिवान के गांव नरेंद्रपुर में समिति द्वारा 12 अक्तूबर, 2017 को व्याख्यान केंद्र का शुभारंभ किया गया। इसका उद्घाटन बिहार विधानसभा अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी ने किया। यह कार्यक्रम एसईएमएएफ के सौजन्य से किया गया। |
| 113 | युवाओं में गांधीजी के विचारों का प्रसार :एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम | 5 अक्तूबर, 2017 | गोपालगंज, बिहार | समिति द्वारा बिहार के छपरा स्थित जयप्रकाश विश्वविद्यालय में "युवाओं में गांधीजी के विचारों का प्रसार" विषय पर एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 5 अक्तूबर, 2017 को किया गया। इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरिकेश सिंह, सुविख्यात गांधीवादी डॉ. रामजी सिंह, श्री विजय सिंह, सचिव गांधी आश्रम जलालपुर, प्रो. लालबाबू सिंह, श्री विद्याभूषण सिंह, डॉ. एम. वसीम, डॉ. वैकुंठ पंड्या ने किया। |
| 114 | महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरण की भूमिका–एक सेमिनार | 31 अक्तूबर, 2017 | कैमूर, | समिति द्वारा सोनवैली डवलपमैंट फाउण्डेशन, कैमूर, बिहार के सौजन्य से 31 अक्तूबर, 2017 को "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरण की भूमिका" पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र की 300 महिलाओं ने भाग लिया और अपने अनुभवों को साझा किया। |
| 115 | गांधी उत्सव | 2–4 अक्तूबर, 2017 | भागलपुर, बिहार | समिति द्वारा दिशा ग्रामीण विकास मंच के सौजन्य से 'गांधी उत्सव और सेमिनार' का आयोजन बिहार के भागलपुर में किया गया। इस मौके पर एक सद्भावना यात्रा भी निकाली गई। |
| 116 | वाद–विवाद प्रतियोगिता | 2 अक्तूबर, 2017 | कटिहार, बिहार | समिति द्वारा सर्वोदय आश्रम गांधीनगर के सौजन्य से बिहार के कटिहार में 9वीं व 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए स्वच्छता पर चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गांधी जयन्ती के मौके पर आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 400 लोगों ने भाग लिया। |
| 117 | वर्तमान संदर्भ में गांधी दर्शन और खादी व ग्रामोद्योग का महत्व पर कार्यशाला | 2 अक्तूबर, 2017 | अमृतपुर जिला वैशाली | समिति द्वारा कमतौलिया क्षेत्र लघु किसान एवं संसाधन विहीन समाज एसोसिएशन के सौजन्य से वर्तमान संदर्भ में गांधी दर्शन और खादी व ग्रामोद्योग का महत्व पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। |
| 118 | "महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ और ग्राम विकास" पर सेमिनार | 25 अक्तूबर, 2017 | छत्तीसगढ़ | समिति द्वारा छत्तीसगढ़ के अमदी घनतारी में "महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ–बेटी पढाओ और ग्राम विकास" पर सेमिनार का आयोजन, 25 अक्तूबर, 2017 को किया गया। नवीन अंकुर महिला मंडल छत्तीसगढ़ के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में क्षेत्र की विभिन्न पंचायतों से 300 महिलाओं ने भाग लिया। सेमिनार का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना, महात्मा गांधी द्वारा सुझाए गए रास्ते पर चलकर पंचायतों के माध्यम से ग्राम विकास करने के बारे में लोगों को जानकारी देना था। |
| 119 | गांधी जयन्ती पर श्रद्धांजली | 2–11 अक्तूबर, 2017 | लखनऊ, उत्तर प्रदेश | उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि वाराणसी के तत्वावधान में गांधी जयंती पर 2 से 11 अक्तूबर, 2017 तक अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों की शुरूआत श्रमदान से हुई। इसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाइक और माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने किया। |
| 120 | गांधीजी के रचनात्मक कार्य–एक संवाद | 30 अक्तूबर, 2017 | वाराणसी, उत्तर प्रदेश | समिति द्वारा पर्यावरण और सामाजिक शोध केन्द्र वाराणसी के सौजन्य से गांधीजी के रचनात्मक कार्यों पर एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। वाराणसी के लंका स्कूल ऑडिटोरियम में आयोजित इस कार्यक्रम में भूतपूर्व निदेशक ग्रामीण विकास श्री सुरेंद्र सिंह बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। |
| 120 | महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और किसान–एक सेमिनार | 31 अक्तूबर, 2017 | राजस्थान | समिति द्वारा जोर की ढ़ाणी के सौजन्य से सीकर में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और किसान विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार के अध्यक्ष श्री परमानंद जी ने किसानों के मुद्दों पर गांधी जी के संदर्भ में चर्चा की। कार्यक्रम में समिति के वरिष्ठ फेलो श्री बी. मिश्रा व प्रतिनिधि के रूप में श्री समीर बनर्जी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 122 | गांधी और धर्म विषय पर आयोजित गांधी मेले का समापन | 2 नवम्बर, 2017 | गांधी दर्शन | समिति द्वारा इंडियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज (आईएसजीएस) वर्धा के सौजन्य से तीन दिवसीय गांधी मेला का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। यह मेला आईएसजीएस के 40वें वार्षिक सम्मेलन के तहत आयोजित किया गया, जिसका समापन 2 नवम्बर, 2017 को हुआ। इस कार्यक्रम में शिक्षाविदों, लेखकों, प्राध्यापकों समेत कुल 500 लोगों ने भाग लिया। |
| 123 | नौवां सीएमएस वातावरण : फिल्म निर्माताओं को भारतीय वर्ग में 17 और अंतरराष्ट्रीय वर्ग में 14 पुरस्कार वितरित। | 2–6 नवम्बर, 2017 | गांधी दर्शन | समिति ने 9वें सीएमएस वातावरण की मेज़बानी की। यह भारत का एकमात्र अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण और वन्य जीवन फिल्म फैस्टिवल है, जिसका आयोजन इस बार गांधी दर्शन परिसर में 2 से 6 नवम्बर को किया गया। इस अवसर पर फिल्म निर्माताओं को विभिन्न वर्गों में 30 से अधिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन पुरस्कारों का चयन गोविन्द निहलानी की अध्यक्षता वाली ज्यूरी ने 113 नामांकित फिल्मों में से किया। इस बार इस फैस्टिवल की थीम थी–'कंजर्वेशन 4 वाटर' (9वां प्रतियोगी और 8वां यात्रा संस्करण) , जिसमें जलवायु परिवर्तन और पानी, विश्व में पानी के लिए संघर्ष, जलवायु की परिवर्तनशीलता, खाद्य और स्वास्थ्य असुरक्षा और पर्यावरण का विनाश जैसे मुद्दों को छुआ गया। |
| 124 | कनाडा के कलाकारों की गांधी स्मृति में प्रदर्शनी | 9 नवम्बर, 2017 | नई दिल्ली | समिति के संयोजन में गांधी स्मृति परिसर में महात्मा गांधी इंटरनेशनल फाउण्डेशन (एमजीआईएफ) मॉंट्रैल कनाडा के कलाकारों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें एमजीआईएफ के संस्थापक निदेशक श्री सूरज सदन और उनकी युवा कलाकारों की टीम के कलाकारों की कलाकृतियों का भी प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शनी का आयोजन 14 से 20 साल के युवा लोगों की प्रतिभा और विचारों को सामने लाने और महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों को कला के माध्यम से प्रदर्शित करने के उद्देश्य से किया गया था।<br><br>प्रदर्शनी का उद्घाटन 9 नवम्बर, 2017 को श्रीमती गीता शुक्ला शोध अधिकारी के संयोजन में हुआ। कनाडा, अमेरिका, फ्रांस और भारत के युवा कलाकारों की कलाकृतियों का इसमें प्रदर्शन किया गया। |
| 125 | जापान के वर्ल्ड पीस आर्ट प्रतिनिधिमंडल के साथ संवाद | 10 नवम्बर, 2017 | नई दिल्ली | समिति के तत्वावधान में जापान के वर्ल्ड पीस आर्ट एक्ज़ीबिशन के सदस्यों के साथ एक संवाद कार्यक्रम गांधी दर्शन में 10 नवम्बर, 2017 को आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम जापान और भारत के बीच शांतिपूर्ण रिश्तों को बनाए रखने के उद्देश्य से किया गया। जापान का यह प्रतिनिधिमंडल ललित कला अकादमी में आयोजित 25वें वर्ल्ड पीस आर्ट एक्जीबिशन कार्यक्रम में अपनी कला का प्रदर्शन करने हेतु आया था। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन अकादमी के प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. कृष्णा शेट्टी ने किया था। इसमें कलाकारों ने जापान के विभिन्न क्षेत्रों की बेहतरीन कलाओं के 211 नमूने पेश किए। यह कार्यक्रम मदर टेरेसा को उनकी 20वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि के रूप में था। |
| 126 | चरखा प्रशिक्षण कार्यक्रम | 18 नवम्बर, 2017 | नई दिल्ली | समिति द्वारा 18 नवम्बर, 2017 को सफदरजंग एन्कलेव स्थित ग्रीन फील्ड स्कूल में एक विशेष चरखा कताई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। समिति की ओर से प्रतिनिधि के रूप में सुश्री रेणु और श्री धर्मराज ने विद्यार्थियों को चरखा कताई की बारीकियां सिखाईं। इस कार्यक्रम में 450 से अधिक विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्साह से भाग लिया। सभी चरखा के बारे में जानने और कताई सीखने के प्रति उत्सुक थे। |
| 127 | समग्र योग (होलिस्टिक योगा) पर राष्ट्रीय कार्यशाला : एच 3 (स्वास्थ्य, प्रसन्नता और समरसता) | 10 से 11 नवम्बर 2017 | नई दिल्ली | गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और दौलतराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में समग्र योग (होलिस्टिक योगा) : एच 3 (स्वास्थ्य, प्रसन्नता और समरसता) पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 10 से 11 नवम्बर 2017 तक किया गया।<br><br>इस सम्मेलन का उद्देश्य होलिस्टिक योगा अर्थात समग्र योग की अवधारणा का उसके तीन पहलुओं हैल्थ, हैप्पीनेस और हारमनी (स्वास्थ्य, प्रसन्नता और समरसता) के दृष्टिकोण से विवेचना करना और व्यस्त शहरी जीवन के दौर में योग के समग्र और व्यवहारिक पहलू का प्रचार–प्रसार करना था। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 128 | विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार विषय पर सेवारत अध्यापकों का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम | 21–22 नवम्बर, 2017 | नई दिल्ली | समिति द्वारा एमिटी इंस्टीच्यूट ऑफ एजुकेशन, नई दिल्ली के सहयोग से विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार विषय पर सेवारत अध्यापकों का दो दिवसीय ऑरिएंटेशन कार्यक्रम 21–22 नवम्बर, 2017 को आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न विश्वविद्यालयों, स्कूलों और अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों से आए 130 प्रतिभागियों ने भाग लिया।<br>कार्यक्रम का उद्घाटन गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर फाउण्डेशन के अध्यक्ष और दिल्ली विश्वविद्यालय की विजिटिंग फैकल्टी व संचार विशेषज्ञ प्रो. टी. के. थामस ने किया। |
| 129 | चम्पारण के ऑटो चालकों को कौशल विकास प्रमाणपत्र वितरित | 24 नवंबर, 2017 | नई दिल्ली | भारत सरकार की कौशल विकास योजना के तहत समिति ने दिल्ली में पिछले 25 सालों से काम कर रहे चम्पारण के ऑटो चालकों के लिए पूर्व मान्यता कार्यक्रम आरंभ किया है। इस कार्यक्रम का आरंभ 21 सितम्बर 2017 को राजघाट स्थित गांधी दर्शन में किया गया था।<br>इस कार्यक्रम के अंतर्गत ऑटो चालकों को गांधी दर्शन में 24 नवम्बर, 2017 को आयोजित एक समारोह में प्रमाण पत्र वितरित किए गए। |
| 130 | "गांधी और सामाजिक न्याय" पर प्रदर्शनी | 25–26 नवम्बर, 2017 | नई दिल्ली | हरिजन सेवक संघ की ओर से किंग्सवे कैम्प में 25–26 नवम्बर, 2017 को अखिल भारतीय रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा "गांधी और सामाजिक न्याय" विषय पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में 22 पैनल लगाए गए, जिनका संयोजन समिति के प्रदर्शनी विभाग ने किया। |
| 131 | बच्चे और शांति निर्माण पर कार्यशाला आयोजित | 27 नवंबर, 2017 | नई दिल्ली | समिति के तत्वावधान में ज़ाफराबाद स्थित डॉ. ज़ाकिर हुसैन मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में "बच्चे और शांति निर्माण" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें करीब 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का संयोजन समिति के श्री दीपक पांडे, श्रीमती रीता कुमारी और श्री गुलशन गुप्ता ने किया।<br>इस कार्यशाला में गांधीजी की परस्पर सह अस्तित्व की अवधारणा को प्रमुख रूप से उठाया गया और विद्यार्थी कैसे शांति स्थापित करने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं, इस पर चर्चा की गई। |
| 132 | बापू के रचनात्मक कार्यक्रम पर परिचर्चा | 3 नवंबर, 2017 | सीवान, बिहार | समिति द्वारा बापू के रचनात्मक कार्यक्रम पर आधारित परिचर्चा 3 नवम्बर 2017 को बसन्तपुर बिहार के सिपन ट्रेनिंग हॉल में आयोजित की गई। सखिरी महिला विकास संस्थान बसंतपुर, सीवान, बिहार के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम के जरिए समाज सुधार में महिलाओं की भूमिका पर मुख्य रूप से चर्चा की गई।<br>कार्यक्रम का आरंभ 'सखिरी' के प्रबंधक ट्रस्टी द्वारा दीप प्रज्ज्वलन और महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित करने के साथ हुआ। कार्यक्रम में समिति के प्रतिनिधि के तौर पर सुश्री रचना उपस्थित थीं। इसमें 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। |
| 133 | रचनात्मक कार्यक्रम और महिलाओं की भूमिका विषय पर सेमिनार | 5 नवम्बर, 2017 | उत्तर प्रदेश | समिति ने बनवासी सेवा आश्रम गोविन्दपुर, रेनुकूट, सोनभद्र में 5 नवम्बर, 2017 को एक सेमिनार आयोजित किया। जिसका विषय था–रचनात्मक कार्यक्रम और महिलाओं की भूमिका। बनवासी सेवा आश्रम की अध्यक्षा सुश्री शोभा बहन के संचालन में आयोजित इस सेमिनार में आश्रम और आसपास की अनेक महिलाओं ने भाग लिया।<br>कार्यक्रम का आगाज शोभा बहन द्वारा महिला सम्मेलन के परिचय के साथ हुआ। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के समक्ष आने वाली अनेक समस्याओं का ज़िक्र किया और उन्हें कैसे गांधीवादी तरीके से हल किया जा सकता है, पर अपने विचार रखे। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 134 | पतरस में कार्यशाला | 17 नवम्बर, 2017 | उत्तर प्रदेश | समिति द्वारा पुरूषोत्तम श्रीराम डिग्री कॉलेज पतरस के सहयोग से कॉलेज परिसर में विवादों के समाधान विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन 17 नवम्बर, 2017 को किया गया। इस कार्यशाला में समिति का प्रतिनिधित्व पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता और प्रशिक्षु श्री दीपक पांडे ने किया।<br>कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीएसजेएमयू कानपुर के खेल सचिव डॉ. आर.पी. सिंह थे। उन्होंने अपने संबोधन में शिक्षा क्षेत्र में गुणात्मक सुधार और सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लोगों को अच्छी शिक्षा और नैतिक शिक्षा प्राप्ति के लिए सदैव प्रयास करते रहना चाहिए। |
| 135 | रचनात्मक कार्य के लिए स्वयंसेविता पर कार्यशाला | 17 नवम्बर, 2017 | उत्तर प्रदेश | रचनात्मक कार्य के लिए स्वयंसेविता विषय पर आधारित एक कार्यशाला का आयोजन 17 नवम्बर, 2017 को चौधरी रामगोपाल सिंह बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, अकबरपुर, झाबिया कानपुर में किया गया, जिसमें 180 विद्यार्थियों ने भाग लेकर कई लाभदायक चीजों का ज्ञान प्राप्त किया, जो उन्हें समाज के सक्रिय सदस्य के तौर पर काम आएगा।<br>समिति की ओर से पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता और श्री दीपक पांडे ने शिरकत की। उन्होंने प्रतिभागियों को नैतिक मूल्यों का ज्ञान दिया और उन्हें दैनिक जीवन में उपयोग करने के बारे में बताया। |
| 136 | वातावरण जागरूकता और हिमालय बचाओ पर कार्यशाला आयोजित | 9 से 10 नवम्बर, 2017 | उत्तराखंड | वातावरण जागरूकता और हिमालय बचाओ पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 9 से 10 नवम्बर, 2017 को ग्रामीण तकनीकी कॉम्पलैक्स, जी. बी. पन्त हिमालय वातावरण और विकास संस्थान कोसी कतरमाल, अलमोड़ा में किया गया। महिला हाट और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यशाला में ताकुला, हवालबैग और अलमोड़ा खंड की 19 ग्राम सभा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया।<br>कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक श्री किरीट कुमार मुख्य अतिथि थे, महिला हॉट की महासचिव श्रीमती कृष्णा बिष्ट ने आगंतुकों का अभिनंदन किया। समिति की ओर से गांधी दर्शन–मिशन समृद्धि के वरिष्ठ फेलो डॉ. बी. मिश्रा सम्मिलित हुए। |
| 137 | राष्ट्रवाद, धर्मनिरेपक्षता और अनेकत्व का पुनर्विष्कार : मीडिया, संभाषण और विखंडन पर सेमिनार | 11 से 12 नवम्बर, 2017 | असम | राष्ट्रवाद, धर्मनिरेपक्षता और अनेकत्व का पुनर्विष्कार : मीडिया, संभाषण और विखंडन पर दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन 11 से 12 नवम्बर, 2017 को गुवाहाटी में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन मिजोरम विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग द्वारा गुवाहाटी विश्वविद्यालय के संचार और पत्रकारिता विभाग के सहयोग से पूर्वोत्तर भारत में मीडिया शिक्षा की स्वर्ण जयंती के अवसर पर किया गया।<br>कार्यक्रम में इंडिया रिव्यू के सेवानिवृत संपादक श्री जे. वी. लक्ष्मण राव प्रमुख वक्ता के तौर पर उपस्थित थे। अपने संबोधन में श्री राव ने राष्ट्रवाद, मीडिया संभाषण और विकास नीतियों की चर्चा भारत और अमेरिका के संदर्भ में की। |
| 138 | छठा गांधी दर्शन–मिशन समृद्धि सम्मेलन आयोजित | 22 से 24 नवम्बर 2017 | महाराष्ट्र | महाराष्ट्र के वर्धा में छठा गांधी दर्शन–मिशन समृद्धि सम्मेलन का आयोजन 22 से 24 नवम्बर 2017 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री अरूण जैन, सीईओ पोलरिस कन्सलटिंग एवं सर्विसेज लिमिटेड, श्री शैलेष नवल, जिला कलेक्टर, श्री अपूर्व बजाज अध्यक्ष कमलनयन जमुनालाल बजाज फाउंडेशन, ग्लोसेल के श्री सबाहत अजीम, 'हिवारे बाजार' के सरपंच श्री पोपट राव पवार, श्री बसंत सिंह, डॉ. बी. डी. मिश्रा, श्री नरेंद्र मेहरोत्रा, श्री राम पप्पू उपस्थित थे। |
| 139 | स्वयंसेविता और रचनात्मक कार्य पर कार्यशाला का आयोजन | 25–26 नवम्बर, 2017 | कोलकाता, पं. बंगाल | सदैव उत्साह में भरे रहने वाले युवा श्रोता, पारंगत और कुशल विशेषज्ञों की टीम और छोटे मगर विपुल स्वयंसेवकों के समूह ने 'स्वयंसेविता और रचनात्मक कार्य' पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में खूब माहौल बनाया। दिनांक 25 से 26 नवम्बर, 2017 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और साल्ट लेक इंस्टीच्यूट फॉर पर्सनेलिटी डवलपमेंट के संयुक्त तत्वाधान में मोलाली युवा केन्द्र कोलकाता में आयोजित इस कार्यशाला में समिति की ओर से श्री शकील खान सम्मिलित हुए। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 140 | अंतर विद्यालय वन्दे मातरम् रोलिंग ट्राफी प्रतियोगिता | 5 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | दिल्ली और एनसीआर के 16 स्कूलों के करीब 150 बच्चे अंतर विद्यालय वन्दे मातरम रॉलिंग ट्रॉफी में प्रतिभागिता के लिए गांधी दर्शन में जुटे। दिनांक 5 दिसम्बर को हुए इस कार्यक्रम में इस वर्ष कबीर, बुल्ले शाह, तुलसीदास, गुरु नानक, मीरा, अमीर खुसरो और अन्य संतों और दार्शनिकों को याद किया गया।<br>इस अवसर पर बच्चों ने उत्साह से, मीरा बाई, तुलसीदास, अमीर खुसरो, कबीर द्वारा रचित भजनों 'आज रंग है' 'छाप तिलक सब छीनी' 'रामचन्द्र कृपालु भजमन' 'मेरो तो गिरधर गोपाल' को प्रस्तुत किया। बच्चों ने राग यमन, भैरवी, भीमप्लासी पर आधारित विभिन्न रचनाओं को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संतों की कविताओं के जरिए, आपसी प्रेम, भाईचारा, आंतरिक शांति के संदेशों को प्रसारित किया गया। |
| 141 | गांधी विनिमय कार्यक्रम | 7–10 दिसंबर, 2017 | महाराष्ट्र | गांधी विनिमय कार्यक्रम के तहत वर्धा, महाराष्ट्र स्थित जेड. पी. स्कूल के 25 विद्यार्थियों और 7 अध्यापकों ने 7 से 10 दिसंबर को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति का दौरा किया। इस दौरे के दौरान विद्यार्थियों का परिचय मोहनदास करमचन्द गांधी से करवाने का प्रयास किया गया। विद्यार्थियों ने इस मौके पर समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के साथ कारीगर पंचायत के श्री बसंत जी से परिचर्चा की।<br>विद्यार्थियों का यह दौरा वर्धा कलेक्टर श्री शैलेष नवल की पहल पर डीआईईसीपीडी द्वारा चलाए गए कार्यक्रम के तहत रखा गया था। बच्चों ने इस अवसर पर राष्ट्रपति भवन और संसद भवन सहित अनेक ऐतिहासिक भवनों का अवलोकन किया। |
| 142 | गीता ज्ञान विमर्श व्याख्यान | 10 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | श्रीमद् भगवतगीता जयंती प्रवोत्सव कार्यक्रम के तहत 10 दिसंबर, 2017 को गांधी दर्शन में गीता ज्ञान विमर्श का आयोजन टैक्नो वैदिक मिशन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और समिति के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम में 76 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। इग्नू के पूर्व कुलपति और इतिहासकार प्रो. रविन्द्र कुमार ने मुख्य व्याख्यान दिया, प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता प्रो. दीनबंधु पांडे ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अनेक शिक्षाविद्, लेखक, स्कॉलर आदि ने इस कार्यक्रम में अपने विचार रखे। |
| 143 | सामुदायिक विकास के लिए युवा नेतृत्व–ऑरिएंटेशन कार्यक्रम | 8–10 दिसंबर 2017 | नई दिल्ली | समिति द्वारा नेहरू युवा केन्द्र संगठन, जिला सेंट्रल दिल्ली के सौजन्य से 'सामुदायिक विकास के लिए युवा नेतृत्व ऑरिएंटेशन कार्यक्रम' का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में 8 से 10 दिसंबर 2017 को किया गया। इसमें विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों से आए 15–29 आयु वर्ग के करीब 80 युवाओं (लड़के और लड़कियां) ने भाग लिया।<br>कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर श्रीमती गीता शुक्ला, शोध अधिकारी गांधी स्मृति और दर्शन समिति, सुश्री वन्दना, जिला युवा समन्वयक सेंन्ट्रल और नई दिल्ली और संसाधन व्यक्ति सुश्री शहाना परवीन, श्री अजहर खान, श्री रूपक उपस्थित थे।<br>तीन दिवसीय परिचर्चात्मक सत्र में विभिन्न जीवन कौशल मुद्दों पर प्रतिभागियों से चर्चा की गई। इन मुद्दों में से कुछ थे–व्यक्तित्व विकास, महिला सशक्तिकरण, एचआईवी एड्स, सहकर्मियों का दबाव, साइबर कानून, यौन उत्पीड़न, संचार कौशल और आत्म नियंत्रण, संपर्क बनाना, गहन सोच, चुनौतियों को स्वीकार करना, आत्म निर्देशित, सीखने की तत्परता आदि। |
| 144 | "किशोर व्यवहार की समझ" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम | 12 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | समिति द्वारा किशोर व्यवहार की समझ विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम गांधी दर्शन परिसर में 12 दिसंबर, 2017 को आयोजित किया गया, जिसे डॉ. राजीव नन्दी द्वारा संचालित किया गया। करीब 150 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।<br>इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान माता–पिता की भूमिका, माता–पिता का व्यवहार, जैसे मुद्दों को छुआ गया। डॉ. नन्दी ने निर्णय लेने के स्तर पर माता–पिता के व्यवहार के बारे में बोलते हुए अभिभावकों के द्विआयाम को रेखांकित किया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 145 | "पर्यावरण संरक्षण–गांधीवादी विचार और दृष्टिकोण के माध्यम से उपलब्धि के अवसर और चुनौतियाँ" पर राष्ट्रीय सेमिनार। | 14–15 दिसम्बर, 2017 | नई दिल्ली | समिति द्वारा पर्यावरण और भौगोलिक सूचना विज्ञान संस्थान, करियर प्लस एजूकेशनल सोसायटी, दिल्ली, भारत में समुदाय आधारित संस्थाओं के परिसंघ के संयुक्त तत्वावधान में "पर्यावरण संरक्षण–गांधीवादी विचार और दृष्टिकोण के माध्यम से उपलब्धि के अवसर और चुनौतियाँ" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।<br><br>दिनांक 14–15 दिसम्बर को डिप्टी स्पीकर हॉल, कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कृषि और किसान कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा राज थीं। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने कहा कि प्रदूषण का मुख्य कारण भारतीय परंपराओं से दूर होना है, इसे भारतीय वेद परंपराओं और ज्ञान–विज्ञान व आत्म संयम की मदद से कम किया जा सकता है। |
| 146 | जनता के स्वास्थ्य को बेहतर करने के लिए भारतीय जराचिकित्सा अकादमी के प्रयास | 16–17 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय जराचिकित्सा अकादमी का 15वां वार्षिक सम्मेलन 16–17 दिसंबर, 2017 को जवाहरलाल नेहरू ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया। इसका संयोजन एम्स के जराचिकित्सा विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रसून चटर्जी ने किया। उद्घाटन समारोह में समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत जी के अतिरिक्त प्रो. जी. एस. शांति, श्री मैथ्यू चेरियन, डॉ. ए. बी. डे, डॉ. विनोद कुमार और डॉ. अरविन्द जैन सहित देश के विभिन्न भागों से आए 200 चिकित्सक उपस्थित थे। |
| 147 | आदिवासी विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए ऑरिएंटेशन कार्यक्रम | 16 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा नेहरू युवा केन्द्र संगठन के सौजन्य से 16 दिसंबर, 2017 को आदिवासी युवकों के उत्थान हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आदिवासियों के उत्थान की इस यात्रा का आरंभ छत्तीसखंड, झारखंड और ओडिशा के आदिवासी युवाओं में कौशल विकास करने के उद्देश्य से आयोजित ऑरिएंटेशन कार्यक्रम के साथ हुआ। आदिवासी विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और श्री बसंत ने 200 विद्यार्थियों के साथ वार्ता की। |
| 148 | सामुदायिक विकास में युवा नेतृत्व के लिए ऑरिएंटेशन कार्यक्रम | 18–20 दिसंबर 2017 | नई दिल्ली | समिति द्वारा नेहरू युवा केन्द्र, जिला सेंट्रल दिल्ली के सहयोग से 'सामुदायिक विकास के लिए युवा नेतृत्व ऑरिएंटेशन कार्यक्रम' का आयोजन 18 से 20 दिसंबर 2017 को राजघाट स्थित गांधी दर्शन में किया गया। इसमें करीब 120 युवाओं ने उत्तर पश्चिम, पश्चिम और दक्षिण पश्चिम जिला के 120 युवाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों के लिए अनेक सत्र आयोजित किए गए। इस अवसर पर नेहरू युवा केन्द्र संगठन के जिला युवा समन्वयक श्री अतुल पांडे, समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. ए. जमाल और कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू उपस्थित थे। |
| 149 | गांधी प्रश्नोत्तरी और कार्यशाला | 20 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | समिति द्वारा "आओ गांधी को जाने" शीर्षक से एक कार्यशाला का आयोजन सामुदायिक उत्थान बालबाड़ी विद्यालय, आजादपुर दिल्ली में 20 दिसंबर, 2017 को आयोजित किया गया। इसमें 110 प्रतिभागी शामिल हुए। इस मौके पर गांधी प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन हुआ, जिसका संचालन श्री गुलशन गुप्ता और श्रीमती रीता कुमारी ने किया।<br><br>प्रश्नोत्तरी में श्री सुनील साहू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान क्रमशः श्री सूरज यादव, सुश्री राखी और रीना कुमारी ने प्राप्त किया। सूरज कुमार को तीसरा स्थान मिला। सांत्वना पुरस्कार सुश्री नीतू को मिला। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 150 | प्रथम अनुपम व्याख्यान<br><br>हिमालय–बदलते परिदृश्य में हमारी संवेदनाओं के मापदंड | 22 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | प्रसिद्ध गांधीवादी पर्यावरणविद् स्व. श्री अनुपम मिश्र को श्रद्धांजलि स्वरूप उनके जन्मदिवस पर 'प्रथम अनुपम व्याख्यान का आयोजन गांधी दर्शन सभागार में 22 दिसंबर, 2017 को किया गया। इस मौके पर गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित जाने माने पर्यावरणविद् और सामाजिक कार्यकर्ता श्री चंडी प्रसाद भट्ट ने प्रथम व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिसका विषय था– हिमालय–बदलते परिदृश्य में हमारी संवेदनाओं के मापदंड। विभिन्न क्षेत्रों के करीब 400 लोग, जिनमें, शिक्षाविद्, स्कॉलर, लेखक, गांधीयन, सामाजिक कार्यकर्ता, मीडिया बिरादरी और अनुपम मिश्र के प्रशंसक शामिल थे, ने कार्यक्रम में शिरकत की। |
| 151 | डिजाइन बौद्धिकता पर प्रशिक्षण | 23 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | पोलरिस के अध्यक्ष श्री अरूण जैन ने 23 दिसंबर, 2017 को गांधी स्मृति और दर्शन समिति का दौरा किया और समिति के स्टाफ सदस्यों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम "डिजाइन बौद्धिकता–डिजाइन दिमाग तैयार करना" संचालित किया। गांधी दर्शन परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।<br><br>परिचर्चात्मक सत्र के दौरान श्री अरूण जैन ने प्रशिक्षण बनाम सीखने के विचारों के विभिन्न बिन्दुओं पर जोर दिया। "हम सब क्या डिजाइन कर सकते हैं" की व्याख्या करते हुए उन्होंने विभिन्न उदाहरण पेश किए, जैसे मुगलों से लड़ने के लिए कैसे गुरू गोविन्द सिंह ने 'सिक्खवाद' को डिजाइन किया और कैसे इससे आत्म व्यक्तित्व में सुधार हुआ। |
| 152 | चम्पारण ऑटो चालक के दूसरे और तीसरे ग्रुप का प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित | 23–24 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत समिति द्वारा दिल्ली में कार्यरत चम्पारण के ऑटो चालकों के लिए पूर्व कौशल मान्यता कार्यक्रम सितंबर 2007 से चलाया जा रहा है। इसके अंतर्गत चालकों के दूसरे और तीसरे समूह का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। दूसरे समूह के ऑटो चालकों का प्रशिक्षण 23–24 दिसंबर, 2017 को गांधी दर्शन, राजघाट पर संपन्न हुआ। इसमें 34 प्रतिभागी सम्मिलित हुए।<br><br>इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के डीन डॉ. मनोज कुमार, इग्नू के पूर्व कुलपति डॉ. रविन्द्र कुमार, पीएनबी के वरिष्ठ प्रबंधक श्री एन. एल. कोठारी और प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. मंजू अग्रवाल उपस्थित थे। |
| 153 | कार्यशाला और गांधी प्रश्नोत्तरी | 27 दिसंबर, 2017 | तिहाड़, नई दिल्ली | समिति द्वारा तिहाड़ केन्द्रीय कारागार नं.–1 के कैदियों के लिए 27 दिसंबर को एक कार्यशाला "गांधी को जानो" आयोजित की गई। इसमें करीब 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर एक गांधी प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई। इस अवसर पर सीजे–1 के अधीक्षक श्री सुभाष चंद्र भी उपस्थित थे।<br><br>गांधी प्रश्नोत्तरी के बाद एक परिचर्चात्मक सत्र भी हुआ, जिसमें श्री विश्वास गौतम ने गांधीजी के जीवन और दर्शन के बारे में कैदियों को बताया। |
| 154 | सृजन शक्ति संगम–सूक्ष्म गांधी की खोज में | 28 दिसम्बर, 2017 से 1 जनवरी 2018 | नई दिल्ली | समिति द्वारा सनातन किष्किंधा मिशन और भारत विकास संगम के सहयोग से सृजन शक्ति संगम का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में 28 दिसम्बर, 2017 से 1 जनवरी 2018 तक किया गया। कार्यक्रम में रचनात्मक कार्यों पर अपने अनुभव बताने के लिए अपने–अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ मौजूद थे।<br><br>इस कार्यक्रम में जाने–माने लोग रचनात्मक कार्यों पर अपने अनुभवों को बताने के लिए उपस्थित थे। श्रोताओं में देश के विभिन्न भागों से आए करीब 45 युवा स्वयंसेवक और 100 सामाजिक कार्यकर्ता शामिल थे। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 155 | समिति स्टाफ के लिए 'क्षमता निर्माण कार्यक्रम' | 28 दिसंबर, 2017 | चंडीगढ़ | समिति द्वारा अपने स्टाफ सदस्यों के लिए 28 दिसंबर, 2017 को चंडीगढ़ में क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 40 सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा भी की गई। |
| 156 | वाराणसी व्याख्या केन्द्र के विद्यार्थियों का संगीतमय प्रदर्शन | 30 दिसंबर, 2017 | नई दिल्ली | संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रोत्साहित वाराणसी के विभिन्न व्याख्या केन्द्रों के विद्यार्थियों ने गांधी दर्शन परिसर में दिनांक 30 दिसंबर, 2017 को संगीतमयी प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अर्द्ध शास्त्रीय संगीत पर आधारित चैति और कजरी प्रस्तुत किया। |
| 157 | बाल विवाह और दहेज प्रथा पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित | 3 दिसंबर, 2017 | चम्पारण बिहार | राजकीय बुनियादी विद्यालय चम्पारण द्वारा बाल विवाह और दहेज प्रथा पर लोगों को जागरूक करने के लिए एक अभियान की शुरूआत की गई। इस अभियान के तहत अभिभावकों को शपथ दिलाई गई कि वे बालपन में अपने बच्चों का विवाह नहीं करेंगे और दहेज का आदान–प्रदान नहीं करेंगे। बच्चों को भी बाल विवाह न करने के लिए प्रेरित किया गया।<br>दिनांक 3 दिसंबर, 2017 को विद्यालय प्राचार्य के नेतृत्व में स्टाफ और विद्यार्थियों ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को उनकी जयंती अवसर पर श्रद्धांजलि दी। |
| 158 | गांधी और बुद्ध के पथ पर : वैश्विक शांति के लिए एक सम्मेलन | 2–4 दिसम्बर, 2017 | हिमाचल प्रदेश | गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा 2–4 दिसम्बर, 2017 को हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में आयोजित सम्मेलन, ' वैश्विक शांति के लिए गांधी और बुद्ध के पथ पर' में देश के विभिन्न भागों से बौद्ध और गांधीवादी स्कॉलर जुटे। तीन दिवसीय इस सम्मेलन में बुद्ध और गांधी दर्शन के विभिन्न आयामों, जिनसे विश्व में शांति स्थापित करने के प्रयासों को बल मिले, को छुआ गया।<br>इस सम्मेलन का उद्घाटन पूज्यनीय दलाई लामा द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में, दलाई लामा ने मानवता की एकता का प्रसार करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि धार्मिक विविधता, जातीय पहचान के बावजूद, सभी मनुष्य समान हैं। |
| 159 | रचनात्मक कार्य के लिए राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक सम्मेलन | 8 से 10 दिसम्बर, 2017 | केरल | गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा केरल गांधी स्मारक निधि के सहयोग से तीन दिवसीय गांधी युवा संगम का आयोजन त्रिवेन्द्रम स्थित गांधी भवन में 8 से 10 दिसम्बर, 2017 को किया गया। यह महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह की तैयारियों को लेकर था। इसमें कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, पुडुचेरी और केरल से आए युवाओं ने भाग लिया।<br>इस कार्यक्रम का मुख्य जोर युवा पुरूषों और महिलाओं को गांधी द्वारा प्रतिपादित 18 रचनात्मक कार्यों को समझने में उनकी मदद करना था। |
| 160 | ग्रामीण बच्चों के उत्थान हेतु कार्यशाला | 27–31 दिसंबर, 2017 | पं. बंगाल | समिति द्वारा गूजर खरूई न्यू तरूण संघ, पं. बंगाल के सौजन्य से "गांधी और उनके विचारों के जरिए ग्रामीण बच्चों का उत्थान" विषय पर पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 27–31 दिसंबर, 2017 को पं. बंगाल में किया गया। इसमें 200 लोगों ने भाग लिया और 12 संसाधन व्यक्तियों ने इस कार्यशाला को संचालित किया। निकटवर्ती 11 जिलों के ग्रामीण बच्चो ने भी कार्यशाला में हिस्सा लिया। |
| 161 | पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं का क्षमता निर्माण पर प्रशिक्षण | 12 दिसंबर, 2017 | आंध्र प्रदेश | बापूजी युवा एसोसिएशन चित्तूर आंध्रप्रदेश और समिति के संयुक्त तत्वावधान में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं का क्षमता निर्माण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 12 दिसंबर, 2017 को चित्तूर के एनपीएस राजकीय महिला महाविद्यालय में किया गया। इसमें 160 प्रतिभागियों ने भाग लिया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 162 | बच्चे और क्षमता निर्माण | 15 दिसम्बर, 2017 | मणिपुर | समिति द्वारा महिला और बाल देखभाल मिशन के सौजन्य से "बच्चे और क्षमता निर्माण" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन 15 दिसम्बर, 2017 को मणिपुर के जिला इम्फाल स्थित लेइकाई में आयोजित किया गया। इसमें मणिपुर के अलग–अलग क्षेत्रों से आए 102 बच्चों ने भाग लिया। |
| 163 | एक शाम शहीदों के नाम | 20 जनवरी, 2018 | नोएडा, उत्तर प्रदेश | समिति द्वारा भारत विकास परिषद नोएडा के सौजन्य से 20 जनवरी, 2018 को एक शाम शहीदों के नाम का आयोजन नोएडा में किया गया। इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायक पद्मश्री श्री कैलाश खेर और पद्मश्री श्रीमती मालिनी अवस्थी ने अपनी स्वरलहरियों से शहीदों और देश के लिए अपनी जान न्यौछावर करने वाले वीर बहादुरों को श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस कार्यक्रम में करीब 2000 लोगों ने शिरकत की। |
| 164 | महात्मा गांधी का 70वां शहीदी दिवस | 30 जनवरी, 2018 | नई दिल्ली | महात्मा गांधी के 70वें शहीदी दिवस के मौके पर गांधी स्मृति में 30 जनवरी, 2018 को श्रद्धांजलि समारोह व सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैंकेया नायडू, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सहित अनेक गणमान्य लोगों ने राष्ट्रपिता को श्रद्धासुमन अर्पित किए। |
| 165 | विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार पर दिल्ली होमगार्ड्स का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम | 11–12 जनवरी, 2018 | नई दिल्ली | समिति द्वारा विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार पर दिल्ली होमगार्ड्स का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम 11–12 जनवरी, 2018 को राजा गार्डन दिल्ली में आयोजित किया गया। दिल्ली होमगार्ड एसोसिएशन के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में 150 होमगार्डों ने बापू के अहिंसा के सिद्धांत को उनके दैनिक कार्यों में लागू करने के गुर सीखे। |
| 166 | अमृत कृषि खेती और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य | 11 से 13 जनवरी, 2018 | नई दिल्ली | गांधी स्मृति और दर्शन समिति में कार्यरत बागवानों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'अमृत कृषि' का आयोजन 11 से 13 जनवरी तक गांधी दर्शन परिसर में किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन एम्स के डॉक्टर सिद्धार्थ बिस्वास ने केन्द्रीय जल आयोग के उपनिदेशक श्री राजेश के सहयोग से किया। इस कार्यशाला में 60 लोगों ने भाग लिया। |
| 167 | गांधी को समझना–बच्चों के साथ एक परिचर्चा | 18 जनवरी, 2018 | नई दिल्ली | गांधी शांति संस्थान के सौजन्य से समिति ने 18 जनवरी, 2018 को गांधी स्मृति परिसर में 'अंडरस्टैंडिंग गांधी' अभियान के तहत परिचर्चा आयोजित की, जिसमें दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न संस्थानों के करीब 400 बच्चे सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, गांधी शांति संस्थान के अध्यक्ष श्री कुमार प्रशांत सहित संसाधन व्यक्तियों ने भी भाग लिया। |
| 168 | मूल्य निर्माण शिविर | 22 जनवरी से 2 फरवरी, 2018 | नई दिल्ली | बच्चों की बद्धिमत्ता को निखारने, उनकी कौशल शक्ति को बढ़ाने और अंतरराज्यीय संस्कृति के आदान–प्रदान की पृष्ठभूमि में समिति द्वारा 10 दिवसीय मूल्य निर्माण शिविर का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। दिनांक 22 जनवरी से 2 फरवरी, 2018 तक आयोजित इस शिविर में बनवासी सेवा आश्रम उत्तर प्रदेश, गरूड़ांचल विद्यापीठ बेलबेरी, मेघालय, श्री केदारनाथ बद्री मानव श्रम समिति उत्तराखंड और दस्तक सामाजिक संस्था द्वारहाट उत्तराखंड से आए 100 बच्चों ने भाग लिया। |
| 169 | चम्पारण ऑटो ड्राइवर के लिए पूर्व कौशल मान्यता कार्यक्रम | जनवरी, 2018 | नई दिल्ली | प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत चम्पारण बिहार के ऑटो ड्राइवर, जो अब दिल्ली में रह रहे हैं, के लिए पूर्व कौशल मान्यता कार्यक्रम का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 170 | परंपरागत वस्त्रों और हैंडीक्राफ्ट पर चार दिवसीय कार्यशाला | 27 जनवरी से 1 फरवरी, 2018 | अरूणाचल प्रदेश | समिति द्वारा परंपरागत वस्त्रों और हैंडीक्राफ्ट पर चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, अरूणाचल प्रदेश के सहयोग से दिनांक 27 जनवरी से 1 फरवरी को किया गया। इस कार्यक्रम में अरूणाचल प्रदेश के जिला एंजो से 20 प्रतिभागियों भाग लिया, इन्हें विशेषज्ञों ने प्रशिक्षित किया। |
| 171 | अरूणाचल प्रदेश की परंपरागत औषधियों के प्रयोग पर कार्यशाला आयोजित | 1 फरवरी, 2018 | अरूणाचल प्रदेश | जिला ग्रामीण विकास अभिकरण द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 31 जनवरी से 1 फरवरी 2018 तक एंजो जिला, अरूणाचल प्रदेश में किया गया। इसका विषय था– अरूणाचल प्रदेश की परंपरागत औषधियों के प्रयोग। इसमें चयनित 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया। |
| 172 | राष्ट्र की सेवा में गांधीवादी दर्शन विषय पर युवा कार्यशाला आयोजित | 7 जनवरी, 2018 | तमिलनाडु | समिति द्वारा राष्ट्र सेवा में गांधीवादी दर्शन विषय पर युवा कार्यशाला का आयोजन 6 से 7 जनवरी 2018 को तमिलनाडु सर्वोदय मंडल मदुरै की करूर और डिंडीगुल शाखाओं में किया गया। इस कार्यक्रम में अन्य प्रतिभागी संस्था गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, गांधीग्राम थी। कार्यक्रम में 140 लड़कियों, जिनमें अधिकांश एनएसएस विंग से थी शामिल हुई। इसके अलावा अनेक एनएसएस संयोजक और प्राध्यापकों ने इसमें भाग लिया। |
| 173 | 'सांप्रदायिक सौहार्द और शांति : गांधीवादी दृष्टिकोण | 29–30 जनवरी, 2018 | पश्चिम बंगाल | समिति द्वारा पश्चिम बंगाल गांधी शांति संस्थान के सौजन्य से 'सांप्रदायिक सौहार्द और शांति : गांधीवादी दृष्टिकोण विषय पर युवाओं और नागरिकों की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 29–30 जनवरी को आयोजित यह कार्यशाला कस्तूरबा भवन, सर्वोदय पाक्र हावड़ा में संपन्न हुई। |
| 174 | दस दिवसीय मूल्य निर्माण शिविर का समापन | 1 फरवरी, 2018 | नई दिल्ली | गांधी दर्शन परिसर में आयोजित दस दिवसीय मूल्य निर्माण शिविर का समापन 1 फरवरी 2018 को हुआ। इस शिविर में बनवासी सेवा आश्रम उत्तर प्रदेश, गरूड़ांचल विद्यापीठ बेलबेरी, मेघालय, श्री केदारनाथ बद्री मानव श्रम समिति उत्तराखंड और दस्तक सामाजिक संस्था द्वारहाट उत्तराखंड से आए 100 बच्चों ने भाग लिया। समापन समारोह में श्री नारायण भाई भट्टाचार्जी, श्री लक्ष्मीदास, श्री मौहम्मद अली आज़ाद अंसारी, श्री बसंत, डॉ. जैकब, श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति उपस्थित थे। |
| 175 | महर्षि वाल्मीकि शिक्षण महाविद्यालय के साथ संवाद कार्यक्रम | 12,13,15 व 16 फरवरी, 2018 | नई दिल्ली | क्षेत्र निरीक्षण कार्यक्रम के तहत वाल्मीकि शिक्षण महाविद्यालय के 120 विद्यार्थियों ने गांधी दर्शन परिसर का दौरा दिनांक 12, 13, 15 और 16 फरवरी, 2018 को किया। इस दौरे में विद्यार्थियों के साथ डॉ. मंजरी गोपाल, डॉ. कैलाश गोयल और डॉ. नीलम मेहता बाली आए थे।<br><br>इस अवसर पर विद्यार्थियों को गांधी दर्शन परिसर में स्थापित फोटो प्रदर्शनी 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' और क्ले मॉडल आधारित प्रदर्शनी 'आजादी की ओर भारत के कदम' का अवलोकन करवाया गया। इस यात्रा कार्यक्रम का संचालन श्रीमती नेहा अरोड़ा ने किया। इसके अतिरिक्त खादी से पोशाकों का उत्पादन और पुस्तक क्रय केन्द्र का दौरा भी उन्होंने किया। इस मौके पर विद्यार्थियों को महात्मा गांधी के विचारों और उनके आदर्शों, उनके व्यक्तित्व को परिवर्तित करने की यात्रा आदि से अवगत करवाया गया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 176 | 'राष्ट्रीय एकता और युवाओं के लिए प्रेरणा' पर शिविर | 14 से 16 फरवरी, 2018 | नई दिल्ली | समिति द्वारा नेहरू युवा केन्द्र संगठन के सौजन्य से 'युवाओं के लिए राष्ट्रीय एकता और प्रेरणा' विषय पर शिविर का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में 14 से 16 फरवरी को किया गया। इस शिविर में अलग–अलग राज्यों के युवाओं ने भाग लिया, जिन्होंने विस्तृत मुद्दों पर विचार–विमर्श किया। इसके अतिरिक्त जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आए संसाधन व्यक्तियों के द्वारा समूह अभ्यास और अनुभवों पर चर्चा की गई। |
| 177 | बा के 74वें निर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि | 22 फरवरी, 2018 | नई दिल्ली | बा के 74वें निर्वाण दिवस पर गांधी दर्शन राजघाट परिसर में 22 फरवरी, 2018 को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गांधी स्मृति और दर्शन समिति के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 250 लोगों ने भाग लिया। |
| 178 | विशेष बच्चों द्वारा उत्कृष्ट कार्यक्रम की प्रस्तुति | 25 फरवरी, 2018 | नई दिल्ली | आनन्द सिंह स्मारक सोसायटी द्वारा समिति के सौजन्य से से 25 फरवरी 2018 को 21वां वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विशेष बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल विशिष्ट अतिथि थे। अन्य गणमान्य व्यक्तियों में श्री एस. के. रूंगटा, महासचिव एनएफबी, श्री अमित गुप्ता आदि उपस्थित थे।<br><br>इस अवसर पर विशेष बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इन बच्चों की अनूठी कलाओं को देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। प्रज्ञा ज्योति अंध छात्रावास के बच्चों की ओर से वेदों के श्लोकों का पाठ किया गया। अतिथियों ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि श्री गजेंद्र सोलंकी द्वारा ओजपूर्ण कविताओं का पाठ किया, जिसे दर्शकों की खूब सराहना मिली। |
| 179 | चम्पारण के आटो ड्राइवरों हेतु कौशल मान्यता कार्यक्रम आयोजित | 4,19, 25 व 26 फरवरी, 2018 | नई दिल्ली | प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत समिति द्वारा संचालित कौशल विकास केन्द्र द्वारा 4,19, 25 व 26 फरवरी को चम्पारण के आटो ड्राइवरों हेतु कौशल मान्यता कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 8वें, 9वें, 10वें और 11 वें समूह के प्रतिभागियों को परीक्षा उपरान्त प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।<br><br>इन कार्यक्रमों में श्री बसंत जी, श्री आदित्य पटनायक, श्री प्रशांत श्रीवास्तव, डॉ. मंजू अग्रवाल, श्री विश्वास गौतम, श्री पवन कुमार और श्री ललन राम ने बतौर रिसोर्स पर्सन ऑटो ड्राइवरों को जीवन निखारने के गुर सिखाए। |
| 180 | गांधी दर्शन और शांति पत्रकारिता पर सेमिनार और कार्यशाला का आयोजन | 21–22 फरवरी, 2018 | असन | समिति द्वारा तेजपुर विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के सौजन्य से गांधीवादी दर्शन और शांति पत्रकारिता पर सेमिनार और कार्यशाला का आयोजन 21–22 फरवरी, 2018 को किया गया।<br><br>इस दो दिवसीय कार्यशाला में मीडिया क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा शांति पत्रकारिता का विषय समझाते हुए महात्मा गांधी के अनुभवों और विचारों पर व्याख्यान दिया। |
| 181 | 'विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार' विषय पर ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित | 5–6 फरवरी, 2018 | जम्मू–कश्मीर | समिति द्वारा शेर–ए–कश्मीर पुलिस अकादमी उधमपुर के सौजन्य से 5–6 फरवरी, 2018 को जम्मू कश्मीर पुलिस के कर्मचारियों के लिए उधमपुर में एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस ओरिएंटेशन कार्यक्रम में जम्मू कश्मीर पुलिस के डीएसपी, एसएचओ रैंक के 50 अधिकारी और अकादमी के 150 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 182 | युवा स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यशाला | 3–4 फरवरी, 2018 | उत्तर प्रदेश | समिति द्वारा इलाहाबाद फाउण्डेशन के सौजन्य से 2 दिवसीय युवा स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 164 युवाओं ने भाग लिया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य युवाओं को रचनात्मक कार्यों के माध्यम से स्वयंसेवा के लिए प्रेरित करना था। |
| 183 | वनस्पति और जीव संरक्षण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण | 3–4 फरवरी, 2018 | सीतामढ़ी, बिहार | समिति द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र सीतामढ़ी के सौजन्य से "पर्यावरण संरक्षण–उपलब्धियां और चुनौतियां' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेश शर्मा थे |

# महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि

गांधी जयंती पर भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वैंकेया नायडू, गांधी स्मृति में बलिदान स्थल पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। उनके साथ हैं माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा

भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी गांधी स्मृति में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा एवं समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान उनके साथ है।

## गांधी जयंती मनाई गई

महात्मा गांधी की 148वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्तूबर, 2017 को गांधी स्मृति में माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैंकेया नायडू के नेतृत्व में देश ने राष्ट्रपिता को श्रद्धासुमन अर्पित किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह, श्रीमती गुरशरण कौर, संस्कृति मंत्री और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि कार्यक्रम के आरंभ में दिल्ली, एनसीआर और गुजरात विद्यापीठ, कुमार विनय मंदिर, गुजरात श्री सुंदरलाल अंगूरीदेवी जूनियर हाई स्कूल, पिलूखनी, नेहर, मथुरा, उत्कर्मिक माध्यमिक विद्यालय बढरवा लखनसेन, ढांका, पूर्वी चम्पारण, निर्मला देशपांडे संस्थान पानीपत, हरियाणा, राजकीय मध्य विद्यालय, चन्द्रहैया, मोतिहारी से आए 400 बच्चों ने बापू को संगीतमय श्रद्धांजलि दी। इसका संचालन "स्वर तृष्णा" के श्री सुधांशु बहुगुणा ने किया। खड़ताल पर श्री अक्षत मिश्रा ने साथ दिया, सैंट कोलम्बस स्कूल के विद्यार्थी श्रीकृष्ण प्रसन्ना ने बांसुरी पर संगत की। हरिजन सेवक संघ से आए करीब 30 बच्चों ने इस मौके पर चरखा कताई की। विभिन्न धर्मगुरूओं ने इस प्रार्थना सभा में शिरकत की।

माननीय संस्कृति मंत्री और समिति के उपाध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके साथ संस्कृति मंत्रालय की सचिव श्रीमती रश्मि वर्मा और अतिरिक्त सचिव डॉ सुजाता प्रसाद भी है।

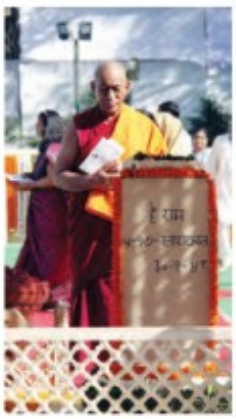


संयुक्त राष्ट्र के राष्ट्रीय सूचना अधिकारी श्री राजीव चन्द्रन, संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री एंटोनियो गुतरस का संदेश पढ़ते हुए। (दाएं) लामा चोसपेल गांधीजी को श्रद्धांजलि देते हुए (बाएं)

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते हुए पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह। पीछे खड़े है माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा

इस अवसर पर आयोजित भक्ति संगीत कार्यक्रम में प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक पद्मश्री मधुप मुद्गल ने कबीर, तुलसी, मीरा के भजनों को अपने मधुरकंठ से स्वरबद्ध किया।

हरिजन सेवक संघ के बच्चे कताई करते हुए। (नीचे) विभिन्न विद्यालयों और संस्थानों के बच्चे देशभक्ति गायन और चरखा कताई से महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते हुए।

पद्म श्री पंडित मधुप मुद्गल भक्ति संगीत प्रस्तुत करते हुए।

श्री सुधांशु बहुगुणा बाल बांसुरी वादक कृष्णा प्रसन्ना का परिचय माननीय प्रधानमंत्री से करवाते हुए।

## महात्मा गांधी का 70वां बलिदान दिवस

महात्मा गांधी के 70वें शहीदी दिवस के मौके पर गांधी स्मृति में 30 जनवरी, 2018 को श्रद्धांजलि समारोह व सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैंकेया नायडू, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सहित अनेक गणमान्य लोगों ने राष्ट्रपिता को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

इस सर्व धर्म प्रार्थना सभा में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गुरूशरण कौर, डॉ. हर्षवर्धन, केन्द्रीय विज्ञान, तकनीकी, वन एवं पर्यावरण मंत्री, डॉ. महेश शर्मा, केन्द्रीय संस्कृति राज्य मंत्री और उपाध्यक्ष गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, महात्मा गांधी के पौत्र एवं पं. बंगाल के पूर्व राज्यपाल श्री गोपालकृष्ण गांधी, सिक्किम के पूर्व राज्यपाल डॉ. बी. पी. सिंह, महात्मा गांधी की पौत्री और समिति की पूर्व उपाध्यक्षा श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी, हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष श्री शंकर कुमार सान्याल, उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास, समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत, डॉ. सीता बिम्बराह, गिल्ड ऑफ सर्विसेज की संस्थापक निदेशक डॉ. वी. मोहिनी गिरी, एशियन हैरिटेज फाउण्डेशन के संस्थापक निदेशक डॉ. राजीव सेठी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

कार्यक्रम में दिल्ली और एनसीआर के 20 स्कूलों से आए 500 विद्यार्थी, जिन्होंने समिति द्वारा 22 जनवरी से 2 फरवरी, 2017 तक आयोजित मूल्य निर्माण शिविर में भी भाग लिया था, ने भाग लिया। ये बच्चे देश के विभिन्न राज्यों जैसेः– उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मेघालय और मध्यप्रदेश से आए थे और इन्होंने महात्मा गांधी को संगीतमयी श्रद्धांजलि अर्पित की। बच्चों ने कबीर, तुलसी, विनोबा भावे के भजनों की मनोहारी प्रस्तुति द्वारा महात्मा गांधी के विश्व शान्ति के संदेशो को अभिव्यक्त किया।

इस संगीतमय कार्यक्रम का संयोजन स्वर तृष्णा के श्री सुधांशु बहुगुणा ने किया। इस अवसर पर निम्नलिखित

(बाएं से दाएं) भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वैंकेया नायडू और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए, उनके पीछे माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा।

संस्थानों ने भाग लिया–गरूड़ाचल विद्यापीठ मेघालय, केदार बद्री मानव श्रम समिति उत्तराखंड, दस्तक सामाजिक संस्था उत्तराखंड, बनवासी सेवा आश्रम, उत्तरप्रदेश, बेला गांव झुग्गी, राजघाट, नई दिल्ली, बापा आश्रम आवासीय प्राथमिक विद्यालय, किंग्सवे कैम्प, दिल्ली, कस्तूरबा बालिका विद्यालय दिल्ली, एस्टर पब्लिक स्कूल, दिल्ली, मॉडर्न पब्लिक स्कूल, दिल्ली, के. ए. एम. एस. कॉन्वेंट पब्लिक स्कूल दिल्ली, जैन भारती मृगावती विद्यालय दिल्ली, गौर्स इंटरनेशनल स्कूल नोएडा, ईस्ट प्वाइंट स्कूल, वसुंधरा एन्कलेव, मीरा मॉडल स्कूल, दिल्ली, राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय दिल्ली, ग्रीन फील्ड स्कूल दिल्ली, बिलाबोंग हाई इंटरनेशनल स्कूल नोएडा, देव समाज मॉडर्न स्कूल दिल्ली, सेंट टेरेसा स्कूल, उत्तर प्रदेश, नंदी फाउण्डेशन, नन्ही कली दिल्ली। इसके अतिरिक्त समिति द्वारा प्रशिक्षित चम्पारण के ऑटो चालकों ने भी कार्यक्रम में उपस्थित होकर बापू को श्रद्धांजलि दी।

कार्यक्रम के बाद माननीय प्रधानमंत्री बच्चों के बीच जाकर उनसे मिले और उनसे संक्षिप्त बातचीत की।

केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा राज बापू को श्रद्धांजलि देती हुई।

राज्य सभा के उपसभापति श्री पी. जे. कूरियन (बाएं) और महात्मा गांधी की पौत्री श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी बापू को श्रद्धांजलि देते हुए।

बौद्ध सन्यासी पूजनीय कातसू सेन (दाएं) गांधीजी को श्रद्धांजलि देते हुए।

भजन गायक श्री अनुप जलोटा अपने साथियों सहित गांधीजी को श्रद्धांजलि देते हुए।

**मौन का क्षण**

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के 70वें बलिदान दिवस पर उन्हें मौन श्रद्धांजलि देता हुआ कृतज्ञ राष्ट्र

इस कार्यक्रम में हरिजन सेवक संघ दिल्ली के 30 बच्चों ने वरिष्ठ चरखा कताई कार्यकर्ता डॉ. सीता बिम्भरा, श्रीमती शीला, श्रीमती पूनम, सुश्री श्वेता की अगुवाई में चरखा चलाया।

विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों ने इस मौके पर एकत्र होकर सर्वधर्म प्रार्थना सभा में भाग लिया। बौद्ध, जैन, सिक्ख, पारसी, हिन्दू धर्म का पाठ श्रद्धांजलि का मुख्य आकर्षण रहा।

पद्मश्री अनूप जलोटा ने इस अवसर पर कबीर, तुलसी व मीरा के भजनों की प्रस्तुति दी।

सूर्य के अस्त होने के साथ, गांधीजी के प्रिय भजन 'रघुपति राघव राजा राम' को कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसे कार्यकक्रम में उपस्थित सभी ने गाया। इस गीत के साथ कार्यक्रम समापन की ओर अग्रसर हुआ, सांय 5 बजकर 17 मिनट पर महात्मा को मौन श्रद्धांजलि देकर कार्यक्रम का समापन किया गया।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति से कौशल विकास योजना के तहत प्रशिक्षित 200 ऑटो चालक भी समारोह में शामिल हुए।

समापन के बाद माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी बच्चों के बीच जाकर उनसे मिले। इससे बच्चे उत्साह से लबरेज हो गए।

# महत्वपूर्ण पहल

## नई तालीम केन्द्र का शुभारंभ

समिति द्वारा हैल्दी एजिंग इंडिया के सौजन्य से "अंतर पीढ़ी केन्द्र" (आईजीएलसी) का शुभारंभ नोएडा में जुलाई में किया गया। अपने आप में यह एक अनूठा केन्द्र हैं, जहां दोनों पीढ़ियों–सरकारी विद्यालयों के कक्षा 6 के वंचित बच्चे और उत्साहित शिक्षित वरिष्ठ नागरिकों को सशक्त बनाया जाएगा।

हैल्दी एजिंग इंडिया इस परियोजना के तहत अपने निम्नलिखित वादों/चुनौतियों को पूरा करने में सक्षम साबित हुई–

चुनौती 1– परियोजना को लागू करने के लिए मानव शक्ति की भर्ती।

चुनौती 2– नोएडा में आईजीएलसी को स्थापित करने के लिए जगह की खोज।

चुनौती 3– विद्यार्थियों का आकांक्षा, ज्ञान, मनोभाव और अनुभूति प्रश्नावली पर आधारित तरीके से चयन और मूल्यांकन।

चुनौती 4– वरिष्ठ शिक्षकों का मूल्यांकन।

चुनौती 5– चयनित शिक्षकों की क्षमता निर्माण।

केन्द्र की स्थापना के लक्ष्यों को पूरा करने में निम्नलिखित सदस्य शामिल थे–डॉ. प्रसून चटर्जी, संस्थापक अध्यक्ष एचएआई और आईजीएलसी परियोजना निरीक्षक, श्री अभिजीत गांगुली, प्रतिनिधि, सुश्री पुष्पलता, परियोजना समन्वयक एवं शोधार्थी, श्रीमती सुदेश लक्ष्मी, परियोजना सहायक, श्रीमती उमा चौधरी अध्यापक, श्री गुलशन नवीन, प्रशिक्षक, श्री अशोक आहूजा, श्री डी. डी. शर्मा, श्री चन्द्रशेखर रॉय और श्रीमती सरोज।

इस परियोजना के तहत 26 जुलाई को शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पहला सत्र पंजाबी बाग स्थित गुरू हरकिशन स्कूल की अध्यापिका सुश्री भूपिन्द्र सिंह द्वारा संचालित किया गया। उन्होंने 'मुस्कुराने का अधिकार' की व्याख्या करते हुए हौज खास के स्लम एरिया के बच्चों को रहन–सहन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बुजुर्ग शिक्षकों के साथ विभिन्न गतिविधियां की, जिनसे सबकी बचपन की यादें ताजा हो गई। उन्होंने उनसे कागज की कश्तियां और हवाई जहाज बनवाए और उनमें अपने पसंदीदा रंग भरने को कहा। उन्होंने इन सब गतिविधियों के माध्यम से बच्चों और बुजुर्गों की सामाजिक, व्यवहारिक, मनोवैज्ञानिक समझ, अनुभूति भागों को छुआ।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति व हैल्दी एजिंग इंडिया के तत्वावधान में नई तालीम अंतरपीढ़ी केंद्र की गतिविधियां जारी है।

दिनांक 30 जुलाई को द्वितीय सत्र डॉ. शिखा दीक्षित द्वारा संचालित किया गया। डॉ. दीक्षित पर्यावरण को समर्पित कई सरकारी परियोजनाओं की वरिष्ठ कार्यक्रम संयोजक रह चुकी हैं। उन्होंने विद्यार्थियों में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का निर्माण करने और, पर्यावरण–संस्कृति का समन्वय शिक्षा व्यवस्था में करने व इसे स्कूली बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों में व्यवहारिक स्तर पर लागू करने पर जोर दिया।

एनसीएसटीसी के वैज्ञानिक डॉ. पम्पोश कुमार ने परिकल्पना का सरलीकरण करते हुए इसे व्यवहारिक रूप में समझाया। उन्होंने सामुदायिक पर्यावरणीय लचीलेपन को पोषित करने की प्रासंगिकता और आवश्यकता पर बल दिया।

प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण और अंतरपीढ़ी केंद्र में तकनीक के माध्यम से नए विषयों को पढ़ाया जा रहा है।

दिनांक 4 अगस्त को सरदार पटेल कॉलेज लोदी रोड़ की हिन्दी प्राध्यापिका डॉ. अनुराधा ने प्रशिक्षण सत्र को संचालित किया। उन्होंने कुछ कहानियों और ऑडियो को सुनाया व उन पर आधारित वर्कशीट भरने को कहा। उन्होंने विद्यार्थियों को कक्षा में व्यवहार के कई सुझाव दिए। उन्होंने विद्यार्थियों को बिना उन्हें गलत ठहराए गलतियां सुधारने, आसान तरीके से सीखने और शबद लड्डी, शबद माला आदि के माध्यम से शिक्षा को दिलचस्प और आनंदमयी बनाने के तरीके सुझाए।

8 अगस्त को दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड़, दिल्ली की श्रीमती शालिनी ने सत्र का संचालन किया। एक प्रमुख प्रशिक्षक होने के नाते, उन्होंने अवलोकन, वर्गीकरण, विभेदीकरण, पहचान, व्याख्या, निष्कर्ष आदि कौशल पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने वर्कशीट पर अभ्यास भी करवाया। उन्होंने समग्र सामाजिक पृष्ठभूमि, जो हमारे विचारों को आकार प्रदान करती है व हमारी अनुभूति और व्यक्तित्व का निर्माण करती है, को ध्यान में रखते हुए कई दिलचस्प बिन्दुओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि मनोवृत्ति की बाधाओं को तोड़े बिना और वर्तमान परिस्थितियों की तर्कसंगत सोच को बढ़ावा दिए बिना, सतत परिवर्तन लाना असंभव है।

13 अगस्त को अंतरराष्ट्रीय विचारक और दार्शनिक श्री मंजुल भारद्वाज ने "शिक्षा में थियेटर और " सीखने के पारंपरिक और गैर पारंपरिक साधन" विषय पर प्रशिक्षण सत्र संचालित किया। उन्होंने शिक्षकों को विस्तार से गैर पारंपरिक व पारंपरिक तरीकों से प्रशिक्षण देने के टिप्स दिए। सबसे दिलचस्प बिन्दु जो उन्होंने उठाया, वह सामाजिक पृष्ठभूमि की समग्र तस्वीर को सामने लाना था, जो हमारी सोच को आकार देता है व, हमारी अनुभूति और हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

### "होप" का तंत्र, रचनात्मक परस्पर विनिमय और परिवर्तन की कहानी

इस केंद्र की स्थापना 14 सितंबर, 2017 को पूर्वा माध्यमिक विद्यालय सेक्टर, 12 नोएडा में की गई थी। इसमें बच्चों के दृष्टिकोण में उचित परिवर्तन, व्यवहार, संज्ञानात्मक योग्यता, आत्मविश्वास, स्वास्थ्य, स्वयं का सम्मान आदि पर ध्यान दिया गया। बुजुर्ग शिक्षकों से जो अनुभव सामने आए और जैसा उन्होंने साफगोई से बताया कि आईजीएसलसी के साथ उन्होंने अपने जीवन के मकसद को हासिल किया है, और वे अपने सहकर्मियों, परिवार और समाज से मिल रहे ज्यादा सम्मान से आनंद का अनुभव कर रहे हैं।

अभिभावकों के विचारों के अनुसार उनके बच्चे अब अनुशासित, आज्ञाकारी, सुसंस्कारी और वैज्ञानिक गतिविधियों, कला, भाषा, गणित, संगीत के माध्यम से नई चीजों को सीखने में उत्साह दिखाने वाले हो गए हैं। वे अब जोश से विद्यालय जाते हैं, अपना लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने के लिए ऊर्जा से जुट जाते हैं।

विद्यालय के अधिकारियों के अनुसार विद्यार्थियों की शिक्षा में निखार आया है। वे पढ़ाई में पहले से ज़्यादा रूचि ले रहे हैं और विद्यालय में बच्चों की उपस्थिति बढ़ गई है।

छठी कक्षा के सी सेक्शन में पढ़ने वाली रिंकी चौहान अपने तीनों सेक्शन ए, बी, और सी में प्रथम स्थान पर आई है। बी सेक्शन में पायल द्वितीय व पुष्पा तृतीय और ए सेक्शन में मौहम्मद फैज़ान तृतीय रहे। कई विद्यार्थी पहले 10

अंतरपीढ़ी केंद्र में "होप" द्वारा अभिभावक के मार्गदर्शन और प्रेम से विद्यार्थियों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जा रहा है।

स्थानों पर रहे। आईजीएलसी के सभी विद्यार्थी 60 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर उत्तीर्ण हुए।

उपलब्धियों का आनंद बच्चों के चेहरे पर खुशी, आंसू और मौन के भावों से देखा गया। बच्चे जीवन में अपना लक्ष्य पाने के लिए, मेहनत करने के लिए और बेहतर भविष्य के लिए निर्देश और सहयोग लेने के लिए प्रेरित थे। वे सकारात्मक, प्रेरित, प्रसन्न, ज्यादा विनम्र और जीवन पर्यन्त सीखने के लिए तैयार हो गए थे।

"एकीकृत शिक्षण केंद्र" का उद्देश्य समाज के वंचित तबके के विद्यार्थियों की स्कूल के कार्यों और विषयों को समझने में मदद करके, उनके स्तर को बढ़ाना है। इसके अतिरिक्त बच्चों को सांस्कृतिक विरासत और नैतिक मूल्यों का ज्ञान देना भी केंद्र का मुख्य कार्य है।

## कारगिल, जम्मू कश्मीर में राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक सम्मेलन

समिति द्वारा नेहरू युवा केंद्र कारगिल और लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास संघ के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक सम्मेलन का आयोजन कारगिल में 10 से 12 जुलाई 2017 को किया गया। इसका उद्घाटन प्रदेश के युवा व खेल मंत्री श्री सुनील शर्मा ने किया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. के. डी प्रसाद और अन्य गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित थे। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न भागों से आए 200 युवाओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम का आरंभ मुंशी हबीबुल्लाह मिशन स्कूल कारगिल के बच्चों के स्वागत गान से हुआ। कार्यक्रम के पहले सत्र में कारगिल के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों के लोक गीतों और नृत्यों ने दर्शकों का मन मोह लिया। इसके माध्यम से लोगों को कारगिल की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं को समझने का मौका मिला। भारत भर के युवाओं के समक्ष कारगिल की सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के प्रस्तुतिकरण ने सांस्कृतिक खाईयों के बीच सेतु निर्माण का काम किया और लोगों को एक–दूसरे की संस्कृतियों को समझने का मौका मिला।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए जम्मू कश्मीर के खेल व युवा मामलों के मंत्री श्री सुनील शर्मा ने युवाओं में स्वयंसेविता का प्रसार करने को वक्त की आवश्यकता बताया। उन्होंने नेहरू युवा केन्द्र के साथ मिलकर क्षेत्र में

स्वयंसेविता को बढ़ाने पर बल दिया। इस मौके पर उन्होंने 'महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र' का उद्घाटन भी किया।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए एलएएचडीसी कारगिल के अध्यक्ष काचो अहमद अली खान ने कहा कि जम्मू कश्मीर और लद्दाख एक ही क्षेत्र हैं और इन्हें समान सरकारी तवज्जो दी जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि कारगिल को केवल युद्ध क्षेत्र के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, इसका अपना सुंदर इतिहास और सांस्कृतिक पहचान है व यह लद्दाख क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल है। इसलिए स्वयंसेवकों की ये जिम्मेदारी बनती है, कि वे इस स्थल का प्रचार देश भर में करें।

सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री हाजिरा बानो ने भी स्वयंसेविता के बारे में अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि महिलाएं

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान कारगिल में युवाओं के सम्मेलन को संबोधित करते हुए।

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान कारगिल में युवाओं के सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए।

स्वंयसेवी कार्यों में अपना योगदान दे सकती हैं और उनके ऐसा करने से स्वयंसेविता के कार्यों में तेजी आएगी। उन्होंने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति से आग्रह किया कि वे महिलाओं को स्वयंसेविता से जोड़ने के लिए विशेषतः गांधीजी की 150वीं जयंती के संदर्भ में एक देशव्यापी मुहिम चलाएं। उन्होंने महिला स्वयंसेविता के उदाहरण देते

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए वक्तागण।

हुए चिपको आन्दोलन और वेंगारी मथाई केन्या के ग्रीन बेल्ट आंदोलन की चर्चा की।

तमिलनाडु से आए प्रतिभागी श्री नेल्सन ने प्रतिभागियों से अपेक्षा पर अपने विचार साझा किए, उन्होंने स्वयंसेविता पर भी विचार रखे। उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रतिभागी इस कार्यशाला में स्वयंसेविता के अलग तरीकों के बारे में जानेंगे और रचनात्मक कार्यों में स्वंयसेविता के जरिए समाज को अपने दृष्टिकोण से अवगत करवाएंगे।

द पीस गोंग के सदस्य सहायक प्राध्यापक डॉ. जावेद नकवी ने इस कार्यशाला की सराहना करते हुए कहा कि इस तीन दिवसीय कार्यशाला के जरिए स्वयंसेविता को सीखने और उसे व्यवहारिक रूप में अमल में लाने के तौर पर प्रतिभागियों को अद्भुत मंच मिला है। उन्होंने गांधीजी की स्वयंसेविता परिकल्पना के विभिन्न आयामों पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे इस कार्यशाला में सक्रियता से प्रतिभागिता करें और इसे सफल बनाएं।

सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री मार्जिया बानो ने इस मौके पर कविता पाठ किया। "स्वयंसेविता एक दयालु कला है" शीर्षक वाली इस कविता ने सभी के दिल को छुआ। इसके माध्यम से स्वयंसेवी कार्यों को बढ़ावा देने और मुसीबत में फंसे लोगों की मदद करने का आह्वान किया गया।

इग्नु के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. के. डी. प्रसाद ने बताया कि इग्नु, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सहयोग से कारगिल में महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र स्थापित करने जा रही है। इसके अतिरिक्त स्वंयसेविता पर आधारित कार्यक्रम भी आरंभ किया जाएगा, जिसका लक्ष्य भारत भर में 5 लाख स्वयंसेवक बनाना है।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि इस आयोजन का उद्देश्य युवाओं में गांधीजी के संदेशों को प्रसारित करना है। यह आयोजन एक शुरूआत भर है, समिति आने वाले दिनों में ऐसे सम्मेलन जम्मू कश्मीर के अन्य भागों में भी करेगी।

दूसरे सत्र में समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने स्वयंसेविता के विभिन्न आयामों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि कैसे युवा, समाज में रचनात्मक कार्य करके स्वयंसेवी बन सकते हैं।

यू. के. के पीएचडी स्कॉलर काचो फयाज अहमद ने स्वयंसेविता पर गांधी के सिद्धांतों का वर्णन किया। उनके मुताबिक स्वयंसेविता के लिए लोगों के मुद्दे और उनकी समस्याओं को जानना आवश्यक है। इस सत्र में बोलने वाले अन्य वक्ताओं में बिहार के रक्तदाता कार्यकर्ता विश्वास गौतम, लेह, लद्दाख से स्टेंजिन साल्डोन प्रमुख थे।

दूसरे दिन का प्रथम सत्र "स्वयंसेविता और कौशल विकास व परस्पर सह अस्तित्व" विषय पर केंद्रित था। इस सत्र

सम्मेलन में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मनभावन प्रस्तुति ने दर्शकों का मन मोह लिया।

में मार्जिया बानो ने जीवन कौशल, पीएचडी स्कॉलर श्री फयाज ने स्वंयसेविता और स्वंयसेवी क्षेत्र में प्रेरणा के रूप में महात्मा गांधी, दिल्ली के शुभम ने एनजीओ 'संस्कार शाला'' पर अपने विचार रखे।

संस्था 'रूट लद्दाख' के युवा कार्यकर्ता श्री मुजामिल हुसैन ने वन्यजीवन के अपने अनुभवों का प्रकटीकरण किया। श्रीनगर के डॉ. नदीम कादरी ने परस्पर सहअस्तित्व और पर्यावरण के लिए स्वयंसेविता पर अपने विचार प्रकट किए।

राष्ट्रीय युवा सम्मेलन में उपस्थित विद्यार्थियों को संबोधित करते इग्नु के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. के. डी. प्रसाद

शिक्षा और संचार व स्वयंसेविता विषय पर आधारित सत्र में श्री जाकिर जहक, सुश्री बेनिश पैरी, सुश्री मुनाजा शाह, श्री गुलशन गुप्ता और सुश्री हाजिरा बानो वक्ता के तौर पर उपस्थित थे।

श्री गुलशन गुप्ता ने सूचना, शिक्षा और संचार और इनके स्वयंसेविता के साथ संबंध पर अपने विचार रखे। उन्होंने नाइज़ीरिया में स्वयंसेवकों को प्रेरित करने और लोगों को इस काम में भाग लेने के लिए चलाए गए ऑनलाइन स्वयंसेविता अभियान की जानकारी भी दी।

तीसरे दिन की शुरूआत आर्यन गांव दार्चिक के दौरे के साथ हुई। ग्रामीणों ने वहां पहुंचे प्रतिभागियों का जोश से स्वागत किया। उनके अनूठे स्वागत को देखकर प्रतिभागी प्रसन्न हो गए। एक औपचारिक रंगारंग कार्यक्रम भी इस मौके पर स्थानीय लोगों ने किया। यह कार्यक्रम राजकीय माध्यमिक विद्यालय दार्चिक में किया गया, जहां सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के जरिए अतिथियों के सत्कार और सम्मान का अनुकरणीय उदाहरण पेश किया गया। इस कार्यक्रम में बच्चों ने वहां की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा के दीदार लोगों को करवाए।

समापन सत्र का आयोजन कारगिल में हुआ, जहां जम्मू कश्मीर विधान परिषद् के अध्यक्ष श्री हाजी इनायत अली मुख्य अतिथि थे। रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, गीत गायन और भाषण की प्रस्तुति ने इस कार्यक्रम को मोहक बना दिया। सभी प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में लिए गए अपने अनुभवों का प्रकटीकरण किया। प्रसिद्ध लद्दाखी गायक फैसल अशूर के खूबसूरत गीत ने कार्यक्रम को और खूबसूरत बना दिया।

(ऊपर) डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू सम्मेलन में एक सत्र को संबोधित करते हुए।

(नीचे) जम्मू कश्मीर सरकार के युवा एवं खेल मंत्री श्री सुनील शर्मा को सम्मानित करते हुए समिति के निदेशक एवं अन्य।

अपने समापन भाषण में श्री हाजी इनायत ने कारगिल जैसे क्षेत्र में ऐसा अद्भुत कार्यक्रम करने के लिए गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति व नेहरू युवा केंद्र की प्रशंसा की। "ऐसे कार्यक्रम युवाओं में स्वंयसेविता की भावना ही नहीं जगाते, अपितु इनके माध्यम से प्रेम, एकता और समुदायों के बीच प्रेम का फैलाव भी होता है। भारत एक विविधता भरा देश है और इस प्रकार के कार्यक्रम विविधता का सम्मान करना सिखाते हैं, जो आज की जरूरत है" उन्होंने कहा।

कारगिल नेहरू युवा केंद्र के युवा समन्वयक श्री सईद सज़्जाद ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी प्रतिभागियों, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और एलएएचडीसी कारगिल का धन्यवाद किया। कार्यकक्रम संयोजक डॉ. जावेद नकवी और समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने भी इस मौके पर अपने विचार प्रकट किए।

सम्मेलन के दौरान विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते कलाकार।

## गांधी मेला आयोजित

### सभ्यता और संस्कृति सार्वभौमिक परिकल्पनाएं हैं : प्रो. रामजी सिंह

गांधी दर्शन में गांधी मेला को सम्बोधित करते हुए प्रसिद्ध गांधीवादी प्रो. रामजी सिंह।

समिति द्वारा इंडियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज (आईएसजीएस) वर्धा के सौजन्य से तीन दिवसीय गांधी मेला का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। यह मेला आईएसजीएस के 40वें वार्षिक सम्मेलन के तहत आयोजित किया गया, जिसका समापन 2 नवम्बर, 2017 को हुआ। इस कार्यक्रम में शिक्षाविदों, लेखकों, प्राध्यापकों समेत कुल 500 लोगों ने भाग लिया।

1. गांधी मेला का उद्घाटन करते हुए हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष श्री शंकर सान्याल, उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास एवं समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत।
2. सिक्किम के पूर्व राज्यपाल डॉ. बी. पी. सिंह को सम्मानित करते समिति के निदेशक।
3. भारतीय विद्या भवन के बच्चे मंत्रोच्चार करते हुए।

इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रो. रामजी सिंह ने कहा कि ऐतिहासिक भारतीय संस्कृति हमें एक और अखंड बने रहने के लिए प्रेरित करती है। हमारा पूरा ध्यान किसी धर्म विशेष से लड़ने की बजाय मानवता की सुरक्षा पर होना चाहिए। आज अहिंसा के प्रचार की आवश्यकता है, यही युद्ध का एकमात्र विकल्प है।

कार्यक्रम में अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित हुए, जिनमें समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, डॉ. इमाम अहमद उमर इलियासी, मुख्य इमाम अखिल भारतीय इस्लाम ऑरगेनाइजेशन, प्रो. ए.डी.एन. वाजपेयी, भूतपूर्व कुलपति शिमला विश्वविद्यालय, श्री शंकर कुमार सान्याल, अध्यक्ष हरिजन सेवक संघ, श्री लक्ष्मीदास, अध्यक्ष अखिल भारतीय ग्रामोद्योग महासंघ, श्री कमल टावरी भूतपूर्व सचिव भारत सरकार, श्रीमती शैला राय अध्यक्ष आईएसजीएस, श्रीमती मंजूश्री मिश्रा गांधी निधि, श्री बसंत जी, आजीवन सदस्य आईएसजीएस, श्री सूरज सदन, प्रसिद्ध कलाकार, सुश्री मैरी एल्काइन फ्रांस और श्री नैथाइल लेपलटाइर संस्थापक कॉन्श्यिस फ्यूचर, फ्रांस शामिल थे।

कार्यक्रम का संचालन समिति की पुस्तकाल्याध्यक्षा श्रीमती शाश्वती झालानी ने किया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में वक्ताओं ने वैश्विक शांति स्थापना की आवश्यकता पर बल दिया।

वक्ताओं का कहना था कि धर्म और धार्मिक संगठन इस दिशा में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। इसके अलावा 2019 में आने वाली गांधीजी की 150वीं जयंती को मनाने के बारे में भी चर्चा की गई और जयंती समारोह के लिए अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का आह्वान भी किया गया।

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने अपने स्वागत भाषण में युवाओं को महात्मा गांधी की शिक्षाओं से जोड़ने का आह्वान किया।

गांधी दर्शन में आयोजित गांधी मेला को संबोधित करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता, शिक्षाविद, लेखक, इतिहासकार एवं विभिन्न क्षेत्रों से आए वक्तागण।

इस मौके पर कीर्ति प्रकाशन जयपुर की "गांधी विधि का सामयिक संदर्भ" और डॉ विनय कुमार के जर्नल "गांधी अध्ययन" का विमोचन भी किया गया।

इससे पूर्व उद्घाटन समारोह में भारतीय विद्या भवन मेहता विद्यालय के विद्यार्थियों ने श्री रवि धवन, श्रीमती रनला सरकार और श्री दीपक अग्रवाल के नेतृत्व में सर्व धर्म प्रार्थना की।

दिन के प्रथम सत्र का समापन राम धुनी के प्रस्तुतिकरण और प्रो॰ सी॰ पी॰ शर्मा के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

तीन दिवसीय इस मेले में निम्नलिखित सत्र हुए–

1. बुद्ध, गांधी, आध्यात्मिकता और धर्म
2. भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक प्रकृति : गांधी की प्रासंगिकता और योगदान
3. सार्वभौमिक शांति : गांधीवादी लेखन और संदर्भ
4. हिन्दुत्व : सिद्धांत और गांधीवादी व्याख्या
5. मूल्य और समाज : गांधीजी का आवर्धन
6. सांप्रदायिक शांति : गांधीवादी मार्ग
7. गांधी की पुनर्यात्रा : साहित्य, मीडिया और सिनेमा
8. धर्म : परिकल्पना, संदर्भ और गांधी
9. भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : गांधी की अनुगूंज
10. सामाजिक सौहार्द : आध्यात्मिक संदर्भ
11. भारतीय संस्कृति में अहिंसा : गांधी की विरासत
12. समाजिक–आर्थिक पुनर्निर्माण : गांधी का दृष्टिकोण
13. गांधी का मूल्य और तकनीक : समकालीन प्रासंगिकता

तीन विदसीय गांधी मेला में सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुतियां अन्य मुख्य आकर्षण थे। 31 अक्तूबर की शाम

को रियादुन सांस्कृतिक अकादमी द्वारा कथक नृत्य की प्रस्तुति की गई तथा 1 नवम्बर को इन्दु कला रंगमंच और फिल्म सोसाइटी द्वारा "आओ पंचायत खेले खेल" की रंगमंच प्रस्तुतियां पेश की गई।

## गांधी और बुद्ध के पथ पर : वैश्विक शांति के लिए एक सम्मेलन

गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा 2–4 दिसम्बर, 2017 को हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में आयोजित सम्मेलन, 'वैश्विक शांति के लिए गांधी और बुद्ध के पथ पर' में देश के विभिन्न भागों से बौद्ध और गांधीवादी स्कॉलर जुटे। तीन दिवसीय इस सम्मेलन में बुद्ध और गांधी दर्शन के विभिन्न आयामों, जिनसे विश्व में शांति स्थापित करने के प्रयासों को बल मिले, को छुआ गया।

धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में आयोजित वैश्विक शांति सम्मेलन का उद्घाटन करते परम पूजनीय श्री दलाई लामा। उनके साथ है हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास।

तिब्बती धर्मगुरू को स्मृति चिन्ह से सम्मानित करते श्री बसंत।

इस सम्मेलन का उद्घाटन पूजनीय दलाई लामा द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में, दलाई लामा ने मानवता की एकता का प्रसार करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि धार्मिक विविधता, जातीय पहचान के बावजूद, सभी मनुष्य समान हैं।

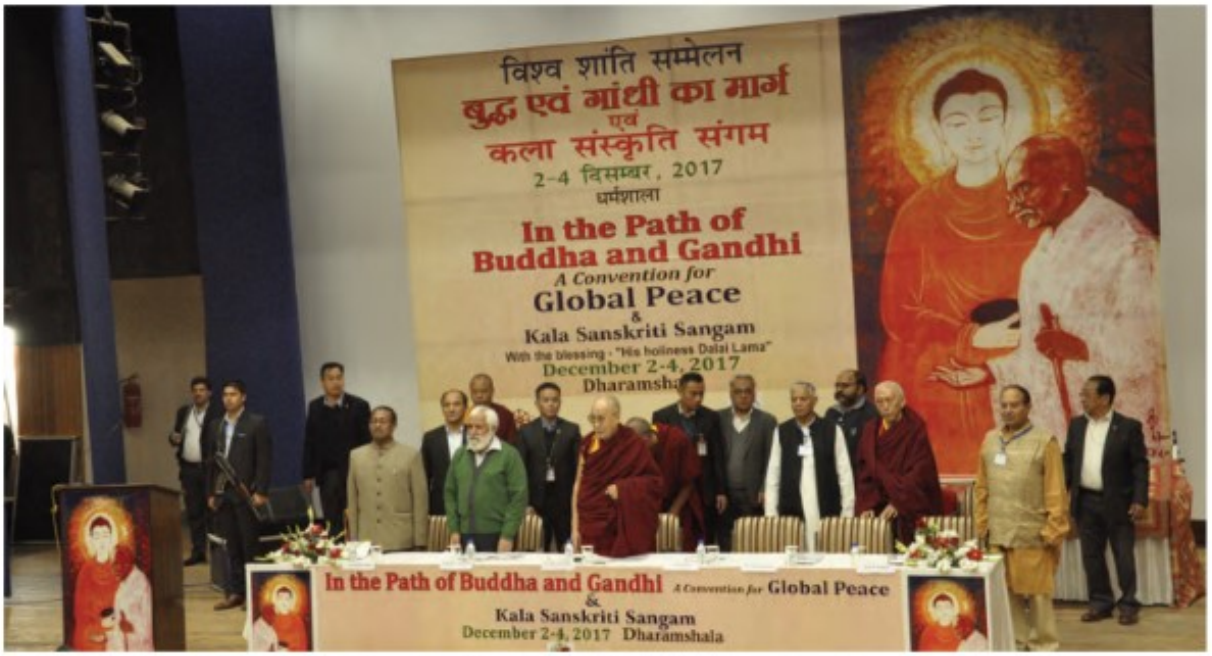


धर्मशाला में आयोजित वैश्विक शांति सम्मेलन "बुद्ध और गांधी के मार्ग में" के अवसर पर उपस्थित पूजनीय श्री दलाई लामा। उनके साथ है डॉ. रिनपोचे, प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, श्री लक्ष्मीदास एवं डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू।

उन्होंने कहा कि 21वीं सदी के युवा लोगों पर शांति के क्षेत्र में काम करने की महत्ती जिम्मेदारी है–केवल प्रार्थना ही नहीं, अपितु कार्यों के माध्यम से। "आप हिंसा को कम करने के लिए 3 हजार सालों तक प्रार्थना कर सकते हैं, लेकिन जब तक हम साथ मिलकर कार्य नहीं करेंगे, तब तक कुछ नहीं होगा।" उन्होंने चुटकी ली।

सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए श्री लक्ष्मीदास।

"आंतरिक शांति को बढ़ावा देने के लिए हमें स्वयं कार्य करना चाहिए और जलन, भौतिकतावादी प्रवृत्तियों और गैर जरूरी प्रतियोगिता से बचना चाहिए। "उन्होंने जोड़ा। उन्होंने कहा कि आज के विश्व में प्रसन्नता को बढ़ावा देने और सभी मनुष्यों की बेहतरी के लिए पुरातन भारतीय ज्ञान ज्यादा प्रासंगिक है।

सम्मेलन के उद्देश्य थे–

- अहिंसा पर बुद्ध और गांधी के दृष्टिकोणों को समझना।
- वैश्विक शांति में बुद्ध और गांधी के विचारों के महत्व को रेखांकित करना।
- बुद्ध और गांधी के पथ का अनुसरण करते हुए अहिंसक अनुभवों के अनुकरणीय उदाहरणों को रेखांकित करना और इन्हें कैसे विश्व में शांति स्थापित करने की दिशा में साझा किया जा सकता है इस पर विचार करना।

इस अवसर पर अन्य वक्ताओं में प्रो. कुलदीप सिंह अग्निहोत्री, कुलपति हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्री लक्ष्मीदास, श्री नारायण भट्टाचार्जी, श्री बसंत, डॉ. सामदोंग रिन्पोचे, डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, श्रीमती गीता शुक्ला, डॉ. ए. के. मर्चेन्ट, प्रो. एन. राधाकृष्ण शामिल थे।

सम्मेलन में विभिन्न कॉलेजों और स्कूलों से आए विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपने विचारों को साझा किया। समिति के स्टाफ और गांधी दर्शन एक्शन फेलो के प्रतिनिधियों ने भी इसमें अपनी उपस्थिति दर्ज की।

इस अवसर पर विभिन्न सत्र थे–

- समकालीन वैश्विक नीतियों में बुद्ध और गांधी विचारों का समावेश करना।
- बुद्ध और गांधी की अहिंसा की परंपरा।
- बौद्ध और गांधीवादी अभ्यासों से विवादों का समाधान।
- शांति की संस्कृति और परस्पर सह–अस्तित्व के लिए जीवन की निरंतरता।
- संवाद के लिए बुद्ध और गांधी की बौद्धिकता से परिपूर्ण और अहिंसक संचार।
- शांति की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए बौद्धों और गांधीवादी संस्थानों की भूमिका।
- शांति के लिए बच्चों, युवाओं और महिलाओं की भूमिका।
- अहिंसा को बढ़ावा देने की दिशा में बुद्ध और गांधी का शैक्षणिक दर्शन।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने अपने स्वागत भाषण में पूजनीय श्री दलाई लामा के कार्यक्रम में आने की स्वीकृति देने और इस सम्मेलन को अपनी उपस्थिति से गौरवमयी बनाने के लिए उनका आभार प्रकट किया। "हम श्रीमान दलाई लामा जी और सम्मेलन में आए अन्य विशिष्ट जनों से अहिंसा के विज्ञान और कला को सीखने आए हैं। "उन्होंने कहा। उन्होंने कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में बताते हुए कहा कि कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य बुद्ध और गांधी की विचारधारा के विभिन्न आयामों को समझना है।

उन्होंने गुरूदेव रविंद्रनाथ टैगोर, के उस कथन जिसमें उन्होंने बुद्ध और गांधी की सुंदर तुलना की है को उद्धृत किया। टैगोर कहते हैं," उन्होंने अपने स्वयं के समान कपड़े पहने हजारों लोगों को झोपड़ियों की सीमा पर रोक दिया। उन्होंने उनसे अपना समझकर बात की। उन्होंने अपनी भाषा मे उनसे बात की। यहां जीवंत सत्य अपने चरम पर था और इस कारण भारत की जनता ने उन्हें महात्मा नाम दिया था, जो उनका असली नाम साबित हुआ। उनके अलावा कौन ऐसा सोच सकता था कि सभी भारतीय उनके मांस और रक्त हैं? जब प्रेम का प्रसार भारत के दरवाजे पर हुआ तो उस दरवाजे को विस्तृत रूप से खोला गया। गांधी के आह्वान पर भारत ने नई महानता को प्राप्त किया, जैसा कि इससे पहले बुद्ध ने सभी जीवित प्राणियों के बीच सहानुभूति, करूणा और साथियों की भावना में सच्चाई की घोषणा कर भारत को महानता प्रदान की थी।"

उन्होंने कहा कि स्वयं में शांति की भावना लाकर, विश्व शांति के लिए बहुत कुछ किया जा सकता है।

सभी प्रतिभागियों और विशिष्ट अतिथियों का धन्यवाद प्रेषित करते हुए उन्होंने महात्मा बुद्ध के एक कथन के साथ अपनी बात का समापन किया। "विचार शब्द के रूप में प्रकट होता है, शब्द हमारे कार्य को प्रकट करता है, कार्य चरित्र में परिवर्तित होता है। इसलिए विचार और इसके मार्ग को सावधानीपूर्वक देखें और इसे सभी प्राणियों के लिए चिंता से उपजे प्रेम से आगे बढ़ने दें।"

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. कुलदीप चन्द्र अग्निहोत्री, ने सभी विशिष्ट प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया। वे धर्मशाला में बुद्ध और गांधी का पथ विश्व शांति के लिए कितना उपयोगी है, विषय पर चर्चा करने आए थे।

वैश्विक सम्मेलन में अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हुए विशिष्ट वक्तागण।

प्रो. अग्निहोत्री ने धर्म और अधर्म की अवधारणा पर महाभारत ग्रंथ को उद्धृत करते हुए कहा, "जन्मी धर्म ना जमावे पार्वती, ना जमावे पार्वती, जन्मी अधर्म ना जन्मे पार्वती"। अर्थात "धर्म क्या है, जिसे मैं जानता हूं पर वो आदत नहीं है और मैं अधर्म के बारे में भी जानता हूं, लेकिन मेरा मन मुझे उस ओर ले जाता है।" उन्होंने कहा कि शांति प्राप्त करने के लिए धर्म कुल मिलाकर एक घोषित उपकरण है। उन्होंने महात्मा गांधी के नेतृत्व कौशल का स्मरण करते हुए कहा कि उनके विचारों से प्रभावित होकर खान अब्दुल गफ्फार खान जैसे उनके समकालीन नेता उनकी विचारधारा का अनुसरण करने वाले बन गए थे और उनकी अहिंसा की अवधारणा में उनका गहरा विश्वास हो गया था।

समिति की कार्यकारी समिति के सदस्य और हरिजन सेवक

संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास ने पूजनीय श्री दलाई लामा के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि आज मानवता खतरे में हैं। पर्यावरणीय असंतुलन मानवता के लिए सबसे बड़ा संकट है।

उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सभी देश शांति के नाम पर जितने संभव हो उतने हथियार जमा करने की होड़ कर रहे हैं। यह संपूर्ण मानवता के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है।

श्री लक्ष्मीदास के मुताबिक आज के समय की मांग है कि देश के विकास के लिए, शांति और आपसी विश्वास की स्थापना के लिए और विवादों की समाप्ति के लिए व्यक्तिगत, जातीय, धार्मिक और क्षेत्रीय विवादों का समाधान किया जाए।

शांति के लिए क्रांति करने का उद्घोष करते हुए श्री दलाई लामा ने उपस्थित जनों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि यहां उपस्थित सब में शांति और प्रसन्न विश्व के लिए कार्य करने की योग्यता है। अहिंसा की नींव पर एक शांतिपूर्ण संसार की रचना करना हम सब का दायित्व है। उन्होंने साफ किया कि ये हम केवल प्रार्थना से नहीं, अपितु सच्चे कार्यों से प्राप्त कर सकते हैं।

अपने दैनिक जीवन में अहिंसा को पोषित करने का प्रतिभागियों से आहवान करते हुए उन्होंने कहा कि, "आज के दौर में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि हम शांति और प्रसन्नता की स्थापना के लिए हमें क्या करने की आवश्यकता है।"

परंपरागत सांस्कृतिक लोक कलाओं की प्रस्तुति से सम्मेलन को आकर्षक छटा प्रदान करते कलाकार।

विश्व शांति के लिए कार्य किए जाने की आज महत्ती आवश्यकता है। यह सत्य है कि शांति की आवश्यकता हमेशा है और यह भविष्य में भी रहेगी। लेकिन आज यह आवश्यकता अधिक है, क्योंकि आज विवाद दिन–प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। इसके अलावा हथियारों की बढ़ती होड़ भी एक चिंता का विषय है। उन्होंने कहा कि हथियारों का व्यवसाय, इन दिनों एक बड़ा व्यवसाय है और यह खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है। जैसे –जैसे हम हथियारों का अधिक प्रसार देख रहे हैं, विश्व के अन्य भागों मे उतना ही असंतोष फैल रहा है। यह संसार के लिए अत्याधिक खतरनाक है।

महामहिम के मुताबिक शांति के लिए यात्रा आरंभ का प्रयास करने से पहले सबसे महत्वपूर्ण चीज आंतरिक शांति की स्थापना करना है। स्वयं में शांति के बिना, विश्व और आसपास के क्षेत्रों में शांति स्थापित करना असंभव है। उन्होंने कहा कि आंतरिक शांति लाने के लिए यह आवश्यक है कि हम स्वंय को जलन, क्रोध और अत्याधिक प्रतियोगिता की भावना से मुक्त हों। इसके अलावा व्यक्ति आस्तिक है या नास्तिक, इस भावना से परे होकर सभी उर्जावान व्यक्तियों को अपने में शांति स्थापना करनी होगी, ताकि सकारात्मक परिणाम मिल सके।

उन्होंने कहा कि सभी भारतीय अपने कर्तव्य और बुद्ध और गांधी द्वारा प्रसारित शांति और अहिंसा की महान परंपरा को समझें। गांधी और बुद्ध के मूल्यों को आत्मसात कर, शांति स्थापना करने में भारत विश्व गुरू बन सकता है। इन मूल्यों को अपने में ग्रहण कर, यह महान देश इन पारंपरिक संस्कृति के साथ समृद्ध बन सकता है।

प्रथम सत्र में इस बात पर चर्चा की गई बुद्ध और गांधी विचारों व आदर्शों को कैसे समकालीन विश्व शांति नीतियों में जोड़ा जा सकता है। इस सत्र में मुख्य वक्ता के तौर पर डॉ. समधोंग रिनपोचे, केन्द्रीय तिब्बती प्रशासन और बौद्ध केंद्र के पूर्व प्रधानमंत्री उपस्थित थे। इस सत्र में "वैश्विक शांति, बौद्ध और गांधी दर्शन व आतंरिक शांति" पर विमर्श किया गया।

श्री रिनपोचे ने वैश्विकता के दायरे में रह रहे व्यक्तिगतता की शक्ति और अवधारणा पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि हम सब इस दुनिया की इकाई हैं और इसे बचाने का दायित्व हम सब पर है। जब विश्व सुरक्षित होगा, तभी हम सुरक्षित होंगे।

प्रत्येक प्राणी के संबंध में बात करते हुए उन्होंने कहा कि सभी प्राणियों का जीवन आवश्यक है। लेकिन वर्तमान चर्चा केवल मनुष्य मात्र पर केंद्रित है। प्राचीन भारतीय मान्यताओं के मुताबिक सभी जीवित प्राणी प्रसन्नता चाहते हैं, दर्द नहीं। इतना ही नहीं प्रत्येक प्राणी में प्रसन्नता पैदा करने और "निर्वाण" प्राप्त कर बुद्ध बनने की क्षमता है।

डॉ. रिनपोचे के अनुसार, यह महत्वपूर्ण है कि हम दूसरों से उसी तरीके से ही पेश आएं, जैसा हम स्वयं के लिए अपेक्षा करते हैं। इसलिए हमें किसी भी प्रकार की हिंसा में शामिल नहीं होना चाहिए, इसी से शांति का चक्र आरंभ होगा। उन्होंने उपस्थित जनों से कहा कि यदि हम किसी भी प्रकार की हिंसा में शामिल होते हैं, तो इससे दूसरों का ही नहीं, अपितु स्वयं हमारा भी नुकसान होता है। इसलिए हमें अपने आसपास सदैव शांति बनाए रखना चाहिए। हम मानव, एक दूसरे पर निर्भर हैं, हमारे अस्तित्व के लिए, यहां तक कि एक कप चाय के लिए कई हाथ और मजदूर चाहिए। हम अकेले नहीं रह सकते हैं। उन्होंने पूछा, "शांति क्या है? क्या शांति कोई ऐसी वस्तु है, जो शारीरिक या मानसिक आराम या फिर दोनों से जुड़ी है। 21वीं सदी में तकनीक के माध्यम से शारीरिक प्रसन्नता तो आसानी से मिल जाती है, लेकिन आंतरिक शांति गायब रहती है। इसलिए शांति का मतलब समझने के लिए सबसे पहले क्षमा का अर्थ समझना आवश्यक है, तभी हम जानेंगे कि शांति के लिए क्या बाधाएं सामने आती हैं।

डॉ. रिनपोचे ने बौद्ध दर्शन के अनुसार क्षमा का मतलब समझाया–

1. पीड़ा की सच्चाई
2. पीड़ा के कारण का सत्य
3. पीड़ा के समाप्त होने का सत्य
4. पीड़ा समाप्ति की ओर जाने वाले मार्ग की सच्चाई।

श्री रिनपोचे ने उसके बाद आधुनिक नागरिकता के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि हम आज उस दुनिया में रह रहे हैं, जहां हम अपने दैनिक जीवन में आधुनिक तकनीकों के इस्तेमाल के आदि हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य तकनीक का गुलाम बन गया है।

सम्मेलन में विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया–

**2 दिसंबर, 2017**

- उद्घाटन सत्र
- प्रथम पूर्ण सत्र : समकालीन विश्व शांति नीतियों में बुद्ध और गांधी के विचारों का समावेश
- दूसरा पूर्ण सत्र : अहिंसा की बौद्ध और गांधीवादी परंपरा
- सांस्कृतिक संध्या

**3 दिसंबर, 2017**

बौद्ध और गांधीवादी अभ्यासों के माध्यम से विवादों के समाधान पर सत्र

- शांति की संस्कृति और परस्पर सह अस्तित्व के लिए सतत् जीवन
- संवाद के लिए बुद्ध और गांधी का अहिंसक और सचेतन संचार : विश्व शांति का एक मार्ग
- शांति की संस्कृति के प्रचार के लिए बौद्ध और गांधीजन संस्थानों की भूमिका।

**4 दिसंबर, 2017**

वैश्विक शांति के लिए बच्चों, युवाओं और महिलाओं की भूमिका

- अहिंसा के प्रचार के लिए बुद्ध और गांधी की शैक्षणिक नीतियां
- समापन सत्र।

**विषय:**

प्रो. प्रत्यूष कुमार मॉडल, एनसीईआरटी के उपनिदेशक– प्रथम पूर्ण सत्र

**अहिंसा की बौद्ध और गांधीवादी परंपरा– दूसरा पूर्ण सत्र**

- अध्यक्षता : श्री नारायण भाई
- वक्ता : डॉ. एन. राधाकृष्णन, डॉ. जैकब वडाकांचेरी, प्रो. पुष्पा मोतियानी, प्रो. मनोज कुमार

**बुद्ध और गांधी के अभ्यासों द्वारा विवाद समाधान**

- अध्यक्षता : डॉ. रमेश कुमार, श्यामलाल कॉलेज
- वक्ता : डॉ. जीवीवीएसडीएस प्रसाद, श्री विक्टर तालुकदार

**शांति की संस्कृति और परस्पर सह अस्तित्व के लिए सतत जीवन**

- अध्यक्षता : प्रो. रोशनलाल
- वक्ता : प्रो. टी. डी. वर्मा, प्रो. ए. आर. पाटिल, डॉ. ओनिम सरिता देवी, सुश्री प्रेरणा भारद्वाज

**संवाद के लिए बुद्ध और गांधी का अहिंसक और सचेतन संचार : विश्व शांति का एक मार्ग**

- अध्यक्षता : प्रो. इंद्रजीत मल्हान, डीन हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय
- वक्ता : प्रो. जगतार सिंह, डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, श्री राहुल जैन, प्रो. हेमंत जोशी

**शांति की संस्कृति के प्रचार के लिए बौद्ध और गांधीजन संस्थानों की भूमिका।**

- अध्यक्षता : डॉ. नीलीमा कामरा
- वक्ता : सुश्री गीतांजली पटनायक, डॉ. बिजेंद्र सिंह पंवार, डॉ. जावेद नकी

**कैसे बुद्ध और गांधी की शैक्षणिक नीतियों से अहिंसा का प्रचार किया जा सकता है**

- अध्यक्षता : सुश्री नीलीमा कामरा
- वक्ता : श्री मौहम्मद इरशाद, श्री तुखतन नेगी, श्री गुलशन गुप्ता और सुश्री कनक कौशिक।

**जम्मू–कश्मीर**

**'विवादों के अहिसंक समाधान और अहिंसक संचार' विषय पर ऑरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित**

समिति द्वारा शेर–ए–कश्मीर पुलिस अकादमी उधमपुर के सौजन्य से 5–6 फरवरी, 2018 को जम्मू कश्मीर पुलिस के कर्मचारियों के लिए उधमपुर में एक ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य पुलिस–जनता की भागीदारी और पुलिस कार्यों में गांधीवादी तकनीक को बढ़ावा देना था।

ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते शेर–ए–कश्मीर पुलिस अकादमी के निदेशक श्री एम. सुलेमान सलारिया। उनके साथ है गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर फाउण्डेशन के अध्यक्ष प्रो. टी. के. थॉमस एवं समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू।

कार्यक्रम में अपने विचार रखती हुई एक युवा प्रतिभागी।

इस कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ गांधीवादी विचारक और मीडिया शिक्षाविद् प्रो. टी. के. थॉमस, श्री एम सुलेमान सलारिया, निदेशक एसकेपीए, डॉ. वेदाभ्यास कुंडू कार्यक्रम अधिकारी गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। इस ऑरिएंटेशन कार्यक्रम में जम्मू कश्मीर पुलिस के डीएसपी, एसएचओ रैंक के 50 अधिकारी और अकादमी के 150 प्रशिक्षुओं ने भाग लिया।

(ऊपर से नीचे) प्रो. टी. के. थॉमस, डॉ. वेदाभ्यास कुण्डू और सुश्री श्रेया जानी ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का संचालन करते हुए।

इस दो दिवसीय ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का विषय "विवादों के समाधान में गांधीवादी अहिंसक तकनीक और संचार का प्रयोग" था। इस कार्यक्रम के सत्र अहिंसक संचार तकनीक पर आधारित थे। कैसे पुलिस के दैनिक कार्यों में अहिंसक तकनीक के टूल्स को इस्तेमाल किया जा सकता है और कैसे इन तकनीकों के प्रयोग से जनता में पुलिस की छवि को सुधारने के साथ–साथ समाज के साथ उनके संबंध को कैसे मजबूत बनाया जा सकता है। ये सभी विषय इस दो दिवसीय कार्यक्रम में उठाए गए।

स्वागत भाषण देते हुए एसएसपी श्री एस. टी. नोर्बू ने उम्मीद जताई कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से पुलिस की छवि को सुधारने और पुलिस को जनता के करीब लाने में मदद मिलेगी।

समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने ऑरिएंटेशन कार्यक्रम के उद्देश्यों और लक्ष्यों के बारे में बताया। कार्यक्रम के लाभों के बारे में बताते हुए श्री कुंडू ने कहा कि पुलिस दो समूहों में उत्पन्न विवाद को सुलझाने के लिए मध्यस्थ की भूमिका निभाती है। यह कार्यक्रम इन पुलिसकर्मियों को इन विवादों को बिना किसी हिंसा और गाली–गलौच के हल करना सिखाएगा। इससे इनका कार्य आसान और सुरक्षित होगा, साथ ही इससे आम जनता के बीच में इनकी छवि अच्छी बनेगी और स्वीकार्यता बढ़ेगी। उन्होंने कहा कि समिति द्वारा इस तरह के अनेक कार्यक्रम देश के अन्य भागों में होम गार्ड और पुलिस कर्मियों के बीच आयोजित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से विवादों के समाधान में गांधीवादी तकनीकों को लागू किया जाता है। इन तकनीकों के कारण पुलिस–जनता का मजबूत गठजोड़ बनता है, जिससे अपराध की रोकथाम करने और नागरिकों की सुरक्षा करने में मदद मिलती है।

एसकेपीए के निदेशक श्री सुलेमान सलारिया ने प्रतिभागियों और संसाधन व्यक्तियों को संबोधित करते हुए कहा कि, "हम इन दिनों बहुत चुनौतीपूर्ण समय से गुजर रहे हैं, क्योंकि हमारे राज्य का एक भाग हिंसा से ग्रस्त है। हम सभी इसके पीछे के ऐतिहासिक कारणों से अवगत हैं। मैं उन्हें दोहराना नहीं चाहता। यहां हमारे पास अब यह अवसर है कि हम राष्ट्रपिता के महान विचारों से मागदर्शन

प्राप्त कर सकते हैं, जिनका बलिदान दिवस हमने अभी कुछ दिन पहले ही मनाया है। "उन्होंने महात्मा गांधी के शब्दों को याद करते हुए कहा कि, "मानवता को बचाने में अहिंसा एक महानतम बल है। यह मनुष्य द्वारा तैयार विनाश को रोकने में किसी शक्तिशाली हथियार से कहीं अधिक शक्तिशाली है।"

**सत्र**

**प्रो. टी. के. थॉमस–पुलिस कार्रवाई और विवादों के समाधान की तकनीक।**

उन्होंने सत्र की शुरूआत एक जोरदार गतिविधि "थिंक आउटसाइड द बॉक्स" से की, जिसने सबको इससे जुड़ने पर मजबूर कर दिया। इस दिलचस्प खेल के बाद, उन्होंने आधुनिक विश्व की प्रमुख गंभीर समस्या, अवसाद और तनाव को उठाया। उन्होंने कहा कि," हमारी युवावस्था में हमने कभी दबाव या तनाव जैसे शब्द नहीं सुने, लेकिन इन दिनों, यहां तक कि एक 10 वर्षीय बच्चा भी तनावग्रस्त है। इसके पीछे प्रमुख कारण हैं–व्यस्त जीवन शैली, प्रतिस्पर्धात्मक समाज और काम का अत्याधिक दबाव। जिसके कारण वे अपने लिए पर्याप्त समय नहीं निकाल पाते हैं।" पुलिस कर्मियों को संबोधित करते हए उन्होंने कहा कि पुलिस भी काफी दबाव झेलती है, जिससे प्रभावशाली पुलिस कार्रवाई में बाधा आती है। उन्होंने पुलिस कर्मियों को सुझाव दिया कि अपनी कार्य संबंधी जिम्मेदारियों को निभाते समय, उन्हें शांत, शालीन और अच्छे श्रोता की तरह रहना चाहिए, ताकि भयभीत लोग उनसे अपने दिल की बात आराम से कह सकें। इससे पुलिस और समाज के बीच एक मजबूत गठबंधन बनेगा।

अहिंसा, विवाद के संदर्भ में, प्रो. टी. के. थॉमस ने स्वास्थ्य फॉर्मूले के बारे में बताया, जिससे प्रभावशाली पुलिस कार्रवाई और अच्छे पुलिस–पब्लिक संबंध कायम करने में आसानी हो सके।

**सुश्री श्रेया जानी–अहिंसक विवादों के समाधान की तकनीक**

सुश्री श्रेया जानी ने कहा कि पुलिसिया कार्रवाई में सहानुभूति के भाव की जरूरत है। उन्होंने विस्तार से बताते हुए कहा कि– "जैसे ही शिकायतकर्ता अपराध के विरूद्ध अपनी आवाज बुलन्द करता है, तो यह आपका नैतिक कर्तव्य बनता है कि उसे अपनी घटना बताने के लिए आरामदायक माहौल उपलब्ध करवाएं। लेकिन शिकायतकर्ता की भावनाओं को महसूस करने के लिए आपके दिल में सहानुभूति का भाव होना चाहिए।" उन्होंने साथ ही जोड़ा कि, "हम खुद के बनाए एक सत्य के अंदर रहते हैं और अतिरेकपूर्ण निर्णय लेते हैं।"

कार्यक्रम में आत्म अन्वेषण और आत्म निरीक्षण के लिए, स्वजागरूकता पर आधारित एक प्रश्नावली प्रतिभागियों से भरवाई गई। समूह निर्माण और दिमागी अभ्यास भी करवाया गया और मामलों के पीछे के कारण और दिए गए विषयों के समाधान की चर्चा भी की गई। ये विषय थे–

- अपराध और युवा
- सामाजिक विवाद
- महिलाओं के विरूद्ध अपराध और सांप्रदायिक तनाव
- किशोर, महिलाएं और समुदाय
- आत्म सुरक्षा

**डॉ. वेदाभ्यास कुंडू– अहिंसक संचार और पुलिस कार्रवाई**

डॉ. कुंडू ने अहिंसा का अभ्यास करने वाले तत्वों को रेखांकित किया। उन्होंने डिजिटल शांति निर्माण की परिकल्पना पर जोर देते हुए कहा कि पुलिस डिजिटल शांतिकर्ता बन सकती है। उन्होंने नफरत भरे भाषणों, ऑनलाइन हिंसा, निन्दा करना, कट्टरता, साइबर–अपराध आदि की बढ़ती प्रवृत्तियों पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि अहिंसा के प्रसार और प्रचार के लिए एक वृहद अभियान चलाने की आवश्यकता है। उन्होंने पुलिस बल में सोशल मीडिया के महत्व के बारे में भी बताया।

उन्होंने कहा कि आज एक जन आंदोलन चलाने की आवश्यकता है, जो लोगों को प्रेरित करे और उनकी अच्छे भाषण और नफरत भरे भाषण में अंतर करने में मदद करे। इस संदर्भ में पुलिस स्थानीय विश्वविद्यालयों के मीडिया विभागों से सहयोगात्मक तालमेल कर सकती है। इसके अतिरिक्त पुलिस का सोशल मीडिया प्रभाग भी सोशल मीडिया की सामग्री की निरंतर निगरानी कर सकता है।

यह संकट के दौरान सकारात्मक संदेशों के प्रसार से नफरत भरे भाषणों को रोक सकता है और इसके माध्यम से जनता तक पहुंचने का प्रयास किया जा सकता है।

पुलिस कार्रवाई में सोशल मीडिया के महत्व के बारे में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा, "परंपरागत मीडिया और उसके विस्तृत दिशाहीन चैनलों में गिरावट आ रही है और इसका स्थान द्विपक्षीय संचार, वार्तालाप के समावेशी मिश्रण, संवाद के आधार पर सोशल मीडिया ने ले लिया है। 6 फरवरी को समापन सत्र का आयोजन किया गया, जहां आदरणीय श्री एम. सुलेमान सालारिया निदेशक एसकेपीए ने लोगों को संबोधित किया। उन्होंने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, प्रतिभागी पुलिस टीम व एसकेपीए टीम की सराहना करते हुए इस कार्यक्रम को एक सफल कार्यक्रम की संज्ञा दी। उन्होंने कहा, "अहिंसात्मक तरीके से विवादों के समाधान और अहिंसात्मक संचार पर आधारित यह कार्यक्रम प्रतिभागियों के लिए काफी ज्ञानवर्धक रहा और उम्मीद जताई कि समिति भविष्य में भी ऐसे ही कार्यक्रमों का आयोजन करती रहेगी।"

उन्होंने कहा कि, "यह कार्यक्रम लंबे समय तक पुलिस कर्मियों के लिए जनता से संपर्क करने में मार्गदर्शन का काम करेगा और इससे पुलिस और जनता का तालमेल बेहतर होगा।"

### जम्मू कश्मीर के माननीय विधान पार्षदों का ओरिएंटेशन कार्यक्रम

महात्मा गांधी के अवसान के 60 सालों बाद विवाद, शोषण, गरीबी और अभावों से भरी इस दुनिया में आज भी उनके विचार और दर्शन प्रासंगिक हैं। दुनिया भर में भारी संख्या में लोग गरीबी, भूखमरी और विभिन्न प्रकार की हिंसा से पीड़ित है। इस प्रकार के परिदृश्य में मनुष्य के समक्ष खड़ी चुनौतियों का सामना करने और सतत विकास की नींव रखने के लिए अहिंसा और सत्य की अत्यंत आवश्यकता है।

महात्मा गांधी के विचारों और बहुआयामी दर्शनों को समझकर आधुनिक समय की चुनौतियों का सामना किया जा सकता है और इसका उपयोग न केवल सुशासन की स्थापना करने में, अपितु लोगों के कल्याण के लिए नीतियां बनाने में भी किया जा सकता है।

मानव मात्र के लिए महात्मा गांधी के वैश्विक विचार, जहां मनुष्य ब्रह्मांड का एक अभिन्न अंग है और कई सामाजिक

(ऊपर से नीचे) ऑरिएंटेशन कार्यक्रम में उपस्थित विशिष्ट अतिथि जिनमें शामिल है श्री शिरिंग दौर, लद्दाख मामलों के मंत्री जम्मू एवं कश्मीर, श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति एवं प्रो. टी. के. थॉमस, अध्यक्ष गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर फाउण्डेशन।

चिंताओं से ग्रस्त है के लिए समाधान ढूंढते हैं। जबकि देश के नीति निर्माता लोगों के योगदान और विकास के लिए अपना बेहतर कर रहे हैं, मनुष्य के लिए ये ब्रह्मांडीय विचार क्रांतिकारी है, जो न केवल उनकी भावनाओं के बारे में सोचते हैं, अपितु उस वातावरण के बारे में भी सोचते हैं, जहां वे रहते हैं।

संभवतया हम हमारे सतत विकास की प्रकिया में काफी कुछ प्राप्त कर सकते हैं यदि हम मानवता के विषय में गांधीजी के विचारों और समुदाय के लिए रचनात्मक कार्यों की भावनाओं को आत्मसात करें। हमारे सभी प्रयासों में परस्पर सह अस्तित्व को कायम रखने की भावना होनी चाहिए। सत्याग्रह और सर्वोदय के उनके अहिंसक साधन सुशासन के लिए उचित दिशा निर्देश देने का काम करते हैं।

सम्मेलन को संबोधित करती हुई सुश्री शमरीना। उनको ध्यान मग्न होकर सुनते श्रोतागण।

महात्मा गांधी के विचारों का प्रसार माननीय विधायकों व विधान पार्षदों में करने के उद्देश्य से समिति द्वारा जम्मू कश्मीर विधानसभा में 26 मार्च, 2018 को ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ करते हुए कानून सचिव श्री अब्दुल माजिद ने गांधी दर्शन के विभिन्न आयामों पर चर्चा करते हुए कहा कि उनके जीवन और संदेशों से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि सरकारी योजनाओं और नीतियों में गांधीजी के विचारों का समावेश किया जाना चाहिए।

प्रदेश के मंत्री श्री शिरिंग दोर्जी ने कहा कि अहिंसा के माध्यम से सभी विवादों का निपटान शांतिपूर्वक हो सकता है। हिंसा का प्रयोग कभी भी सही नहीं होता है।

गांधीयन स्टडीज, गुजरात विद्यापीठ की पूर्व प्रमुख प्रो. पुष्पा मोतियानी ने कहा कि 'आजाद भारत की मेरी तस्वीर' में महात्मा गांधी ने कहा था, ''यह भ्रम है कि विधायक स्वयं को मतदाताओं का मार्गदर्शक समझते हैं। मतदाताओं को अपने प्रतिनिधि विधानसभा में इस संदर्भ में भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है कि वे उनका मार्गदर्शन करें। दूसरी ओर वे लोगों की इच्छाओं की पूर्ति के लिए विधानसभा में जाते हैं। इसलिए लोग मार्गदर्शक हैं, विधायक नहीं।''

वरिष्ठ गांधीजन प्रो. टी. के. थॉमस ने कहा कि नीतिगत स्तर पर सरकार को बाल क्लब का गठन करने के बारे में सोचना चाहिए, जो उनकी रचनात्मकता का पोषण करे और उनमें बालपन से ही सामाजिक जिम्मेदारी का आभास करवाए। इससे बच्चों के व्यक्तित्व में निखार आएगा, उनका जीवन कौशल बढ़ेगा और उनकी आत्म जागरूकता बढ़ेगी। इस पहल का राज्य के बच्चों के सामाजिक नेतृत्व कौशल को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देखा गया। हमारे लिए महात्मा गांधी जैसे महान नेताओं से

जम्मू कश्मीर विधान परिषद के माननीय सदस्य कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

सीखने के लिए बहुत कुछ है और ये प्रयास नई पीढ़ी की निर्णय लेने की क्षमता को विकसित करने में मददगार साबित होते हैं।

प्रो. हिमांशु बौराई ने कहा कि गांधीजी ने रचनात्मक कार्यक्रमों के मूल्यों को मान्यता दी थी और इन्हें सफलतापूर्वक दक्षिण अफ्रीका के अपने आंदोलन में इस्तेमाल किया था। इसके अतिरिक्त भारतीय आजादी आंदोलन में भी रचनात्मक कार्यक्रमों के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। गांधीजी ने अपने अनुयायी और मित्र जमनालाल बजाज से कहा था, "रचनात्मक कार्य मेरी वास्तविक राजनीति है।"

प्रो. बोराई ने रचनात्मक कार्यक्रमों के महत्व पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम मनुष्य को कर्मयोगी बनने की प्रेरणा देते हैं। इनसे हमें बेहतर देश का निर्माण करने में मदद मिलती है। रचनात्मक कार्यक्रम वैकल्पिक संस्थान बनाने में भी मददगार साबित होते हैं। इसके माध्यम से हम अपना और समाज दोनों का विकास कर सकते हैं।"

वरिष्ठ गांधीवादी श्री बसंत ने गांधीजी की 150वीं जयंती के बारे में चर्चा की और जम्मू–कश्मीर के जनप्रतिनिधियों से गांधी जयन्ती कार्यक्रमों से जुड़ने का आग्रह किया।

# विशेष कार्यक्रम

## साबरमती आश्रम के 100 वर्ष

## निरंतर विकास के मुद्दों पर दो दिवसीय सेमिनार

साबरमती आश्रम की स्थापना के सौ साल पूरे होने के अवसर पर समिति द्वारा 'निरंतर विकास के मुद्दे' पर दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन 17–18 जून को गांधी दर्शन परिसर में किया गया। ग्लोबल विलेज फाउंडेशन के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से आए करीब 130 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

साबरमती आश्रम में महात्मा गांधी (फाईल फोटो)।

प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि महात्मा गांधी ने चेताया था कि प्रकृति का गलत इस्तेमाल नहीं होना चाहिए, क्योंकि वह मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए है, उसके लालच की पूर्ति के लिए नहीं। उन्होंने आश्रमों की स्थापना में महात्मा गांधी के योगदान का जिक्र किया।

कार्यक्रम में यह तय किया गया कि सर्वप्रथम 'एसडब्ल्यूओटी' विश्लेषण किया जाना चाहिए, जिसमें मजबूती, कमज़ोरियों, अवसरों ओर भय जैसे मनुष्य आधारित उप विषयों को कवर किया जाए। जिनका जन, जंगल, जमीन ओर जानवर से सीधा रिश्ता है। अन्य निर्णय थे:

- हमारी ताकत को पहचानना और स्वयंसेवकों को विभिन्न गतिविधियों और कामों में व्यस्त करना।
- पहले से उपलब्ध सेवामंचों से निर्धारित कार्य और योजना नीतियों के लिए सहयोग प्राप्त करना।
- सरकारी एजेंसियों और नीति निर्धारकों को संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से नए मंच का निर्माण करना।

"प्रकृति की ओर लौटने" और "प्रसन्न व स्वस्थ जीवन और स्वर्ग जैसा पर्यावरण" जैसे मुद्दों पर इस मौके पर चर्चा की गई, जिसका उद्देश्य था–

- विभिन्न लोगों, नीति निर्धारकों में जागरूकता पैदा करना।
- मांग और आपूर्ति के बीच पुल का निर्माण करना।
- विभिन्न लोगों में उनके सामाजिक सहयोग, उत्तरदायित्व, गतिविधियों के आधार पर सहयोग और समन्वय की संभावना तलाशना।
- प्रोद्योगिकी से संबंधित साहित्य का प्रलेखन और सभी हितधारकों के बीच रणनीतिक विकास का प्रसार।

कार्यक्रम के दौरान, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 25 सितंबर 2015 को सतत् विकास संबंधी घोषित कुल 17 विषयों पर चर्चा की गई। इन 17 विषयों में गरीबी की समाप्ति, भूखमरी न होना, अच्छा स्वास्थ्य और रहन सहन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, लिंग समानता, स्वच्छ पानी और स्वच्छता, स्वच्छ ऊर्जा, आर्थिक वृद्धि, उद्योग, पहल और संसाधन, असमानता खत्म करना शहर और समुदाय, उत्तरदायी खपत और उत्पादन, पर्यावरणीय कार्यवाही, पानी की कमी, ज़मीन पर जीवन, शांति, न्याय, मज़बूत संस्थाएं और सहभागिता आदि प्रमुख हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इन मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई और यह निश्चय किया गया कि अब केवल पर्यावरण

पर ही चर्चा की जाएगी। यह भी महसूस किया कि दिल्ली में मौसम परिवर्तन, प्रदूषण और स्वच्छता से संबंधित स्थिति काफी चिंताजनक है। इस स्थिति से उबरने के लिए तुरंत ठोस व कारगर उपाय किए जाने चाहिए।

18 जून को निम्नलिखित उपविषय तय किए गए:

- पौधा रोपण से मौसम परिवर्तन को कम करना।
- प्रदूषण और इसकी रोकथाम के उपाय करना।
- स्वच्छता और इससे संबंधित सक्रिय कार्य करना।

इस दो दिवसीय सेमिनार में निम्नलिखित निर्णय लिए गए थे:

- ऊर्जा और कूड़े के संदर्भ में नीति निर्धारकों को जागरूक करना।
- पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण के संदर्भ में रोडमैप तैयार करना।
- स्वच्छता और अन्य मुद्दों पर सरकारी एजेंसियों की मदद हेतु गैर सरकारी संगठनों का गठन।
- विभिन्न संस्थानों के विशेषज्ञों को निमंत्रित कर, एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित करना।
- निजी प्लास्टिक बोतलबंद पानी आपूर्तिकर्ता पर रोक।
- बहुमंजिला इमारतों में रहने वालों लोगों में शहरी कृषि परिकल्पना का प्रसार।
- घरेलू कूड़े के संग्रह के लिए लगे धातु के कूड़ादान की जगह लकड़ी के कूड़ेदान लगाना।
- पर्यावरण संरक्षण विशेषतः दिल्ली के संदर्भ में, से संबंधित सभी जानकारियों का एक पोर्टल तैयार करना और जनता के बीच उसे प्रदर्शित करना।
- दिल्ली के सार्वजनिक स्थानों और दिल्ली मेट्रो में विद्युत संरक्षण को युद्ध स्तर पर पूरा करना।

यह भी निर्णय लिया कि अगली बैठक 8 जुलाई, 2017 को आयोजित की जाएगी। इस बैठक में गंभीरता से कार्य योजना बनाई जाएगी। और दिल्ली की प्रदूषण संबंधी सभी समस्याओं को हल करने, मौसम परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने और स्वच्छता अभियान को ठोस तरीके से लागू करने का एक विस्तृत नक्शा तैयार किया जाएगा।

## भारत छोड़ो आन्दोलन के 75 वर्ष

भारत छोड़ो आन्दोलन के 75 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 9 अगस्त, 2017 को गांधी स्मृति और दर्शन समिति के स्टाफ सदस्यों ने समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में राजघाट स्थित गांधी समाधि पर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। इस मौके पर गांधी दर्शन स्थित इग्नु का समस्त स्टाफ, क्षेत्रीय निदेशक डॉ. के. डी. प्रसाद के साथ मौजूद था। कार्यक्रम में स्टाफ सदस्यों ने विभिन्न महापुरूषों के संदेशों वाले पोस्टर ले रखे थे। इस अवसर पर भारत छोड़ो आन्दोलन से संबंधित एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। स्टाफ सदस्यों ने भजन गायन भी किया। गांधी समाधि के सचिव श्री रजनीश कुमार और सुश्री नीलम भी उपस्थित थे।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में समिति के कर्मचारियों ने राजघाट स्थित महात्मा गांधी की समाधि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर चरखे से कताई भी की गई।

## 70वां स्वतंत्रता दिवस आयोजित

स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान गांधी दर्शन परिसर में ध्वजा रोहण करते हुए। इस अवसर पर समिति कर्मचारी उनके परिजनों ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर देश के सेनानियों को याद किया।

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर 15 अगस्त को गांधी दर्शन परिसर में एक समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने ध्वजारोहण किया। अपने संबोधन में निदेशक ने उपस्थित जनों को भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के बारे में बताया। उन्होंने गांधीजी के आदर्शों और मूल्यों को अपनाने व उनके संदेशों को जन–जन तक पहुंचाने की अपील की। इस मौके पर समिति के स्टाफ सदस्य व उनके परिजन मौजूद थे। कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी गई।

## विश्व साक्षरता दिवस कार्यक्रम

विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर 8 सितंबर, 2017 को गांधी दर्शन परिसर में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली के विभिन्न 17 विद्यालयों के 35 अध्यापक शामिल हुए।

गांधी दर्शन में आयोजित विश्व साक्षरता दिवस कार्यक्रम में उपस्थित दिल्ली के विभिन्न संस्थानों से आए वक्तागण।

कार्यक्रम में साक्षरता के महत्व और शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों पर चर्चा की गई।

इस मौके पर समिति के कार्यक्रम कार्यकारी श्री राजदीप पाठक ने उपस्थित जनों को समिति द्वारा साक्षरता को बढ़ाने के लिए किए गए कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने उम्मीद जताई कि अध्यापकगण अपने–अपने विद्यालयों में स्वच्छता अभियान चलाएंगे और देश को साफ रखने में अपनी भूमिका निभाएंगे।

## गांधी जयन्ती पर बापू को श्रद्धांजलि

समिति द्वारा उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के सहयोग से गांधी जयंती के मौके पर 2 से 4 अक्तूबर तक विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ श्रमदान से किया गया। इसका उद्घाटन उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री रामनाइक और मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने किया। सांसद

श्री कौशल किशोर, भटखंडे संगीत विश्वविद्यालय के प्रो. मोहनजी भटखंडे भी इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम में करीब 1000 बच्चों ने शिरकत की।

इस अवसर पर चित्रकला, नृत्य, गायन आदि अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री रामनाईक, प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए। गांधी स्मारक नीधि के श्री एल. बी. राय भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

दिनांक 11 अक्टूबर, 2017 को जयप्रकाश नारायण की जयंती के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें खादी ग्रामोद्योग व लघु उद्योग मंत्री श्री सत्यदेव पचौरी, मुख्य अतिथि थे।

## प्रथम अनुपम व्याख्यान

### हिमालय–बदलते परिदृश्य में हमारी संवेदनाओं के मापदंड

प्रसिद्ध गांधीवादी पर्यावरणविद् स्व. श्री अनुपम मिश्र को श्रद्धांजलि स्वरूप उनके जन्मदिवस पर 'प्रथम अनुपम व्याख्यान का आयोजन गांधी दर्शन सभागार में 22 दिसंबर, 2017 को किया गया। इस मौके पर गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित जाने माने पर्यावरणविद् और सामाजिक कार्यकर्ता श्री चंडी प्रसाद भट्ट ने प्रथम व्याख्यान प्रस्तुत किया, जिसका विषय था– हिमालय–बदलते परिदृश्य में हमारी संवेदनाओं के मापदंड। विभिन्न क्षेत्रों के करीब 400 लोग, जिनमें, शिक्षाविद्, स्कॉलर, लेखक, गांधीयन, सामाजिक कार्यकर्ता, मीडिया बिरादरी और अनुपम मिश्र के प्रशंसक शामिल थे, ने कार्यक्रम में शिरकत की।

श्री चंडी प्रसाद भट्ट ने अनुपम मिश्र के साथ बिताए अपने पुराने दिनों को यादें ताजा की। उन्होंने पर्यावरण के मुद्दों और रहन–सहन पर अनुपम मिश्र के जुनून के स्मरणों को याद करते हुए कहा कि अनुपम जी के संपक्र में आने के बाद उन्होंने अपने क्षेत्र उत्तराखंड में कार्य करना आरंभ किया, जिसने आचार्य विनोबा भावे द्वारा प्रेरित चिपको आंदोलन का आकार ले लिया।

(ऊपर से नीचे) समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, लेखक और पर्यावरणविद् श्री सौपान जोशी, उपस्थित जनों को प्रथम अनुपम व्याख्यान कार्यक्रम में संबोधित करते हुए।

उन्होंने कहा कि अनुपम जी से वे पहली बार 1972 में गांधी समाधि दिल्ली पर मिले थे। उस समय उनके क्षेत्र में चिपको आंदोलन खड़ा हो रहा था। वहां के लोग सरकारी ठेकेदारों द्वारा की जा रही पेड़ों की कटाई का विरोध कर रहे थे। उन्होंने कहा कि वे (चंडीप्रसाद जी) उस आंदोलन के नेता के तौर पर उभरे। अनुपम जी के साथ उन्होंने इस दिशा में काम करना आरंभ कर दिया। यह भारत में पर्यावरण के प्रति एक नई जागरूकता का जन्म था। चिपको आंदोलन के साथ चंडीप्रसाद जी का यश भी फैला। "जब 1982 में मुझे मैग्सेसे पुरस्कार मिला, अनुपमजी इस पुरस्कार को लेने मेरे साथ फिलीपिन्स गए थे।" उन्होंने याद किया।

(दाएं) प्रथम अनुपम स्मृति व्याख्यान में अपने विचार रखते हुए गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध गांधीवादी प्रर्यावरणविद् और सामाजिक विचारक श्री चंडी प्रसाद भट्ट व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए। उपस्थित गांधीवादी उनके विचार सुनते हुए।

स्व. श्री अनुपम मिश्र के पुत्र बांसुरी वादक श्री शुभम मिश्र अपने पिता को संगीतमय श्रद्धांजलि देते हुए।

"हिमालय संवेदना, वर्तमान भय और चुनौतियां" विषय पर एक पावर प्वाइंट प्रस्तुति के माध्यम से श्री भट्ट ने बताया कि कैसे चिपको आंदोलन की प्रक्रिया आरंभ हुई और कैसे स्थानीय लोग उस तबाही के प्रति जागरूक बने, जो पेड़ों की कटाई के कारण उत्पन्न हो सकती थी। उन्होंने उम्मीद जताई कि लोग आज की पर्यावरण त्रासदी के बारे में और जागरूक होंगे व इसके संरक्षण के लिए गंभीरता से अपना वक्ता निकालेंगे। "हमें सभी स्थानों पर अपने स्वयं का गांधी ढूंढना होगा।" उन्होंने उपसंहार किया।

इससे पूर्व गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया और जब वे समिति के निदेशक का पद भार संभालने दिल्ली आए थे, उस समय अनुपम जी से अपनी पहली मुलाकात का स्मरण किया। पर्यावरणविद् और लेखक श्री सोपान जोशी ने श्री चंडीप्रसाद भट्ट का परिचय दिया। धन्यवाद भाषण अनुपम मिश्र के सहयोगी रहे श्री बनवारी जी ने प्रस्तुत किया।

# चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष

**स्वच्छता को हमारी श्रद्धांजलि – श्री नरेन्द्र मोदी**

**स्वच्छाग्रह का शुभारंभ–बापू को कार्यांजलि एक अभियान– एक प्रदर्शनी**

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार में "स्वच्छाग्रह–बापू को कार्यांजलि" प्रदर्शनी के उद्घाटन अवसर पर गांधीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी।

चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा 10 अप्रैल, 2017 को राष्ट्रीय अभिलेखाागार नई दिल्ली में स्वच्छाग्रह –बापू को कार्यांजलि एक अभियान–एक प्रदर्शनी कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। उन्होंने इस मौके पर एक ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी "कार्यांजलि" की भी शुरूआत की। यह प्रश्नोत्तरी अक्तूबर, 2019 तक जारी रहेगी। माननीय संस्कृति मंत्री और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के उपाध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा सहित अनेक गणमान्य लोग इस अवसर पर उपस्थित थे।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि सौ साल पहले महात्मा गांधी चम्पारण पहुंचे और वहां के लोगों के कठिन जीवन को उन्होंने देखा। गांधीजी ने उन्हें सत्याग्रह का रास्ता दिखाया। चम्पारण सत्याग्रह भारतीय आजादी के संघर्ष में मील का पत्थर साबित हुआ। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनी, प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम महज खानापूर्ति नहीं है, अपितु इनके माध्यम से हम स्वयं को देश की सेवा में समर्पित कर सकते हैं। महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने के साथ हमें उन्हें कार्यांजलि देनी होगी।

उन्होंने कहा कि मूल रूप से गांधीजी एक स्वच्छाग्रही थे। चम्पारण, स्वच्छता आन्दोलन का उद्गम स्थल बना और चम्पारण सत्याग्रह ने आजादी के आंदोलन को एक गति प्रदान की। "चम्पारण ने खादी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वच्छ भारत मिशन गांधीजी के सपनों को साकार करने की दिशा में एक कदम है और यह हमारे देश का तेजी से बढ़ने वाला जनांदोलन बन चुका है।"

राष्ट्रीय अभिलेखागार में प्रदर्शनी का अवलोकन करते माननीय प्रधानमंत्री उनके साथ है माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा, संस्कृति मंत्रालय के सचिव श्री राघवेन्द्र सिंह और श्री एन. के. सिन्हा।

अपने संबोधन में डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि, "महात्मा गांधी ने आजादी की लड़ाई में सत्याग्रह को प्रमुख हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया था। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे अपने विकास के लिए स्वच्छता अभियान पर ध्यान केन्द्रित करें। यहां लगी प्रदर्शनी के माध्यम से गांधीजी के स्वच्छाग्रह के माध्यम से सत्याग्रह के सिद्धांत को दर्शाया गया है। गांधीजी के सत्याग्रह के प्रथम प्रयोग पर आधारित यह प्रदर्शनी गांधीजी को एक विनम्र श्रद्धांजलि है" उन्होंने जोड़ा।

इस मौके पर गांधीजी के प्रतिबंधित साहित्य पर आधारित नृत्य कार्यक्रम "सत्य, स्वच्छ, सुर" का मनोहारी प्रस्तुतिकरण प्रसिद्ध कलाकार मालिनी अवस्थी द्वारा किया गया।

## चम्पारण में 'सत्याग्रह से स्वच्छाग्रह' तक कार्यक्रम का आयोजन

1917 में चम्पारण में आरम्भ की गई गांधीजी की यात्रा का पुनर्प्रदर्शन करते हुए वरिष्ठ गांधीवादियों की टीम। इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान भी उपस्थित थे। मोतिहारी की गलियों में रैली के दौरान महात्मा गांधी के हमशक्ल श्री राजेन्द्र राठौर।

चम्पारण सत्याग्रह के सौ साल पूरे होने के मौके पर 13 से 17 अप्रैल तक चम्पारण बिहार के अनेक भागों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय व गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इन कार्यक्रमों के माध्यम से चम्पारण सत्याग्रह की स्मृतियां ताजा की गई।

प्रमुख कार्यक्रम मोतिहारी के जिला स्कूल में आयोजित किया गया, जिसमें बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री रामनाथ कोविन्द मुख्य अतिथि थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह और महात्मा गांधी की पौत्री व समिति की पूर्व उपाध्यक्षा श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी उपस्थित थीं। इस अवसर पर उपस्थित अन्य गणमान्य लोगों में, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, सांसद सुश्री रमादेवी, मोतिहारी विधायक श्री प्रमोद कुमार, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अरविंद अग्रवाल, बीआरए बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अमरेंद्र नारायण यादव शामिल थे।

इस अवसर पर उपस्थित महात्मा गांधी के हमशक्ल, रामगढ़, झारखंड के बड़का थाना के श्री राजेंद्र राठौड़ कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण का केंद्र रहे। इसके अतिरिक्त देश के विभिन्न भागों से आए वरिष्ठ गांधीजन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सी. डी. पांडे ने की। समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू, शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला, स्वयंसेवक व अन्य भी इस उत्सव में शामिल हुए।

कार्यक्रम का आरंभ बिहार के राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद, केंद्रीय मंत्री श्री राधामोहन सिंह और महात्मा गांधी की पौत्री श्रीमती तारा गांधी ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। स्थानीय रेडियो स्टेशन के कलाकारों द्वारा भोजपुरी में नील के किसानों की गाथा का सुंदर प्रस्तुतिकरण किया गया, जिससे पूरा माहौल सत्याग्रह की स्मृतियों में डूब गया।

अपने संबोधन में राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद ने कहा कि चम्पारण की धरती पावन और यादगार है। यहां से आरंभ हुए आंदोलन ने हमारी आजादी की नींव रखी थी। स्वदेशी और खादी को बढ़ावा देने की गांधीजी की परिकल्पना आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। उन्होंने स्वच्छता को बढ़ावा देने पर बल दिया।

श्रीमती तारा गांधी ने कहा कि यह व भूमि है जहां से आज़ादी का आंदोलन शुरू हुआ और हमने आज़ादी प्राप्त की। उन्होंने बच्चों विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा पर जोर दिया।

केन्द्रीय मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने कहा कि गांधीजी का स्वच्छता अभियान का दृष्टिकोण आजादी से भी ज्यादा महत्वपूर्ण था। उन्होंने कहा कि चम्पारण सत्याग्रह ने पूरे विश्व को अहिंसा की शक्ति से परिचित करवा दिया।

मोतिहारी में निकाली गई रैली का एक दृश्य इस रैली में महात्मा गांधी का रूप धारण कर आए श्री राजेन्द्र राठौर का हजारों लोगों ने स्वागत किया।

(बाएं) बिहार के माननीय राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद, मोतिहारी के विधायक श्री प्रमोद कुमार और समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए।

(दाएं) केन्द्रीय मंत्री श्री राधा मोहन सिंह, महात्मा गांधी की पौत्री श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी और अन्य गणमान्य लोग दीप प्रज्ज्वलन करते हुए।

समारोह में राष्ट्रीय गान के दौरान खड़े हुए अतिथिगण।

इस मौके पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, सांसद सुश्री रमा देवी, मोतिहारी के विधायक श्री प्रमोद कुमार, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी के कुलपति डॉ. अरविन्द अग्रवाल, बिहार विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अमरेंद्र नारायण यादव, श्री राजेंद्र राठोड़, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने भी विचार रखे। करीब 20 वरिष्ठ गांधीजनों को इस मौके पर सम्मानित भी किया गया।

## कार्यक्रम की गतिविधियां

### 14 अप्रैल, 2017

चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के साथ अनेक गणमान्य लोगों ने बिहार के तुरकोलिया का दौरा किया और लघु किसानों के संगठन से मिलकर उन्हें मजबूत करने के उपायों पर चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल में शामिल लोगों ने गांधी स्मृति और दर्शन समिति के सहयोग से छोटे किसानों की प्रगति के लिए परियोजना लाने की आवश्यकता पर बल दिया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने इस दिशा में यथासंभव सहायता करने का आश्वासन दिया। इस प्रतिनिधिमंडल में कारीगर पंचायत के श्री बसंत, कपार्ट के सेवानिवृत निदेशक श्री सुरेंद्र सिंह, कपार्ट के डॉ. बी. मिश्रा आदि शामिल थे।

चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने पर निकाली गई महात्मा गांधी यात्रा का रेलवे स्टेशन पर स्वागत करती भीड़।

गांधीवादियों की एक अन्य टीम ने चम्पारण के भीतिहरवा गांव का दौरा किया और ग्रामीणों से मुलाकात की। टीम ने गांव के बुजुर्गों से मिलकर वहां महात्मा गांधी की यादों को ताजा करने का प्रयास किया।

गौरतलब है कि गांव भीतिहरवा में चम्पारण सत्याग्रह के दौरान गांधीजी कुछ समय के लिए ठहरे थे। इस मौके पर इंदु आर्ट थियेटर एंड फिल्म सोसायटी के कलाकारों ने मधुमिता खान के नेतृत्व में "बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ" पर एक नाटक प्रस्तुत किया।

### 15 अप्रैल, 2017

सौ वर्ष पूर्व महात्मा गांधी द्वारा रेल से मुज़्जफरपुर से मोतिहारी पहुंचने की ऐतिहासिक घटना को दोहराया गया। इस कार्यक्रम में महात्मा गांधी की भूमिका में श्री राजेन्द्र राठौड़ ने 100 साल पूर्व की घटना को जीवंत किया। गांधी बने श्री राठौड़, श्री बसंत और श्री आर. एन. पाटिल के साथ विशेष रेलगाड़ी सत्याग्रह शताब्दी एक्सप्रैस में सवार होकर मुज्जफरपुर से मोतिहारी पहुंचे।

यह ट्रेन रास्ते में उन सभी 6 स्टेशनों पर रूकी, जहां गांधीजी का स्वागत हुआ था। ये स्टेशन थे–कांति, मोतीपुर, मेहासी, चकिया, पीपरा और जीवधारा। यहां इन लोगों का भारत माता की जय और वन्दे मातरम के उद्घोष के साथ भव्य स्वागत किया गया। अंत में ट्रेन बापूधाम मोतिहारी रेलवे स्टेशन पहुंची, जहां बड़ी संख्या में लोगों ने स्वागत किया। प्रमुख स्वागतकर्त्ताओं में केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की पूर्व उपाध्यक्षा श्रीमती तारा गांधी शामिल थी।

इस मौके पर दुर्लभ फोटो से सुसज्जित एक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। केन्द्रीय मंत्री श्री राधामोहन सिंह और श्रीमती तारागांधी ने युवाओं को चम्पारण से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारी से अवगत करवाया। श्री राधामोहन सिंह ने इस अवसर पर बापूधाम रेलवे स्टेशन के सुधार से संबंधित अनेक योजनाओं की घोषणा की।

कार्यक्रम में बेतिया के सांसद श्री संजय जायसवाल, मोतिहारी के विधायक श्री प्रमोद कुमार, श्री सचिन्द्र सिंह,

**16 अप्रैल, 2017**

दिनांक 16 अप्रैल, 1917 को हुई वह ऐतिहासिक घटना, जब गांधीजी ने मोतिहारी से बापूधाम चंद्रहिया और जसौली पट्टी का मार्च कर, अंग्रेज कलेक्टर को ज्ञापन दिया था का पुनर्चित्रण ठीक सौ साल बाद, 16 अप्रैल, 2017 को किया गया। इस मौके पर मोतिहारी से चंद्रहिया तक मार्च निकाला गया। मार्च का नेतृत्व बापू के वेश में श्री राजेन्द्र राठौड़ कर रहे थे। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, समिति की पूर्व उपाध्यक्षा श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

(ऊपर) युवा प्रतिभागियों को महात्मा गांधी और उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी की तस्वीर से सम्मानित करती महात्मा गांधी की पौत्री श्रीमती तारा गांधी।

(नीचे) इन्दु आर्ट एण्ड थियेटर और फिल्म सोसाइटी द्वारा सामाजिक मुद्दों पर आधारित नाटक का मंचन किया गया।

श्री श्याम बाबू यादव, श्री राजू तिवारी, एमएलसी बबलू गुप्ता, डॉ. लाल बाबू प्रसाद, केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति श्री अरविन्द अग्रवाल, गांधी संग्रहालय के सचिव श्री बृजकिशोर सिंह, डॉ. चन्द्रभूषण, डीआरएम श्री सुधांशु शर्मा आदि उपस्थित थे। केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने इस मौके पर जिला स्कूल मोतिहारी में कृषि कल्याण मेला का उद्घाटन भी किया।

चन्द्रहिया के बाद यह मार्च जसौली पट्टी पहुंचा। यह चम्पारण सत्याग्रह के एक सेनानी श्री लोमराज सिंह का गांव है। इस मौके पर श्री लोमराज सिंह को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की गई। स्थानीय विधायक और उपस्थित विशिष्ट जनों ने इस अवसर पर श्री लोमराज द्वारा चम्पारण सत्याग्रह के दौरान निभाई गई उल्लेखनीय भूमिका की चर्चा की। वक्ताओं ने बताया कि महात्मा गांधी बाबू

लोमराज सिंह की कार्यप्रणाली से काफी प्रभावित थे। चंद्रहिया और आसपास के क्षेत्रों में लोमराज सिंह ने लोगों को जागरूक करने और उन तक बापू का संदेश पहुंचाने में काफी मेहनत की। गांधीजी के हमशक्ल श्री राजेंद्र राठौड़ ने भी लोगों को संबोधित किया। लोगों ने उनमें बापू की छवि के दर्शन किए।

17 अप्रैल, 2017 को वरिष्ठ गांधीवादियों की टीम और समिति के स्टाफ सदस्यों ने बापू की इस कर्मभूमि से

और यात्रा जारी है....

(ऊपर से नीचे)
बिहार के माननीय राज्यपाल श्री रामनाथ कोविंद।
केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह।
समिति की पूर्व उपाध्यक्ष एवं महात्मा गांधी की पौत्री श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी।
समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत।

विदाई ली और भविष्य में भी इस क्षेत्र में कार्यक्रम करते रहने का संकल्प लिया। पूरे कार्यक्रम के दौरान बापू की स्मृतियों और उनके कार्यों को जीवंत किया गया।

### राष्ट्रीय युवा कार्यक्रम

राष्ट्रीय युवा परियोजना के सहयोग से समिति द्वारा 6 दिवसीय राष्ट्रीय युवा शिविर 10 से 15 अप्रैल, 2017 तक मोतिहारी, बेतिया और भीतिहरवा में आयोजित किए गए। इन शिविरों में प्रतिभागी युवाओं को चम्पारण सत्याग्रह की जानकारियां दी गई।

शिविर में युवा प्रतिभागियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन करते हुए पद्म श्री डॉ. एस. एन. सुब्बाराव।

प्रथम शिविर का आयोजन गांधी आश्रम भीतिहरवा में किया गया। इस अवसर पर विश्व मानव सेवा आश्रम के संस्थापक श्री शत्रुघ्न झा, डॉ. महेंद्र नागर, श्री हनुमान सहाय शर्मा, श्री मधुसूदन दास, श्री नरेंद्र वड़गांवकर, श्री धर्मेंद्र, श्री नीरज कुमार, श्री हनुमान देसाई, श्री मलखान सिंह आदि उपस्थित थे।

दूसरा शिविर भीतिहरवा में आयोजित हुआ। इस मौके पर युवाओं ने गांव में स्वच्छता अभियान के तहत गांव की नालियों, गलियों की सफाई की। इसके अतिरिक्त नरकटियागंज स्थित विश्व मानव सेवा आश्रम में भी शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में चम्पारण सत्याग्रह और उसके आजादी के आंदोलन पर प्रभाव के बारे में चर्चा की गई। शिविर में चरखा कताई सत्र और समाज सेवा की कई परियोजनाओं पर योजना बनाई गई।

चूंकि बैरिस्टर मोहनदास करमचंद गांधी 10 अप्रैल, 1917 को पटना पहुंचे थे। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शिविर की शुरूआत 10 अप्रैल, 2017 को चम्पारण के भीतिहरवा स्थित गांधी आश्रम से की गई। उद्घाटन समारोह में विश्व मानव सेवा आश्रम नरकटियागंज के संस्थापक श्री शत्रुघ्न झा और एनवाईपी के वरिष्ठ सदस्य डॉ. महेंद्र नागर, श्री हनुमान सहाय शर्मा, श्री मधुसूदन दास, श्री नरेंद्र वडगांवकर, श्री धर्मेंद्र, श्री नीरज कुमार, श्री हनुमंत देसाई, श्री मलखान सिंह और अन्य उपस्थित थे।

भीतिहरवा, जो चम्पारण के इतिहास में एक मील का पत्थर है, जहां महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी ने काफी समय व्यतीत किया। बा ने यहां एक कन्या स्कूल की स्थापना की। महिला शिविरार्थियों ने इस स्कूल में ठहराव किया, जबकि पुरूष शिविरार्थी गांधी स्मृति आश्रम में ठहरे। भीतिहरवा के श्रीरामपुर में युवाओं ने गांव की सफाई करने के साथ यहां ठहरे गंदे पानी के निकास की भी व्यवस्था की। शिविरार्थियों के साथ ग्रामीणों ने भी इस कार्य में सहयोग दिया।

### 11 अप्रैल

राष्ट्रीय युवा शिविर में श्रमदान व स्वच्छता अभियान चलाते शिविरार्थी।

शिविरार्थी गोहाना पहुंचे, जहां उन्होंने एक शांति मार्च निकाला। शिविर बस गांव बिसौली पकौड़ी भी गई और वहां सर्वधर्म प्रार्थना की। इस मौके पर 'भारत की संतान' झांकी का प्रदर्शन भी किया गया।

### 12 अप्रैल

शिविरार्थियों ने 12 अप्रैल को बजरिया के आदिवासी कन्या छात्रावास का दौरा किया। यहां से वाल्मीकि नगर का रास्ता काफी लंबा था। शिविरार्थियों ने गंडक नदी पर बने बैराज को पार कर नेपाल में प्रवेश किया। यहां करीब 800 लोगों ने कंगलुसूरी में आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की।

बाल हाथों को प्रशिक्षित करते हुए– स्वच्छता अभियान के दौरान एक बच्चे को प्रशिक्षित करते डॉ. एस. एन. सुब्बाराव।

इस मौके पर डॉ. एस. एन सुब्बाराव के नेतृत्व में स्वतंत्रता सेनानियों ने बागाहा का दौरा किया।

**13 अप्रैल**

शिविरार्थीयों ने अपनी झांकी के साथ अशोक स्तम्भ लोरिया का दौरा किया। जब वह लोरिया के किसान भवन सभागार में पहुंचे तो ग्रामीणो ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। संध्या में रामनगर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें करीब 5000 लोगों ने पूर्ण उत्साह से जागरूकता सत्र और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को देखा और सराहा।

**14 अप्रैल**

शिविर में शामिल लोगों ने बड़ी मुस्लिम आबादी वाले गांव रखाई का दौरा किया। जहां उन्होंने स्थानीय लोगों द्वारा आयोजित एक सामूहिक भोज में भाग लिया। भारत की संतान नामक झांकी का यहां प्रदर्शन किया गया, जो लोगों के आकर्षण का केन्द्र रही। संध्या कार्यक्रम नरकटिया गंज के बाजार में आयोजित किया गया। जहां सर्वधर्म प्रार्थना सभा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में 5000 लोगों ने शिरकत की।

इस राष्ट्रीय युवा शिविर का समापन 15 अप्रैल 2017 को हुआ। विश्व मानव सेवा आश्रम में आयोजित इस शिविर के समापन में केरल, राजस्थान, दिल्ली, मध्यप्रदेश, यूपी, ओडिशा, बिहार, असम से आए प्रतिभागियों ने शिविर में प्राप्त अनुभवों को बताया। समापन समारोह में सभी ने गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों का अपने अपने क्षेत्रों में प्रसार का संकल्प लिया।

**लघु गांधी की खोज– चम्पारण सत्याग्रह के आलोक में**

गांधी दर्शन में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेते हुए सांसद श्री बसवराज पाटिल, श्री वाई. आर. पाटिल, श्री बसंत व अन्य।

समिति द्वारा 20 से 21 अप्रैल तक गांधी दर्शन में लघु गांधी की खोज– चम्पारण सत्याग्रह के आलोक में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांसद श्री बसवराज पाटिल इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इसमें 110 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री बसवराज ने कहा कि युवा जब परेशानियों का सामना कर रहे हों, तो उन्हें महात्मा गांधी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कहा कि गांधीजी के रचनात्मक कार्य और ग्राम स्वराज की अवधारणा के माध्यम से हम अपना जीवन सुधार सकते हैं, साथ ही दूसरों के लिए भी मददगार साबित हो सकते हैं।

अन्य वक्ताओं में एम्स के डॉ. प्रसून चटर्जी, डॉ. मालती, सहायक प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री सौम्या दत्त आदि शामिल थे। श्री बसंत ने कार्यक्रम का संचालन किया। बाद मे प्रतिभागियों ने राजघाट का दौरा किया। इस अवसर पर जमीनी स्तर की गतिविधियां और सामाजिक कार्य संचालित किए गए।

दिन के भोजन के बाद के सत्र में सभी प्रतिभागी राजघाट के परिसर से बाहर गए और मालवंकर सभागार में आयोजित एक कार्यक्रम में भाग लेकर सामाजिक कार्यकत्ताओं से विचार विमर्श किया। यह समूह चर्चा अगले दिन भी जारी रही। अंत में भविष्य के कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की गई और अगले वर्ष फिर मिलने का निश्चय किया गया।

## एकता के लिए दौड़ आयोजित

गांधी स्मृति में 29 अप्रैल, 2017 को एकता के लिए दौड़ आयोजित की गई। जिसमें दिल्ली और एनसीआर के युवा, स्काउट, गाइड आदि सम्मिलित हुए। फुलकेयर मूवमैंट, शांति आश्रम और एएचओ मेडी हैल्थ के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम का विषय था–अपना दिल बदलो, विश्व बदलो।

छठी एकता के लिए दौड़ का शुभारंभ करते हुए श्री लक्ष्मीदास, डॉ. प्रसून चटर्जी, डॉ. सुनीता गोदारा, श्री विक्टर, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान एवं प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. ए. जमाल।

इस दौड़ को श्री लक्ष्मीदास ने गांधी स्मृति से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उनके साथ हैल्दी एजिंग इंडिया के डॉ. प्रसून चटर्जी, एशियन मैराथन चैम्पियन सुश्री सुनीता गोदारा भी उपस्थित थे। समिति के स्टाफ ने निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के नेतृत्व में इस दौड़ में हिस्सा लिया।

(ऊपर) गांधी स्मृति में एकता के लिए दौड़ के दौरान उपस्थित धावक एवं मोटर साइकिल सवार।
(नीचे) महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, एशियन मैराथन चैम्पियन डॉ. सुनीता गोदारा, हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास एवं अन्य।

(ऊपर) फोकलेयर आंदोलन के सदस्य प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए समिति निदेशक माननीय अपोस्तोलिक न्यूनसियो गियामबातिस्ता डिकात्रो को सम्मानित करते हुए।

(नीचे) समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान एकता दौड़ के युवा विजेता श्री विक्टर को सम्मानित करते हुए।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नीले, हरे, पीले और लाल रंग में वर्गीकृत प्रतिभागी और अखिल भारतीय नेत्रहीन संघ के प्रतिभागी रहे। यह दौड़ इंडिया गेट पर जाकर संपन्न हुई। समापन समारोह में सभी विजेताओं को समिति की ओर से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री लक्ष्मीदास ने व्यक्ति के जीवन में खेलों के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि गांधीजी सभी को बड़े धैर्य से सुनते थे और उनकी समस्या का समाधान करते थे। चम्पारण सत्याग्रह पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यह सत्याग्रह गांधीजी की मजबूती, उनकी कुशल नेतृत्व क्षमता का प्रमाण है। कार्यक्रम में स्वस्थ्य भारत ट्रस्ट के यात्री भी उपस्थित थे, जो अगस्त, 2016 से गांधी स्मृति से यात्रा आरंभ कर 29 शहरों का दौरा कर वापस लौटे थे। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने प्रतिभागियों को जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। सुमिता दत्ता ने रामधुन का मनोहारी प्रस्तुतिकरण किया।

दौड़ की समाप्ति के बाद कथक नृत्य की प्रस्तुति रिधन सांस्कृतिक आकादमी द्वारा दी गई।

कथक नृत्य प्रस्तुत करते हुए रिधम सांस्कृतिक अकादमी के कलाकार।

इस अवसर पर अपने संबोधन में श्री लक्ष्मीदास ने खेलों का हमारे जीवन में महत्व और इसकी उपयोगिता के बारे में बताया उन्होंने कहा कि खेल से जीवन में अनुशासन की सीख मिलती है। महात्मा गांधी ने अपने जीवन में शुरू से अंत तक अनुशासन अपनाया। वे हमेशा लोगों की समस्याओं को धैर्य से सुनते थे और उनका समाधान बुद्धिमता से करते थे। चम्पारण सत्याग्रह का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि यह सत्याग्रह गांधीजी की मज़बूती उनके अनुशासन का प्रतीक है। इस सत्याग्रह में उन्होंने वंचितों और शोषितों के हक की लड़ाई लड़ी और उन्हें समाज की मुख्य धारा से जोड़ा।

श्रीमती सुनीता गोदारा ने प्रतिभागियों की खेल भावना की सराहना करते हुए उन्हें सत्य के लिए संघर्ष करने और सपने देखने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि हालांकि सपने देखना आवश्यक है लेकिन उन्हें साकार करने के विषय में कार्य करना भी उतना ही आवश्यक है।

कार्यक्रम में स्वस्थ भारत ट्रस्ट के यात्रियों ने भी भाग लिया। जिन्होंने 17 अगस्त, 2016 को गांधी स्मृति, दिल्ली से अपनी यात्रा की शुरूआत की थी। इन्होंने देश के 29 शहरों में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ और स्वच्छ भारत' का संदेश देते हुए अपनी यात्रा पूर्ण की। स्वच्छ भारत

ट्रस्ट के प्रमुख श्री आशुतोष कुमार सिंह ने भी दौड़ में हिस्सा लिया।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने दौड़ में हिस्सा लेने वालो की इच्छा शक्ति और समर्पण की सराहना की और भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन की कामना की।

इस कार्यक्रम में विभिन्न धर्मों के धार्मिक गुरूओं ने एकता और शान्ति के लिए प्रार्थना की इससे पूर्व प्रसिद्ध गायिका श्रीमती सुनीता दत्ता ने रामधुन प्रस्तुत की।

**पश्चिम बंगाल**

**गांधीजी, चम्पारण सत्याग्रह और ग्रामीण युवा**

गांधी मिशन ट्रस्ट आश्रम दसपुर पं. बंगाल के सौजन्य से समिति द्वारा गांधीजी, चम्पारण सत्याग्रह और ग्रामीण युवा विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 28–29 जून, 2017 को आश्रम परिसर में किया गया। गांधी शांति फाउंडेशन बंगल के सचिव श्री चंदन पाल इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

(ऊपर) महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए। गांधी शांति प्रतिष्ठान के सचिव श्री चन्दन पाल, वरिष्ठ पत्रकार श्री प्रसून लतांत एवं अन्य।

(नीचे) कार्यशाला में अपने विचार प्रकट करते हुए एक विशिष्ट वक्ता, जबकि उन्हें गौर से सुनते हुए श्री नारायण भट्टाचार्जी (बिल्कुल दाएं)

गांधी मिशन ट्रस्ट के सचिव श्री नारायण भाई ने इस कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी दी। उन्होंने चम्पारण सत्याग्रह के महत्व और इस आंदोलन में युवाओं की भूमिका का भी वर्णन किया। उन्होंने युवाओं से अनुशासित रहने और समाज सेवा के कार्यों में आगे बढ़ने की अपील की।

घाटाल के एसडीओ श्री पिनाकी रंजन ने भी चम्पारण सत्याग्रह पर प्रकाश डालते हुए आज के युवाओं को समाज में रचनात्मक कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री चन्दन पाल ने गांधीजी द्वारा चलाए गए विभिन्न आंदोलनों की जानकारी देते हुए कहा कि युवा इन आंदोलनों के मुख्य कार्यवाहक थे। उन्होंने महिलाओं से अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ने और युवाओं को समर्पित भाव से देश सेवा का कार्य करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में समूह चर्चा और विमर्श भी किए गए। कार्यशाला में ' बापू समूह' और जे. पी. समूह' जैसे विभिन्न समूह बनाए गए, जिनमें संसाधन व्यक्तियों ने प्रतिभागियों को विभिन्न ऐतिहासिक आंदोलनों की महत्वपूर्ण जानकारियों से अवगत करवाया। यह महात्मा गांधी और जयप्रकाश नारायण को जानने का एक विशिष्ट मंच बन गया।

नाटक, नृत्य, गीत और कविता पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम की मनोहारी प्रस्तुति ने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दूसरे दिन श्री नारायण भाई ने प्रतिभागियों को महात्मा गांधी के 11 व्रतों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इन व्रतों का पालन कर युवा अपने व्यक्तित्व को संवार सकते हैं।

वक्ताओं ने इस मौके पर कहा कि चंपारण सत्याग्रह ने न केवल भारतीयों मे निर्भीकता के गुण का विकास किया, अपितु उन्हें स्वच्छता और स्वास्थ्य के बारे में जागरूक होना भी सिखाया। यह केवल एक आंदोलन ही नहीं अपितु जनजागरण का एक संकल्प था। युवा गांधीवादी सामाजिक कार्यकर्ता श्री धर्मेंद्र कुमार उपाध्याय ने आज के युवाओं के नैतिक व बौद्धिक विकास पर जोर दिया।

## झारखंड

### चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष–सेमिनार

समिति द्वारा जमशेदपुर महिला महाविद्यालय के तत्वावधान में चम्पारण सत्याग्रह के सौ साल विषय पर एक सेमिनार का आयोजन 18–19 जुलाई को किया गया। जाने–माने गांधीवादी प्रो. रामजीसिंह ने इसका उद्घाटन किया। इसके अलावा कार्यक्रम में डॉ. पूर्णिमा कुमार, प्राचार्य जमशेदपुर महिला महाविद्यालय, श्री अरविंद अंजुम, प्रो. मनोज कुमार व अन्य गणमान्य अतिथिगण उपस्थित थे।

कार्यक्रम में वक्ताओं ने सत्याग्रह की अवधारणा को रेखांकित किया और अहिंसा और सत्य के सिद्धांत को आज के दौर में पहले से अधिक प्रासंगिक बताया। उन्होंने गांधीजी द्वारा प्रतिपादित आंतरिक स्वच्छता के बारे में भी चर्चा की।

विशिष्ट अतिथि डॉ. अशोक कुमार झा ने चम्पारण सत्याग्रह की प्रकृति का वर्णन किया। प्रो. रामजीसिंह ने कहा कि चम्पारण सत्याग्रह सत्य की लड़ाई थी। इसलिए यह सफल रहा। उन्होंने कहा कि आज भी 60 प्रतिशत लोग गांवों में रह रहे हैं, लेकिन गांवों और शहरों के बीच बड़ी खाई है, जिसे पाटना जरूरी है।

कार्यक्रम के दूसरे दिन प्रो. एन. पी मोदी, डॉ. मिथलेश कुमार, सुश्री अमृता कुमारी, डॉ. रिजवाना परवीन और सुश्री श्वेता श्रीवास्तव ने गांधी जी के रचनात्मक कार्यों, चम्पारण सत्याग्रह का महत्व और सत्याग्रह की गांधीवादी अवधारणा पर अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर जमशेदपुर महिला कॉलेज की प्राचार्य डॉ. पूर्णिमा कुमार, श्री अरविंद अंजुम, प्रो. मनोज कुमार आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

## केरल

### युवा सत्याग्रहियों की दो दिवसीय कार्यशाला

चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के अवसर पर समिति द्वारा युवा सत्याग्रहियों की दो दिवसीय कार्यशाला लगाई गई। कालीकट विश्वविद्यालय की गांधी चेयर के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम का आयोजन 12–13 अगस्त, 2017 को किया गया। इसका उद्घाटन कालीकट विश्वविद्यालय केरल के कुलपति डॉ. के. मौहम्मद बशीर और समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने किया। इसमें 120 से अधिक प्रतिभागियों और 25 संसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया।

(ऊपर से नीचे) कालीकट विश्वविद्यालय में आयोजित युवा सत्याग्रहियों के ऑरिएंटेशन शिविर के दृश्य।

कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. मो. बशीर, कुलपति कालीकट विश्वविद्यालय, प्रो. एन. राधाकृष्णन, पूर्व निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, डॉ. एम. जी. एस. नारायणन, पूर्व अध्यक्ष आईसीएचआर।

कुलपति डॉ. बशीर ने इस मौके पर कहा कि युवा पीढ़ी की सही सोच आज के दौर की आवश्यकता है। युवाओं को नेतृत्व के गुण ग्रहण करने चाहिए। यदि युवा आत्मविश्वास और मजबूती के गुण धारण करेगा, तभी समाज और देश की गंभीर समस्याओं को हल किया जा सकेगा।

डॉ आर. सुंदरन ने महात्मा गांधी के मूल्यों को प्रतिपादित करते हुए युवाओं को उनसे सीख लेने की अपील की। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी के जीवन का अनुसरण करके ही हम आज के दौर के सिरमौर बन सकते हैं।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि युवाओं और बच्चों के दिमाग में गांधीजी सदैव जीवित रहने चाहिए। राष्ट्रीय आंदोलनों में गांधीजी की आत्म शक्ति और आंतरिक मजबूती क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है। उन्होंने कहा कि केवल परिसर की सफाई ही पर्याप्त नहीं है, शब्द और आचरण भी शुद्ध होने चाहिए।

प्रो. एमजीएस नारायणन ने प्रमुख व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने सत्याग्रह के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सत्याग्रह ने लोगों को आत्म शुद्धि और आत्म प्रगति के लिए प्रेरित किया। गांधीजी के सत्याग्रह में हार, नफरत और दबाव के लिए कोई जगह नहीं थी। उन्होंने कहा कि आचार्य विनोबा भावे और श्री के केलप्पन भी महान सत्याग्रहियों में से थे, जिन्होंने महात्मा गांधी के बाद उनके कार्यों को संभाला।

इस मौके पर अनेक तकनीकी सत्र हुए। मुख्य वक्ताओं में श्री एम.पी जकारिया, कालीकट विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी, श्री एन. राधाकृष्णन, अध्यक्ष गांधी स्मारक निधि केरल, प्रो. गोपालन कुट्टी, कालीकट विश्वविद्यालय शामिल थे। इसके अलावा विभिन्न विद्यालयों और महाविद्यालयों के राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यकर्ता, नेहरू युवा केंद्र, वैश्विक शांति संस्थान, सर्वोदय मंडलम नशाबंदी समिति, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, हिन्दी प्रचार सभा, और पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार के मुद्दों पर काम करने वाली अनेक गैर राजकीय संस्थाओं के पदाधिकारियों व प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कार्यशाला के दूसरे दिन योगा सत्र के अतिरिक्त अनेक सत्र हुए। समापन समारोह में जिला जज श्री के रमेश भाई बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। प्रतिभागियों को इस मौके पर प्रमाणपत्र भी वितरित किए गए। कार्यक्रम में पूर्व सांसद श्री सी हरिदास, डॉ. एमसीके वीरन, श्री एम नारायणन, डॉ. पी शिवदासन, श्री पी. पीतंमरम, श्री लयाचेरी कुन्नीकृष्णन, श्री टी. वी. राजन सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

## मध्य प्रदेश

### गांधी स्मृति यात्रा में महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज के महत्व और उपयोगिता पर चर्चा

चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर समिति द्वारा गांधी भवन न्यास भोपाल के सौजन्य से 14 अगस्त 2017 को गांधी स्मृति यात्रा का शुभारंभ किया गया। स्वतंत्रता की 70वीं वर्षगांठ पर आयोजित इस यात्रा का संयोजन श्री सी. बी. शर्मा द्वारा किया गया।

यात्रा ने मध्यप्रदेश के 10 जिलों, होशंगाबाद, बुरहानपुर, हलदा, शाजापुर, बेतूल, खंडवा, इंदौर, भोपाल का दौरा किया, जहां जनसभाओं का आयोजन कर, महात्मा गांधी के ग्राम स्वराज, सत्याग्रह जैसी अवधारणाओं को आज के परिप्रेक्ष्य में प्रतिपादित किया गया।

इन जनसभाओं में करीब 500–1000 लोगों ने शिरकत की और महात्मा गांधी की शिक्षाओं पर आधारित वक्ताओं के विचारों को ध्यान से सुना। इस दौरान स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों को सम्मानित भी किया गया।

सितंबर 2017 में यात्रा का दूसरा भाग आरंभ किया गया, जिसमें शेष बचे जिलों का दौरा कर महात्मा गांधी के विचारों का प्रसार किया गया।

## मुरैना

### युवा निर्माण पर राष्ट्रीय सम्मेलन

समिति द्वारा मध्यप्रदेश के मुरैना में युवा निर्माण पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 16–17 सितंबर, 2017 को किया गया। महात्मा गांधी सेवा आश्रम मुरैना और एकता परिषद् व गांधी न्यास के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में 30 राज्यों से आए 200 युवाओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन वरिष्ठ गांधीजन एवं राष्ट्रीय युवा परियोजना के संस्थापक डॉ. एस. एन. सुब्बाराव ने किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि देश को विकसित बनाने के लिए इसे भ्रष्टाचार और गरीबी मुक्त बनाना होगा। उन्होंने कहा कि आध्यात्म के माध्यम से ही लोगों की मनोवृत्ति को सुधारा जा सकता है।

मध्य प्रदेश सरकार के जनस्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री रुस्तम सिंह ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर

(ऊपर से नीचे) राष्ट्रीय सम्मेलन युवा प्रतिभागियों को संबोधित करते पद्म श्री डॉ. एस. एन. सुब्बाराव।
कार्यक्रम में जारी समूह चर्चा।
प्रतिभागी, प्रसिद्ध गांधीवादी डॉ. एस. एन. सुब्बाराव के साथ समूह चित्र के अवसर पर।

पर श्री आर. के. पालीवाल भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री अजय पांडे ने किया।

इसमें रखे गए सत्र निम्नलिखित थे:

**सत्र 1 :** गांधी का ग्राम स्वराज व वर्तमान चुनौतियां–मुख्य वक्ता–श्री देबाशीष, त्रिपुरा, श्री सुरेश राठी हरियाणा, श्री हनुमान शर्मा राजस्थान, डॉ. आर.सी. गुप्ता उत्तर प्रदेश, सुश्री नंदिनी पश्चिम बंगाल, श्री प्रभात बिहार, श्री राजीव गुप्ता, उत्तर प्रदेश, श्री गुरचरण सिंह पंजाब, श्री आशीष महाराष्ट्र।

**सत्र 2 :** राष्ट्रीय एकता और अखंडता की चुनौतियां–मुख्य वक्ता–गुरदेव सिंह संधू, श्री के. सुकुमारन, श्री हरिबिस्वास, श्री श्रीधरन, श्री अनिल हेबर, श्री सुनील सेवक।

**सत्र 3 :** सर्वधर्म सद्भाव और भारतीय बहुत भाषा गीत–भारत की संतान–प्रतिभागियों द्वारा मलयालम, गुजराती, हिन्दी, बांग्ला, तेलगू और उड़िय सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां।

**सत्र 4 :** स्वावलंबी जीवन और आजीविका की सुरक्षा–मुख्य वक्ता : रणसिंह परमार, सुश्री निधि प्रजापति, श्री केशव पांडे।

**सत्र 5 :** गांधी की प्रासंगिकता और युवाओं की भूमिका–मुख्य वक्ता : श्री पी.वी. राजगोपाल, श्री गोपाल शर्मा, श्री धर्मेंद्र भाई।

## गांधी जयंती राष्ट्रीय सम्मेलन

### चम्पारण की पुनर्यात्रा : 21वीं सदी में सत्याग्रह की चुनौतियां

1) प्रो. मृणाल मिरी सम्मेलन को संबोधित करते हुए।
2) डॉ. बी. पी. सिंह युवाओं से चर्चा करते हुए।
3) अपने अनुभव बयां करती एक युवा प्रतिभागी।
4) श्री बिलाल अपने विचार प्रकट करते हुए।

दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन कॉलेज में दो दिवसीय गांधी जयंती राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन का विषय "चम्पारण की पुनर्यात्रा : 21वीं सदी में सत्याग्रह की चुनौतियां" था। कार्यक्रम का आयोजन गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और जाकिर हुसैन कॉलेज के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। विजन इंडिया रिसर्च सेंटर इस कार्यक्रम का अकादमिक सहयोगी था।

1

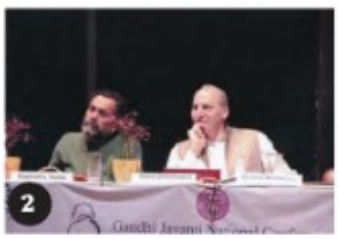
2

1) सम्मेलन में उपस्थित स्वामी अग्निवेश, श्री अशोक आचार्य, डॉ. बिन्दु पुरी एवं श्री अरविन्द मोहन।

3

2) श्री योगेन्द्र यादव एवं श्री रमिन जहांबेगलू।

3) सम्मेलन में विचार मग्न श्री कल्लोर भट्टाचार्जी।

4

4) सम्मेलन में आयोजन समिति की सदस्या को सम्मानित करते प्रो. विद्युत चक्रवर्ती।

सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री बी. पी. सिंह, प्रो. मृणाल मिरी, श्री रमिन जहानबेगलू, श्री योगेंद्र यादव, प्रो. मृदुला मुखर्जी, श्री अरविन्द मोहन, सुश्री रागिनी नायक, श्री एस. एन. साहू, श्री हिलाल अहमद, श्री कल्लोल भट्टाचार्जी, सुश्री शक्ति सिन्हा और प्रो. शिव विश्वनाथम समेत 42 प्रसिद्ध वक्ताओं ने इसमें भाग लिया। इसके अतिरिक्त करीब 100 विद्यार्थी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

दो दिवसीय इस सम्मेलन में उद्घाटन सत्र, पूर्ण अधिवेशन सत्र और समापन सत्र के अलावा 6 कार्य सत्र आयोजित किए गए।

सम्मेलन के प्रथम दिन चार सत्र, उद्घाटन सत्र, पूर्ण सत्र और दो कार्य सत्र आयोजित किए गए।

इस सम्मेलन का उद्घाटन सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री बी. पी. सिंह ने किया। इस अवसर पर श्री एस. पी. सिंह अध्यक्ष जाकिर हुसैन कॉलेज, प्रो. संजीव कुमार, संयोजक गांधी स्टडी सक्रल, प्रो. मृणाल मिरी प्रसिद्ध भारतीय दार्शनिक और शिक्षाविद्, श्री बिलाल एकीगोज, अध्यक्ष इंडायलोग फाउंडेशन आदि उपस्थित थे।

पूर्ण सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध राजनीतिक दार्शनिक श्री रमीन जहानबेगलू ने की। इस सत्र में विभिन्न क्षेत्रों के प्रसिद्ध वक्ता सम्मिलित हुए, जिनमें सुश्री नीरा चांडोके, मृदुला मुखर्जी प्रसिद्ध इतिहासकार प्रमुख थे।

सम्मेलन के दूसरे सत्र में तीन, चार व पांच कार्य सत्रों का आयोजन किया गया।

प्रो. रिजवान कैसर प्राध्यापक जामिया मिल्लिया इस्लामिया, श्री एस. एन. साहू, पूर्व राष्ट्रपति के. आर. नारायणन के प्रेस सचिव, श्री संगीत के रागी प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री अफरोज आलम स्वतंत्र पत्रकार, बिद्युत चक्रवर्ती प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रो हिलाल अहमद, सहायक प्राध्यापक सीएसडीएस, श्री अनवर आलम राजनीति विशेषज्ञ, श्री कल्लोल भट्टाचार्जी वरिष्ठ संपादक द हिन्दू इन सत्रों के मुख्य वक्ता थे।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री शक्ति सिन्हा निदेशक नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय ने की। इस सत्र में श्री शिव विश्वनाथन प्रसिद्ध बुद्धिजीवी, श्री सुरेश कुमार प्रमुख अफ्रीकन स्टडीज विभाग, श्री संजय कुमार संयोजक गांधी स्टडी सक्रल, जाकिर हुसैन कॉलेज नई दिल्ली ने सम्मेलन के विषयों पर अपनी प्रस्तुति दी।

सम्मेलन के विभिन्न तकनीकी सत्र थे:

- सत्याग्रह पर बहस : सैद्धांतिक आधार और व्यवहारिक आयाम
- चम्पारण सत्याग्रह 1917 : इतिहास पर रिफ्लेक्शन
- सत्याग्रह और समकालीन विवाद और शांति पर दृष्टिकोण।

कार्यक्रम में जाकिर हुसैन कॉलेज के चेयरमैन श्री एस. पी. सिंह, प्राचार्य डॉ. सुलेख चंद्र, प्रो. संजीव कुमार, बिलाल अल्कोज आदि उपस्थित थे।

**वाराणसी, उत्तर प्रदेश**

**गांधी पर राष्ट्रीय सेमिनार : चम्पारण और उसके अतिरिक्त**

कार्यक्रम में दीप प्रज्ज्वलन करते महात्मा गांधी के पौत्र एवं प्रसिद्ध लेखक डॉ. राजमोहन गांधी। उनके साथ प्रसिद्ध गांधीवादी प्रो. रामजी सिंह व बसंत कॉलेज के सदस्य।

आशाओं का धागा बुनते हुए: कार्यक्रम के दौरान बसंत कॉलेज के विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों के साथ डॉ. राजमोहन गांधी। विद्यार्थियों ने इस अवसर पर चरखा कताई का प्रदर्शन किया।

समिति द्वारा "गांधी : चम्पारण और उसके अतिरिक्त" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन 16–17 मार्च, 2018 को वाराणसी में किया गया। वसंत महिला कॉलेज के इतिहास विभाग और कृष्णमूर्ति फाउंडेशन राजघाट के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों और संसाधन व्यक्तियों द्वारा गांधी विचारों के विविध आयामों पर चर्चा की गई।

श्री गोपाल कृष्ण गांधी द्वारा लिखित 'दर्द–ए–दिल' नाटक का मंचन करते विद्यार्थी।

मुख्य संबोधन प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता प्रो. राजमोहन गांधी द्वारा दिया गया। जबकि समापन भाषण जाने–माने विचारक व समाजसेवी श्री सच्चिदानंद सिन्हा ने दिया। इस मौके पर गोपालकृष्ण गांधी द्वारा लिखित और एफ. आनंद द्वारा निर्देशित नाटक 'दर्द–ए–दिल' का मंचन किया गया। इसके अतिरिक्त गांधी और चम्पारण विषय पर एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

(इनसेट) बसंत कॉलेज में सेमिनार को संबोधित करते डॉ. राजमोहन गांधी।

(नीचे) सेमिनार में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते डॉ. राजमोहन गांधी।

उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते हुए वसंत कॉलेज की प्राचार्य डॉ. अलका सिंह ने कहा कि हिंसा और युद्ध से भरे विश्व में गांधी एक बार फिर प्रासंगिक हो गए हैं।

जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं राजस्थान के पूर्व कुलपति प्रो. रामजी सिंह सेमिनार में अपने विचार प्रकट करते हुए।

मुख्य अतिथि श्री राजमोहन गांधी ने कहा कि चम्पारण सत्याग्रह का प्रभाव लंबे समय तक रहा था। गांधीजी ने चम्पारण में अपने विवेक के आधार पर जिला प्रशासन से बात न करने और चम्पारण को न छोड़ने का निर्णय लिया था। उन्होंने कहा कि मानवता के इर्द–गिर्द उभरी चुनौतियां और समस्याओं को दूर करके ही हम गांधीजी को सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं।

प्रो. रामजी सिंह पूर्व कुलपति जैन विश्व भारती संस्थान लाडनू ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि यह दुर्भाग्य है कि वर्तमान में चम्पारण में गांधीजी को भुला दिया गया है। किसानों की आत्महत्या का मुद्दा उठाते हुए उन्होंने कहा कि सच्ची मानव प्रगति की कीमत पर विज्ञान और तकनीक के पीछे हम भाग रहे हैं। यह पूरी तरह से गांधी की धारणाओं के विपरित है।

कार्यक्रम में सेमिनार संयोजक डॉ. दीप्ति पांडे, कृष्णामूर्ति फाउंडेशन के प्रबंधक श्री एस.एन. दुबे, सेमिनार सचिव डॉ. संजीव कुमार, डॉ. श्रेया पाठक ने भी अपने विचार रखे।

### अकादमिक सत्र 1 –चम्पारण : भारत में सत्याग्रह की शुरूआत

इस सत्र में अपने विचार व्यक्त करते हुए प्रसिद्ध पत्रकार श्री अरविंद मोहन ने कहा कि गांधीजी ने चम्पारण में कहा था कि सत्य इस रूप में सामने आना चाहिए कि कोई भी इसे नकार न सके। अपनी अहिंसा की अवधारणा के माध्यम से गांधीजी ने भयहीनता का मंत्र लोगों को दिया था। उनके दिमाग में चल रहे शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामोद्योग के प्रारूप को चम्पारण में अभिव्यक्ति मिली।

समाजवादी जनपरिषद् वाराणसी के महासचिव श्री अफलातून ने कहा कि अहिंसा की ताकत ने रचनात्मक कार्यों को जन्म दिया। उन्होंने लघु और खादी उद्योग को बढ़ावा देने पर बल देते हुए कहा कि ये गांधीजी के आर्थिक विचारों का मुख्य बिन्दु था।

गांधी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री कुमार प्रशांत ने कहा कि सत्याग्रह एक आन्दोलन के रूप में विचारों से संबंधित है। बेहतरी के लिए उन्हें समझें और लागू करें।

### अकादमिक सत्र 2–लोगों को किनारे जाने लायक बनाना : गांधीवादी तरीका

चम्पारण के बोकाने कला के सामाजिक कार्यकर्ता श्री नारायण मुनि ने किसानों द्वारा गांवों से शहरों में पलायन और ग्रामीण जीवन की चुनौतियों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज समय की मांग है कि गांधीजी के विचारों से प्रभावित लोग आगे आएं और गांवों में काम करें।

बनवासी सेवा आश्रम सोनभद्र की सचिव सुश्री शुभा ने क्षेत्र के 370 गांवों में अहिंसात्मक तरीके से आत्मनिर्भरता की दिशा में काम करने के अपने अनुभव को बताया।

इस सत्र की अध्यक्षता श्री सुनील सहस्त्रबुद्धे, अध्यक्ष विद्या आश्रम सारनाथ ने की।

निहत्थे पैगम्बर की विरासत विषय पर पैनल वार्ता आयोजित की गई। इसके वक्ता थे–

- श्री अमरनाथ भाई, पूर्व अध्यक्ष, अखिल भारतीय सर्व सेवा संघ
- डॉ. सुजाता चौधरी, प्रसिद्ध लेखक और कार्यकर्ता, भागलपुर
- प्रो. अवधेश प्रधान, हिन्दी विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
- प्रो. अशोक कौल, सामाजिक विज्ञान विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय

- प्रो. मालविका पांडे, इतिहास विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
- प्रो. सतीश राय, राजनीति विज्ञान विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

चर्चा का संचालन करते हुए श्री अमरनाथ भाई ने प्रश्न उठाया आज महात्मा गांधी की विरासत की पूरी दुनिया में विभिन्न तरीकों से चर्चा क्यों की जा रही है? इसका उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि यह इसलिए है क्योंकि गांधी दर्शन ही मुसीबत में फंसे विश्व को निकालने में सक्षम है। अन्य वक्ताओं ने भी गांधीवादी विचारों के विभिन्न आयामों पर चर्चा की। इन वक्ताओं ने भी माना कि केवल गांधीवाद में ही विश्व की सभी समस्याओं, खासकर सामाजिक आर्थिक संकट का हल है। समय बीतने के साथ उनके सिद्धांत पहले से भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

**द्वितीय दिन**

**अकादमिक सत्र 3– गांधीवादी रचनात्मक कार्यों में प्रयोग**

कस्तूरबा महिला उत्थान मंडल लक्ष्मी आश्रम कौसानी उत्तराखंड की सुश्री राधा भट्ट ने कहा कि रचनात्मक कार्य में काफी ऊर्जा होती है, जिससे लोगों को अपने अधिकार, न्याय और वजूद के लिए खड़े रहने में मदद मिलती है।

विश्व मानव सेवा आश्रम नरकटियागंज के श्री शत्रुघ्न झा ने खादी पर अपने विचार रखते हुए कहा कि खादी के बिना गांधी अधूरे हैं। उन्होंने चरखे के विभिन्न प्रकारों के बारे में बताया। आश्रम के बच्चों ने इस मौके पर चरखा कताई का प्रदर्शन भी किया।

सुश्री आशा, लक्ष्मी आश्रम कौसानी ने आश्रम की गतिविधियों और गरीब बच्चों के लिए इसमें होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी।

सत्र का समापन महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के सामाजिक कार्य विभाग के प्रो. संजय कुमार ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गांधीजी की वीरता एक वैकल्पिक वीरता है। उनके कार्य, उनकी शिक्षाएं समाज के सभी वर्गों और विश्व के सभी देशों के लिए समान रूप से लाभकारी हैं। गांधीवाद एक ऐसा दर्शन हैं, जिसके पास सभी मानव समस्याओं का हल है। आज जरूरत है उनकी समृद्ध विरासत को बचाने की। इसके लिए विशेषतः युवाओं को आगे आना होगा।

**अकादमिक सत्र 4–चौराहे पर भारतीय लोकतंत्र : गांधीवादी विकल्पों को उभारना**

दिल्ली विश्वविद्यालय के देशबंधु कॉलेज के डॉ. सौरभ बाजपेयी ने 'गांधीजी कहीं नहीं है, गांधीजी हर जगह हैं' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने प्रश्न उठाया," नोटों पर गांधीजी हैं, हर चौराहे पर गांधी की प्रतिमा है, लेकिन उनके विचार और दर्शन कहां हैं? वर्तमान समय में गांधीजी के विचारों को संरक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है।

सर्व सेवा संघ के श्री राम धीरज ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि अहिंसा पर आधारित समाज ही मानवता की बेहतरी के लिए कार्य कर सकता है।

**अकादमिक सत्र 5–स्थिर विश्व व्यवस्था की संभावना और गांधी**

दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व सहायक प्राध्यापक डॉ. जगदीश एन सिन्हा ने प्रकृति से निकटता, प्रकृति से सौहार्द और प्रकृति प्रदत सुरक्षा के बारे में गांधीजी की समझ का जिक्र किया।

महात्मा गांधी काशीविद्यापीठ के गांधी अध्ययनपीठ के निदेशक प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी ने गांधीजी की तरह धर्म को संकीर्ण दायरे से निकालकर विस्तृत और मानवीय आयामों की तरफ ले जाने पर बल दिया। सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखिका सुश्री सुजाता चौधरी, ने और संचालन डॉ. संजीव कुमार ने किया।

**समापन सत्र**

सत्र का आरंभ प्राचार्या डॉ. अलका सिंह के अतिथियों के स्वागत भाषण से हुआ। सत्र को श्री सच्चिदानंद सिन्हा, प्रो. सुचेता महाजन, प्रो. राजीव सहगल ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर एक संवाद सत्र–पूछो और जानो का आयोजन किया गया। जिसमें प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रश्न, विशेषज्ञों से पूछे। इस सत्र में जहां प्रतिभागियों ने विशेष उत्साह से अपनी शंकाओं के बारे में बात की, वहीं

उपस्थित वक्ताओं ने भी गहराई से उनकी शंकाओं का समाधान किया और उन्हें गांधीजी के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। इस सत्र का सफल संचालन गांधी शांति प्रतिष्ठान के श्री कुमार प्रशांत ने किया। उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों से संबंधित प्रश्नों और व्यवहारिक जीवन में आने वाली कठिनाईयों से संबंधित प्रश्नों का अद्‌भुत समावेश किया।

चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के अवसर पर बसंत कॉलेज द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करती छात्राएं।

# बा–बापू 150–एक प्रस्तावना

## "बा–बापू 150–एक पूर्वावलोकन"

बा और बापू की 150वीं जयंती मनाने के क्रम में 31 जुलाई, 2017 को एक पूर्वावलोकन कार्यक्रम गांधी दर्शन परिसर में आयोजित किया गया। हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास, समिति के पूर्व निदेशक डॉ. एन. राधाकृष्णन, श्री रमेश शर्मा, श्री बसंत, श्री प्रसून लतांत, कुमारी इंदु बाला, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान इस अवसर पर उपस्थित थे।

गांधी दर्शन में बा–बापू की 150वीं जयंती की तैयारियों को लेकर आयोजित बैठक में परिचर्चा करते हुए समिति के कर्मचारी व अन्य विशिष्ट जन। बैठक की अध्यक्षता प्रसिद्ध गांधीवादी प्रो. एन. राधाकृष्णन ने की।

इस कार्यक्रम में गांधीजी की 150वीं जयंती को मनाने को लेकर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समुचित पहल करने पर मंथन किया गया। गांधी स्मृति और दर्शन समिति को अंतरराष्ट्रीय महत्व का स्थल बनाने से संबंधित विभिन्न सुझाव इस मौके पर दिए गए।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने गांधीजी की 150वीं जयंती के संदर्भ में समिति द्वारा किए गए कार्यों, यथा कौशल विकास योजना केन्द्र का गठन, महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्रों की देश के विभिन्न भागों में स्थापना आदि का वर्णन किया।

## गांधी 150 बैठक आयोजित

गांधीजी की 150 वीं जयंती के संदर्भ में समिति द्वारा दिनांक 2 अगस्त, 2017 को गांधी दर्शन में एक बैठक की गई, जिसमें वरिष्ठ अकादमियन, सामाजिक कार्यकर्ता, लेखक आदि सम्मिलित हुए। बैठक में गांधीजी के विचारों और संदेशों को घर–घर व जन–जन तक पहुंचाने के तरीकों पर चर्चा की गई।

इस मौके पर इंडियन सोसायटी फॉर गांधीयन स्टडीज की अध्यक्षा डॉ. शीला रॉय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के भारतीय गांधी अध्ययन समिति के कुलपति प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी, डॉ. सीताराम चौधरी, डॉ. हरेंद्र किशोर मिश्रा, श्री सुधीर चंद्र जेना, श्री अनुज गुप्ता, श्री बसंत सिंह, सुश्री मोनालिजा प्रधान, डॉ. संजय जैन, डॉ. सतीश चंद्र अग्रवाल, डॉ. मनोरंजन कुमार भारती, डॉ. पूर्णिमा कुमार, डॉ. खेमचंद महावर, श्री चंद्रेश्वर प्रसाद शर्मा, श्री सुधीर कुमार सिन्हा, श्रीमती रीता कुमारी और श्री पंकज चौबे उपस्थित थे।

## बापू के रचनात्मक कार्यक्रमों पर परिचर्चा

बिहार के सीवान में समिति की ओर से बापू के रचनात्मक कार्यक्रमों पर परिचर्चात्मक कार्यक्रम का आयोजन 3 नवम्बर, 2017 को किया गया। साखिरी महिला विकास संस्थान के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में बापू के रचनात्मक कार्यों के माध्यम से महिलाओं द्वारा सामाजिक विकास कार्य करने की संभावनाओं पर विमर्श किया गया।

महात्मा गांधी और उनकी पत्नी कस्तूरबा गांधी की 150वीं जयंती के सिलसिले में चल रहे कार्यक्रम में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम पर चर्चा करती महिला प्रतिभागी।

कार्यक्रम का शुभारंभ साखरी की सदस्यों ने दीप प्रज्ज्वलन कर किया। उन्होंने महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन भी अर्पित किए। इस कार्यक्रम में समिति के प्रतिनिधि के तौर पर सुश्री रचना शामिल हुईं। करीब 150 महिलाओं ने कार्यक्रम में भाग लिया। इस मौके पर रचनात्मक कार्यक्रम के अनेक भागों यथा, राष्ट्रीय एकता, नशाबंदी, खादी और ग्रामोद्योग, स्वच्छता, बुनियादी तालीम, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, आर्थिक समानता, किसान, मजदूर, आदिवासी, विद्यार्थी, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय भाषाएं आदि पर चर्चा की गई।

इस अवसर पर उपस्थित प्रमुख वक्ताओं में खंड विकास अधिकारी श्री किशोर कुमार, सुश्री निर्मला सिंह, श्री सुबोध तिवारी शामिल थे।

### वैश्विक गांधी फोरम के साथ बा–बापू 150 की बैठक आयोजित

### गांधी का वैश्विक रूप

समिति द्वारा विनोबा सेवा प्रतिष्ठान के सौजन्य से "गांधी का वैश्विक रूप" कार्यक्रम गांधी दर्शन परिसर में 12 मार्च, 2018 को आयोजित किया गया। देश के विभिन्न भागों से आए करीब 35 लोगों ने इसमें भाग लिया। इसके अतिरिक्त जापान के प्रतिनिधि भी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

इस अवसर पर गांधी की 150वीं जयंती की तैयारियों की समीक्षा की गई। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, श्री मनोज जेना, श्री हरदयाल कुशवाहा कार्यक्रम में उपस्थित थे। इस अवसर पर सभी ने राजघाट स्थित गांधी समाधि जाकर बापू को श्रद्धांजलि अर्पित की।

बा–बापू की 150वीं जयंती की तैयारियों को लेकर आयोजित बैठक में विमर्श करते प्रतिभागी।

### बा–बापू 150 जयंती बैठक की तैयारी

### 12–14 मार्च, 2018

बा और बापू की 150 वीं जयंती की तैयारियों के सिलसिले में एक बैठक 12–14 मार्च, 2018 को गांधी दर्शन में आयोजित की गई। इसमें विभिन्न शिक्षाविदों व गणमान्य लोगों ने भाग लिया। समिति निदेशक, श्री दीपंकर श्री ज्ञान, श्री कलानंद मणि, प्रो. मनोज कुमार, निदेशक महात्मा गांधी फुजी गुरूजी सामाजिक विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा, श्री बसंत, पूर्व सलाहकार, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, सिंघानिया विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. सोहनराज, गांधी शांति स्टडीज के विभागाध्यक्ष प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी एवं अन्य ने कार्यक्रम में भाग लिया।

बैठक के पहले दिन समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि सभी कार्यक्रम गांधी जी के सिद्धांतों पर

प्रसिद्ध गांधीवादी और सामाजिक विचारक श्री कलानंद मणि बा–बापू की 150वीं जयंती की तैयारियों के कार्यक्रम में अपने विचारों का प्रकटीकरण करते हुए।

आधारित होने चाहिए और इन कार्यक्रमों से लोग जुड़ने चाहिए। गांधीजी अपने जीवनकाल में देश के सभी राज्यों में गए थे, अतः उनके कार्यक्रम भी समस्त देश में होने चाहिए। विभिन्न राज्यों में उनके द्वारा किए गए कार्यों का प्रलेखन और प्रकाशन होना चाहिए।

अपने संबोधन में प्रो. बी. एल. शाह विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान, कुमायूं विश्वविद्यालय नैनीताल ने जजों और अधिवक्ताओं को शंका समाधान के कार्यों में पारंगत किया

महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी की 150वीं जयंती के सिलसिले में चर्चा करते हुए वरिष्ठ गांधीजन, विचारक, लेखक, शिक्षाविद् एवं अपने–अपने क्षेत्रों के विशिष्ट लोग। यह कार्यक्रम गांधी दर्शन में आयोजित किया गया।

जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि गांधीजी उत्तराखंड के ताकुला गांव में आए थे, अतः उनकी स्मृति में यहां विकास का कुछ कार्य होना चाहिए।

डॉ. निशिकांत कोलगे ने कहा कि हमें महात्मा गांधी से जुड़ी गलतफहमियों को दूर करना होगा। उनके विचारों को एक से दूसरे लोगों तक प्रसारित करना चाहिए, और भारी संख्या में लोग इस मुहिम में शामिल होने चाहिए। उन्होंने सुझाव दिया कि पूर्वोत्तर के राज्यों में भी महात्मा गांधी पर आधारित कार्यक्रम ज्यादा से ज्यादा संख्या में होने चाहिए, ताकि वहां के लोगों को भी महात्मा गांधी के अनुकरणीय जीवन से प्रेरणा लेने का मौका मिले।

प्रो. आर.के. गुप्ता ने कहा कि गांधीजी का उत्तराखंड से गहरा रिश्ता था। अनासक्ति योग नामक पुस्तक का लेखन यहीं किया गया था। लेकिन गांधीजी से संबंधित कोई कार्यक्रम अब यहां नहीं होता। उन्होंने कहा कि उत्तराखंड महात्मा गांधी की विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। हमें इस प्रदेश में उनसे संबंधित कार्यक्रमों का विस्तार करना चाहिए। बापू की 150 वीं जयंती पर उनके रचनात्मक कार्यों पर आधारित कार्यक्रमों की श्रृंखला यहां पर चलाई जानी चाहिए।

कार्यक्रम में श्री कलानंद मणि, प्रो. मनोज कुमार, श्री बसंत, प्रो. सोहन राज, नरेश कुमार एडवोकेट, श्री हिमांशु ने भी अपने विचार रखे।

एडवोकेट मौहम्मद अमाम सईद ने कहा कि केंद्र सरकार को 2 अक्तूबर, 2018 को राष्ट्रीय उत्सव के रूप में मनाना चाहिए और इस उत्सव में अधिकाधिक लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

बैठक में अपने सुझाव देते हुए हेमवंती नंदन बहुगुणा केंद्रीय विश्वविद्यालय श्रीनगर उत्तराखंड के श्री हिमांशु ने कहा कि महात्मा गांधी पर आधारित भाषण, वाद विवाद प्रतियोगिताओं के आयोजनों से युवाओं को गांधीजी के बारे में अधिक जानकारी दी जा सकती है। हमें इस प्रकार के आयोजनों के विषय में सोचना चाहिए।

वरिष्ठ अधिवक्ता नरेश कुमार ने कहा कि पंचायत व्यवस्था के तहत 6 साधारण बैठकें एक साल में होती हैं। गांधीजी की यादों को अक्षुण रखने के लिए इन बैठकों के आरंभ और अंत में गांधीजी के विचारों पर चर्चा होनी चाहिए और यह अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि ग्राम स्तर पर स्वच्छता, शिक्षा और सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले ग्रामीण कार्यकर्ताओं को "ग्रामीण गौरव पुरस्कार" से सम्मानित किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम में वक्ताओं ने समूह बनाकर गांधी की 150वीं जयंती मनाने के तौर तरीकों पर चर्चा की और इस आयोजन को अविस्मरणीय बनाने के लिए विभिन्न संभावनाओं व उपायों पर खुलकर अपनी बात रखी।

बा–बापू की 150वीं जयंती के बारे में आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों को लेकर मंथन करते हुए प्रतिभागीगण।

# आदिवासियों के लिए कार्यक्रम

## थारू, चम्पारण, बिहार

### आदिवासी कला संस्कृति संगम

आदिवासियों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को उभारने के लिए, समिति द्वारा देश के विभिन्न भागों में कई वर्षों से आदिवासी कला संस्कृति संगम कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। इसी कड़ी में थारू जनजाति के लिए कला संस्कृति संगम का आयोजन 22 से 24 जून, 2017 तक किया गया। चम्पारण के वाल्मीकि नगर स्थित हरनाटाड में आयोजित इस कार्यक्रम में 600 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

हरनाटाड, वाल्मिकि नगर, पश्चिमी चम्पारण, बिहार में आयोजित थारू आदिवासी कला संस्कृति संगम में उपस्थित निकटवर्ती गांवों की महिलाएं।

उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि इस कार्यक्रम के आयोजन का उद्देश्य आदिवासियों के उत्थान के साथ–साथ समिति द्वारा चलाए गए कार्यों को बताना भी है। उन्होंने चम्पारण में गांधीजी के योगदान को रेखांकित करते हुए गांधीजी के रचनात्मक कार्यों को अपनाने पर जोर दिया।

अपने संबोधन में श्री धीरेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि गांधीजी ने चम्पारण को अपनी कार्यस्थली के रूप में चुना और इस धरती ने उन्हें महात्मा बनाया। उन्होंने सत्य और अहिंसा के गांधीजी के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। इस मौके पर स्थानीय आदिवासी कलाकारों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

इस मौके पर महिलाओं की समस्याओं और उनके समाधान विषय पर एक सत्र का आयोजन किया गया। सांसद श्री सतीशचन्द्र दुबे ने इस कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

इस अवसर पर अपने संबोधन में समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि यह आवश्यक है कि बच्चों के नेतृत्व गुणों को विकसित करने की दिशा में प्रयास किए जाएं। उन्होंने इग्नू से संबंध स्थापित करने की सलाह देते

थारू कला संस्कृति संगम में उपस्थित समाज के विभिन्न क्षेत्रों के लोग सामाजिक कार्यकर्त्ता, वरिष्ठ गांधीवादी, समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान एवं समिति के कर्मचारी गण।

स्थानीय लोक संस्कृति की प्रस्तुति कला संस्कृति संगम का मुख्य आकर्षण का केन्द्र रही।

हुए कहा कि बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए यहां इग्नू का एक केन्द्र खोला जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि स्थानीय महिलाओं को सरकार की कौशल विकास संबंधी योजनाओं की जानकारी रखनी चाहिए। उन्होंने महिलाओं से आह्वान किया कि वे 'महिला गांधी समूह' बनाएं।

श्री सतीश चन्द्र दुबे ने कहा कि कृषि क्षेत्र में अभी और काम करने की जरूरत है, साथ ही कौशल विकास योजना को और सक्रिय करना चाहिए। "हमारे क्षेत्र में नवोदय और केंद्रीय विद्यालय होने चाहिए। यदि हमें प्रत्येक घर को मजबूत बनाना है, तो हमें कृषि और शिक्षा के क्षेत्र को मजबूती प्रदान करनी होगी। जब तक सब लोग जागरूक नहीं होंगे, हमारा संपूर्ण विकास नहीं हो सकता।" उन्होंने कहा।

कला संस्कृति संगम में स्थानीय प्रतिभाओं को सम्मानित करते हुए गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की श्रीमती रीता कुमारी एवं श्री यतेन्द्र सिंह। उनके साथ है समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत एवं समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला।

समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने महिला पंचायतों की भूमिका के बारे में बताया। इस सत्र में थारू पंचायत के सदस्यों श्रीमती सुनवासी देवी, श्रीमती फूलकुमारी, श्रीमती विनीता देवी, श्रीमती सुनयना देवी और श्रीमती कुमारी देवी आदि ने भी शिरकत की।

24 जून को आयोजित सत्र की अध्यक्षता श्री बसंत जी ने की। इसमें 200 विद्यार्थियों ने भाग लिया। थारू क्षेत्र के प्रमुख श्री दीपनारन, श्री प्रकाश नारायण भी उपस्थित थे।

थारू में आयोजित तीन दिवसीय कला संस्कृति संगम में भारी संख्या में स्कूली बच्चों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

# बच्चों के लिए कार्यक्रम

### बच्चों के नजरिए से गांधी को समझना–एक परिचर्चा

समिति की ओर से इतिहास (भारतीय परंपरा विरासत समाज) के विद्यार्थियों के लिए गांधी दर्शन परिसर में 27 मई, 2017 को एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। ये विद्यार्थी अपने समर प्रोजेक्ट के तहत गांधीजी के संदेशों और उनके जीवन को समझने आए थे।

इतिहास की संस्थापक निदेशक श्रीमती स्मिता वत्स के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय में इंटर्नशिप कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने अनुभूति की कि गांधी दर्शन संग्रहालय का अवलोकन कर, उन्होंने गांधीजी की 'मोहन से महात्मा' बनने की यात्रा का अनुभव किया है। अपने अनुभवों को साझा करते हुए प्रतिभागियों ने बताया कि इस परिचर्चा के माध्यम से उन लोगों को गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों और हिन्द स्वराज की उनकी धारणा को समझने और उसे अपने जीवन में उतारने की प्रेरणा मिली है। इस अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्रीमती शाश्वती झालानी ने गांधीजी के विभिन्न गुणों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि गांधी केवल एक व्यक्ति नहीं, अपितु एक संस्थान थे। उन्होंने न केवल अंग्रेज सरकार से संघर्ष किया, अपितु भारतीय समाज में फैली छुआछूत, असमानता, जातिवाद आदि बुराईयों को भी रोकने की कोशिश की। उन्होंने गांधीजी के गुणों को अपनाकर, विद्यार्थियों को बेहतर नागरिक बनने की अपील की।

समिति के कार्यक्रम कार्यकारी श्री राजदीप पाठक ने समिति की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि बच्चों को स्कूलों में मोनिया क्लब स्थापित करने चाहिए। यह क्लब बच्चों की रचनात्मक गतिविधियों का एक अच्छा केन्द्र बन सकता है। उन्होंने कहा कि गांधी दर्शन परिसर में स्थापित गांधीजी की विरासत का अवलोकन कर हमें उनसे प्रेरणा लेने का प्रयास करना चाहिए।

इससे पूर्व विद्यार्थियों ने गांधी दर्शन परिसर का अवलोकन किया और गांधीजी के बारे में जाना। विद्यार्थी गांधी दर्शन का दौरा कर और नई–नई चीजों को जानकर बड़े प्रसन्न थे। परिचर्चा का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

### थियेटर और कला पर बच्चों की कार्यशाला

केन्द्रीय कर्मचारी कॉलोनी करोल बाग में 14–18 जून, 2017 तक थियेटर और कला पर आधारित बच्चों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका संचालन श्री गुलशन गुप्ता ने किया।

(ऊपर से नीचे) कार्यशाला का शुभारंभ करते समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।
"स्वच्छाग्रह" पर नाटक का मंचन करते बच्चे।

श्रीमती मधुमिता खान ने इस कार्यशाला का संचालन किया। उन्होंने बच्चों को थियेटर संबंधी विभिन्न बारीकियों की जानकारी दी और स्वच्छता पर आधारित एक नाटक की तैयारी करवाई। समिति के श्री शिवदत्त ने कॉमिक्स कला के बारे में बच्चों को सिखाया। सीखे हुए बच्चों ने अपनी कला का बेहतरीन प्रदर्शन कॉमिक्स बनाकर किया।

18 जून, 2017 को गांधी दर्शन में बच्चों ने नाटक का मंचन किया। इस मौके पर पर्यावरण से संबंधित एक फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। समापन समारोह में समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने प्रतिभागी बच्चों के सीखने के प्रयासों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

### बच्चे और शांति निर्माण पर कार्यशाला

समिति द्वारा मा शांति फाउंडेशन के सौजन्य से शांति गार्डन नई दिल्ली में 'बच्चे और शांति निर्माण' पर सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें द्वारका सेक्टर 3 स्थित झुग्गी बस्ती के 100 बच्चों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला में प्रतिभागी बच्चों को 6 अलग समूहों में विभाजित कर उन्हें महात्मा गांधी के जीवन की प्रेरणादायी घटनाओं के बारे में बताया गया, साथ ही उन्हें हिंसा से दूर रहकर बापू के अहिंसावादी सिद्धांतों पर चलने की प्रेरणा दी गई।

(बाएं से दाएं) "बच्चे और शांति निर्माण" कार्यशाला में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते बच्चे। मा पीस फाउंडेशन द्वारा आयोजित इस शिविर में बच्चों ने समूह अभ्यास, रेडियो कार्यशाला, मूक अभिनय और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्साह व जोश से हिस्सा लिया।

इसका उद्घाटन प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती मृदुला प्रधान ने किया। इस मौके पर सुश्री नीता गाबा, सुश्री सौम्या, श्यामचंद्र झा, समिति के कार्यक्रम कार्यकारी श्री राजदीप पाठक उपस्थित थे। अपना रेडियो से सुश्री शताक्षी, योग प्रशिक्षक ओमवीर सिंह ने विशेष कार्यशाला करवाई। श्रीमती मीना देवी ने चरखे के महत्व के बारे में बताया। कार्यशाला में बच्चों ने श्रमदान, सामुदायिक स्वच्छता, थियेटर, कला आदि जैसी गतिविधियों में भाग लिया।

(ऊपर) द्वारका में आयोजित कार्यशाला में बच्चों के एक सत्र को संचालित करते समिति के कार्यक्रम कार्यकारी श्री राजदीप पाठक। (नीचे) कार्यक्रम में शामिल बच्चों के साथ समूह चित्र खिंचवाते हुए श्रीमती कामना झा (बांए से पांचवी)

दिनांक 24 जून, 2017 को कार्यशाला का समापन समारोह हुआ। श्री रमेश मटियाला इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे। मोनिया क्लब के विद्यार्थियों ने स्वच्छता और कूड़ा प्रबंधन के मुद्दे उठाए।

इस अवसर पर अपने संबोधन में श्री मटियाला ने कार्यक्रम में उठाए गए मुद्दों पर अपना सहयोग देने का वादा किया। उन्होंने कहा कि यह प्रसन्नता की बात है कि स्वच्छता अभियान अब एक जनांदोलन बन चुका है और समाज का हर वर्ग, जाति व धर्म से आगे निकलकर इस अभियान का हिस्सा बन रहा है। कार्यक्रम का संचालन शिवांगी, अंकुर, रोहित, आकांक्षा, श्रीमती अनिता शर्मा, रेणु, शिखा, सपना, शीला बैस, गोमति तोमर आदि ने किया।

## पटना, बिहार

### तृतीय अंतरराष्ट्रीय योग दिवस आयोजित

समिति द्वारा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर 21 जून को पटना में बिहार के मुसाहर समुदाय के लिए योगाभ्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। अभियान संस्था के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में 19 गांवों के बच्चों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम के माध्यम से मुसाहर समुदाय के बच्चों के व्यक्तित्व निखारने और उन्हें मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया गया। बच्चों ने इस मौके पर स्वच्छता और स्वास्थ्य से संबंधित समस्याएं उठाईं।

## समस्तीपुर, बिहार

### तीसरे अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में गांधी, स्वच्छता और स्वास्थ्य पर सेमिनार

समिति द्वारा स्वस्थ भारत न्यास और सुंदरी देवी सरस्वती विद्या मंदिर के सौजन्य से बिहार के समस्तीपुर में गांधी स्वच्छता और स्वास्थ्य पर सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों के 1500 बच्चे शामिल हुए।

कार्यक्रम में वरिष्ठ गांधीवादी पत्रकार श्री प्रसून लतांत ने बच्चों को गांधीजी के जीवन के बारे में बताया। स्वास्थ्य भारत अभियान के राष्ट्रीय संयोजक, श्री आशुतोष कुमार सिंह ने कहा कि स्वच्छ भारत के साथ स्वस्थ भारत का निर्माण करना संभव है। महात्मा गांधी के स्वच्छता अभियान के बारे में बताते हुए कहा कि दिमाग और शरीर दोनों को साफ रखना आवश्यक है। स्वच्छ दिमाग ही स्वस्थ दिमाग का निर्माण करता है।

तृतीय योग दिवस के तहत स्वच्छता और स्वास्थ्य विषय पर आयोजित सेमिनार में उपस्थित प्रतिभागी।

प्रो. बी. के. तिवारी ने युवाओं में उभरती स्वास्थ संबंधी समस्याओं की प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि भोजन और रहन–सहन की बदलती आदतों के कारण युवाओं में बीमारियां घर कर रही हैं।

कार्यक्रम में बेटियों को मुफ्त शिक्षा उपलब्ध करवाने में सहायता करने वाले डॉ. एन. के. आनंद ने कहा कि 25 साल तक के युवा बच्चों और 60 साल से ऊपर के बुजुर्गों की सरकार द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य जांच होनी चाहिए। स्कूल प्राचार्य, अशोक कुमार सिंह स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने और सदैव स्वस्थ्य रहने का आह्वान विद्यार्थियों से किया।

इस मौके पर योग गुरू कुमार कृष्णन ने बच्चों को योगमुद्राओं का अभ्यास करवाया। उन्होंने योगाभ्यास के लाभ गिनाते हुए कहा कि आज के युग में जब सभी लोग बीमारियों से ग्रस्त होते जा रहे हैं, ऐसे में योग के जरिए अपनी जीवन शैली बदलकर हम इन बीमारियों से निजात पा सकते हैं, व इस के बारे में जागरूकता फैलाकर समाज को भी लाभान्वित कर सकते हैं। इस मौके पर श्री शैलेंद्र मिश्रा, विजयव्रत कांत, श्री कैलाश पोद्दार, श्री सत्य, सुश्री सोनाक्षी, सुश्री आकांक्षा, सुश्री अमृता, श्री मिथलेश पाठक, श्री राजेश कुमार सुमन, प्रियंका सिंह आदि उपस्थित थे।

### अल्मोड़ा, उत्तराखंड

### बच्चों की कार्यशाला का आयोजन

दस्तक सामाजिक संस्था द्वारहाट उत्तराखंड के सौजन्य से समिति द्वारा एक सेमिनार का आयोजन 23–24 अगस्त को किया गया। इसमें नशाबंदी, महिला उत्पीड़न, सफाई और स्वास्थ्य सहित अनेक मुद्दों पर बच्चों से चर्चा की गई। इस मौके पर विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं भी हुई। कार्यशाला में 10 विभिन्न स्कूलों के 90 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस मौके पर कार्यशाला संयोजक श्री सी. पी. जोशी, श्रीमती ममता भट्ट विशेष रूप से उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में स्वच्छता, पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण और महिला उत्पीड़न से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। इस मौके पर इस बात पर भी जोर दिया गया कि कैसे पर्यावरण संबंधी समस्याओं को दूर किया जाए, ताकि प्रदूषण के खतरों से मुक्ति पाई जा सके।

उत्तराखंड के अल्मोड़ा में आयोजित कार्यशाला में उत्साहित प्रतिभागी बच्चे।

इस कार्यक्रम में बच्चों ने सक्रियता से भाग लेकर सामाजिक सरोकारों से जुड़े मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। दो दिवसीय इस कार्यशाला का समापन प्रमाण पत्र व पुरस्कार वितरण के साथ हुआ।

### 2 अक्तूबर को होने वाले महात्मा गांधी जयंती कार्यक्रम के लिए अभ्यास

महात्मा गांधी जयंती कार्यक्रम को लेकर रिहर्सल गांधी दर्शन और गांधी स्मृति परिसर में की गई। स्वर तृष्णा के संगीत निदेशक श्री सुधांशु बहुगुणा के सानिध्य में करीब 400 स्कूली बच्चों ने संगीतमय कार्यक्रम की जमकर रिहर्सल की।

### मूल्य निर्माण शिविर

समिति द्वारा गांधी दर्शन परिसर में आयोजित 11 दिवसीय मूल्य निर्माण शिविर का समापन 3 अक्तूबर, 2017 को हुआ। इस शिविर में गुजरात कुमार विनय मंदिर, गुजरात विद्यापीठ, श्री सुंदरलाल अंगूरी देवी जूनियर हाई स्कूल,

गांधी दर्शन में आयोजित मूल्य निर्माण शिविर की कुछ झलकियां। इस शिविर का औपचारिक उद्घाटन श्री लक्ष्मीदास, श्री रमेश शर्मा, श्री योगेश शुक्ला एवं समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने संयुक्त रूप से किया।

कार्यक्रम में उत्कृष्ट रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से बच्चों ने उपस्थित जनों का मन मोह लिया।

मूल्य निर्माण शिविर में विभिन्न गतिविधियों, यथा–बागवानी, थियेटर, चरखा कताई सीखने में तल्लीन प्रतिभागी बच्चे।

पिलुखनी नेहर, मथुरा, उत्कर्मिक माध्यमिक विद्यालय गांधी, बरहडवा लखनसेन, राजकीय मध्य विद्यालय, चन्द्रहैया, मोतिहारी ढाका, पूर्वी चम्पारण और निर्मला देशपांडे संस्थान पानीपत से आए 110 बच्चों और उनके अध्यापकों ने भाग लिया।

उद्घाटन समारोह में, श्री ए. एन. त्रिपाठी, विश्वभारती से प्रो. बिप्लब चौधरी, एनयूईपीए से प्रो. अविनाश सिंह, कारीगर पंचायत के श्री बसंत और श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति उपस्थित थे।

इस अवसर पर स्वागत गान प्रार्थना और विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। श्रीमती मधुमिता खान द्वारा निर्देशित नाटक "स्वच्छता" को सभी ने खूब सराहा। इस शिविर में बच्चों ने, श्री विवेक कुमार, श्रीमती रीता कुमारी, सुश्री रचना राठौड़, श्री धर्मराज, श्रीमती शोभा खुल्बे और श्री गुलशन गुप्ता के संयोजन में उत्साह से भाग लिया। बाद में चम्पारण बिहार से आए बच्चों ने केंद्रीय कृषि

(ऊपर) शिविर के समापन अवसर पर नाटक का प्रस्तुतीकरण करते बच्चे।

(नीचे) समापन समारोह में प्रतिभागी बच्चों के साथ उपस्थित समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

राज्यमंत्री श्री राधामोहन सिंह से उनके आवास पर जाकर मुलाकात की।

इस शिविर का शुभारंभ 23 सितंबर, 2017 को हुआ था, जिसमें श्री लक्ष्मीदास, श्री रमेश शर्मा, कुमारी कुसुम शाह, श्रीमती मंजुश्री मिश्रा और श्री प्रभात कुमार झा ने भाग लिया।

## विशेष बच्चों के लिए पाँच दिवसीय थियेटर और व्यक्तित्व निखार पर कार्यशाला

समिति द्वारा नवीन जीविका वेलफेयर एंड एजूकेशनल सोसायटी के सौजन्य से "थियेटर और व्यक्तित्व निखार" कार्यशाला का आयोजन किया गया। विशेष बच्चों के लिए आयोजित यह कार्यक्रम कड़कड़डूमा, दिल्ली स्थित जागृति एंकेलव में किया गया। कार्यक्रम के आयोजन का प्रमुख उद्देश्य बच्चों के आत्मविश्वास और व्यक्तित्व में थियेटर और स्टेज के माध्यम से निखार लाना था। थियेटर के माध्यम से बच्चों को स्वच्छता का महत्व समझाया गया। कार्यशाला के अंतिम दिन बच्चों ने एक नाटक का मंचन किया, जिसकी विषयवस्तु पर्यावरण संरक्षण पर आधारित थी। इसके माध्यम से आतिशबाजी फ्री दीपावली मनाने का संदेश दिया गया। इस कार्यशाला ने बच्चों को अपनी बातें खुलकर अभिव्यक्त करने और उनके व्यक्तित्व को निखारने का काम किया।

## गुप्तकाशी

### प्रकृति–मानव–वन्यजीव, परस्पर सह अस्तित्व पर बच्चों की कार्यशाला

गुप्तकाशी में आयोजित बच्चों की कार्यशाला में विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देतीं समिति की सुश्री रचना।

समिति की ओर से डॉ. जैक्स विग्ने नेशनल स्कूल, गुप्तकाशी उत्तराखंड, के बच्चों की एक कार्यशाला 10 अक्तूबर को आयोजित की गई। इस कार्यशाला का विषय था– प्रकृति–मानव–वन्यजीव, परस्पर सह अस्तित्व। इसमें करीब 120 विद्यार्थियों ने भाग लिया। सामाजिक कार्यकर्त्ता श्री सी. पी. जोशी ने कार्यक्रम में पर्यावरण बचाने में बच्चों की भूमिका पर प्रकाश डाला। प्रतिभागी विद्यार्थियों ने भी महात्मा गांधी और पर्यावरण विषय पर अपने विचार रखे।

## कटिहार

### स्वच्छता पर वाद विवाद कार्यक्रम

समिति द्वारा सर्वोदय आश्रम गांधीघर के तत्वावधान में कुरसेला बिहार में वाद विवाद प्रतियोगिता और पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन 2 अक्तूबर, 2017 को किया गया। इस कार्यक्रम में कक्षा 9वीं व 10वीं के 400 स्कूली बच्चों ने भाग लिया।

कुरसेला में आयोजित स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम में सफाई अभियान में हिस्सा लेते प्रतिभागी।

इस अवसर पर चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्षों की गाथा पर भी चर्चा की गई। बच्चों ने स्वच्छता पर अपने विचार रखे। प्रतिभागियों ने "बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ" पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सुश्री सोनिया धंधानिया मुख्य अतिथि थीं। इसके अलावा कुरसेला के एसएचओ श्री बिनोद सिंह, जिला परिषद सदस्य श्री गोपाल यादव, ग्राम पंचायत मुखिया श्री अमिक राम आदि उपस्थित थे।

### बच्चे और शांति निर्माण पर कार्यशाला आयोजित

समिति के तत्वावधान में जफराबाद स्थित डॉ. जाकिर हुसैन मेमोरियल सीनियर सेकेंडरी स्कूल में "बच्चे और शांति निर्माण" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें करीब 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला का संयोजन समिति के श्री दीपक पांडे, श्रीमती रीता कुमारी और श्री गुलशन गुप्ता ने किया।

इस कार्यशाला में गांधीजी की परस्पर सह अस्तित्व की अवधारणा को प्रमुख रूप से उठाया गया और विद्यार्थी कैसे शांति स्थापित करने में अपनी भूमिका निभा सकते हैं, इस पर चर्चा की गई।

इस मौके पर गांधी स्मृति और दर्शन समिति का परिचय उपस्थित जनों को देते हुए श्री गुलशन गुप्ता ने कहा कि अब विद्यार्थियों को अपने भविष्य निर्माण के लिए अग्रणी कदम उठाने चाहिए और अपने दैनिक जीवन में अहिंसा के तरीकों को अपनाना चाहिए। विद्यार्थियों के साथ संवाद का सत्र भी इस कार्यक्रम में आयोजित किया गया।

विद्यालय में पौधारोपण करते बच्चे व उनके अध्यापक।

गांधीजी के जीवन को रेखांकित करते हुए श्रीमती रीता कुमारी ने गांधीजी के सत्याग्रह की चर्चा की। उन्होंने कहा कि गांधीजी ने बचपन से ही सत्य की अवधारणा को विकसित करना आरंभ कर दिया था।

श्री दीपक कुमार ने कि पहले बच्चे अपने करियर को चुनने में उदासीन रहते थे, लेकिन अब वे इसे गंभीरता से लेते हैं और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा की ओर अग्रसर रहते हैं। उन्होंने बच्चों से अपनी पढ़ाई पर ध्यान केन्द्रित करने और अपना लक्ष्य निर्धारित करने का आह्वान किया।

कार्यशाला का समापन प्रश्नोत्तर सत्र के साथ किया गया।

### स्वयंसेविता एवं रचनात्मक कार्यों पर कार्यशाला

समिति द्वारा पुरूषोत्तम श्रीराम डिग्री कॉलेज पतरस के सहयोग से कॉलेज परिसर में "विवादों के समाधान" विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन 17 नवम्बर, 2017 को किया गया। इस कार्यशाला में समिति का प्रतिनिधित्व पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता और प्रशिक्षु श्री दीपक पांडे ने किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीएसजेएमयू कानपुर के खेल सचिव डॉ. आर. पी. सिंह थे। उन्होंने अपने संबोधन में शिक्षा क्षेत्र में गुणात्मक सुधार और सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लोगों को

अच्छी शिक्षा और नैतिक शिक्षा प्राप्ति के लिए सदैव प्रयास करते रहना चाहिए।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को अध्यापन कार्य में एकीकृत अहिंसक संचार में पारंगत करना था। कार्यक्रम के प्रश्नोत्तर सत्र में भी दैनिक जीवन में अहिंसा के प्रयोग के बारे में विस्तृत चर्चा की गई।

विद्यार्थियों को मूलभूत व्यवहारिक कौशल के बारे में सिखाया गया, ताकि वे लोगों की मदद विवादों के समाधान में कर सकें। विद्यार्थियों द्वारा वरिष्ठ गांधीजन श्री नटवर ठक्कर द्वारा समझाई गई अहिंसक नीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई और कक्षा में अहिंसा के प्रयोग का व्यवहारिक ज्ञान भी दिया गया, ताकि सकारात्मक सीखने की प्रवृत्ति को संभव बनाया जा सके।

समिति के सदयों ने विद्यार्थियों को कक्षा में असामान्य स्थितियों से निपटने के तरीखे सिखाए। विद्यार्थियों ने अध्यापन से संबंधित कई प्रश्न भी विशेषज्ञों के समक्ष रखे।

### अंतर–विद्यालय वन्दे मात्रम रोलिंग ट्रॉफी प्रतियोगिता 2017

### भक्ति काल के संतो के गीतों की प्रस्तुति द्वारा शांति और सौहार्द का संदेश प्रसारित किया

शीतकाल की एक सर्द सुबह। हल्की हवा नए सत्र के आगमन के नरम अहसास का संदेश भेज रही है। ऐसे में इस सर्द मौसम में दिल्ली और एनसीआर के 16 स्कूलों के करीब 150 बच्चे अंतर विद्यालय वन्दे मातरम रॉलिंग ट्रॉफी प्रतियोगिता में प्रतिभागिता के लिए गांधी दर्शन में जुटे। दिनांक 5 दिसम्बर को हुए इस कार्यक्रम में इस वर्ष कबीर, बुल्ले शाह, तुलसीदास, गुरू नानक, मीरा, अमीर खुसरो और अन्य संतों और दार्शनिकों को याद किया गया।

इस अवसर पर बच्चों ने उत्साह से, मीरा बाई, तुलसीदास, अमीर खुसरो, कबीर द्वारा रचित भजनों 'आज रंग है' 'छाप तिलक सब छीनी' 'रामचन्द्र कृपालु भजमन' 'मेरो तो गिरधर गोपाल' को प्रस्तुत किया। बच्चों ने राग यमन, भैरवी, भीमप्लासी पर आधारित विभिन्न रचनाओं को प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में संतों की कविताओं के जरिए, आपसी प्रेम, भाईचारा, आंतरिक शांति के संदेशों को प्रसारित किया गया। ये संदेश आज ज़्यादा प्रासंगिक हैं।

इस प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार के रूप में ईस्ट प्वाइंट स्कूल, वसुंधरा एन्कलेव ने वन्दे मातरम रॉलिंग ट्रॉफी अपने नाम की। द्वितीय पुरस्कार मॉर्डन पब्लिक स्कूल, शालीमार बाग और तृतीय पुरस्कार दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड़ ने प्राप्त किया।

1) संत अवतार सिंह, श्री अविक सरकार, पं. सुनील कुमार और श्रीमती सुनिता बंसल कार्यक्रम का दीप प्रज़्ज्वलन कर शुभारंभ करते हुए।

2) समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, पं. सुनील कुमार का अभिनंदन करते हुए।

3) उपस्थित लोगों को संबोधित करते समिति के निदेशक।

गांधी दर्शन में आयोजित अंतर विद्यालय वन्देमातरम् संगीतमय प्रतियोगिता की कुछ झलकियां।

इसके अतिरिक्त सांत्वना पुरस्कार क्रमशः जैन भारती मृगावती स्कूल, जी. टी. करनाल रोड़, गौर इंटरनेशनल स्कूल, ग्रेटर नोएडा, सेंट टेरेसा स्कूल, गाजियाबाद और मीरा मॉडल स्कूल जनकपुरी ने जीता।

विजेता मुस्कान : वन्देमातरम रॉलिंग ट्राफी के विजेता, ईस्ट प्वाइंट स्कूल वसुंधरा एंक्लेव के बच्चे, ट्रॉफी हाथ में उठाए हुए। साथ हैं समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

इस अवसर पर निर्णायक की भूमिका पं. अभिक सरकार, पं. सुनील कुमार, संत अवतार सिंह, श्रीमती सुनीता बंसल और श्री क्रांति सिंह ने निभाई।

## गांधी पर कार्यशाला और प्रश्नोत्तरी आयोजित

समिति द्वारा "आओ गांधी को जाने" शीर्षक से एक कार्यशाला का आयोजन सामुदायिक उत्थान बालबाड़ी विद्यालय, आजादपुर दिल्ली में 20 दिसंबर, 2017 को आयोजित किया गया। इसमें 110 प्रतिभागी शामिल हुए। इस मौके पर गांधी प्रश्नोत्तरी का भी आयोजन हुआ, जिसका संचालन श्री गुलशन गुप्ता और श्रीमती रीता कुमारी ने किया।

श्रीमती रीता कुमारी ने बच्चों को मोहनदास करमचन्द गांधी के जीवन के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी।

प्रश्नोत्तरी में श्री सुनील साहू ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा स्थान क्रमशः श्री सूरज यादव, सुश्री राखी और सुश्री रीना कुमारी ने प्राप्त किया। श्री सूरज कुमार को तीसरा स्थान मिला। सांत्वना पुरस्कार सुश्री नीतू को मिला।

इस अवसर पर स्कूली बच्चों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी और 'स्वच्छता' पर एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया।

## पश्चिम बंगाल

### ग्रामीण बच्चों के उत्थान हेतु कार्यशाला

समिति द्वारा गूजर खरुई न्यू तरूण संघ, प. बंगाल के सौजन्य से "गांधी और उनके विचारों के जरिए ग्रामीण बच्चों का उत्थान" विषय पर पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 27–31 दिसंबर, 2017 को प. बंगाल में किया गया। इसमें 200 लोगों ने भाग लिया और 12

संसाधन व्यक्तियों ने इस कार्यशाला को संचालित किया। निकटवर्ती 11 जिलों के ग्रामीण बच्चो ने भी कार्यशाला में हिस्सा लिया।

उद्घाटन समारोह में उपस्थित होने वाले लोगों में शामिल थे– श्री चंदन पाल, सचिव गांधी शांति मिशन, प. बंगाल, श्री बिप्लब राय चौधरी, पूर्व विधायक, डॉ. चितरंजन पाल अध्यापक, डॉ. तरूण कुमार मंडल डीवाईसी, श्री सिराजुल प्रधान गूजर खरूई और श्री तरूण साहू।

गुजर खरूई न्यू तरूण संघ द्वारा प. बंगाल में आयोजित शिविर में विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते बच्चे।

इस अवसर पर प. बंगाल के स्वास्थ्य विभाग द्वारा बच्चों का स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया गया। कार्यशाला के दौरान योग, शारीरिक शिक्षा और सड़क दौड़ का संयोजन श्री बिस्वनाथ दास, सचिव पं. बंगाल योग एसोसिएशन ने किया।

ग्रामीण बच्चों द्वारा प्रस्तुत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य और नाटक कार्यक्रम के अन्य आकर्षण थे।

इस अवसर पर श्री बिस्वजीत घोराई, सचिव प. बंगाल सर्वोदय मंडल, श्री तपन चक्रवर्ती, श्री रणजीत घोराई, स्वामी निर्मोहानन्द जी, तमलुक रामकृष्ण मठ और मिशन, डॉ. सोमनाथ भट्टाचार्जी गोलपाक्र रामकृष्ण मिशन कोलकाता और श्री नारायण भट्टाचार्जी, गांधी मिशन ट्रस्ट, कोलकाता ने प्रतिभागियों के सम्मुख अपने विचार व्यक्त किए।

खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन डॉ. डी. के. मल और श्री रमन डे अध्यक्ष पूर्वोत्तर कलकत्ता लायंस क्लब ने किया।

## गांधी को समझना–बच्चों के साथ एक परिचर्चा

गांधी शांति संस्थान के सौजन्य से समिति ने 18 जनवरी, 2018 को गांधी स्मृति परिसर में 'अंडरस्टैंडिंग गांधी' अभियान के तहत परिचर्चा आयोजित की, जिसमें दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न संस्थानों के करीब 400 बच्चे सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, गांधी शांति संस्थान के अध्यक्ष श्री कुमार प्रशांत सहित संसाधन व्यक्तियों ने भी भाग लिया।

गांधी स्मृति में परिचर्चात्मक कार्यक्रम में भाग लेते प्रतिभागी बच्चे।

बच्चों ने संसाधन विशेषज्ञों से गांधी कथा सुनी और गांधी स्मृति म्यूज़ियम का अवलोकन किया।

## मूल्य निर्माण शिविर आयोजित

बच्चों की बद्धिमत्ता को निखारने, उनकी कौशल शक्ति को बढ़ाने और अंतरराज्यीय संस्कृति के आदान–प्रदान की पृष्ठभूमि में समिति द्वारा 10 दिवसीय मूल्य निर्माण शिविर का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। दिनांक 22 जनवरी से 2 फरवरी, 2018 तक आयोजित इस शिविर में बनवासी सेवा आश्रम उत्तर प्रदेश, गरूड़ांचल विद्यापीठ बेलबेरी, मेघालय, श्री केदारनाथ बद्री मानव श्रम समिति उत्तराखंड और दस्तक सामाजिक संस्था द्वारहाट उत्तराखंड से आए 100 बच्चों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम की प्रभारी श्रीमती गीता शुक्ला रहीं। इसका संयोजन श्री विवेक कुमार ने, डॉ. मंजू अग्रवाल, श्रीमती शोभा खुल्बे, श्री धर्मराज, सुश्री आकांक्षा और सुश्री कनक के सहयोग से किया। इस कार्यक्रम के संसाधन व्यक्तियों में शामिल थे–इंदू आर्ट थियेटर एवं फिल्म सोसायटी की श्रीमती मधुमिता खान, सुश्री रूचि रस्तोगी (क्राफ्ट), श्री शिवदत्त गौतम (प्रिंटिंग एंड कॉमिक्स), डॉ. मंजू अग्रवाल (स्वास्थ्य एवं स्वच्छता), श्रीमती शाश्वती झालानी (महात्मा गांधी परिचय), श्री विवेक कुमार (चरखा परिचय), श्री धर्मराज कुमार (स्वच्छता), सुश्री आकांक्षा (महिला संवेदना),

सुश्री निखत (बच्चों में जागरूकता) और श्री सत्यवान (जादू प्रदर्शन)।

मूल्य निर्माण शिविर में उपस्थित बच्चों को संबोधित करते समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान। कार्यक्रम में विभिन्न राज्यों से आए संयोजकों ने भी अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त एक उत्साही बच्ची ने भी अपने अनुभवों को साझा किया।

इस शिविर का उद्घाटन बसंत पंचमी के अवसर पर 22 जनवरी 2018 को दरियागंज के एसडीएम श्री अखिल कुमार ने किया। इसके अतिरिक्त कार्यक्रम में हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास, नेहरू युवा केन्द्र कारगिल के समन्वयक श्री सईद सज्जन, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, श्रीमती गीता शुक्ला शोध अधिकारी भी उपस्थित थे।

बच्चों ने शिविर में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। इन बच्चों ने 30 जनवरी को गांधीजी की 70वीं पुण्य तिथि पर भी संगीतमय श्रद्धांजलि दी।

इस 10 दिवसीय शिविर का समापन 1 फरवरी को हुआ। समापन समारोह में गांधी मिशन ट्रस्ट के संस्थापक निदेशक श्री नारायण भाई भट्टाचार्जी, श्री लक्ष्मीदास, मौहम्मद अली आजाद अंसारी, श्री बसंत, डॉ. जैकब, श्री दीपंकर श्री ज्ञान और गांधी दर्शन के अनेक कर्मचारी उपस्थित थे।

लिंग संवेदीकरण पर एक सत्र को संचालित करती हुई सुश्री निखत शमा खान।

## दस दिवसीय मूल्य निर्माण शिविर का समापन

गांधी दर्शन परिसर में आयोजित दस दिवसीय मूल्य निर्माण शिविर का समापन 1 फरवरी, 2018 को हुआ। इस शिविर में बनवासी सेवा आश्रम उत्तर प्रदेश, गरूड़ांचल विद्यापीठ बेलबेरी, मेघालय, श्री केदारनाथ बद्री मानव श्रम समिति उत्तराखंड और दस्तक सामाजिक संस्था द्वारहाट उत्तराखंड से आए 100 बच्चों ने भाग लिया। समापन समारोह में श्री नारायण भाई भट्टाचार्जी, श्री लक्ष्मीदास, श्री मौहम्मद अली आजाद अंसारी, श्री बसंत, डॉ. जैकब, श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति उपस्थित थे।

गांधी दर्शन में आयोजित मूल्य निर्माण शिविर में 'गांधी को पढ़ो और जानो' विषय पर सत्र का संचालन करती श्रीमती शाश्वती झालानी।

गांधी दर्शन परिसर में गणतंत्र दिवस समारोह में ध्वजारोहण करते समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान। समारोह में समिति के कर्मचारियों व उनके परिजनों ने भी भाग लिया।

इस शिविर में बच्चों की प्रतिभा को उभारने के लिए उनकी पसंद के आधार पर तीन समूह बनाए गए, ये थे–थियेटर, पेपर क्राफ्ट और पेन्टिंग और कॉमिक क्लास।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए गए और बच्चों ने शिविर के अनुभवों को साझा किया। मेघालय से आए बच्चों ने लोकगीत 'बोइसाकने बिदन लैता' प्रस्तुत किया। केदारनाथ के प्रतिभागियों ने शिव–पार्वती के विवाह से संबंधित नाटक को प्रस्तुत किया और द्वारहाट के बच्चों ने प्रकृति की खूबसूरती को बयां करने वाले लोकगीत की प्रस्तुति दी। बनवासी सेवा आश्रम के बच्चों ने 'कर्मा नृत्य' के जरिए पौधारोपण के अवसर पर की जाने वाली पूजा का चित्रण किया। बच्चों द्वारा स्वच्छता पर आधारित नाटिका भी प्रस्तुत की गई।

बनवासी सेवा आश्रम से आई शहनाज से अपने अनुभव बताते हुए कहा कि जब उन्होंने आश्रम से शिविर में आने की यात्रा आरंभ की तो उनके मन में शंका थी कि उनके साथ यहां समानता का व्यवहार होगा या नहीं। क्योंकि अधिकांश

मूल्य निर्माण शिविर के समापन समारोह में उपस्थित लोगों से अपने अनुभव साझा करती शिविर की एक प्रतिभागी।

प्रतिभागी दूसरे धर्मों से संबंधित थे। लेकिन यहां मेरी असुरक्षा की भावना बदल गई। यहां न केवल मुझे समानता की दृष्टि से देखा गया, अपितु शिविर में दूसरे धर्मों का आदर करना भी सीखा।

शिविर में महात्मा गांधी के बारे मे हमने अनेक नई बातें जानीं, विशेषकर उनके सत्याग्रह और अहिंसा के बारे में। मैं व्यक्तिगत तौर पर प्रयास करूंगी कि उनके आदर्शों को जीवन में लागू करूं। इसके अतिरिक्त हमने यहां सर्व धर्म प्रार्थना भी की और पेपर कला सीखी, ये अनुभव मैं अपने स्कूल के दोस्तों से भी साझा करूंगी।

श्रीमती शाश्वती झालानी ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

मूल्य निर्माण शिविर में विविध सांस्कृति पोशाकों में सजे प्रतिभागी बच्चे समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के साथ।

## विशेष बच्चों द्वारा उत्कृष्ट कार्यक्रम की प्रस्तुति

आनन्द सिंह स्मारक सोसायटी द्वारा समिति के सौजन्य से 25 फरवरी, 2018 को 21वां वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विशेष बच्चों ने भाग लिया। कार्यक्रम में दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल विशिष्ट अतिथि थे। अन्य गणमान्य व्यक्तियों में श्री एस. के. रूंगटा, महासचिव एनएफबी श्री अमित गुप्ता आदि उपस्थित थे।

विशेष योग्यता वाले बच्चे समूह गान का प्रस्तुतीकरण करते हुए।

इस अवसर पर विशेष बच्चों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इन बच्चों की अनूठी कलाओं को देखकर दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। प्रज्ञा ज्योति अंध छात्रावास के बच्चों की ओर से वेदों के श्लोकों का पाठ किया गया। अतिथियों ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किया। कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि श्री गजेंद्र सोलंकी द्वारा ओजपूर्ण कविताओं का पाठ किया, जिसे दर्शकों की खूब सराहना मिली। इसके अतिरिक्त डॉ. दयाल सिंह पवार, श्री अमित पुरी, श्री चंद्रवीर आदि ने भी कविता पाठ किया।

# युवाओं के लिए कार्यक्रम

## राष्ट्र निर्माण और रचनात्मक कार्य–एक कार्यशाला

समिति द्वारा मधुबाला जनसंचार और इलैक्ट्रोनिक मीडिया संस्थान के सौजन्य से राष्ट्र निर्माण और रचनात्मक कार्य पर एक कार्यशाला का आयोजन 6–7 अप्रैल, 2017 को किया गया। जिसमें करीब 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। यह कार्यशाला जनसंचार स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों में रचनात्मक कार्यों और स्वयंसेविता की गांधीजी की अवधारणा का प्रसार करने के लिए आयोजित की गई। इस अवसर पर हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास ने अध्यक्षीय भाषण प्रस्तुत किया। समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने मुख्य वक्ता के तौर पर लोगों को संबोधित किया। इसके अतिरिक्त श्री गुलशन गुप्ता, पूर्वोत्तर संयोजक ने भी अपने विचार रखे।

रचनात्मक कार्य और राष्ट्र निर्माण विषय पर आयोजित कार्यशाला में भाग लेते प्रतिभागी युवा।

कार्यशाला के दूसरे दिन वरिष्ठ पत्रकार श्री अमलेश राजू ने स्वयंसेवी कार्य और नेतृत्व कौशल के संबंध में अपने विचार रखे। इस अवसर पर विभिन्न विषयों पर आधारित मल्टीमीडिया समूह प्रस्तुतियां भी हुईं। समापन भाषण संस्थान के प्राध्यापक प्रो. एम. बी. जुल्का ने दिया। धन्यवाद प्रस्ताव सहायक प्राध्यापिका आहाना भट्नागर ने प्रस्तुत किया।

## शांति–सह–सांस्कृतिक कार्यक्रम पर कार्यशाला

गांधी स्मृति और दर्शन समिति व चकमा बौद्ध समाज के संयुक्त तत्वावधान में शांति सह सांस्कृतिक कार्यक्रम कार्यशाला का आयोजन 13 अप्रैल, 2017 को किया गया। जिसमें 350 लोगों ने भाग लिया।

(ऊपर से नीचे) : कार्यक्रम में प्रार्थना करते हुए बौद्ध समाज के लोग।

माननीय सांसद बिसवराज पाटिल को इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

समिति के प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. ए जमाल अतिथि को स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित करते हुए।

गांधी दर्शन में आयोजित कार्यक्रम में रंगारंग प्रस्तुतियों के प्रदर्शन से मंत्रमुग्ध दर्शकगण।

इस अवसर पर माननीय सांसद श्री बस्वराज पाटिल मुख्य अतिथि थे, अध्यक्षता श्रीमती सिम्मी जैन ने की। विशिष्ट अतिथि के तौर पर डॉ. गौतम तालुकदार, समिति के प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. ए. जमाल, श्री रमेश शीलेदार, श्री प्रमोद पेटकर प्रमुख वानवासी कल्याण आश्रम दिल्ली, श्री सुहास चकमा, निदेशक एशियन मानवाधिकार केन्द्र, श्री लाल मोहन चकमा महासचिव चकमा बौद्ध समाज व समिति के कार्यक्रम कार्यकारी, श्री राजदीप पाठक उपस्थित थे।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री बसवराज पाटिल ने कहा कि समस्त भारत सांस्कृति रूप से जुड़े हुए है और इस एकता की भावना को आज उत्सव के रूप में मनाने की आवश्यकता है। श्री पाटिल ने युवाओं के बिजू उत्सव में भाग लेने की सराहना करते हुए कहा कि युवाओं को अपने समाज की सेवा पूरे साल करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि गांधीजी का दर्शन और उनके शांति और अहिंसा के संदेशों से हम सबको प्रेरणा लेनी चाहिए।

वर्तमान समाज में आज हिंसा और भय का वातावरण व्याप्त है, इस स्थिति से निकलने का एकमात्र रास्ता है– गांधीवाद। उन्होंने अधिकाधिक युवाओं से गांधीजी के मार्ग पर चलने व उनके आदर्शों को अपनाने का आह्वान किया।

चकमा बौद्ध समाज से अपने संपर्कों का जिक्र करते हुए श्रीमती सिम्मी जैन ने समाज की प्रगति की सराहना की। उन्होंने कहा कि चकमा बौद्ध समाज और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ''चकमा शांति व सांस्कृतिक कार्यक्रम'' सामुदायिक कार्य का एक अच्छा उदाहरण है। उन्होंने भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजनों की आवश्यकता पर बल दिया।

श्री एस. ए. जमाल ने समिति के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए युवाओं से समाज में रचनात्मक कार्य करने की अपील की। उन्होंने चम्पारण सत्याग्रह के बारे में बताते हुए कहा कि यह एक ऐसा आंदोलन था, जिसके माध्यम से गांधीजी ने अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों का तो विरोध किया ही, साथ ही भारतवासियों को स्वच्छता का पाठ भी पढ़ाया।

श्री सुहास चकमा ने चकमा समाज के गांधीजी की अहिंसा की परिकल्पना के साथ जुड़ाव की चर्चा की। उन्होंने कहा कि चकमा पूर्वोत्तर का एकमात्र आदिवासी समाज है, जो संघर्ष का गांधीवादी मार्ग अपनाए हुए है।

उन्होंने कहा कि 1947 में अन्य आदिवासी समुदाय भारत से अलग होना चाहते थे और वे इसके लिए हिंसक आंदोलन छेड़े हुए थे। लेकिन चकमा एक ऐसी जनजाति थी, जो भारत से जुड़े रहना चाहती थी। उन्होंने कहा कि यद्यपि चकमा ने कभी भी हथियार नहीं उठाए, लेकिन उन्होंने अपने अधिकारों और मूलभूत आजादी के लिए संघर्ष किया।

यह संघर्ष गांधीजी द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर किया गया। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे समाज में हिंसा की रोकथाम करने के लिए आगे आएं।

इस मौके पर कई चकमा युवकों को राष्ट्रीय आदिवासी कार्निवल कार्यक्रम और बिजू आमंत्रण फुटबॉल कप में प्रतिभागिता करने पर सम्मानित किया गया, जो क्रमशः 30 मार्च और 5 मार्च, 2017 को नई दिल्ली के वसंत कुंज स्थित डीडीए खेल कॉम्पलैक्स में आयोजित किए गए थे।

कार्यक्रम में चकमाओं की समृद्ध हस्त कलाओं का प्रदर्शन किया गया। इस मौके पर आयोजित फैशन शो भी सबके आकर्षण का केंद्र बना। सेवा भारती सेवा धाम मंडोली, दिल्ली के बच्चों ने नृत्य का प्रदर्शन किया। इस नृत्य के माध्यम से उन्होंने पारंपरिक बिजू उत्सव का सुंदर चित्रण किया। इसके अतिरिक्त स्थानीय लोक कलाओं का रंगारंग प्रदर्शन कलाकारों ने कर, उपस्थित जनों का मन मोह लिया।

## इग्नू–गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति सुविधा केन्द्र का आरंभ

गांधी स्मृति और दर्शन समिति व इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में गांधी दर्शन स्थित बी. एन. पांडे सभागार में इग्नू के सुविधा केन्द्र का शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में इग्नू के कुलपति प्रो. रविन्द्र कुमार, समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत सिंह, डॉ. वेणुगोपाल रेड्डी, डॉ. के. डी. प्रसाद क्षेत्रीय निदेशक इग्नू और समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान उपस्थित थे।

1) गांधी दर्शन में गसदस–इग्नू सुविधा केंद्र का उद्घाटन करते इग्नू के कुलपति प्रो. रविन्द्र कुमार।

2) समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, श्री रविन्द्र कुमार को चरखा भेंट करते हुए।

3) (बाएं से दाएं) कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. के. डी. प्रसाद, क्षेत्रीय निदेशक इग्नू, डॉ. वेणुगोपाल रेड्डी, आरएसडी, इग्नू, श्री दीपंकर श्री ज्ञान निदेशक, गसदस, प्रो. रविन्द्र कुमार और श्री बसंत।

अपने संबोधन में श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने उम्मीद जताई कि इस सुविधा केन्द्र के खुलने से विद्यार्थियों को ज्ञान अर्जन करने में लाभ होगा साथ ही उन्हें गांधीजी के विचारों और संदेशों का नजदीक से दर्शन करने का मौका भी मिलेगा। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वच्छता के लाभों के बारे में बताते हुए कहा कि शीघ्र ही गांधी दर्शन परिसर में महात्मा गांधी स्वच्छता केन्द्र की स्थापना की जाएगी।

डॉ. वेणुगोपाल रेड्डी ने गांधी दर्शन स्थित इग्नू केन्द्र के निदेशक के तौर पर अपनी यादों को जीवंत करते हुए कहा कि इग्नू और गांधी दर्शन के साथ आने से शिक्षा का प्रसार और भी ज़्यादा होगा। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही समिति की सहायता से चम्पारण में भी इग्नू केंद्र खोला जाएगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि यह केन्द्र दिल्ली में एक डिज़िटल लर्निंग मॉडल सेंटर के तौर पर विकसित होगा।

श्री बसंत ने उम्मीद जताई कि यह केन्द्र एक ऐसे केन्द्र के तौर पर विकसित होगा, जहां विद्यार्थियों को समिति के कार्यक्रमों के माध्यम से स्वयं की क्षमताओं को बढ़ाने का मौका मिलेगा। उन्होंने महात्मा गांधी की आगामी 150वीं जयंती और डॉ. जे. सी. कुमारप्पा की 125वीं जयंती के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि यह सुविधा केन्द्र स्वयंसेवकों की एक बेहतरीन ब्रिगेड तैयार करने में मददगार साबित होगी।

इग्नू के कुलपति श्री रविन्द्र कुमार ने कहा कि इस सुविधा केन्द्र की स्थापना का उद्देश्य उन विद्यार्थियों को आगे लाना है, जिन्हें किसी कारणवश शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाई। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि केन्द्र उनको प्रगतिशील बनाने में मददगार होगा। उन्होंने कहा कि इग्नू एकमात्र विश्वविद्यालय है, जो 225 से ज्यादा कार्यक्रम करवाती है, जो विश्व में सर्वाधिक है। उन्होंने कहा कि इग्नू अपने 66 केन्द्रों में महात्मा गांधी साक्षरता मिशन शुरू करने जा रही है। इस केंद्र के माध्यम से इग्नू पांच लाख छात्र–छात्राओं को गांधीजी के संदेश और उनके जीवन के बारे में पढ़ाएगा। उन्होंने कहा कि हम युवाओं को गांधीजी के बारे में समझाने के लिए एक माध्यम हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रविन्द्र कुमार कार्यक्रम में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए।

डॉ. के. डी. प्रसाद ने इग्नू का सुविधा केन्द्र स्थापित करने में सहयोग देने के लिए गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की सराहना की। उन्होंने कहा कि इग्नू के विभिन्न क्षेत्रीय केंद्रों के पुस्तकालय में गांधीयन कोना स्थापित करने की योजना है, जिसमें गांधी स्मृति और दर्शन समिति अपना योगदान देगा।

शुभारंभ समारोह के अवसर पर इग्नू के कुलपति ने समिति के निदेशक को केंद्र की चाबियां सौंपी, जिसे उन्होंने समिति के प्रशासनिक अधिकारी को सौंप दिया।

## गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों, नेतृत्व और आदर्शों से युवा विकास विषय पर सेमिनार

समिति द्वारा भारत में समुदाय आधारित संगठनों के सौजन्य से गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों, नेतृत्व और आदर्शों से युवा विकास विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। दिनांक 23 जून, 2017 को आयोजित इस कार्यक्रम में 175 से भी ज्यादा विद्यार्थी शामिल हुए।

कार्यक्रम में राज्यसभा सांसद डॉ. संजय सिंह बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। श्री सिंह ने युवाओं को मूल्यों और अनुशासन को अपने जीवन में जगह देने की बात कही, ताकि वे राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सकें।

प्रतिभागी सुश्री अस्मिता पूनिया ने महात्मा गांधी के जीवन से प्रेरणा लेने का आग्रह किया।

सीसीबीओएस के अध्यक्ष श्री उमेश चंद्र गौड सेमिनार के अतिथि को स्मृतिचिन्ह प्रदान करते हुए।

कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी।

इस मौके पर अपने विचार प्रकट करते हुए दिल्ली स्कूल ऑफ इक्नोमिक्स की छात्रा सुश्री अस्मिता पूनिया ने कहा कि गांधी जी एक ऐसे व्यक्तित्व थे, जो लोगों से काफी जुड़े रहते थे। अपने कार्यों के माध्यम से वे लोगों के मन को सकारात्मक दिशा में ले जाते थे। उन्होंने युवाओं को महात्मा गांधी जैसा बनने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि गांधीजी के विचारों को अपनाकर ही प्रभावशाली नेता बना जा सकता है।

समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि समिति युवाओं और बच्चों के लिए देश भर में कार्यक्रम चला रही है।

दिल्ली और एनसीआर के प्रतिभावान बच्चों को इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

## पत्रकार के तौर पर गांधी–एक कार्यशाला

समिति द्वारा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी में 24 जून, 2017 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय था–पत्रकार के तौर पर गांधी। प्रज्ञा संस्थान के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री एन. के. सिंह थे। अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कला संकाय के प्रो. कुमार पंकज ने की।

कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए श्री एन. एन. सिंह ने आज के समाज से गांधीजी के विचारों की तुलना करते हुए समाज में फैले भ्रष्टाचार की आलोचना की। उन्होंने भ्रष्टाचार पर जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाने की वकालत की। उन्होंने युवाओं से निर्भीक बनने और कभी भी भ्रष्टाचार से समझौता न करने की अपील की।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पत्रकारिता व जनसंचार विभाग के प्रो. शिशिर बासु ने शोध कार्य से संबंधित विभिन्न विषयों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने शोध कार्य में अपनाए जाने वाले सही तरीकों की भी प्रतिभागियों को जानकारी दी।

कार्यशाला में समूह अभ्यास करते प्रतिभागी।

कार्यक्रम में महात्मा गांधी काशी विश्वविद्यालय वाराणसी के प्रो. ओमप्रकाश, प्रो. अवधेश प्रधान, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के डॉ. बाल लखड़े, श्री उमेश चतुर्वेदी ने लेखन, संपादन भाषा, हिन्दी पत्रकारिता, रेडिया और टीवी लेखन पर अपने व्याख्यान दिए।

प्रथम दिन के अंतिम सत्र में प्रो. कुमार पंकज ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में गांधी और पत्रकारिता पर अपने विचार रखे। उन्होंने मीडिया सेंसरशिप, प्रेस की संवैधानिक शक्तियों और आपातकाल के दौरान प्रेस कानूनों में बदलाव आदि पर अपने विचारों को प्रस्तुत किया।

दूसरे दिन 25 जून को दो सत्र आयोजित किए गए, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने अलग–अलग विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए। पहले सत्र में संदीप जोशी ने खेल पत्रकारिता के बारे में प्रतिभागियों को समझाया।

बीएचयू के प्रो. डॉ. अनुराग दवे ने पत्रकारिता, व्यापार और मीडिया विषय पर अपने विचार रखे। उनके व्याख्यान का मुख्य उद्देश्य लोकतंत्र में मीडिया की भूमिका के बारे में जानकारी देना था।

'पत्रकार के रूप में गांधी' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए जाने–माने पत्रकार श्री जितेंद्र नाथ मिश्रा ने कहा कि गांधीजी आज के कई संपादकों से कहीं बेहतर संपादक थे। उन्होंने बताया कि गांधीजी ने पत्रकारिता को एक सशक्त हथियार बनाया और इसके माध्यम से मानव सेवा और मानवता से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठाया।

कार्यक्रम का दूसरा सत्र जाने–माने पत्रकार व विचारक श्री राम शरण जोशी ने वर्तमान पत्रकारिता और महात्मा गांधी पर व्याख्यान दिया। इस सत्र में उन्होंने भारत की आजादी के आंदोलन में पत्रकारिता की भूमिका का वर्णन किया। उन्होने कहा कि अंग्रेज सरकार की जन विरोधी नीतियों को जन–जन तक पहुंचाने में गांधीजी ने पत्रकारिता का बखूबी उपयोग किया।

### स्वच्छाग्रह पर नुक्कड़ नाटक

समिति द्वारा उदित आशा वेलफेयर सोसायटी के सहयोग से नई दिल्ली की विभिन्न झुग्गी बस्तियों मे स्वच्छता पर आधारित नुक्कड़ नाटकों का प्रदर्शन किया गया। इस मौके पर जनसत्ता के पत्रकार श्री अमलेश राजू, श्री मनोज सिन्हा, श्री सचिन मीणा, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, श्री विवेक और श्री राकेश उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त पूर्वी दिल्ली उपमहापौर श्री बिपिन बिहारी

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और उदित आशा सोसाइटी द्वारा आयोजित नुक्कड़ नाटक का दृश्य।

सिंह, सहायक आयुक्त दिल्ली पुलिस श्री राहुल अलवाल, श्री सी. आर. मीणा, श्री सरोज सिंह, श्री हाकम सिंह और श्री अशोक कुमार ने भी कार्यक्रम में शिरकत की।

समिति की ओर से 'चम्पारण सत्याग्रह' पर एक प्रदर्शनी भी लगाई गई।

**महिला सशक्तिकरण पर युवा संसद का आयोजन**

समिति द्वारा सजल फाउंडेशन और चाणक्य नीति युवा संसद के सहयोग से गांधी दर्शन परिसर में 29–30 जुलाई को युवा संसद का आयोजन किया गया। इसमें 450 लोगों ने भाग लिया। इस वर्ष की युवा संसद का विषय था– महिला सशक्तिकरण।

इसका उद्घाटन सांसद श्री महेश गिरी, सुश्री मधु किश्वर, श्री लक्ष्मीदास, सुश्री इरा सिंघल और श्री शरद विवेक सागर ने किया। श्री मणि भूषण झा ने इस अवसर पर कहा कि देश में महिला आंदोलनों की वृद्धि से व्यवस्था में काफी परिवर्तन आया है।

इससे राजनीति में भी महिलाओं का वर्चस्व बढ़ रहा है और वे राजनीति की एक महत्वपूर्ण धुरी बन रही हैं। उन्होंने कहा कि बलात्कार संबंधी नए कानूनों से स्त्री के प्रति अपराधों में कमी आएगी। उन्होंने उम्मीद जताई कि इन नए कानूनों से निर्भया और भंवरी देवी जैसी घटनाओं में कमी आएगी।

उन्होंने कहा कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य महिला आंदोलनों की विरासत की सराहना करना और महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को समाज के हर क्षेत्र में ले जाना है। उन्होंने कहा कि महिलाओं की दशा सुधारने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अनेक कार्य किए।

गांधी दर्शन में आयोजित युवा संसद का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते हुए सुश्री मधुकिश्वर व सांसद श्री महेश गिरी।

खादी पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी के लिए यह केवल एक कपड़े का टुकड़ा भर नहीं थी, अपितु लोगों, विशेषकर महिलाओं की आर्थिक आजादी का एक प्रतीक थी। उन्होंने कहा कि गांधीजी महिला

युवा संसद में विभिन्न राज्यों से आए हुए युवाओं को संबोधित करते हुए श्री लक्ष्मीदास।

स्वतंत्रता के पक्षधर थे। वे मानते थे कि महिलाओं की प्रगति के बिना देश प्रगति नहीं कर सकता। जब तक देश की महिलाएं असमानता, दबाव से मुक्त नहीं होंगी, तब तक न उनकी प्रगति होगी और न देश की। उन्होंने कहा कि खादी उद्योग लाखों महिलाओं की क्षमता को अब भी उपयोग में नहीं ले पाया है। महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में खादी उद्योग से जोड़ा जाए।

श्री चांदनी आहूजा ने कहा कि युवा संसद युवाओं की प्रतिभा को एक मंच प्रदान करती है। इसके माध्यम से युवा वर्ग को संसदीय कार्य प्रणाली, देश की नीति निर्माण और अन्य सरकारी औपचारिकताओं के बारे में जानकारी मिलती है। इससे युवाओं को अपनी अभिव्यक्ति का प्रदर्शन करने का मौका भी मिलता है।

गांधी दर्शन में आयोजित युवा संसद में विभिन्न सत्रों के दृश्य।

उन्होंने कहा कि युवा संसद में प्रतिभागिता से न केवल आपका ज्ञान वर्धन होगा, अपितु समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों और समस्याओं का समाधान करने की समझ भी विकसित होगी।

उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले युवाओं को समाज के समक्ष चुनौती बनकर उभर रही विभिन्न समस्याओं को जानने व उनसे निजात पाने के उपायों को खोजने का अवसर मिलेगा। जिससे समाज के प्रति उनकी जागरूकता बढ़ेगी।

उन्होंने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से विद्यार्थी स्वयं में समूह चर्चा के गुणों को आत्मसात कर सकेगा। उन्होंने आयोजको से अपील की कि देश के अन्य भागों में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए ताकि युवाओं को सरकारी कामकाज के बारे में सिखाया जा सकें।

तकनीकी सत्र में महिला आयोग की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती ललिता कुमार मंगलम और प्रसिद्ध पटकथा लेखिका श्रीमती अद्वैत काला मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित थीं।

दो दिवसीय इस सम्मेलन में महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर विस्तार से चर्चा की गई।

युवा प्रतिभागियों ने इस अवसर पर अपने विचारों से उपस्थित जनों को प्रभावित किया।

प्रतिभागियों ने यह दिखाया कि यदि मौका मिले तो देश के युवा भी अपने नए व क्रांतिकारी विचारों के दम पर दुनिया को बदलने का दम रखता है।

गांधी दर्शन में आयोजित युवा संसद के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

युवा संसद में लोकसभा और राज्य सभा में निम्नलिखित मुद्दों पर चर्चा की गई–

- बलात्कार कानून में परिवर्तन
- मातृत्व लाभ कानून 2017 का पुनर्वलोकन
- किराए की कोख विधेयक, 2016
- भारत में आपराधिक कानूनों का पुनर्वलोकन
- महिला आरक्षण विधेयक
- गर्भधारण कानून 1974 का पुनर्वलोकन
- गरीबी
- कार्यक्षेत्र पर यौन उत्पीड़न
- मीडिया की मुख्यधारा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

## ग्रामीण और शहरी युवाओं के बीच सेतु निर्माण विषय पर युवा शांति शिविर

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति एवं स्टेप संस्था के संयुक्त तत्वावधान में 3 जुलाई, 2017 को चार दिवसीय युवा शांति शिविर मध्य प्रदेश के कटनी में आयोजित किया गया। इस शिविर का विषय था–ग्रामीण और शहरी युवाओं में पुल का निर्माण।

प्रतिभागियों ने इस अवसर पर कार्यशालाओं की एक श्रृंखला में भाग लिया। इन कार्यशालाओं की विषय वस्तु विवाद, शांति, अहिंसा, टीम भावना और मीडिया साक्षरता आदि पर आधारित थी। दिल्ली से आए प्रतिभागियों ने कटनी में रहकर ग्रामीण रहन सहन और जीवन शैली को जानने का अवसर प्राप्त किया।

मध्यप्रदेश में आयोजित प्रशिक्षण शिविर को संचालित करते हुए स्टेप संस्था के निदेशक सेमुएल पोमई।

इस कार्यक्रम में "शांति शिक्षा" विषय पर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें प्रतिभागियों को हिंसा, विवाद और शांति की अवधारणा के बारे में समझाया गया। वक्ताओं ने इस मौके पर बताया कि हिंसा के कई प्रकार होते हैं।

(ऊपर से नीचे) स्टेप के संसाधन व्यक्ति और सदस्य चार दिवसीय युवा शांति शिविर में गतिविधियां करते हुए।

इनमें से प्रमुख हैं–प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष और ढांचागत। उन्होंने दैनिक जीवन में आने वाले हिंसा के प्रकारों के बारे में भी बातचीत की।

सत्र के अंत में प्रतिभागी हिंसा और शांति की संभावनाओं पर चर्चा में व्यस्त रहे। इस अवसर पर महिलाओं के प्रति हिंसा पर भी विचार प्रकटीकरण किया गया। प्रतिभागियों ने अपनी प्रस्तुति के माध्यम से शिविर में प्राप्त जानकारियों का प्रदर्शन किया।

दिन के दूसरे दिन प्रतिभागियों ने 'पृथ्वी लोकतंत्र' गतिविधि में भाग लिया। इस टीम निर्माण गतिविधि के माध्यम से प्रतिभागियों के समक्ष मध्यस्थता और आम सहमति की अवधारणा का परिचय दिया गया। इसके अलावा जीवन और प्रकृति के आपसी संबंध पर भी चर्चा की गई।

शिविर के तीसरे दिन 'क्रिटिकल मीडिया साक्षरता' की परिकल्पना पर बातचीत एक कार्यशाला के माध्यम से की गई। इसमें प्रतिभागियों को स्वयं के विज्ञापन और समाचार पत्र को बनाना सिखाया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों को प्रायोजित मीडिया और सीएमएल के प्रमुख पांच प्रश्नों के बारे में समझाना था। वक्ताओं ने प्रतिभागियों को प्रभावशाली टीवी विज्ञापन के निर्माण के गुर सिखाए।

प्रतिभागियों को एकता परिषद् के कार्यस्थल रहे ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा भी करवाया गया, जहां उन्होंने ग्रामीणों से परिचर्चा की। उन्होंने गांव में ग्रामीणों द्वारा किए जा रहे विकास कार्यों का भी अवलोकन किया। संध्या समय में प्रतिभागियों ने सीएमएल पर आधारित एक और कार्यशाला में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई, जहां उन्होंने सोशल मीडिया के जरिए सामाजिक मुद्दों के समाधान के गुर सीखे।

इस शिविर के दूसरे दिन सोशल मीडिया के मुद्दे पर कार्यशाला जारी रही। प्रतिभागियों को इसमें छोटे समूहों में वर्गीकृत किया गया और उन्हें अपनी पसंद का सोशल मीडिया वर्ग बनाने को कहा, जिसमें वे सामाजिक समस्याओं का प्रबंधन कर सकें। इस गतिविधि का उद्देश्य प्रतिभागियों को सोशल मीडिया के लाभों से अवगत करवाना और इसके माध्यम से उन्हें अधिकाधिक लोगों तक अपनी बात पहुंचाने की तकनीक सिखाना था।

कार्यशाला में संचालकों ने बताया कि सोशल मीडिया आज एक उभरता हुआ मीडिया माध्यम है। प्रतिदिन लाखों की संख्या में इस मंच से विचारों का आदान–प्रदान होता है। ऐसे में विचारों की सच्चाई और प्रासंगिकता का ध्यान रखना अति आवश्यक है, अन्यथा यह समाज के लिए घातक सिद्ध हो सकता है।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर सभी प्रतिभागी निष्कर्ष के रूप में इस बात पर एकमत थे कि छः महीने की सोशल मीडिया मुहीम चलाई जाए। इस मुहीम में लिंग समानता, युवा सशक्तिकरण और प्राकृतिक संसाधन व मौसम संरक्षण जैसे विषय रखे जाएं।

## नई पीढ़ी के लिए गांधी–युवा शिविर

गांधी शांति प्रतिष्ठान के तत्वावधान में नई पीढ़ी के लिए गांधी विषय पर युवा शिविर का आयोजन 1 से 25 अगस्त तक कस्तूरबा भवन हावड़ा, पश्चिम बंगाल में किया गया। इसका उद्घाटन प्रसिद्ध विचारक डॉ. सनमथ नाथ घोष ने किया। इस अवसर पर हरिजन सेवक संघ के अध्यक्ष श्री शंकर सान्याल, श्री मानबेंद्र नाथ मंडल, बंगबासी कॉलेज कोलकाता के पूर्व प्राचार्य प्रो. सत्यब्रत चौधरी, वरिष्ठ गांधीजन श्री बिमल चंद्र पाल उपस्थित थे।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि यह समय की मांग है कि नई पीढ़ी के विद्यार्थियों और युवाओं में क्षमताओं का विकास किया जाए, ताकि वे देश के जिम्मेदार नागरिक बन सकें।

वक्ताओं ने आशा जताई कि यह शिविर युवाओं को महात्मा गांधी के दर्शन और उनके जीवन से परिचित करवाएगा। विशेषतः गांधीजी की अहिंसा की अवधारणा के प्रभाव को समझकर युवा वर्ग स्वयं में विश्वास का स्तर बढ़ा सकता है।

गांधी शांति प्रतिष्ठान पश्चिम बंगाल के सचिव श्री चंदन पाल युवा शिविर के प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

वक्ताओं ने कहा कि आज के युग में युवाओं के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं। बेरोजगारी जैसी समस्याएं उनके समक्ष खड़ी हैं। ऐसे में गांधीवादी मार्ग ही उनकी समस्याओं का समाधान है।

गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से युवा स्वावलंबी बन सकते हैं और बेरोजगारी से निजात पा सकते हैं। उन्होंने कहा कि खादी और ग्रामोद्योग एक ऐसा क्षेत्र है जिससे जुड़कर युवा लोगो में स्वदेश प्रेम की भावना का प्रसार को कर ही सकते है। साथ ही इसके जरिए वे अपने आमदनी को भी बढ़ा सकते है।

इस शिविर में अनेक सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें गांधीजी के जीवन और विचारों पर आधारित अनेक विषय रखे गए।

इस मौके पर आयोजित विभिन्न सत्र थे:

1. गांधीजी का प्रारंभिक जीवन–डॉ. चितरंजन पाल
2. गांधी जी का शैक्षणिक दर्शन–श्री जयदेव जेना
3. गांधीजी की स्वदेश वापसी और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनका योगदान–श्री चंदन पाल
4. गांधीवादी कार्य–श्री नारायण भाई भट्टाचार्जी
5. साम्प्रदायिक सदभाव और शांति सेना : प्रो. विजय सरकार, अध्यापक
6. स्वाधीनता और स्वराज–श्री गोपाल घोष

प्रतिभागियों को इस अवसर पर पुस्तकें और प्रमाण पत्र दिए गए। प्रतिभागियों को प्रदान की गई इन पुस्तकों के शीर्षक थे–अमार ध्यानर भारत, महात्मा गांधी, प्रश्नोत्तरी गांधी, गांधी रचना संभार।

शिविर के समापन अवसर पर श्री नारायण भाई, श्रीमती अनुलेखा पाल सचिव कस्तूरबा शांति केंद्र, श्री बेनॉय कृष्ण चक्रवर्ती प्रसिद्ध गांधीवादी, श्रीमती सौमित्री देवी व अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे

## युवाओं विद्यार्थियों और अन्य रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं में गांधी के विचारों के प्रसार पर पांच दिवसीय कार्यशाला

समिति द्वारा गोसाईधी आस्था वेलफेयर सोसायटी के सौजन्य से 17–21 अगस्त को पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का विषय था–युवाओं, विद्यार्थियों और रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं में गांधीजी के विचारों का प्रसार। प. बंगाल में आयोजित इस कार्यशाला में 90 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

गोसाईधी आस्था वेलफेयर सोसाइटी के तत्वावधान में आयोजित कार्यशाला में उपस्थित लोग।

इस अवसर पर श्री नारायण भाई, श्री सुशील अध्यक्ष गांधीवादी कार्यकर्त्ता, प्रो. देबब्रत दत्ता गांधीवादी कार्यकर्ता, डॉ. रामप्रसाद बिस्वास, सामी कुमार दास सामाजिक कार्यकर्ता, श्री बिजॉय कर, सामाजिक कार्यकर्ता, कालायन किस्कू, सामाजिक कार्यकर्ता और अन्य संसाधन व्यक्ति के तौर पर उपस्थित थे।

इस मौके पर निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई:

- गांधी और आधुनिक युग
- अहिंसा और गांधी
- ग्राम स्वराज
- गांधीजी के रचनात्मक कार्य
- खादी उद्योग पर गांधी की परिकल्पना
- सर्व धर्म समन्वय
- गांधीजी के लेखन को पढ़ना

संसाधन व्यक्तियों ने प्रत्येक विषय पर गहराई से मंथन किया और प्रतिभागियों को विषयवस्तु को समझाया। वक्ताओं का कहना था कि आजादी के सत्तर सालों के बाद भी गांधीजी के विचारों और दर्शन की आज देशवासियों को आवश्यकता है। गांधी के विचारों को स्थापित करके ही देश की आज़ादी को सुरक्षित रखा जा सकता है।

कार्यक्रम में स्वच्छता अभियान भी चलाया गया, जिसमें शिविरार्थियों ने आसपास के गंदे इलाकों को स्वच्छ किया। इस मौके पर विभिन्न समस्याओं पर आधारित नाटकों का मंचन किया गया। इसमें बताया गया कि शांति और अहिंसा के मार्ग पर चलकर ही इन समस्याओं का हल ढूंढा जा सकता है।

## किसान, समस्या और भूमि सुधार पर दो दिवसीय कार्यशाला

समिति द्वारा अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम छत्तीसगढ़ के सौजन्य से किसान समस्या और भूमि सुधार विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 9–10 सितंबर, 2017 को किया गया। इसमें 100 लोगों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए अतिथिगण व मंचासीन विभिन्न विषयों के विशेशज्ञ।

इस मौके पर वर्तमान भूमि अधिग्रहण कानून पर चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त जल, जंगल और जमीन विषय पर भी विमर्श हुआ।

कार्यशाला में औद्योगिक और संसाधनात्मक विकास पर चर्चा भी की गई। वक्ताओं ने भूमि अधिग्रहण विवादों पर अपने विचार व्यक्त किए। उनका कहना था कि भारत में करीब 331 ऐसे भूमि विवाद हैं, जिनसे 36 लाख लोग और 10 लाख हैक्टेयर भूमि पर प्रभाव पड़ा है।

कार्यक्रम में जल, जंगल और जमीन से जुड़े मुद्दों पर भी चर्चा की गई।

## कूड़े से बाग–एक अनूठी पहल

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, सीसीबीओएस के अध्यक्ष श्री उमेश चंद्र गौड़ से स्वच्छता की मशाल लेते हुए।

कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ करते हुए पदम विभूषण श्रीमती सोनल मानसिंह उनके साथ है समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

गांधी दर्शन के सत्याग्रह मंडप में आयोजित कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करती श्रीमती सोनल मानसिंह।

समिति द्वारा भारतीय फोटोग्राफी संस्थान के सौजन्य से गांधी दर्शन में 16 सितंबर, 2017 को कूड़े से बाग कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर गांधी स्मृति में 'स्वच्छता की मशाल' स्थापित की गई। इस अवसर पर श्री राजेश गोयल, समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला, श्री उमेश चंद्र गौड़ उपस्थित थे।

इसी दिन गांधी दर्शन परिसर में 'कूड़े से बगीचा' कार्यक्रम के तहत गीले कूड़े के प्रबंधन की तकनीक प्रतिभागियों को सिखाई गई। इसमें 150 लोगों ने शिरकत की। कार्यक्रम में माननीय रेल मंत्री श्री सुरेश प्रभु और प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्यांगना डॉ. सोनल मानसिंह उपस्थित थे।

## शांति के लिए दौड़

समिति द्वारा हैल्थ फिटनेस सोसायटी ट्रस्ट के सहयोग से 17 सितंबर, 2017 को 'शांति के लिए दौड़' आयोजित की गई। इसे गांधी दर्शन परिसर से माननीय केन्द्रीय इस्पात मंत्री चौ. बीरेंद्र सिंह ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। विजेता प्रतिभागियों को इस मौके पर सम्मानित

गांधी दर्शन में आयोजित 8वीं चैम्पियन दौड़ के विभिन्न दृश्य। इस दौड़ में युवाओं के साथ–साथ बच्चों, बुजुर्गों ने भी अपनी क्षमता का परिचय दिया।

किया गया। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और एशियन मैराथन चैंपियन डॉ. सुनीता गोदारा भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

### महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों पर परिचर्चा आयोजित

समिति द्वारा महिला संस्थान एवं हस्त शिल्प कला प्रशिक्षण केन्द्र के सौजन्य से गोपेश्वर कॉलेज बिहार में एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इसका विषय था–महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य। इसमें डॉ. सी. पी. सिंह, श्री नरेंद्र तिवारी, प्रो. मोहनलाल सिंह, डॉ. राकेश रंजन, श्री शैलेंद्र कुमार सिंह आदि उपस्थित थे। दिनांक 8 सितंबर को विश्व साक्षरता दिवस के मौके पर एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन डॉ. वेंकट पांडे के सानिध्य मे किया गया।

### मानवता के लिए स्वयंसेवा–कार्यशाला

समिति द्वारा आरूषि संस्था के सौजन्य से 15–16 सितंबर, 2017 को मानवता के लिए स्वंयसेवा विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। भोपाल में आयोजित इस कार्यशाला में स्वच्छता अभियान भी चलाया गया।

इस अवसर पर समूह चर्चा, विचार विनिमय आदि किए गए। कार्यक्रम में एमआईटी भोपाल व अन्य कॉलेजों के विद्यार्थी शामिल हुए। महात्मा गांधी का दर्शन और स्वच्छता इस कार्यशाला के प्रमुख विषय थे। इसके अतिरिक्त अस्पृश्यता,

(ऊपर) अपने विचारों से अवगत कराता एक प्रतिभागी।

(नीचे) स्वच्छता अभियान में भाग लेते विशेष बच्चे।

(ऊपर से नीचे) स्वच्छता पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागी। इस कार्यक्रम में युवाओं ने उत्साह से भाग लिया।

स्थानीय स्वशासन, शिक्षा और अहिंसा पर चर्चा की गई। श्री अनिल सिंह, श्री अंकुल बारोनिया, श्री विश्वास और डॉ. विपिन व्यास मुख्य वक्ता के तौर पर मौजूद थे।'

## आज के युवाओं में गांधीवादी मूल्यों का प्रचार : एक सेमिनार

समिति द्वारा हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के सौजन्य से "आज के युवाओं में गांधीवादी मूल्यों का प्रचार" विषय पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन 16 अक्तूबर, 2017 को किया गया। इस अवसर पर समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने युवाओं को गांधीजी के नेतृत्व करने की क्षमता और अहिंसा के सिद्धांतों से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। समाजशास्त्र की प्राध्यापिका डॉ. श्रेया बक्शी ने गांधीवादी विचारों के विभिन्न आयामों के बारे में प्रतिभागियों को बताया। करीब 70 प्रतिभागी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

## मीडिया और सूचना साक्षरता पर कार्यशाला

पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला में 13–14 अक्तूबर, 2017 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। पर्यावरण और सतत विकास में गांधीवादी तरीके को बढ़ावा देने के लिए आयोजित इस कार्यशाला का विषय था–मीडिया और सूचना साक्षरता। इसमें विश्वविद्यालय के करीब 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

## प्रकृति–मानव–वन्यजीव, परस्पर सह अस्तित्व पर युवाओं की कार्यशाला

श्री अनुसूया प्रसाद बहुगुणा राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अगस्तयमुनि, रूद्रप्रयाग उत्तराखंड में 11 अक्तूबर, 2017 को प्रकृति–मानव–वन्यजीव, परस्पर सह अस्तित्व पर युवाओं की कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का संचालन समिति के श्री गुलशन गुप्ता और श्रीमती रीता कुमारी ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के करीब 100 युवाओं ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

उत्तराखंड के रूद्र प्रयाग में कार्यशाला के दौरान संकल्प लेते युवा।

## वर्तमान संदर्भ में गांधी दर्शन और खादी व ग्रामोद्योग का महत्व विषय पर कार्यशाला का आयोजन

समिति द्वारा कमटोलिया लघु किसान और संसाधनविहीन किसान संघ के सौजन्य से एक दिवसीय वक्रशॉप का आयोजन किया गया। गांधी जयंती के अवसर पर आयोजित यह कार्यशाला वैशाली जिले के अमृतपुर में हुई।

चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के अवसर पर हुए इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर खंड विकास अधिकारी श्री अजय कुमार उपस्थित थे। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि आज के युग में महात्मा गांधी के संदेश पहले से भी ज़्यादा प्रासंगिक हैं। महात्मा गांधी शिक्षा को रोजगार से जोड़ना चाहते थे और वे यह भी चाहते थे कि खादी और ग्रामोद्योग को प्रचारित किया जाए। उन्होंने कहा कि आज पुनः चरखे को बढ़ावा देना होगा।

इस अवसर पर अन्य वक्ताओं में श्री सुरेश रॉय, श्री उपेंद्र कुमार शर्मा शामिल थे। इन वक्ताओं ने भी अपने संबोधन में ग्राम उद्योगों को बढ़ावा देने और महात्मा गांधी के विचारों को अपनाने की बात कही।

वर्तमान संदर्भ में गांधी दर्शन और खादी एवं ग्रामोद्योग के महत्त्व पर चर्चा करते सामाजिक एवं गांधीवादी कार्यकर्त्ता।

### "युवाओं में गांधीजी के विचारों का प्रसार": एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम

समिति द्वारा बिहार के छपरा स्थित जयप्रकाश विश्वविद्यालय में "युवाओं में गांधीजी के विचारों का प्रसार" विषय पर एक ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 5 अक्तूबर, 2017 को किया गया। इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरिकेश सिंह, सुविख्यात गांधीवादी डॉ. रामजी सिंह, श्री विजय सिंह, सचिव गांधी आश्रम जलालपुर, प्रो. लालबाबू सिंह, श्री विद्याभूषण सिंह, डॉ. एम. वसीम, डॉ. वैकुंठ पंड्या ने किया।

कार्यक्रम के दो मुख्य सत्र थे। पहले सत्र में शोध विद्यार्थियों ने महात्मा गांधी के जीवन और उनके दर्शन पर अपने ज्ञान को अभिव्यक्त किया। दूसरे सत्र में विशिष्ट वक्ताओं ने गांधीजी के जीवन के संदेशों और दैनिक जीवन में उनको लागू करने के बारे में बताया। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रतिभागियों ने महात्मा गांधी के जीवन से जुडे विभिन्न पहलुओं को जाना।

### कार्यशाला, पतरस, कानपुर नगर

समिति द्वारा पुरुषोत्तम श्रीराम डिग्री कॉलेज पतरस के सहयोग से कॉलेज परिसर में विवादों के समाधान विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन 17 नवम्बर, 2017 को किया गया। इस कार्यशाला में समिति का प्रतिनिधित्व पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता और प्रशिक्षु श्री दीपक पांडे ने किया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सीएसजेएमयू कानपुर के खेल सचिव डॉ. आर. पी. सिंह थे। उन्होंने अपने संबोधन में शिक्षा क्षेत्र में गुणात्मक सुधार और सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि लोगों को अच्छी शिक्षा और नैतिक शिक्षा प्राप्ति के लिए सदैव प्रयास करते रहना चाहिए। श्री सिंह ने कहा कि गांधी जी

कानपुर में आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए माननीय खेल सचिव डॉ. आर. पी. सिंह।

भी सदैव स्वावलंबी बनने की वकालत करते थे। उनके आदर्शों और विचारों को समझकर और उस पर अमल कर, हम भी उनके ही जैसे महान गुणों को अपने में आत्मसात कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि अहिंसा और सत्य ऐसे मानवीय गुण हैं, जिनके आधार पर हम समाज की विभिन्न समस्याओं को हल कर सकते हैं। उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों से मेहनत करने और अपने कार्यों के आधार पर देश को आगे बढ़ाने का आह्वान किया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को अध्यापन कार्य में एकीकृत अहिंसक संचार में पारंगत करना था। कार्यक्रम के प्रश्नोत्तर सत्र में भी दैनिक जीवन में अहिंसा के प्रयोग के बारे में विस्तृत चर्चा की गई।

विद्यार्थियों को मूलभूत व्यवहारिक कौशल के बारे में सिखाया गया, ताकि वे लोगों की मदद विवादों के समाधान में कर सकें। विद्यार्थियों द्वारा वरिष्ठ गांधीजन श्री नटवर ठक्कर द्वारा समझाई गई अहिंसक नीतियों पर विस्तार से चर्चा की गई और कक्षा में अहिंसा के प्रयोग का व्यवहारिक ज्ञान भी दिया गया, ताकि सकारात्मक सीखने की प्रवृत्ति को संभव बनाया जा सके।

(ऊपर) समिति के पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता, अन्य अतिथियों के साथ।

(नीचे) कार्यक्रम में प्रमाण वितरित करते समिति के श्री दीपक पांडे।

कार्यक्रम में उपस्थित समिति के सदस्यों ने प्रतिभागियों को कक्षा में अच्छे तरीके से पेश आने और वहां कैसा व्यवहार अपनाया जाए, इस संबंध में जानकारी दी।

उन्होंने विद्यार्थियों को कक्षा में असामान्य स्थितियों से निपटने के तरीखे सिखाए। विद्यार्थियों ने अध्यापन से संबंधित कई प्रश्न भी विशेषज्ञों के समक्ष रखे।

## पर्यावरण जागरूकता और हिमालय बचाओ पर कार्यशाला आयोजित

पर्यावरण जागरूकता और हिमालय बचाओ पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 9 से 10 नवम्बर, 2017 को ग्रामीण तकनीकी कॉम्पलैक्स, जी. बी. पन्त हिमालय पर्यावरण और विकास संस्थान कोसी कतरमाल, अलमोड़ा में किया गया। महिला हाट और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यशाला में ताकुला, हवालबैग और अलमोड़ा खंड की 19 ग्राम सभा से आए प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक श्री किरीट कुमार मुख्य अतिथि थे, महिला हाट की महासचिव श्रीमती कृष्णा बिष्ट ने आगंतुकों का अभिनंदन किया। समिति की ओर से गांधी दर्शन–मिशन समृद्धि के वरिष्ठ फेलो डॉ. बी. मिश्रा सम्मिलित हुए।

अपने संबोधन में श्रीमती कृष्णा बिष्ट ने कहा कि चूंकि हिमालय क्षेत्र का आकार थोड़ा बड़ा है, इसलिए इस कार्यशाला में हमारी चर्चा के बिन्दु वही क्षेत्र होंगे, जिनका प्रतिनिधित्व यहां उपस्थित प्रतिभागी कर रहे हैं। उन्होंने आगे शुद्ध वायु, पानी, भोजन आदि की उपलब्धता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि जीवन के लिए कृषि क्षेत्र का अच्छी स्थिति में होना आवश्यक है। उन्होंने प्राकृतिक संसाधनों और वन क्षेत्र को बचाने और उनके संरक्षण की आवश्यकता पर भी लोगों का ध्यान केन्द्रित किया।

उत्तराखंड में आयोजित कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ. बी. मिश्रा।

उन्होंने कहा कि,"हिमालय, हमारी नदियों का मुख्य स्रोत है, और दुर्लभ औषधियों के पौधे, जड़ी–बूटियों के साथ लकड़ी और वन्यजीवन का घर है। हमारी भौतिक लाभ की आंकाक्षाओं के कारण ये सब निरंतर कम होते जा रहे हैं, इसलिए आज आवश्यकता इस बात की है कि हम उन क्षेत्रों को चिन्हित करें, जहां ध्यान रखने की जरूरत है और हिमालय बचाने के लिए जागरूकता फैलाएं। हमें स्थानीय स्तर पर इस संबंध में बातचीत करने और ध्यान केन्द्रित करने के लिए एक नीति बनाने की आवश्यकता है, जो पर्यावरण के पुनर्निर्माण और हिमालय को बचाने में हमारी मदद कर सके।"

"पर्यावरण संरक्षण : गांधीवादी दृष्टिकोण" नामक सत्र में डॉ. बी. मिश्रा ने महात्मा गांधी के पृथ्वी पर कहे गए कथन "पृथ्वी सभी की आवश्यकताओं के लिए चीज उपलब्ध करवाती है, लेकिन उनके लालच के लिए नहीं" को दोहराया। उन्होंने कहा कि हम सब अपनी जीवन शैली के बारे में बहुत जागरूक हैं। संभवतः हम महात्मा गांधी जैसा कोई अन्य मनुष्य नहीं पाते हैं, जिनका आवश्यकताएं उनकी तरह न्यूनतम हों। वह साधारण जीवन जीने और

ऊंची सोच रखने में विश्वास रखते थे। पर्यावरण प्रदूषण और अवनति से जुड़ी अधिकांश समस्याएं हमारी भव्य और अमानवीय जीवन शैली के कारण पैदा हुई हैं। हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाने की आवश्यकता है। अब यह बात सर्वमान्य हो चुकी है कि पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और विकास एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या वैश्विक स्तर पर है, लेकिन इसका समाधान स्थानीय स्तर पर कार्यवाही में ही निहित है।"

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करता एक प्रतिभागी।

उन्होंने महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के गांव रालेगण सिद्धि में श्री अन्ना हजारे के नेतृत्व में हुए कार्य का उदाहरण दिया। यह गांधी के सपनों के गांव का एक उदाहरण है। श्री अन्ना हजारे ने गांव के लोगों को एकत्र किया और गांव की समस्याओं के बारे में उनसे बातचीत आरंभ की और आमराय से उन समस्याओं का समाधान ढूंढा। ग्रामीणों के साथ मिलकर पांच सिद्धांत बनाए गए, जो निम्नलिखित हैं:

1. गांव का कोई भी व्यक्ति शराब के निर्माण और उपभोग में शामिल नहीं होगा। (शराबबंदी)
2. पेड़ों के काटने पर प्रतिबंध। (कुल्हड़बन्दी)
3. पशुओं के खुले में चरने पर प्रतिबंध। (चाराबन्दी)
4. दहेज लेने व देने पर प्रतिबंध। (दहेजबन्दी)
5. गांव के विकास कार्यों में श्रमदान अनिवार्य।

श्री अन्ना हजारे के नेतृत्व में ग्रामीणों ने विभिन्न लक्ष्य प्राप्त किए–

- गांव में 6 लाख से अधिक पेड़ लगाए गए।
- किसी ने भी शराब का उपभोग गांव में नहीं किया, यहां तक कि दुकानों पर भी यह उपलब्ध नहीं है।
- अब गांव, जो गर्मी में पानी की आपूर्ति के लिए टैंकरों पर निर्भर था, वहां पानी अतिरिक्त हो गया है और पड़ोस के गांवों में भी उसे दिया जा रहा है।
- यहां दहेज प्रथा बिल्कुल नहीं है।
- सभी ठोस व तरल कूड़े का प्रबंधन समुचित तरीके से किया जाता है और गांव अब साफ–सुथरा है।
- सभी महिला पंचायतें 1970 की शुरूआत में गठित कर दी गई थी। जबकि संविधान का 73वां संशोधन उसके बाद 1993 में हुआ था।
- सभी घरों में पाइपों से पानी आपूर्ति और शौचालयों की सुविधा उपलब्ध है।
- स्कूल जाने वाली उम्र के प्रत्येक बच्चों का स्कूल में पंजीकरण है।
- सभी घर भोजन के मामले में सुरक्षित हैं और पूर्ण रोजगार उपलब्ध है।

ग्राम विकास के बारे में बात करे हुए श्री किरीट कुमार ने सुझाव दिया कि आपको अपने गांव की वह विशेषताएं ढूंढनी चाहिए, जो आपके गांव को दूसरे गांव से अलग करती हैं। वह विशेषता आपकी आय प्राप्ति का साधन बन सकती है। उन्होंने इस संदर्भ में जापान और उत्तराखंड के कुछ गांवों का हवाला दिया, जो इन सिद्धांतों के पालन से समृद्ध हो गए।

उन्होंने प्रतिभागियों को विकास योजनाओं की प्रकिया के बारे में भी बताया। उन्होंने सुझाव दिया कि समस्याओं की एक सूची बनाकर, उसको हल करने की प्राथमिकताएं निर्धारित करें। इससे एक सूक्ष्म योजना विकसित होगी। यह योजना सरकार द्वारा चलाई जा रही मनरेगा जैसी योजनाओं के साथ लागू की जा सकती है।

डॉ. आर. सी. सुन्दरयाल ने "पर्यावरण, वन और आजीविका" पर अपने विचार रखे। उन्होंने वनों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभों के बारे में बताते हुए कहा कि करीब 500 से भी अधिक प्रकार की औषधीय जड़ी–बूटी इन वनों में हैं, जिसे संरक्षित किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि करीब 20 करोड़ से भी अधिक लोग वनों पर आश्रित हैं और लगभग 80 प्रतिशत जैव विविधता वनों पर आधारित है।

"भारत में 23.68 प्रतिशत भू–भाग वनों के तहत है और विश्व में इसका 10वां स्थान है। जबकि उत्तराखंड में कुल भूभाग का 44.76 प्रतिशत भाग वनाच्छादित है। उत्तराखंड वन की प्रतिशतता के मामले में भारत में नौवें स्थान पर है। इसमें 70 प्रतिशत संरक्षित वन है और 16 प्रतिशत वन पंचायत हैं। उन्होंने कहा कि वन 130 लाख लोगों को रोजगार उपलब्ध करवाते हैं।

डॉ. राजेश जोशी ने प्रतिभागियों को "पानी और आजीविका" पर व्याख्यान दिया। उन्होंने हाइड्रोलोजिकल साइकिल और कैसे वर्षा होती है, के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हिमालय को पानी का स्तंभ कहा जाता है, क्योंकि यहां अनेक नदियां और झीलें हैं जो दक्षिण एशिया के एक बड़े भू–भाग में पानी आपूर्ति करती हैं। उन्होंने कहा, "एक अनुमान के मुताबिक विश्व का 73 प्रतिशत ताजा पानी हिमालय में स्टोर होता है। पानी की शुद्धता तेजी से प्रदूषित हो रही है और बढ़ती जनसंख्या के कारण पानी की मांग भी लगातार बढ़ रही है। हमारे पास केवल 4 प्रतिशत ताजा पानी उपलब्ध है, जबकि बाकी पानी मानव और पशुओं के इस्तेमाल योग्य नहीं है, हमें इस बारे में गंभीरता से विचार करना होगा।"

कार्यशाला के अंत में अपने प्रशिक्षकों एवं संसाधन व्यक्तियों के साथ समूह चित्र लेते हुए प्रतिभागी।

दिनांक 10 नवम्बर को सत्र का आरंभ डॉ. डी. एस. रावत ने आरंभ किया। उपस्थित जनों को "पर्यावरण, कृषि और आजीविका" के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि कृषि कार्य मौसम और मांग पर आधारित है। करीब 74 प्रतिशत किसान एक हैक्टेयर पर फसल बोते हैं। नहरी पानी वाले इलाके में हम गेहूं और धान बोते हैं, जबकि बिना नहर वाले क्षेत्रों में हम दालें व मरूआ बोते हैं। यह कार्य पिछले काफी समय से चला आ रहा है, लेकिन अब बदलती जलवायु के कारण हमें बुआई के इस तरीके को बदलने की आवश्यकता है। अब हमें समझने की जरूरत है कि हम कृषि के लिए क्या कर सकते हैं? इसमें जलवायु, भूमि, फसल के प्रकार, तकनीकी कौशल, मजदूर आदि शामिल हैं। यदि एक कार्ययोजना के अंतर्गत खेती की जाती है, तब यह सफल होगी।"

जैविक खेती पर बल देते हुए, डॉ. रावत ने कहा कि "आंवला, बहेड़ा, तेजपत्ता, रीठा, हरड़ एलोविरा आदि को बंजर भूमि पर भी उगाया जा सकता है और इनकी बाजार में मांग भी अधिक है। अपनी आय को बढ़ाने के लिए किसान मुर्गा पालन, मछली पालन और मधुमक्खी पालन कर सकते हैं। मुर्गा पालन और मछली पालन को एक साथ किया जा सकता है, क्योंकि पॉल्ट्री का कचरा मछलियों के लिए आहार होता है।"

जलवायु परिवर्तन और आजीविका के मुद्दे पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डॉ. संदीप मुखर्जी ने कहा कि वर्तमान समय में मनुष्य की गतिविधियां जलवायु पैटर्न से नकारात्मक तरीके से प्रभावित हैं। औद्योगिकरण के चलते, मीथेन, कार्बन डाई ऑक्साइड, नाइट्रोआक्साइड आदि का उत्सर्जन बढ़ा है और ये गैसें आकाश में गर्मी बढ़ा रही हैं। इसके अलावा ज्वालामुखी से निकलने वाली गैसें भी इस समस्या को बढ़ा रही हैं। जबकि नदियां सूख रही हैं और बाढ़ किसी भी मौसम में आ रही है, सर्दी के मौसम का समय घट रहा है।

उन्होंने चेताया, "यदि तापमान इसी गति से निरंतर बढ़ता रहा तो अनेक क्षेत्र जलमग्न हो जाएंगे। ग्लेशियर भी पिघल जाएंगे और इसलिए हमें फसल चक्र को बदलना होगा और यह आजीविका को प्रत्यक्ष तौर पर प्रभावित करेगा। वन समाप्त हो जाएंगे और सूर्य ताप की वृद्धि के कारण बीमारियों में इजाफा होगा।

प्रतिभागियों ने निम्नलिखित संबंधित मुद्दे उठाए–

- काफी बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा है और लोग अपने पंरपरागत कार्य से दूर हो रहे हैं।
- जंगली सूअरों का कृषि पर हमला।
- पानी का अभाव।
- जंगल की आग।
- आजीविका की सीमितता।

परिचर्चा के दूसरे दिन भाग लेने वाले लोगों में दारिमखोला के ग्राम प्रधान श्री कृपाल सिंह, श्री भागवत बिष्ट बसयूरा, श्री कौशलपुर गुरूनानी लमगरा और सुश्री कमला रावत प्रमुख थे।

समापन सत्र में, प्रतिभागियों के निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आए:

1. उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने–अपने प्रधानों के सहयोग से अपने गांव के विकास की सूक्ष्म कार्ययोजना तैयार करेंगे।

2. पिथोरागढ़ के श्री कुंदन सिंह ने कहा कि उसने नौकरी के लिए गांव से बाहर शहर जाने का निश्चय किया था, लेकिन इस कार्यशाला में प्रतिभागिता के बाद अब उसने अपना विचार त्याग दिया है। "मैं अपने गांव में ही रहूंगा और कृषि और अन्य संबंधित गतिविधियों में आजीविकाओं की संभावनाओं की तलाश करूंगा।" उसने कहा।

3. न्याल वाजूला गांव के श्री हरिराम भाट ने इस कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान के आधार पर ग्रामीण तकनीकी कॉम्पलैक्स जी.बी. पन्त इन्स्टीच्यूट ऑफ हिमालयन इन्वायरमेंट एंड डवलपमेंट के तकनीकी सहयोग से कुछ कॉटेज इंडस्ट्री खोलने का निश्चय किया।

**"स्वयंसेवी कार्यों के लिए अतिरिक्त समय निकालें युवा"**

**स्वयंसेविता और रचनात्मक कार्य पर कार्यशाला का आयोजन**

कार्यशाला में आए उत्साही युवाओं को अपने विचारों से अवगत करवाते प्रो. पार्थ चटर्जी।

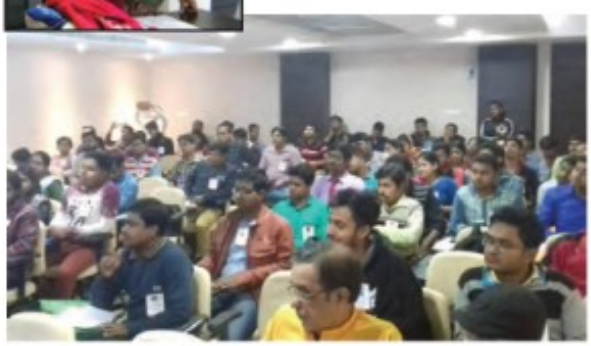

सदैव उत्साह में भरे रहने वाले युवा श्रोता, पारंगत और कुशल विशेषज्ञों की टीम और छोटे मगर विपुल स्वंयसेवकों के समूह ने 'स्वयंसेविता और रचनात्मक कार्य' पर आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला में खूब माहौल बनाया। दिनांक 25 से 26 नवम्बर, 2017 को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और साल्ट लेक इंस्टीच्यूट फॉर पर्सनेलिटी डवलपमैंट के संयुक्त तत्वावधान में मोलाली युवा केन्द्र कोलकाता में आयोजित इस कार्यशाला में समिति की ओर से श्री शकील खान सम्मिलित हुए।

इस दो दिवसीय कार्यशाला के परिणाम को एक वाक्य में परिभाषित किया जा सकता है, वह है– "सब सफल"। युवा दिमाग को प्रेरित करने के लिए विशेषज्ञों ने जो कुछ कहा, वह उपयुक्त और पर्याप्त था, लेकिन उन 110 युवाओं के दिमाग में, जिन्होंने 'रोलर कॉस्टर' के तौर पर काम किया है, क्या चल रहा था, यह महत्वपूर्ण था।

स्वयंसेविता एवं रचनात्मक कार्य विषय पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित वक्तागण।

करियर बनाने की चाह रखने वाले युवा (20 से 35 उम्र समूह के बीच, इनमें से 50 प्रतिशत विद्यार्थी 10 महाविद्यालयों से थे), जो रू. 10000/– से रू. 40000/– मासिक तक की आय वाली नौकरी करने के लिए तत्पर थे, उन्होंने वादा किया कि वे कम से कम दिन में एक घंटा किसी सामाजिक कार्य के लिए निकालेंगे। श्रोता पूरे समय वक्ताओं के इर्द–गिर्द उनको सुनने के लिए और उन संस्थाओं के बारे में जानने के लिए जो उन्हें स्वैच्छिक काम दे सके, घूमते रहे।

दिनांक 25 नवंबर को कार्यशाला का आरंभ गांधीजी के पसंदीदा टैगोर भजन 'एकला चलो रे' (अकेले चलो, यदि कोई तुम्हारे आह्वान पर ध्यान नहीं दे रहा है, तो तुम्हें

अकेले ही निकल लेना चाहिए।) इस अवसर पर संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के पूर्व सचिव श्री जवाहर सिरकार, सेवानिवृत आईएएस मुख्य अतिथि थे।

अपने उद्घाटन संबोधन में श्री सिरकार ने अपने युवा दिनों को याद करते हुए बताया कि कैसे स्वयंसेवी गतिविधियों ने उनके मन में कुछ करने का जुनून भरा। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे थोड़ा समय समाज को अवश्य दें।

जाने माने गांधीवादी, लेखक और पत्रकार डॉ. प्रथा चट्टोपाध्याय ने इस आयोजन के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला और संक्षेप में गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और साल्ट लेक इंस्टीच्यूट ऑफ पर्सनेलिटी डवलेपमेंट का परिचय दिया। इस अवसर पर उन्होंने अपना मुख्य संबोधन भी प्रस्तुत किया।

श्री शकील खान ने समिति की गतिविधियों की जानकारी देते हुए बताया कि समिति देश के विभिन्न भागों के अनेक व्यक्तियों, संस्थाओं के पास अपने विभिन्न सामाजिक– सांस्कृतिक और सामाजिक– शैक्षणिक कार्यक्रमों के जरिए गांधीजी के संदेशों का प्रसार करती है।

इस दो दिवसीय कार्यशाला में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई।

**प्रथम दिन**

- सामाजिक कार्य और स्वयंसेविता का परिचय, द्वारा प्रो. अमिताव दत्ता, रामकृष्ण मिशन विवेकानन्द विश्वविद्यालय, नरेंद्रपुर।
- एनजीओ निर्माण और स्वयंसेविता, एनजीओ प्रशासन, फंड जुटाना और लेखा कार्य, द्वारा श्री सुरजीत नियोगी, प्रसिद्ध सामाजिक कार्य अभ्यासी।
- युवाओं को कैसे सामाजिक कार्यों से जोड़ा जाए, द्वारा श्री बाप्पादित्य मुखर्जी, संस्थापक 'प्रांतकथा– सक्रिय नागरिकता को बढ़ावा।

**खुला सत्र :**

- लोगों को कैसे स्वास्थ्य और पर्यावरण के प्रति जागरूक किया जाए, द्वारा डॉ. अनिर्बाण गोजी, एक युवा मनोविज्ञानी।
- एक स्वयंसेवक के रूप में मेरा अनुभव, सामाजिक कार्यों में प्रतिभागियों द्वारा बताए गए अनुभव। श्री गीतीकांत मजूमदार, अध्यक्षत के रूप में मौजूद लेखक।

**दूसरा दिन**

- राज्य और केन्द्र सरकारों की विकास परियोजनाओं की पहचान, जिनमें स्वयंसेवी सामाजिक कार्य की सहायता की प्राथमिक तौर पर आवश्यकता पड़ती है द्वारा श्री तीर्थ शंकर रॉय, ग्रामीण विकास प्रशिक्षक, दक्षिण दिनाजपुर जिला।
- सामाजिक कार्य में वकालत की भूमिका और सामाजिक मुद्दों में अपना वकालत कौशल कैसे विकसित करें, द्वारा श्री सत्यगोपाल डे, विक्रमशिला एजूकेशन रिसोर्स सोसायटी।
- सामाजिक कार्य में मनोविज्ञान, द्वारा डॉ. देबांजन पान, प्रसिद्ध मनोरोग विशेषज्ञ।

**खुला सत्र**

- सीमाओं और भय के बिना स्वयंसेवक, द्वारा डॉ. प्रथा चट्टोपाध्याय।

(ऊपर) कार्यशाला में एक प्रतिभागी, संसाधन व्यक्ति से प्रश्न पूछता हुआ।

(नीचे) समिति के श्री शकील खान प्रतिभागी को प्रमाण पत्र देते हुए।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. बिप्लब लोहो चौधरी, विभागाध्यक्ष, जनसंचार विभाग, विश्वभारती और स्वयंसेविता विशेषज्ञ थे। इस अवसर पर श्री स्नेहाशीष सुर, कोलकाता प्रेस क्लब के अध्यक्ष और प्रसिद्ध टीवी पत्रकार, दूरदर्शन केन्द्र कोलकाता बतौर विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

उल्लेखनीय कार्यों के लिए 8 प्रतिभागियों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का समापन प्रतिभागियों द्वारा समाज की बेहतरी के लिए कार्य करने के संकल्प के साथ हुआ।

## रचनात्मक कार्य के लिए राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक सम्मेलन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा केरल गांधी स्मारक निधि के सहयोग से तीन दिवसीय गांधी युवा संगमम् का आयोजन त्रिवेन्द्रम स्थित गांधी भवन में 8–10 दिसम्बर, 2017 को किया गया। यह कार्यक्रम महात्मा गांधी की 150वीं जयंती समारोह की तैयारियों को लेकर था। इसमें कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, पुडुचेरी और केरल से आए युवाओं ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य युवा पुरूषों और महिलाओं को गांधी द्वारा प्रतिपादित 18 रचनात्मक कार्यों को समझने में उनकी मदद करना था।

इसके अतिरिक्त स्कूलों को कूड़ा मुक्त क्षेत्र बनाने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' का आयोजन भी इस कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण था। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रसिद्ध गांधीवादी युवा प्रशिक्षक डॉ. एस. एन. सुब्बाराव ने वरिष्ठ गांधीवादी कार्यकर्ता पद्मश्री पी. गोपीनाथन नायर की मौजूदगी में किया।

गांधी युवा संगम का मार्गदर्शन करने के लिए अनेक गांधीवादी रचनात्मक कार्यकर्ता और जाने–माने युवा प्रशिक्षक व वरिष्ठ शिक्षाविद् जैसे प्रो. विलियम भास्करन, डॉ. एम. मणि, डॉ. टी. रविचन्द्रन, कारायेल सुकुमारन, प्रो. डी. राधाकृष्णन उपस्थित थे।

भारत के पुनर्निर्माण के लिए गांधी द्वारा शुरू किए गए 18 सूत्रीय रचनात्मक कार्यों के समकालीन महत्व को उभारने के लिए इसे 7 समूहों में विभाजित किया गया था। ये थे– (क) मजदूर, अनुसूचित जनजाति, ड्रग्स और शराब से मुक्ति और सामाजिक न्याय। (ख) मूलभूत शिक्षा, क्षेत्रीय भाषाएं, राष्ट्रीय भाषा, प्रौढ़ शिक्षा। (ग) गांधीवादी आर्थिक सिद्धांत, ग्रामीण उद्योग, खादी, कृषि, आर्थिक समानता (घ) महिला सशक्तिकरण और संबंधित नीतियां –(ड़) स्वास्थ्य और स्वच्छता, प्राकृतिक उपचार, कुष्ठता निवारण, कचरा प्रबंधन और स्वच्छ भारत (च) युवा–राष्ट्र के पुनर्निर्माण में भूमिका (छ) धार्मिक समानता और सर्व धर्म सद्भावना।

कार्यक्रम स्थल पर निम्नलिखित प्रदर्शनियां लगाई गईः

- 18 रचनात्मक कार्यों पर पोस्टर प्रदर्शनी।
- रचनात्मक कार्यों का प्रदर्शनः कताई, बुनाई, पॉट्री बनाने का प्रदर्शन।
- गांधी पुस्तक मेला (गांधी साहित्य प्रदर्शनी)।
- प्रदर्शनी और ग्रामोद्योग उत्पादन की बिक्री।
- प्राकृतिक उपचार स्टाल।
- गांधी, मार्टिन लूथर किंग जूनियर और दाईसकू इकेडा पर प्रदर्शनी।
- स्वच्छ भारतः स्वच्छ भारत मिशन के तहत संगीत महाविद्यालय, मॉडल स्कूल और गांधी भवन परिसर में सफाई अभियान।

कार्यक्रम का अन्य आकर्षण, 'कचरा मुक्त स्कूल' अभियानः स्कूलों को कचरा मुक्त बनाने के लिए एक परियोजना का शुभारंभ था। युवा संगम 2017 में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए।

गांधी संगम 2017 में समिति के पूर्व निदेशक और वर्तमान में केरल गांधी स्मारक निधि और गांधी शांति मिशन के अध्यक्ष प्रो. एन. राधाकृष्णन, डॉ. डी. माया (केरल गांधी स्मारक निधि की उपाध्यक्षा), डॉ. एन. गोपालकृष्णन नायर और श्री के. जी. जगदीशन ने भी अपने विचार रखे।

## राष्ट्र की सेवा में गांधीवादी दर्शन विषय पर युवा कार्यशाला आयोजित

समिति द्वारा राष्ट्र सेवा में गांधीवादी दर्शन विषय पर युवा कार्यशाला का आयोजन 6 से 7 जनवरी 2018 को तमिलनाडु सर्वोदय मंडल मदुरै की करूर और डिंडीगुल शाखाओं में किया गया। इस कार्यक्रम में अन्य प्रतिभागी संस्था गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, गांधीग्राम थी। कार्यक्रम में 140 लड़कियों, जिनमें अधिकांश एनएसएस विंग से थी शामिल हुई। इसके अलावा अनेक एनएसएस संयोजक और प्राध्यापकों ने इसमें भाग लिया।

उद्घाटन अवसर पर यतेश्वरी नालेकांतप्रिय अम्बा, सचिव श्री सारदा निकेतन महिला विज्ञान कॉलेज करूर, श्री एस. टी. राजेन्द्रन सचिव तमिलनाडु सर्वोदय मंडल ने अपने उद्गार व्यक्त किए।

श्री राजेन्द्रन ने इस मौके पर गांधीजी की आगामी 150वीं जयंती पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि तमिलनाडु सर्वोदय मंडल, तमिलनाडु के सभी 32 जिलों में 2 अक्तूबर 2018 से 2 अक्तूबर, 2019 तक 320 दिवसीय कार्यक्रम आयोजित करेगा।

युवा कार्यशाला में पुस्तक भेंट कर प्रतिभागी को सम्मानित करते विशिष्ट अतिथि।

इसके अलावा अन्य वक्ताओं में प्रमुख थे:

- डॉ. जी. पंकज पूर्व कुलपति गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय, गांधीग्राम।
- डॉ. एस. मुत्थुलक्ष्मी, प्राचार्य कॉलेज ऑफ गांधीयन थॉट, गांधी स्मारक निधि मदुरै।
- डॉ. एस. अन्दियप्पन, विभागाध्यक्ष गांधीवादी विचारधारा और रामलिंगम दर्शन, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय।
- डॉ. जी. पलानिथुरई, प्राध्यापक राजनीति विज्ञान, गांधीग्राम ग्रामीण विश्वविद्यालय।
- प्रो. पी. चंद्रशेखरन, पूर्व प्राध्यापक विवेकानन्द कॉलेज थिरूवेडगम।
- डॉ. टी. कन्नन, मूलभूत शिक्षा और प्राकृतिक कृषि विशेषज्ञ।
- श्री एन सुंदरराजन, उपाध्यक्ष, टीएसएम, मदुरै।
- डॉ. एम. पी. गुरूसामी, सचिव, गांधी संग्रहालय मदुरै।
- श्री के. एम. नटराजन, अध्यक्ष टीएसएम और गांधी स्मारक निधि मदुरै।

इस कार्यशाला में समूह अभ्यास किए गए और रात्रि को ए. के. चैतिया की फिल्म 'गांधी' का प्रदर्शन किया गया।

### 'सांप्रदायिक सौहार्द और शांति : गांधीवादी दृष्टिकोण

समिति द्वारा पश्चिम बंगाल गांधी शांति संस्थान के सौजन्य से 'सांप्रदायिक सौहार्द और शांति : गांधीवादी दृष्टिकोण विषय पर युवाओं और नागरिकों की एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिनांक 29–30 जनवरी को आयोजित यह कार्यशाला कस्तूरबा भवन, सर्वोदय पाक्र हावड़ा में संपन्न हुई।

सम्मेलन में गांधीजी से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विचार विमर्श करते गांधीवादी एवं सामाजिक कार्यकर्ता।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री बिमल चन्द्र पाल, अध्यक्ष पश्चिम बंगाल गांधी शांति संस्थान, प्रो. दिलीप कुमार सिन्हा, पूर्व कुलपति, विश्वभारती विश्वविद्यालय ने की। अपने स्वागत भाषण में श्री चन्दन पाल, सचिव पश्चिम बंगाल गांधी शांति संस्थान ने कहा कि इस बात को ध्यान में रखते हुए कि आज देश के कई भागों में सांप्रदायिक हिंसा बढ़ रही है, यह चुनौतियों का सामना करने का समय है और महात्मा गांधी के मार्ग पर चलने की बजाय इन चुनौतियों के समाधान का कोई अन्य रास्ता नहीं है। उन्होंने गांधीजी के 18 रचनात्मक कार्यों के बारे में बताते हुए कहा कि युवाओं को गांधीजी की 150वीं जयंती के बड़े आयोजन के लिए तैयार रहना चाहिए और गांधीजी के सपनों को साकार करने की दिशा में कार्य करना चाहिए।

इस अवसर पर अन्य वक्ताओं में डॉ. सामन्ता घोष ने आजादी से पूर्व की अवधि में सांप्रदायिक सौहार्द पर चर्चा की। इस दो दिवसीय कार्यक्रम में अनेक शिक्षाविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने विभिन्न सत्रों को संबोधित किया। ये सत्र थे–सांप्रदायिक सौहार्द और शांतिः गांधीवादी विचार बिन्दु, सांप्रदायिक सौहार्द : एक प्रयोग।

वक्ताओं में प्रो. सत्यब्रत चौधरी, श्री जयदेव जाना पूर्व आईएएस, मानबेन्द्र मोंडल, प्रो. डॉ. जहांआरा बेगम, श्री प्रंतोष बंदोपाध्याय, डॉ. लता दास, श्री गोपाल घोष, डॉ. चितरंजन पॉल शामिल थे।

### महर्षि वाल्मीकि शिक्षण महाविद्यालय के साथ संवाद कार्यक्रम

क्षेत्र निरीक्षण कार्यक्रम के तहत वाल्मीकि शिक्षण महाविद्यालय के 120 विद्यार्थियों ने गांधी दर्शन परिसर का दौरा दिनांक 12, 13, 15 और 16 फरवरी, 2018 को किया। इस दौरे में विद्यार्थियों के साथ डॉ. मंजरी गोपाल, डॉ. कैलाश गोयल और डॉ. नीलम मेहता बाली आए थे।

इस अवसर पर विद्यार्थियों को गांधी दर्शन परिसर में स्थापित फोटो प्रदर्शनी 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' और क्ले मॉडल आधारित प्रदर्शनी 'आजादी की ओर भारत के कदम' का अवलोकन करवाया गया।

इस यात्रा कार्यक्रम का संचालन श्रीमती नेहा अरोड़ा ने किया। इसके अतिरिक्त खादी पोशाकों के उत्पादन और पुस्तक विक्रय केन्द्र का दौरा भी उन्होंने किया।

इस मौके पर विद्यार्थियों को महात्मा गांधी के विचारों और उनके आदर्शों, उनके व्यक्तित्व के परिवर्तित होने की यात्रा आदि से अवगत करवाया गया।

यात्रा के दौरान संसाधन व्यक्तियों, श्री वेदाभ्यास कुंडू, श्री विवेक और श्रीमती शाश्वती झालानी के साथ परिचर्चात्मक सत्रों का आयोजन भी किया गया।

ये सभी सत्र जानकारीपूर्ण रहे, इनके माध्यम से विद्यार्थियों को गांधी स्मृति और दर्शन समिति और उनकी ताजा गतिविधियों की जानकारी दी गई।

भावी अध्यापकों को अहिंसात्मक संचार और अहिंसक तरीके से विवादों के समाधान विषय पर चलाए जा रहे कार्यक्रम की भी जानकारी दी गई।

कक्षाओं में विवादों की परिस्थिति पर विचार किया गया और कैसे उन विवादों को दूर किया जाए, इस पर चर्चा की गई। परिचर्चा को संबोधित करते हुए समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू ने पांच तत्वों–छात्र केंद्रित, सुधार, गतिविधि, सुदृढ़ीकरण और परिवर्तन के महत्व को रेखांकित किया।

उन्होंने कहा कि कक्षा में विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच संवाद सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि वहां शांति का वातावरण कायम किया जाए। कक्षा में ज्ञान के सफल प्रसार के लिए तीन अवयव हैं– आत्म सहानुभूति, दूसरों के प्रति सहानुभूति और ईमानदार जनसंपर्क।

श्री कुंडू ने गांधीजी के अहिंसक संचार के विचारों को प्रतिपादित करते हुए कहा कि इनके माध्यम से कक्षाओं में स्वस्थ वातावरण कायम किया जा सकता है।

इस दौरान कुछ प्रमुख परिस्थितियां, जिन पर चर्चा की गई, थीं:

- जब विद्यार्थी अध्यापक की किसी बात से असहमत हो।
- जब अध्यापक किसी विद्यार्थी द्वारा उठाए गए प्रश्न का उत्तर न जानता हो।
- जब किसी अजीब मुद्दे पर अध्यापक का मत पूछा गया हो।
- जब अध्यापक के प्रश्न पर चुप्पी साध ली गई हो।
- जब सीधे प्रश्न पूछे जाने पर छात्र अध्यापक के प्रति व्यक्तिगत टिप्पणियां करना आरंभ कर दे।

अपने दौरे के अनुभवों का जिक्र करते हुए एक विद्यार्थी प्रियंका सिंह ने बताया कि, "इतिहास को जीवंत देखने और पैवेलियन में 'वैष्णव जन' और 'रघुपति राघव राजा राम' की मनोहारी धुन सुनने का अनुभव सुखद था। अध्यापन का एक विद्यार्थी होने के कारण मैंने यह महसूस किया कि इसे स्कूल में इस्तेमाल किया जा सकता है, और इन चीजों को नई बाल मनोविज्ञान तकनीक के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है। सबसे रोचक बात यह है कि यहां छायाचित्रों को बड़े सुंदर ढंग से इस्तेमाल किया गया है, जो लिखित में पढ़ने की बजाय, देखने वालों के मन में गहरी छाप छोड़ती है।"

## 'राष्ट्रीय एकता और युवाओं के लिए प्रेरणा' पर शिविर

समिति द्वारा नेहरू युवा केन्द्र संगठन के सौजन्य से 'युवाओं के लिए राष्ट्रीय एकता और प्रेरणा' विषय पर शिविर का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में 14 से 16 फरवरी को किया गया।

समिति और नेहरू युवा केन्द्र संगठन के तत्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर में युवाओं की जिज्ञासा को शांत करती श्रीमती शाश्वती झालानी।

इस शिविर में अलग–अलग राज्यों के युवाओं ने भाग लिया, जिन्होंने विस्तृत मुद्दों पर विचार–विमर्श किया। इसके अतिरिक्त जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आए संसाधन व्यक्तियों के द्वारा समूह अभ्यास और अनुभवों पर चर्चा की गई।

यह कार्यक्रम प्रधानमंत्री की विभिन्न राज्यों के युवाओं को आपस में जोड़ने के प्रयासों का एक भाग था। इस शिविर में वक्ताओं ने भारत की विविधता में एकता वाली समृद्ध संस्कृति की विशेषताओं का वर्णन किया। वक्ताओं का कहना था कि भारत के विकास और इसके सांस्कृतिक एकीकरण के लिए युवाओं को आगे आना चाहिए और विभिन्न राज्यों से आए युवाओं को एक–दूसरे की सांस्कृतिक विरासतों का आदान प्रदान करना चाहिए।

नेहरू युवा केन्द्र संगठन के पूर्वोत्तर युवा संयोजक डॉ. अतुल कुमार पांडे शिविर में उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

शिविर के उद्घाटन समारोह में श्री एस. ए. जमाल, श्री वी. एस. बोकन, श्री कुलदीप कुमार, श्री मोहन शाही, श्री जय कुमार, डॉ. सुधीर कपूर, डॉ. सुनीता गोदारा, श्रीमती शाश्वती झालानी और डॉ. डी. के. गुरंग उपस्थित थे।

## युवा स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यक्रम

समिति द्वारा इलाहाबाद फाउंडेशन के सौजन्य से "युवा स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यक्रम" 3–4 फरवरी, 2018 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आसपास से आए 164 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में प्रतिभागियों को निम्नलिखित विषयों का प्रशिक्षण दिया गया–

- रचनात्मक कार्यों की अवधारणा और महात्मा गांधी का जीवन दर्शन–श्री योगेश शुक्ला (प्रसिद्ध सामाजिक व राजनीतिक नेता)
- संपूर्ण ग्राम विकास, पंचायत व्यवस्था और सुशासन–श्री पंकज कुमार (अधिवक्ता और सामाजिक कार्यकर्ता)
- महिला सशक्तिकरण–डॉ. रमा सिंह और डॉ. विमला व्यास (प्राध्यापक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
- वर्तमान रोजगार संकट और समाधान–श्री दत्तात्रेय पांडे (सामाजिक कार्यकर्ता)
- जनस्वास्थ्य 'सावधानी और बचाव'– डॉ. एन. पी. सिंह (वरिष्ठ चिकित्सक), डॉ. संतोष कुमार तिवारी (सहायक प्राध्यापक, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा) और श्री दिनेश तिवारी (स्वास्थ्य सलाहकार)

- कृषि और पशुधन–प्रो. रमेश चन्द्र (डीन, डेयरी विभाग), श्री पवन (प्रबंधक इफको, फूलपुर) और श्री कमलेश मिश्रा (प्रसिद्ध किसान विशेषज्ञ)
- संपूर्ण शिक्षा–श्री कमलेश मिश्रा, और सुश्री प्रतिष्ठ मिश्रा (अध्यापक)
- पर्यावरण, स्वच्छता और प्राकृतिक संसाधन–(गाय, गंगा, पानी, जंगल, भूमि)–डॉ. प्रमोद शर्मा (पर्यावरण विशेषज्ञ)
- शासन और योजनाएं–श्री सुशील कुमार पांडे और श्री कृष्ण मोहन जी (सामाजिक कार्यकर्ता)
- आपदा प्रबंधन और बचाव–श्री हरिमोहन पांडे (सामाजिक कार्यकर्ता) और श्री धर्मेंद्र कुमार निषाद (नागरिक सुरक्षा कार्यकर्ता)

इस मौके पर एक सत्र कविता पाठ पर आयोजित किया गया, जिसमें, श्री रामलोचा सांवरिया, फतेह बहादुर सिंह, राजेंद्र कुमार शुक्ला, लालजी देहाती, लखन प्रताप गांधी, कल्पनेश बाबा, जय प्रकाश शर्मा, वेदानंद वेदा, नजर इलाहाबादी, डॉ. विमला व्यास और हरिमोहन पांडे उपस्थित थे।

(ऊपर से नीचे) रचनात्मक कार्य पर आधारित कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री योगेश शुक्ला।
(दाएं) विशिष्ट अतिथियों के साथ प्रतिभागी समूह चित्र के दौरान।

कार्यक्रम में श्री योगेश शुक्ला ने गांधीजी के रचनात्मक कार्यों की अवधारणा की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि निरक्षरता, बीमारी और बेरोजगारी मिटाने की दिशा में किया गया हर काम रचनात्मक कार्यक्रम की श्रेणी में आता है। उन्होंने कहा कि रचनात्मक कार्यों के माध्यम से निरक्षरता, बीमारियों, बेरोजगारी आदि कुरीतियों को समाप्त किया जा सकता है। श्री शुक्ला ने युवाओं से कहा कि वे भावी भारत के निर्माता हैं। उन्हें गांधीजी से संबंधित पुस्तकों को पढ़कर, उनके जीवन और संदेशों के बारे में जानना चाहिए और उनके संदेशों का प्रसार समाज में करना चाहिए।

उन्होंने कहा कि आज के समय में जब बेरोजगारी जैसी तमाम समस्याएं युवाओं के समक्ष चुनौती बनकर खड़ी हैं, ऐसे में गांधीवाद ही उन्हें इन संकटों से निकाल सकता है। उन्होंने युवाओं से देशहित में काम करने का आह्वान किया।

बाद में तय किया गया कि रोजगार, महिला सशक्तिकरण, कृषि एवं पशुपालन, पंचायत व्यवस्था और सुशासन, समग्र ग्रामीण विकास, जनस्वास्थ्य और सुरक्षित आध्यात्मिक वातावरण के मुद्दों पर काम करने के लिए अलग–अलग समूह बनाए जाएंगे। इन समूहों के माध्यम से इन विविधि विषयों पर चर्चा कर, इन व्यवस्थाओं को सुधारा जाएगा।

कार्यशाला का संचालन कैप्टन मुकेश सिंह ने किया। धन्यवाद प्रस्ताव श्री शशांक शेखर पांडे, ट्रस्टी मैनेजर, ने प्रस्तुत किया।

# महिलाओं के लिए कार्यक्रम

**जमीनी कार्यकर्ताओं के लिए 'महिला सशक्तिकरण' पर कार्यशाला का आयोजन**

समिति द्वारा विजन संस्था के सहयोग से वाराणसी में 23–24 मई को दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। सर्व सेवा संघ वाराणसी के परिसर में आयोजित इस कार्यशाला का विषय था–'जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए महिला सशक्तिकरण।' इस मौके पर कस्तूरबा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

उत्तर प्रदेश में महिला सशक्तिकरण पर आयोजित कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते वक्तागण।

कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र डॉ. कल्पना पांडे, भूतपूर्व डीन और विभागाध्यक्ष महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के सानिध्य में आरंभ हुआ। विजन की सचिव सुश्री जागृति राही ने महिला सशक्तिकरण पर अपने विचार रखे। सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री अमरनाथ भाई, प्रबंधक श्री अरविंद अंजुम ने भी अपने विचार रखे। वक्ताओं ने आजादी के आंदोलन में गांधीवादी महिला नेत्रियों यथा प्रभावती जी धर्मपत्नी जयप्रकाश नारायण और सरोजिनी नायडू की भूमिका पर विमर्श किया।

उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए महिलाओं को अपनी शिक्षा का स्तर बढ़ाना चाहिए, महिलाओं की पंचायतीराज में असरदार भागीदारी होनी चाहिए, तभी गांवों का विकास संभव हो सकेगा। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत ने इस मौके पर आचार्य राममूर्ति की महिला शांति सेना पर अपने विचार रखे।

कार्यशाला के दूसरे सत्र मे डीएवी कॉलेज वाराणसी की रीडर डॉ. स्वाति नन्दा ने आज के दौर की महिलाओं के अधिकारों पर बात की। पर्यावरण कार्यकर्ता सुश्री एकता शेखर ने महिलाओं के प्रति हिंसा पर चर्चा की और इसे दूर करने के लिए संगठित कार्ययोजना बनाने पर जोर दिया। प्रमुख वक्ता के तौर पर डॉ. रघुवंशी पांडे, श्री लक्ष्मण सिंह और श्री राममूर्त ने स्वयं सहायता समूह के बारे में विस्तृत जानकारी दी और महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के विभिन्न उपायों पर विमर्श किया। दलित मानवाधिकार कार्यकर्ता डॉ. अनूप श्रमिक ने दलित और आदिवासी समाज की महिला नेत्रियों के जीवन–चरित्र की जानकारी दी।

श्रीमती किरण गुप्ता ने सफाई कर्मचारियों के समक्ष आने वाली समस्याओं का जिक्र किया। इसके अतिरिक्त सुश्री मुमताज और सुश्री कैसर जहां ने बुनकर समुदाय की महिलाओं और उसके संघर्ष के बारे में बात की। महिला स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर सुश्री शायरा व सुश्री कमर ने लोगों का ध्यान केंद्रित किया। सावित्री बाई, सुश्री कहकशां खान

ने शिक्षा और साक्षरता कार्यक्रमों के जरिए महिला को सशक्त करने के मुद्दों पर चर्चा की।

सुश्री जागृति राही ने महिला शांति सेना की परिकल्पना के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि समुदाय के हित में कार्य करने के लिए कैसे एक संस्था का गठन किया जा सकता है।

### ग्राम स्वराज पर दो दिवसीय महिला शिविर का आयोजन

समिति द्वारा सार्बिक ग्राम उन्नयन संघ के सौजन्य से 14–15 जुलाई को पश्चिम बंगाल स्थित सिस्टर निवेदिता स्मृति संघ में 'ग्राम स्वराज' पर महिला शिविर का आयोजन किया गया। इसमे आसपास के 17 गांवों की 103 महिला प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन श्री नारायण भाई, सचिव गांधी मिशन ट्रस्ट ने किया। उनके साथ श्री चन्दन पाल, सचिव पश्चिम बंगाल फाउंडेशन, श्री अरूणांशु प्रधान, श्रीमती शरबोनी बेरा भी मौजूद थे।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री नारायण भाई ने महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की आवश्यकता है। बिना महिलाओं के सशक्त भागीदारी के, पंचायती राज व्यवस्था को सशक्त नहीं किया जा सकता।

उन्होंने सांप्रदायिक सौहार्द, अस्पृश्यता, नशाबंदी, खादी और ग्रामोद्योग के संदर्भ में गांधीजी के 18 सूत्रीय रचनात्मक कार्यों का जिक्र करते हुए कहा कि महिलाएं इन मुद्दों में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभा सकती हैं।

श्री चन्दन पाल ने ग्राम स्वराज और महिलाओं की भूमिका पर बोलते हुए कहा कि 'स्वराज' की परिकल्पना महात्मा गांधी और बाल गंगाधर तिलक की सोच से निकली और महात्मा गांधी ने इसे स्वतंत्रता आंदोलन में खासा लोकप्रिय बना दिया। उन्होंने कहा कि देश के ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओ को आत्मनिर्भर और शिक्षित होना चाहिए। उन्होंने चम्पारण सत्याग्रह का संदर्भ देते हुए आजादी के संग्राम में महिलाओं की उल्लेखनीय भूमिका का जिक्र किया। श्री पाल ने कहा कि चम्पारण सत्याग्रह हमें सिखाता है कि कैसे शांतिपूर्वक ढंग से हम प्रशासन को अपनी बात मानने पर मजबूर कर सकते हैं।

इस दो दिवसीय शिविर में महिलाओं के स्वास्थ्य, शिक्षा, नशाबंदी, बाल विवाह, बाल मृत्यु आदि पर गहन मंथन किया गया। इस अवसर पर बोलने वाले अन्य वक्ताओं में श्री स्वप्न रथ, श्री अहमदुदीन, श्री आशीष पाटला और श्री बिस्वजीत घोरोई शामिल थे।

### सामाजिक न्याय आंदोलन में स्व. श्रीमती मालती चौधरी की भूमिका–एक सम्मेलन

"लक्ष्य का पीछा परिश्रम से करना आवश्यक है। केवल सीढ़ी पर कदम रखना ही पर्याप्त नहीं है। हमें सीढ़ी के ऊपर तक चढ़ना होगा।" ये शब्द ओडिशा सरकार के माननीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्री प्रफुल्ल समल ने कहे। वे गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति एवं ओडिशा राज्य समाज कल्याण बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में 26 जुलाई, 2017 को भुवनेश्वर में आयोजित कार्यक्रम " सामाजिक न्याय आंदोलन में स्व. श्रीमती मालती चौधरी की भूमिका" में बतौर मुख्य अतिथि बोल रहे थे।

श्री समल ने इस मौके पर निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी स्व. श्रीमती मालती चौधरी के जीवन का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि वे करोड़ों लोगों की प्रेरणास्रोत हैं। उन्होंने स्व. श्रीमती मालती चौधरी पर आधारित एक वृत्तचित्र "न्यूमा" भी जारी किया। उन्होंने कहा कि प्रारंभिक शिक्षा को सार्वभौमिक करने के बाद ओडिशा सरकार अब सेकेंडरी शिक्षा को सार्वभौमिक बनाने की दिशा में कदम उठा रही है।

श्रीमती कुमतला आचार्य, आर्थिक सलाहकार श्री अशोक पांडा, श्रीमती सरस्वती प्रदा, श्रीमती कस्तूरिका पटनायक, श्रीमती साबित्री चौधरी, श्रीमती सुलता देव, श्रीमती निबेदिता नायक सहित हरियाणा, पंजाब, तेलंगाना, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, सिक्किम व झारखंड के समाज

तस्वीरों में–(बाएं से दाएं) श्रीमती के. के. आचार्य, श्री प्रफुल्ल सेमल, श्रीमती लतिका प्रधान ओडिशा में आयोजित सम्मेलन अवसर पर।

राज्य समाज कल्याण बोर्ड ओडिशा द्वारा आयोजित सम्मेलन में उपस्थित विशिष्ट अतिथि व वक्तागण, विषय विशेष पर मंथन करते हुए।

कल्याण बोर्ड सदस्य कार्यक्रम में उपस्थित थे। दूसरे सत्र में प्रसिद्ध वक्ताओं, मीडिया कर्मियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया और प्रतिभागियों के ज्ञान में वृद्धि की। प्रमुख वक्ताओं में श्री नितिन चन्द्र प्रमुख सचिव ओडिशा सरकार, श्री पी. के. साहू, डॉ. संतोष कुमार मिश्रा, श्री संदीप साहू, श्री असीम घोष, सुश्री अरूंधति देवी, श्री एल. पी. दास, अनिमेष प्रकाश, सुश्री साबरमती शामिल थे।

इस मौके पर विभिन्न उपविषयों पर चर्चा की गई:

1. कौशल विकास के माध्यम से महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक विकास में सीएसआर की भूमिका।
2. बाल आधारित मुद्दों में मीडिया की भूमिका।
3. सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने में राज्य समाज कल्याण बोर्ड की भूमिका।

इस राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन का उद्देश्य संस्था की संस्थापक स्व. मालती चौधरी द्वारा स्थापित सामाजिक कल्याण बोर्ड के मिशन और दृष्टिकोण को पूर्ण करना था। इस कार्यक्रम में विभिन्न जगहों और विचारधाराओं से संबंधित लोगों ने विभिन्न विचारों पर मंथन किया।

### "गांधीवादी विचार और महिला सशक्तिकरण" पर पांच दिवसीय कार्यशाला

समिति द्वारा धुलागिरी महिला समिति के सौजन्य से पश्चिम बंगाल में 8 से 12 अगस्त, 2017 तक पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसका विषय था–"गांधीवादी विचार और महिला सशक्तिकरण"।

इसका उद्घाटन गांधी मिशन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नारायण भट्टाचार्जी ने किया। इस अवसर पर गांधी पीस फाउंडेशन पश्चिम बंगाल के सचिव श्री चन्दन पाल और श्रीमती संचिता बनर्जी विशेष रूप से उपस्थित थे।

वक्ताओं ने इस मौके पर कहा कि महिलाओं की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक है कि महिलाओं द्वारा चलाई जा रही लघु इकाईयों को मजबूत बनाया जाए। वक्ताओं का कहना था कि महिलाओं को आज के दौर में स्वावलंबी बनाने की आवश्यकता है, उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करके ही एक सशक्त समाज की कल्पना की जा सकती है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न समूहों और गांवों से महिलाओं की सशक्त नेटवर्किंग कायम करने करने की वकालत की।

कार्यशाला के दूसरे दिन भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ पर महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। कार्यक्रम में श्रीमती ममता चट्टोपाध्याय और श्रीमती रिंकू हजारा ने महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए उनकी शिक्षा पर बल दिया।

तीसरे दिन श्रीमती कल्याणी पॉल ने आजीविका, सशक्तिकरण, प्रशासनिक मुद्दों जैसे अनेक मुद्दों पर प्रतिभागियों से परिचर्चा की। चौथे दिन श्रीमती ब्यूटी बिस्वास ने महिलाओं के अधिकारों के बारे में बात की। इसके अतिरिक्त घरेलू हिंसा कानून, बाल श्रम कानून आदि पर बात की गई।

पांचवे और अंतिम दिन महिलाओं पर गांधीजी के विचार विषय पर एक प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई, जिसका संचालन श्रीमती संचिता बनर्जी ने किया।

### बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम

समिति द्वारा बी एंड एस फाउंडेशन और चेतना संस्था की ओर से बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत एक कार्यक्रम का आयोजन गांधी दर्शन में दिनांक 5 सितंबर, 2017 को किया गया। इस मौके पर गांधी स्मृति और दर्शन समिति की पूर्व उपाध्यक्षा श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थीं।

इस अवसर पर समाज के विभिन्न वर्गों की 200 महिलाओं ने प्रतिभागिता की। इस अवसर पर अपने संबोधन में श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी ने महिलाओं के उत्थान में गांधीवादी विचारों की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त

1) समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा राज को स्मृतिचिन्ह भेंट कर सम्मानित करते हुए। साथ हैं बी एंड एस फाउंडेशन की निदेशक रेणु शर्मा

2) समिति की पूर्व उपाध्यक्षा श्रीमती तारा गांधी भट्टाचार्जी श्रीमती सुनिता गोदारा को नारी उद्यमी पुरस्कार से सम्मानित करती हुई।

किए। उन्होंने कहा कि गांधीजी महिलाओं को समाज की मुख्यधारा मे लाने को सदैव प्रयासरत रहे। अपनी योजनाओं, अपने कार्यक्रमों में हमेशा उन्हें महिलाओं को आगे रखा।

यहां तक कि चम्पारण सत्याग्रह में भी उन्होंने कस्तूरबा गांधी को महत्वपूर्ण भूमिका सौंपकर उन्हें महिलाओं के लिए कार्य करने को कहा। कार्यक्रम में अनेक महिलाओं को समाज में महिलाओं की भूमिका को ताकतवर बनाने के लिए सम्मानित किया गया।

### महिला सशक्तिकरण पर आयोजित सम्मेलन में महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों पर परिचर्चा

समिति द्वारा अखिल भारतीय एससी, एसटी संघ के सहयोग से राज्य स्तरीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। महिला सशक्तिकरण पर आधारित इस सम्मेलन का शुभारंभ 24 सितंबर, 2017 को गांधी दर्शन परिसर में किया गया। इस सम्मेलन में दिल्ली, महाराष्ट्र, झारखंड, पंजाब व हरियाणा से आई करीब 250 महिलाओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त करते हुए सांसद श्री उदित राज ने महिलाओं के अधिकारों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि आज महिलाओं विशेषतः दलित महिलाओं के कल्याण के लिए सरकार ने विभिन्न योजनाएं चलाई हुई हैं। लेकिन आम महिला इन योजनाओं के बारे में अनभिज्ञ हैं।

गांधी दर्शन में 'महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों पर विमर्श करते हुए वक्तागण व उपस्थित महिलाएं।

हमें उन्हें इन योजनाओं की जानकारी देकर, उन्हें इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि संविधान ने महिलाओं को आगे बढ़ने के लिए समुचित अधिकार दिए हैं।

कार्यक्रम में एससी, एसटी संघ की राष्ट्रीय संयोजक श्रीमती सविता कादियान पंवार ने भी दलित महिलाओं के उत्थान पर बात की। इस अवसर पर वक्ताओं ने वंचित समाज की महिलाओं को समाज की मुख्यधारा में लाने की वकालत की। वक्ताओं का कहना था कि महिलाओं को कौशल विकास के जरिए स्वावलंबी बनाना आवश्यक है, ताकि वे रोजगार अपनाकर अपना व परिजनों का विकास कर सकें।

## "राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका : गांधी दर्शन" कार्यशाला का आयोजन

समिति द्वारा पेस तकनीकी एवं विज्ञान संस्थान ओंगोल, आंध्र प्रदेश के सहयोग से दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका विषय था–"राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की भूमिका"। इस अवसर पर पेस के संयोजक डॉ. एम. श्रीनागेश उपस्थित थे।

इस कार्यशाला के प्रमुख बिंदु थे:

### प्रथम दिन

1. **श्री टी. परमेश्वर राव**–महिला सशक्तिकरण अर्थात भारतीय माताओं का सशक्तिकरण। जब महिलाएं मजबूत बनती हैं, तो करीब आधी जनसंख्या मजबूत हो जाती है। इससे देश की आर्थिक व्यवस्था दृढ़ होती है। शिक्षा, महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी, क्योंकि यह महिलाओं को चुनौतियां स्वीकार करने, उनकी परंपरागत भूमिकाओं और जीवन को परिवर्तित करने का काम करती है।

2. **डॉ. सी. हिमबिन्दु**–मूल और ग्रामीण स्तर पर महिलाओं को शिक्षित करने से उन्हें सामाजिक और आर्थिक समानता मिलती है। इससे उनकी राजनीति में सक्रिय भागीदारी बढ़ती है, उनके विरूद्ध हिंसा की रोकथाम करने में मदद मिलती है। देश निर्माण का कार्य महिलाओं की भागीदारी के बिना संपन्न नहीं हो सकता।

3. **श्री टी. अरूण**–जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होता, तब तक विश्व का कल्याण होने की कोई संभावना नहीं है। निरक्षरता, कन्या भ्रूण हत्या, स्वच्छता के प्रति उदासीनता जैसी समस्याओं पर काबू महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से ही पाया जा सकता है।

### दूसरा दिन

1. **श्री एस. साईबाबा**–अनेक देशों के आर्थिक विकास में महिलाओं की भूमिका को भुलाया नहीं जा सकता। हालांकि महिलाओं की आबादी विश्व की आबादी की आधी है, उनकी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति पुरूष की तुलना में अच्छी नहीं है, वे दशकों से और आज भी अत्याचार का शिकार बन रही हैं। महिलाओं की कमजोरी इस स्थिति के लिए जिम्मेदार है, इसलिए उन्हें सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा की आवश्यकता है। इसलिए उन्हें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त किया जाना चाहिए।

2. **श्री जी. नागेन्द्र**–मेरा युवा वर्ग में विश्वास है। विवेकानंद जी की 150वीं जयंती के समारोह कई मायनों में हमारे लिए आंखे खोलने वाले हैं। देश की लम्बाई और चौड़ाई से पार, ग्रामीण क्षेत्रों, कस्बों और महानगरों में जयंती समारोह के आयोजनों में युवाओं में खूब उत्साह रहा। युवा मुद्दों पर एकत्र हो रहें हैं। दिल्ली में भी हजारों युवा विशेषतः निर्भया के हादसे के बाद बलात्कार की घटनाओं के खिलाफ एकजुट हो रहे हैं और आंदोलन कर रहे हैं।

3. **डॉ. वी. नागलक्ष्मी**–राष्ट्र निर्माण राष्ट्रीय पहचान बनाने और उसे तराशने की एक प्रक्रिया है। इन प्रमुख शब्दों 'बनाना' और 'तराशना' की पसंद बहुत मौलिक है, क्योंकि ये राष्ट्र निर्माण के मूलभूत तत्व हैं। इसलिए राष्ट्र निर्माण एक लंबी प्रक्रिया है, जो एक

(बाएं से दाएं) पेस तकनीकी संस्थान द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार को संबोधित करती विशिष्ट वक्ता व उन्हें ध्यानपूर्वक सुनते लोग।

लंबे समय बाद अस्तित्व में आती है। यह एक तुरंत होने वाली प्रक्रिया नहीं है।

बनाना और तराशना राष्ट्र निर्माण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि अनेक चीजें हैं, जिन्हें तराशा और बनाया जाना है। तराशना एक ऐसा कदम है, जिससे व्यक्ति की पहचान बनती है। वे चीजें जो बनाई और तराशी जानी हैं, वे हैं, व्यवहार, राष्ट्रीय छवि, मूल्य संस्थान और स्मारक, जो साझा इतिहास और राज्य के लोगों की संस्कृति को अंकित करे। कार्यक्रम में कई गणमान्य वक्ताओं ने अपने विचार रखे और प्रतिभागियों को राष्ट्र निर्माण की दिशा में आवश्यक कदम उठाने का आग्रह किया। वक्ताओं का कहना था कि महिलाएं राष्ट्र निर्माण की आवश्यक धुरी हैं, राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में उनकी भागीदारी जरूरी है।

पेस विज्ञान व तकनीकी संस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में अपने विचार रखते हुए वक्ता व उपस्थित प्रतिभागी।

वक्ताओं ने कहा कि बालिकाओं की शिक्षा काफी महत्वपूर्ण है, इसके माध्यम से हम आने वाले समय में राष्ट्र का तीव्र विकास कर सकते हैं।

पेस संस्थान की महिला सशक्तिकरण इकाई की संयोजिका श्रीमती श्रावन्ती ने आए हुए अतिथियों का आभार प्रकट किया।

## महिला सशक्तिकरण : स्त्री शक्ति साधना शिविर

समिति द्वारा आचार्य काकासाहेब लोक सेवा केन्द्र नन्दूरबार, महाराष्ट्र में महिला सशक्तिकरण : स्त्री शक्ति साधना शिविर का आयोजन किया गया। विनोबा भावे की जयंती के अवसर पर 11 सितंबर, 2017 को आयोजित इस शिविर की मुख्य अतिथि सुश्री दया बहन थीं। श्री रमनलाल शाह एडवोकेट, प्रो. मृदुला वर्मा, प्रो. किरण सक्सेना विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित थे।

सुश्री दया बहन ने इस मौके पर आचार्य विनोबा भावे के दर्शन और समाज में उनके योगदान के बारे में बताया। इसके अतिरिक्त श्रीमती कृष्णाबेन शर्मा, प्रो. मीना हजारी ने भी अपने विचार रखे। दूसरे सत्र में प्रो. किरण सक्सेना ने चम्पारण सत्याग्रह के सौ साल, दांडी मार्च का जिक्र करते हुए कहा कि इन आंदोलनों में महात्मा गांधी ने काफी संख्या में महिलाओं को जोड़ा और उनका स्वागत किया।

(ऊपर से नीचे) महाराष्ट्र में आयोजित 'श्री शक्ति साधना शिविर' के कुछ दृश्य

प्रो. पीताम्बर ने महात्मा गांधी की आगामी 150वीं जयंती के बारे में चर्चा करते हुए लोगों को जयंती आयोजनों से जुड़ने और इसके माध्यम से अपना सामाजिक विकास करने का आह्वान किया।

### "बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ" पर सेमिनार : सह–कार्यशाला

समिति द्वारा श्री ज्ञान गंगोत्री विकास संस्था और एलआईसी के सौजन्य से बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ पर एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन, 13 अक्तूबर, 2017 को किया गया। कॉफी हाउस बिन्दापुर, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. हंसराज सुमन बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। इसमें करीब 300 लोगों ने भाग लिया।

वक्ताओं ने इस मौके पर कहा कि हमें बेटियों के बारे में अपनी मानसिकता बदलने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि सरकार बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प है, और प्रथम से आठवीं कक्षा तक उन्हें मुफ्त शिक्षा मुहैया करवाई जा रही है। उन्होंने कहा कि बालिकाओं को शिक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए, ताकि वे शिक्षित होकर समाज के विकास में अपना योगदान दे सकें। कार्यक्रम में श्री ज्ञान गंगोत्री विकास संस्था के श्री बी. के. सिंह, अध्यक्ष श्रीमती रानी सिंह, डॉ. मानसी मिश्रा, समाजसेवी श्री संतोष पटेल आदि उपस्थित थे।

### महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरण की भूमिका– एक सेमिनार

समिति द्वारा सोनवैली डवलपमैंट फाउंडेशन, कैमूर, बिहार के सौजन्य से 31 अक्तूबर, 2017 को "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम और महिला सशक्तिकरण की भूमिका" पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में क्षेत्र की 300 महिलाओं ने भाग लिया और अपने अनुभवों को साझा किया।

बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ सेमिनार में उपस्थित विशिष्ट जन स्मारिका का विमोचन करते हुए।

सेमिनार में अपने अनुभव बयां करतीं एक प्रतिभागी व उन्हें सुनती महिलाएं।

सेमिनार के आरंभ में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम में श्री हरिद्वार पांडया बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त श्री सुरेंद्र सिंह, डॉ. अनीस सिंह, श्री विवेकानन्द, श्रीमती छाया पंड्या, श्री मिथिलेश चटर्जी और श्री कपिन्द्र विशिष्ट अतिथि के तौर पर मौजूद थे।

उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए डॉ. अनीस सिंह ने महिला लोकसंगीत की सराहना की। उन्होंने कहा कि इसे सम्मान देने और आगे बढ़ाने की जरूरत है। सुविख्यात गांधीवादी श्री विवेकानन्द जी ने कहा कि पुराने समय में महिलाओं की स्थिति काफी मजबूत थी, और अनेक सामाजिक सुधार उनके इर्द–गिर्द केन्द्रित थे। गांधीजी ने हमेशा महिलाओं के कार्य को समर्थन दिया और वे चाहते थे कि वे शिक्षित बनें और अपने पैरों पर खड़ी हों।

श्रीमती छाया पंड्या ने कहा कि महात्मा गांधी सदैव कहते थे कि रामराज केवल तभी संभव है, जब महिलाओं को समान स्थान मिले। महात्मा गांधी ने ग्राम्य जीवन में चरखे को इसलिए शामिल किया, ताकि महिलाएं आर्थिक रूप से मजबूत और स्वतंत्र बनें।

बिहार के कैमूर में आयोजित कार्यक्रम में विशेषज्ञों के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करतीं प्रतिभागी।

उन्होंने उपस्थित महिलाओं को सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न महिला उत्थान की योजनाओं के बारे में जानकारी दी और उन्हें इनका समुचित लाभ उठाने का आह्वान किया। श्रीमती मिथिलेश चटर्जी ने कहा कि भारत एकमात्र देश है जहां महिलाओं की, सीता, पार्वती, दुर्गा और अन्य देवियों के रूप में पूजा की जाती है।

कार्यक्रम में श्री कपिन्द्र सिंह ने कहा कि ,''हम जो अपनी माता से सीखते हैं, वह सदैव जीवन में हमारे काम आता है। महिलाएं परिवार की मुख्य धुरी है। हमें अपनी नदियों को भी साफ रखना चाहिए, क्योंकि हम उन्हें अपनी माता मानते हैं और माता की पवित्रता बनाए रखना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त हमें अपने पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त बनाना और उसे संरक्षित भी करना चाहिए।

श्री हरिद्वार पांडया ने कहा कि मानव प्रकृति से हिंसक होता है, जबकि हमारे प्रेरकों ने हमें सदैव सिखाया है कि हमें अहिंसक रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी एक सामाजिक क्रांतिकारी थे, जिन्होंने अपने जीवन में समाज के सब वर्गों की भलाई के लिए कार्य किया। महिला सशक्तिकरण पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि हमें बेटे और बेटी में कोई भेदभाव नहीं रखना चाहिए। हमें महिलाओं को उचित शिक्षा प्रदान करवानी चाहिए, ताकि वे जीवन में उच्चतम उपलब्धियों को प्राप्त कर सकें।

समिति द्वारा कैनूर में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित लोग।

श्री सुरेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि गांधीजी समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने को हमेशा प्रयासरत रहे और इसके लिए लोगों को जागरूक भी करते रहे। हमें भी देश की बेहतरी के लिए इसी दिशा में कार्य करने चाहिए।

## "महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ और ग्राम विकास" पर सेमिनार

समिति द्वारा छत्तीसगढ़ के अमदी धनतारी में "महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ और ग्राम विकास" पर सेमिनार का आयोजन, 25 अक्तूबर, 2017 को किया गया। नवीन अंकुर महिला मंडल छत्तीसगढ़ के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में क्षेत्र की विभिन्न पंचायतों से 300 महिलाओं ने भाग लिया। सेमिनार का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण के प्रति जागरूकता बढ़ाना, महात्मा गांधी द्वारा सुझाए गए रास्ते पर चलकर पंचायतों के माध्यम से ग्राम विकास करने के बारे में लोगों को जानकारी देना था।

इस मौके पर उपस्थित विशिष्ट जनों में श्रीमती मीना गौतम, अध्यक्ष नवीन अंकुर महिला मंडल, सुश्री सविता तरराटे, उपाध्यक्ष, लक्ष्मी कॉओपरेटिव बैंक, महिला मोर्चा की जिला प्रभारी श्रीमती हेमलता शर्मा, पंचायत सदस्य श्रीमती श्यामा साहू, रंजना साहू, उषा मूर्ति, सुशीला सन, प्रतिभा देवांगन, अनिता अग्रवाल, रेखा साहू, प्रीति कुंभकार आदि शामिल थे। सेमिनार में सभी ने एकमत से यह स्वीकार किया कि गांधीवादी मार्ग को अपनाकर महिलाओं को विकसित और

छत्तीसगढ़ के धनतारी में आयोजित महिला सशक्तिकरण एवं ग्राम विकास सेमिनार के दृश्य।

**सशक्त महिलाएं, सशक्त देश** : युवतियों द्वारा शक्ति प्रदर्शन और मंत्रमुग्ध दर्शकगण।

सशक्त किया जा सकता है। इस अवसर पर प्रतिभागियों ने अपने क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत किया। पंचायतों की महिला सदस्यों को अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए पुरस्कृत भी किया गया।

### बा–बापू के संदर्भ में महिला और ग्राम कल्याण विषय पर संवाद

समिति द्वारा "बा–बापू के संदर्भ में महिला, ग्राम कल्याण और समृद्धि" विषय पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन 18 अक्तूबर, 2017 को हरियाणा के सोनीपत जिले के गांव अटेरणा में किया गया। इसमें कुल 254 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य स्कूल विद्यार्थियों और महिलाओं को गांधीजी और कस्तूरबा गांधी के ग्राम कल्याण और समृद्धि विषयक विचारों की अभिव्यक्ति हेतु एक मंच प्रदान करना था। इस अवसर पर वक्ताओं ने साक्षरता के प्रति जागरूकता को विकास की धुरी बताया। हरियाणा कृषि विपणन बोर्ड की अध्यक्षा श्रीमती कृष्णा गहलावत ने ' लिंग भेदभाव और कन्या शिक्षा' विषय पर अपने विचार रखे। डॉ. मंजू अग्रवाल ने आयुर्वेद, योग, होम्योपैथी के लाभों से लोगों को अवगत करवाया। उन्होंने कुछ योग मुद्राएं भी सिखाईं।

गांधी एक्शन फेलो सुश्री आकांक्षा, सुश्री कनक, सुश्री नेहा, सुश्री निखत ने उपस्थित दर्शकों से शिक्षा, बाल विवाह, स्वच्छता और आत्मनिर्भरता के बारे में बात की। इस अवसर पर सभी ने मशरूम के खेत का दौरा भी किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ गांधीवादी श्री बसंत, श्री कुंवर यशपाल चौहान, श्रीमती अर्चना, श्रीमती अन्नू हरदत्त, जिला परिषद् सदस्य श्री नंद किशोर चौहान सहित अनेक गणमान्य लोगों ने शिरकत की।

### रचनात्मक कार्यक्रम और महिलाओं की भूमिका विषय पर सेमिनार

समिति ने बनवासी सेवा आश्रम गोविन्दपुर, रेनुकूट, सोनभद्र में 5 नवम्बर, 2017 को एक सेमिनार आयोजित किया, जिसका विषय था–रचनात्मक कार्यक्रम और महिलाओं की भूमिका। बनवासी सेवा आश्रम की अध्यक्षा सुश्री शोभा बहन के संचालन में आयोजित इस सेमिनार में आश्रम और आसपास की अनेक महिलाओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम का आगाज सुश्री शोभा बहन द्वारा महिला सम्मेलन के परिचय के साथ हुआ। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के समक्ष आने वाली अनेक समस्याओं का जिक्र किया और उन्हें कैसे गांधीवादी तरीके से हल किया जा सकता है, पर अपने विचार रखे।

आश्रम के एक वरिष्ठ सदस्य गुरूजी ने कहा कि आज अपनी दुर्दशा के लिए स्वयं महिलाएं जिम्मेदार हैं, क्योंकि वे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष नहीं करती। उन्हें कहीं अन्यत्र अपेक्षा करने से पहले स्वयं का सम्मान करना सीखना होगा।

आश्रम के शेखरजी ने कहा कि महिलाओं और पुरूषों को समाज और देश की बेहतरी के लिए मिल–जुलकर काम करना होगा, तभी हम अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित कर पाएंगे। आश्रम की ही सुश्री नीरा बहन ने बाल विवाह के मुद्दे को उठाया और कहा कि सौभाग्य से अब यह परंपरा कम हो रही है।

सुश्री मन्तोला बहन ने कहा कि हमें बेटियों को स्वतंत्रता प्रदान करनी होगी, ताकि वे अपने जीवन में विशेष ऊंचाईयों को छू सकें। सुश्री अमिता बहन ने दहेज प्रथा पर चिंता जताते हुए कहा कि यह बड़ा गंभीर विषय है। इसके कारण महिलाओं को प्रताड़ित होना पड़ता है और कई बार उनकी मृत्यु तक हो जाती है। इसे हमारे सामाजिक सिस्टम से उखाड़ फैंकना होगा।

1) आश्रम के एक वरिष्ठ सदस्य 'गुरूजी' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए।

2) और 3) 'रचनात्मक कार्यक्रम और महिलाओं की भूमिका' कार्यक्रम में अपने विचार रखते विभिन्न क्षेत्रों से आए अतिथि।

4) नजदीकी गांवों से आए लोग कार्यक्रम में भाग लेते हुए।

सुश्री मनमति बहन ने इस मौके पर कहा कि हमें अंधविश्वास और वहम से छुटकारा पाना होगा, ताकि जिन्दगी बेहतर बन सके। हमें दहेज न तो देना चाहिए और न ही स्वीकार करना चाहिए। सुश्री फूलमति बहन ने कहा कि प्रत्येक बेटी हम सब की बेटी है, हमें 'बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ' के मिशन को पूरा करना चाहिए। सुश्री चमेली बहन ने शराब की समस्या को उठाते हुए कहा कि नशा समाज के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है और इस बुराई से लड़ने के लिए हमें महिलाओं का एक संगठन बनाना होगा।

उत्तर प्रदेश के बनवासी सेवा आश्रम में अपने अनुभव साझा करती स्थानीय महिलाएं।

बनवासी सेवा आश्रम की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती गीता वर्मा इस अवसर पर मुख्य वक्ता थी। अपने संबोधन में उन्होंने महिला प्रतिनिधियों से आह्वान किया कि वे सम्मानित, सांस्कृतिक जड़ों वाली, शिक्षित बनें और इन मूल्यों को अगली पीढ़ी को सौंपें। उन्होंने महिलाओं से कहा कि वे अपनी प्राथमिकताओं पर ध्यान दें, सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन की दिशा में काम करें, शोषण और अन्याय के खिलाफ संघर्ष करें और सभी परिस्थितियों में विजेता की तरह उभरें।

आश्रम की डॉ. विभा ने गर्भवती महिलाओं के मुद्दों को उठाते हुए कहा कि जो गर्भवती महिलाएं खून की कमी की समस्या से जूझती हैं, उन्हें अपने स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों और उनके समाधान के प्रति जागरूक होना चाहिए। "महिलाओं को अपने स्वास्थ्य के बारे में सदैव ध्यान रखना चाहिए, ताकि उनकी उर्जा अच्छे कामों में इस्तेमाल हो सके।" उन्होंने कहा।

ओडिशा से आए एक प्रतिनिधिमंडल ने महिलाओं के स्वावलंबन के लिए एक स्त्री शक्ति संगठन की स्थापना के बारे में चर्चा की। इस संगठन के जरिए व्यवसाय करने के मुख्य विषय, स्थान, लोगों से संबंध, पैसा, कच्चा माल, बाजार, दर आदि होंगे। संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए हमें आपसी सहयोग, विश्वास, समुचित अकाउंटिंग, प्रश्नों के उत्तर और रिकॉर्ड की आवश्यकता पड़ेगी।

सेमिनार में समूह परिचर्चा भी हुई, जिसमें ग्रामीण महिलाओं ने भाग लिया और अपने अनुभवों से अवगत करवाया। श्रीमती गीता वर्मा ने किशोर न्याय कोर्ट के संबंध में जानकारी दी, जो ग्रामीणों की कानूनी मदद करता है। उन्होंने कहा कि महिलाएं जंगल से सूखे पत्तों को एकत्र कर, इन्हें आजीविका का साधन बना सकती हैं। उन्होंने कहा कि वे महिलाएं जो अधिक शिक्षित नहीं हैं, वे प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से लाभ उठा सकती हैं।

इससे पूर्व सुश्री चांदतारा बहन और सुश्री नीरा बहन ने एक प्रेरक गीत प्रस्तुत किया, जिसे काफी पसंद किया गया।

### पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं का क्षमता निर्माण पर प्रशिक्षण

बापूजी युवा एसोसिएशन चित्तूर आंध्रप्रदेश और समिति के संयुक्त तत्वावधान में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की क्षमता निर्माण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 12 दिसंबर, 2017 को चित्तूर के एनपीएस राजकीय महिला महाविद्यालय में किया गया। इसमें 160 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन चार सत्रों में किया गया:

- उद्घाटन सत्र : अध्यक्षता श्री आर. आनन्द, प्राचार्य एनपीएस राजकीय महिला महाविद्यालय चित्तूर
- तकनीकी सत्र–1 : अध्यक्षता डॉ. सुंदर राम, संस्थापक एजीआरएएसआरआई
- तकनीकी सत्र–2 : अध्यक्षता श्री आर. आनन्द, प्राचार्य एनपीएस राजकीय महिला महाविद्यालय चित्तूर
- समापन सत्र : अध्यक्षता श्री अंजनेयुलू, निदेशक, एसएसटी कुरनूल।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्नलिखित अतिथियों/वक्ताओं/प्रशिक्षकों ने भाग लिया–

श्रीमती ए. आर. विजय राय, डीवाईसी, श्री आर. श्रीनिवासन एमपीडीओ चित्तूर, श्रीमती पी. एन. श्रीदेवी, एमईओ नागरी, श्रीमती एस. ललिता कुमारी एमईओ चंद्रगिरी, श्रीमती हेमा मालिनी, एमईओ पिचतौर, श्रीमती जगदीश्वरी अर्थशास्त्र प्राध्यापिका और श्रीमती आर. शोबना, वाणिज्य प्राध्यापिका। सत्र की अध्यक्षता श्री आर. आनन्द प्राचार्य, एनपीएस राजकीय महिला महाविद्यालय चित्तूर ने की।

वक्ताओं ने कहा कि ग्राम स्वराज पर गांधी जी के विचारों को स्वतंत्रता के बाद भारत में ज्यादा महत्व नहीं दिया गया। यह आजादी के चार दशकों के बाद हो पाया है कि स्थानीय स्वराज पर ध्यान दिया गया और इसका नतीजा यह हुआ कि 1993 में 73वां व 74वां संविधान संशोधन प्रकाश में आया।

वक्ताओं ने महिलाओं से आग्रह किया कि वे अपनी भूमिका और शक्तियों के बारे में जानें और उनका उपयोग करें। उन्होंने महिला प्रतिनिधियों से भी अपील की कि वे आगे आएं और पंचायती राज संस्थाओं में आरक्षित सीटों पर चुनाव लड़ें।

वक्ताओं का कहना था कि महात्मा गांधी ने महिलाओं की भारतीय राजनीति में भागीदारी की दिशा में सक्रिय भूमिका निभाई। गांधीजी ने महिलाओं से संबंधित मुद्दों पर कभी समझौता नहीं किया। उनके अनुसार पुरूष और महिलाएं, दोनों, देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ताने–बाने का अभिन्न अंग हैं।

वक्ताओं ने महसूस किया कि पंचायती राज संस्थाएं ग्रामीण विकास के लिए और सामान्य व निचले तबके के सामाजिक–आर्थिक उत्थान के लिए निर्णायक भूमिकाएं निभाती हैं। महिला प्रतिनिधियों के कारण अधिकारियों और चुने हुए जनप्रतिनिधियों का गठबंधन अब टूट रहा है, जो भ्रष्टाचार को कम करने में सीधा असर डाल रहा है। अपने अधिकारों और शक्तियों के प्रति महिलाओं की जागरूकता और सक्रियता के कारण स्थानीय बाहुबली ताकतें कम हो गई हैं। इसके फलस्वरूप महिलाओं, दलितों के विरूद्ध हिंसा में कमी आई है।

समापन सत्र में, सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र और अतिथियों, वक्ताओं व प्रशिक्षकों को सम्मानित किया गया।

### बा के 74वें निर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि

'बा' के 74वें निर्वाण दिवस पर गांधी दर्शन, राजघाट परिसर में 22 फरवरी, 2018 को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। गांधी स्मृति और दर्शन समिति के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 250 लोगों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ कलाकार श्री अमिताभ मिश्रा ने बा को संगीतमयी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने कबीर, मीरा बाई के भजनों को स्वरचित धुनों पर प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति

में उनके साथ तबले पर श्री मनोज कुमार, हारमोनियम पर श्री गुल मौहम्मद खान और की बोर्ड पर श्री हैदर थे।

अपने संबोधन में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने गांधीजी के जीवन और उन्हें महात्मा के रूप में परिवर्तित करने में बा के योगदान का जिक्र करते हुए कहा कि कस्तूरबा गांधी की निभाई भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। उन्होंने 2019 में आने वाली बापू की 150वीं जयंती के लिए साल भर चलने वाले कार्यक्रमों को यादगार बनाने के लिए लोगों को आगे आने और इसमें बढ़–चढ़कर भाग लेने का आह्वान किया। इस अवसर पर वरिष्ठ

कस्तूरबा निर्वाण दिवस के मौके पर गांधी दर्शन में आयोजित कार्यक्रम में भक्ति संगीत प्रस्तुत करते हुए शास्त्रीय गायक श्री अमिताभ मिश्रा।

कस्तूरबा गांधी को उनकी 74वीं पुण्यतिथि पर मौन श्रद्धांजलि देते लोग।

गांधीवादी कार्यकर्ता श्री बसंत ने अपने विचार रखते हुए श्री अमिताभ मिश्रा को अपने आध्यात्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से समिति से जुड़ने का अनुरोध किया।

### अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के मौके पर महिलाओं के स्वास्थ्य, सफाई, लिंग संवेदीकरण और महिला सशक्तिकरण पर कार्यशाला

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर समिति और इग्नू के तत्वावधान में महिलाओं के स्वास्थ्य, सफाई, लिंग संवेदीकरण और महिला सशक्तिकरण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। गांधी दर्शन परिसर में 12 मार्च, 2018 को आयोजित इस कार्यक्रम में 25 लोग सम्मिलित हुए। इस अवसर पर गंगा के कायाकल्प और संरक्षण, उसकी सहायक नदियां और स्रोत हिमालय पर चर्चा की गई।

प्रतिभागियों ने नदियों और घाटों की सफाई, प्रदूषण और जनता के स्वास्थ्य के बारे में विमर्श किया। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्षा श्रीमती रमा राउत ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान भी इस मौके पर उपस्थित थे। इस कार्यक्रम के सहसंयोजक कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मृति ट्रस्ट इंदौर और अहिंसा विश्व भारती नई दिल्ली रहे।

हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास सेनेटरी नेपकिन वेंडिंग मशीन का उद्घाटन करते हुए।

(ऊपर से नीचे) अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर गांधी दर्शन स्थित बी. एन. पांडे सभागार में आयोजित कार्यक्रम की झलकियां।

# तिहाड़ में

## नेत्र रोग शिविर आयोजित

समिति द्वारा तिहाड़ केंद्रीय कारागार–2 में सामुदायिक नेत्र रोग विभाग, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान व श्री आर. के. अग्रवाल स्मृति फाउंडेशन के सहयोग से नेत्र रोग शिविर का आयोजन दिनांक 26 मई, 2017 को किया गया। शिविर में 147 कैदियों को लाभान्वित किया गया, जिसमें 136 मरीजों को चश्मों के लिए व 4 मरीजों को ऑपरेशन के लिए चिन्हित किया गया।

तिहाड़ केंद्रीय जेल–2 में आयोजित निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का दृश्य।

इस शिविर में 14 चिकित्सकों की टीम ने एम्स के डॉ. विवेक गुप्ता के नेतृत्व में मरीजों को परामर्श दिया। आर के अग्रवाल फाउंडेशन के सदस्य श्री संदीप और श्री अनमोल ने मरीजों को दवाएं वितरित कीं। केंद्रीय कारागार–2 के अधीक्षक श्री अजय यादव ने इस प्रकार के अन्य स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन की आवश्यकता पर बल दिया, ताकि कैदियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाई जा सके। इस अवसर पर डॉ. मंजू अग्रवाल, श्री राजदीप पाठक, श्रीमती रीता कुमारी, तिहाड़ के डीएसपी श्री समरेंद्र चौधरी, श्री प्रकाश चंद्र, श्री अक्षय खत्री आदि उपस्थित थे।

## नेलसन मंडेला दिवस आयोजित

समिति द्वारा 18 जुलाई, 2017 को तिहाड़ सीजे–2 में नेलसन मंडेला की 99वीं जयंती पर नेलसन मंडेला दिवस का आयोजन किया गया। इस वर्ष का विषय था–"आजादी, न्याय और लोकतंत्र।"

इस अवसर पर समिति द्वारा जून माह में आयोजित नेत्र रोग शिविर में चयनित कैदियों को चश्मों का निःशुल्क वितरण

(ऊपर) श्री अजय यादव, अधीक्षक सीजे–2 प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए। उनके साथ हैं डॉ. मंजू अग्रवाल और श्रीमती रीता कुमारी व अन्य।

(नीचे) सीजे–2 के कैदियों के लिए ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का संचालन करतीं डॉ. मंजू अग्रवाल।

किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मंजू अग्रवाल और श्रीमती रीता कुमारी ने किया। अधीक्षक श्री अजय यादव भी इस मौके पर मौजूद थे।

## तिहाड़ में विभिन्न कार्यक्रम

चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर तिहाड़ के विभिन्न कारागारों में चित्रकला प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। दिनांक 5, 14, 16 व 18 अगस्त को हुए इन कार्यक्रमों में 200 कैदियों ने उत्साह से भाग लेकर स्वच्छाग्रह, महात्मा गांधी के दर्शन, सफाई, महिला उत्पीड़न, पर्यावरण आदि विषय पर अपनी कला का प्रदर्शन किया।

समिति द्वारा केंद्रीय कारागार तिहाड़ में आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता में उत्साह से भाग लेते तिहाड़ के कैदी।

ये चित्रकला प्रतियोगिताएं क्रमशः केन्द्रीय कारागर नम्बर–1, 2, 3, 4, 5 रोहिणी जेल–10, मंडोली जेल नम्बर–13, 14 व 16 में आयोजित की गईं। इनका संचालन डॉ. मंजू अग्रवाल और श्रीमती रीता कुमारी ने किया। 15 अगस्त को केन्द्रीय कारागार–2 में स्वतंत्रता दिवस समारोह मनाया गया और प्रतिभागी कैदियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए गए। समिति के कार्यक्रम कार्यकारी श्री राजदीप पाठक भी इस मौके पर मौजूद थे।

विभिन्न जेलों में आयोजित कार्यक्रम के समापन के पश्चात समिति की ओर से प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किए गए।

## गांधी को जानो पर कार्यशाला और गांधी प्रश्नोत्तरी आयोजित

समिति द्वारा तिहाड़ केन्द्रीय कारागार–1 के कैदियों के लिए 27 दिसंबर को एक कार्यशाला "गांधी को जानो" आयोजित की गई। इसमें करीब 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर एक गांधी प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई। कार्यक्रम में सीजे–1 के अधीक्षक श्री सुभाष चंद्र भी उपस्थित थे।

गांधी प्रश्नोत्तरी में कैदियों से गांधीजी के जीवन पर आधारित विभिन्न प्रश्न पूछे गए, जिसका कैदियों ने उत्साह से जवाब दिया। कार्यक्रम के बाद एक परिचर्चात्मक सत्र भी हुआ, जिसमें श्री विश्वास गौतम ने गांधीजी के जीवन और दर्शन के बारे में कैदियों को बताया।

# चम्पारण में कार्यक्रम

### स्वच्छता पखवाड़ा मनाया

चम्पारण के वृंदावन स्थित राजकीय बुनियादी विद्यालय में 16 सितंबर, 2017 को स्वच्छता पखवाड़ा के तहत जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर विद्यालय के बच्चों द्वारा निकटवर्ती इलाकों यथा, बृंदाबन, रंभपुखा, टिकाछापर, दुबेटोला, जबडोल, जिनाचाप, ओझाटोला में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसके अतिरिक्त ग्रामीणों को शौचालय के इस्तेमाल हेतु व जिन परिवारों ने शौचालय नहीं बनवाया है, उन्हें इसे शीघ्र बनवाने के लिए प्रेरित किया गया।

### बाल विवाह और दहेज प्रथा पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित

राजकीय बुनियादी विद्यालय चम्पारण द्वारा बाल विवाह और दहेज प्रथा पर लोगों को जागरूक करने के लिए एक अभियान की शुरूआत की गई। इस अभियान के तहत अभिभावकों को शपथ दिलाई गई कि वे बालपन में अपने बच्चों का विवाह नहीं करेंगे और दहेज का आदान–प्रदान नहीं करेंगे। बच्चों को भी बाल विवाह न करने के लिए प्रेरित किया गया।

दिनांक 3 दिसंबर, 2017 को विद्यालय प्राचार्य के नेतृत्व में स्टाफ और विद्यार्थियों ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को उनकी जयंती अवसर पर श्रद्धांजलि दी। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने कई बार इस विद्यालय का दौरा किया था। विद्यालय गांधीजी के सपनों को साकार विभिन्न प्रयासों के माध्यम से कर रहा है।

चम्पारण बिहार के वृंदावन व सिरसिया अड्डा में स्वच्छता अभियान के तहत सफाई करते बुनियादी विद्यालय के बच्चे व अध्यापकगण।

# परिचर्चा, संवाद और सम्मेलन

## अंतर पीढ़ी एकजुटता विषय पर सेमिनार

अपनी गतिविधियों की श्रृंखला में, हैल्दी ऐजिंग इण्डिया (एचएआई) द्वारा एम्स के ज़राचिकित्सा विभाग व गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के सौजन्य से, 22–23 अप्रैल 2017 को 'अन्तर पीढ़ी एकजुटता' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में खेल एवं युवा मामलों के मंत्रालय के सचिव डॉ॰ ए॰ के॰ दुबे बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे।

गांधी दर्शन में सेमिनार का उद्घाटन करते खेल एवं युवा कल्याण मंत्रालय के सचिव डॉ. ए. के. दुबे।

इस अवसर पर हैल्दी एजिंग इण्डिया के श्री ए॰ गांगुली ने संक्षेप में संस्था के कार्यों की जानकारी दी। संस्था के अध्यक्ष डॉ॰ प्रसून चटर्जी ने अन्तर पीढ़ी एकजुटता और स्कूली बच्चों के माध्यम से बुजुर्गों तक पहुंचने पर बल दिया। उन्होंने प्रतिभागियों से अपने अमूल्य सुझाव और प्रतिक्रिया देने को कहा ताकि एचएआई की गतिविधियों को मज़बूती प्रदान की जा सके। उन्होंने पीढ़ियों के अन्तर के महत्व को दर्शाते हुए एक वीडियों का प्रदर्शन भी किया।

हैल्दी एजिंग इंडिया के अध्यक्ष डॉ. प्रसून चटर्जी अपना वक्तव्य देते हुए।

गांधी स्मारक निधि के सचिव श्री संजय सिंह अपने विचारों से लोगों को अवगत करवाते हुए।

डॉ॰ ए॰ के॰ दुबे ने बुजुर्गों द्वारा युवाओं के चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास करने के विचारों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारतीय समाज में खत्म होते संयुक्त परिवारों पर चिन्ता जताते हुए कहा कि संयुक्त परिवार व्यवस्था सामाजिक सुरक्षा का प्रतीक थे। इनका हमारी संस्कृति में विशेष महत्व था। उन्होंने वरिष्ठ नागरिको को परामर्श देने की ज़रूरत पर बल देते हुए कहा कि इससे पीढ़ियों के बीच बॉन्डिंग बनाने में मदद मिल सकती है।

श्री पी॰ के॰ दास ने युवाओं से कुछ समय अपने दादा–दादी के साथ बिताने को कहा। "चाहे वे हमारे साथ एक ही घर में ना रहते हों, मगर फिर भी यदि कुछ समय उनसे फोन पर बात हो जाए, तो उससे दादा–दादी अच्छा महसूस करेंगे।" उन्होंने जोर देकर कहा।

रामजस स्कूल, पूसा रोड, नई दिल्ली के विद्यार्थियों ने वृद्धाश्रम के दौरे के अपने अनुभवों को बताते हुए, विभिन्न सामाजिक गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने समाजसेवा के क्षेत्र में उनकी शुरूआत करवाने पर एचएआई का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर बुजुर्ग व्यक्तियों को स्वस्थ बने रहने के लिए अनेक तरीके व उपाय सिखाए गए। बुजुर्गों को स्वस्थ रखने के लिए स्कूली पाठ्यक्रम में 'बुजुर्गों की देखभाल के महत्व' को शामिल करने संबंधी सुझाव दिए गए।

गांधी दर्शन राजघाट में सेमिनार में उपस्थित वक्तागण।

गांधी शान्ति फाउण्डेशन के डॉ. जे. के. दास शोध आधारित प्रभावों और जानकारी एकत्र करने उम्र की चुनौतियां, वरिष्ठ नागरिकों के पक्ष में नीतियां जारी करने जैसे मुद्दों पर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने सरकार द्वारा उम्रदराज लोगों के लिए पर्याप्त आर्थिक व सामाजिक नीतियां बनाने की आवश्यकता पर बल जताया, जिससे स्वस्थ व सक्रिय बुढ़ापे की अवधारणा को पोषित किया जा सके।

श्री मैथ्यू चेरियन, सीईओ हैल्दी एजिंग इण्डिया ने वरिष्ठ नागरिक संघो और स्वंय सहायता समूहों का गठन करने पर बल दिया, ताकि बुजुर्गों के पक्ष में नीति बनाने के लिए राजनीतिक दलों को कहा जा सके। आज अनेक वरिष्ठ नागरिक संघ कार्यरत हैं, लेकिन और लोगों को भी संगठित करने की आवश्यकता है।

उन्होंने वरिष्ठ नागरिकों से संबंधित आंकड़ों को भी पेश किया। उन्होंने कहा कि युवा पीढ़ी को अपने माता–पिता की देखभाल करने के प्रति उत्तरदायी और कर्मठ होना चाहिए। अपने बच्चे को शिक्षित करना प्रथम चुनौती है और उसे शिक्षित करने का बेहतर स्थान विद्यालय है।

डॉ. प्रसून चटर्जी ने कार्यक्रम में विचारार्थ विषयों और क्षेत्रों को रेखांकित किया। उनके द्वारा रेखांकित विषय थे–बुजर्ग आबादी की जनसांख्यिकी, बुजुर्गों की अवधारणा, अंतरपीढ़ी सशक्तिकरण का महत्व, लाभ लागत अनुपात का अर्थशास्त्र और इसे अधिक आकर्षक बनाने व युवाओं तक पहुंचाने के मूल्य, बुजर्गों को प्रभावित करने वाले शारीरिक, सामाजिक और पर्यावरणीय तत्व, बुजुर्गों के समक्ष आने वाली समस्याएं जैसे गालियां, तनाव, अकेलापन, डिमेंशिया जीवनशैली में बदलाव की प्रभावशाली भूमिका आदि।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष राम बहादुर राय ने मनोवैज्ञानिक पहलुओं और सकारात्मक विशेषताओं पर जीवन केंद्रित करने और बुढ़ापे की समस्याओं का सामना करने के लिए, सामाजिक मामलों में सक्रियता से भाग लेने और हंसी–खुशी भरा जीवन्त जीवन जीने पर बल दिया।

उन्होंने कहा कि सामाजिक, आध्यात्मिक व अन्य कार्यों में सक्रियता से प्रतिभागिता करने, रूचिकर कार्यों में दिलचस्पी लेने और दैनिक जीवन की दिनचर्या को नियमित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि बुढ़ापे को लेकर दृष्टिकोण बदलने से पूरा परिदृश्य बदल जाएगा।

श्री तपस ने सामाजिक परिवर्तन के लिए स्थानीय मीडिया और समाचार पत्र को संबद्ध करने के महत्व की जानकारी दी। श्री दास ने युवा वर्ग को प्रेरित करने के लिए डिजिटल मीडिया के महत्व के बारे में बताया।

सभी वक्ताओं ने इस बात पर जोर दिया कि अंतरपीढ़ी संपक्र को मजबूत करने के लिए स्कूल और कॉलेज जाने वाले बच्चों को प्रेरित करना आवश्यक है। अंतरपीढ़ी एकजुटता के लिए यह आवश्यक है कि अभिभावकों की सक्रियता को बढ़ाया जाए। दो पीढ़ियों के आपसी संपक्र को मजबूत करने की महत्वपूर्ण कड़ी अभिभावक हैं, वे ही दो पीढ़ियों को एकजुट करने में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

वक्ताओं का कहना था कि आज के दौर में अंतरपीढ़ी एकजुटता कार्यशालाओं का विशेष महत्व है। वरिष्ठ नागरिकों को भी सलाह देने की आवश्यकता है और उन्हें यह सिखाने की भी जरूरत है कि नई पीढ़ी के साथ तालमेल कैसे बैठाया जाए। बुजुर्गों को परामर्श और युवाओं

को स्वास्थ्य शिक्षा पर प्रशिक्षित करके लाभदायक और सफल नीतियां बनाई जा सकती हैं और विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की जा सकती है।

## खादी दूतों की खोज पर सेमिनार

(ऊपर) श्री योगेश शुक्ला को स्मृति चिन्ह प्रदान कर, सम्मानित करते डॉ. वेदाभ्यास कुंडू।
(नीचे) वरिष्ठ गांधीवादी कुमारी इंदु बाला को सम्मानित करती संकल्प खादी की सुश्री परिधि।

समिति द्वारा इन्क्रेडिबल ट्रांसफोर्मिंग चैरिटेबल फाउंडेशन (आईटीसीएफ) के सौजन्य से 'खादी दूतों की खोज' पर 29 अप्रैल, 2017 को गांधी दर्शन में एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के 300 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस सेमिनार का उद्देश्य युवाओं में खादी का आकर्षण बढ़ाने, ओर खादी को बढ़ावा देकर बुनकरों और कताई करने वालों को लाभ पहुचाना था। इस संबंध में गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा की कुमारी इन्दु बाला को सम्मानित किया गया। सुश्री इन्दु बाला ने कार्यक्रम में चरखे के इस्तेमाल का प्रदर्शन किया, जिसने प्रतिभागियों को आकर्षित किया।

खादी का आधुनिक तरीके से फैशन शो में प्रदर्शन सबके आकर्षण का केंद्र रहा।

(ऊपर) सेमिनार की एक प्रतिभागी अपने अनुभव बांटती हुई।
(नीचे) बैंड जस्बे जुनून द्वारा रामधुनि और वन्देमातरम की मनोहारी प्रस्तुति।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि खादी भारत के गौरव का प्रतीक है। गांधीजी ने खादी के माध्यम से स्वावलंबन और देश के आर्थिक विकास पर जोर दिया था। उन्होंने कहा कि खादी दिवस देश के राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया जाना चाहिए।

वक्ताओं ने इस मौके पर कहा कि खादी केवल राष्ट्रवाद का प्रतीक ही नहीं, अपितु स्वावलम्बन, समानता, दृढ़ता और भारत के गर्व का हथियार है। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण 294 युवाओं का खादी के आधुनिक रूप को दर्शाता फैशन शो था। युवाओं ने खादी पर अपने विचारों के बारे में भी लोगों को अवगत करवाया। आईटीएफसी द्वारा सभी प्रतिभागियों को 'शांति दूतों की खोज' के प्रमाण पत्र भी दिए गए।

इस अवसर पर प्रतिभागियों ने अपने अनुभव भी साझा किए। कार्यक्रम में नारा लेखन प्रतियोगिता भी हुई, जिसके प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेताओं को क्रमशः रू॰ 1500/–, रू॰ 1000/– व रू॰ 500/– का नकद पुरस्कार दिया गया। फ्यूजन बैंड 'जस्बे जुनून' की वन्देमातरम और 'रामधुनि' की प्रस्तुति भी कार्यक्रम के आकर्षण का केन्द्र रही।

## भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवादी पत्रकारिता

गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा मीडिया स्कैन संस्था के सौजन्य से 20 मई, 2017 को भारतीय जन संचार संस्थान में 'भारतीय संदर्भ में राष्ट्रवादी पत्रकारिता' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया।

इसमें करीब 200 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। उद्घाटन समारोह में वक्ता के तौर पर दिल्ली तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. योगेश सिंह, विकास भारती के संस्थापक पद्मश्री अशोक भगत, दिव्य प्रेम सेवा मिशन के श्री आशीष गौतान और आईएमसी के महानिदेशक श्री के. जी. सुरेश उपस्थित थे। इस अवसर पर 'राष्ट्रवादी पत्रकारिता' पुस्तक का विमोचन किया गया। यह पुस्तक श्री सौरभ मालवीय द्वारा लिखी गई है।

**सत्र–1: वर्तमान संदर्भ में राष्ट्रीय पत्रकारिता : जी न्यूज के श्री विद्यानाथ द्वारा संचालित**

श्री आशीष गौतम ने राष्ट्रवाद की आवधारणा और देश की आजादी में महान नेताओं द्वारा निभाई गई भूमिका की चर्चा की। उन्होंने कहा, "हमारी जिम्मेदारी देश के हितों की रक्षा हेतु सुरक्षित और दृढ़ रहना है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम जिसे 'बौद्धिक संपदा' कहते हैं, उस पर हमला किया जा रहा है।"

उन्होंने राष्ट्रीय हितों के लिए किसी भी चीज के बारे में सत्य बोलने पर जोर दिया। उन्होंने निष्कर्ष रूप में कहा, "जिस तरह से हम अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करते हैं, उसी प्रकार हमें अपने कर्तव्यों के लिए भी संघर्ष करना चाहिए।"

डॉ. योगेश सिंह ने अपने संबोधन में पत्रकारों से की जाने वाली अपेक्षाओं की बात की। उन्होंने कहा कि यह आज का गंभीर मुद्दा है कि विश्व अब प्रिंट से सोशल मीडिया में बदल गया है और इस यात्रा में हमने बहुत सी चीजें सीखी हैं, व कई चीजें खो दी हैं। समाचार मुद्रण को पहले के समय में सत्य माना जाता था। तब नैतिक पत्रकारिता का बहुत बड़ा तत्व विद्यमान था, जो अब सोशल मीडिया के प्रभाव के कारण खो गया है। आज के संदर्भ में सोशल मीडिया को एक आवश्यकता बताते हुए डॉ. सिंह ने यह भी कहा कि यह अनुशासित नहीं है।

**श्री के. जी. सुरेश** – उन्होंने मीडिया को मीडिया माफिया कहते हुए कहा कि 'यह दुखद है कि कुछ चैनल सत्य नहीं दिखा रहे हैं।' हमें स्वयं पर नियन्त्रण होना चाहिए कि हमें किस सत्य को बताना चाहिए और किस आयाम में बताना चाहिए।

उन्होंने कहा कि मीडिया को सरकार ओर प्रेस के बीच खाई को पाटने के लिए सेतु की भूमिका निभानी चाहिए और प्रेस को लोगों की अपेक्षाओं को सरकार तक और सरकार की अपेक्षाएं लोगों तक पहुंचानी चाहिए।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि पत्रकारों को पार्टी प्रवक्ता के रूप में विज्ञापित किया जाता है। उन्होंने कहा कि पत्रकार केवल अपने कर्तव्यों का पालन करता है। उन्होंने अपने पत्रकारिता के दिनों की याद ताजा करते हुए कहा कि जब वे गुजरात के भूकंप पीड़ितों के लिए राहत कार्य कर रहे आरएसएस स्वयंसेवकों को कवर कर रहे थे, तब मीडिया के एक समूह ने उन्हें 'संघी' करार दे दिया था।

**पदम्श्री श्री अशोक भगत–** अपने संबोधन में आपातकाल के दिनों की यादें ताजा करते हुए श्री भगत ने कहा कि निर्भीक पत्रकारिता को सराहना मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मार्केटिंग के चलते मीडिया का स्तर गिरा है।

मीडिया स्कैन द्वारा आयोजित सेमिनार में अपने विचार रखते हुए पद्मश्री श्री अशोक भगत।

मीडिया को एक व्यवसाय के तौर पर लिया जाने लगा है और प्रेस को प्रायः नजरअंदाज कर दिया जाता है। उन्होंने सुदूर क्षेत्रों के आदिवासियों के मुद्दों को प्रमुखता से उठाने के लिए स्थानीय मीडिया की सराहना की।

**सत्र–2 : 'सरकारी सेवाओं में विशेषज्ञता' वरिष्ठ पत्रकार और कैलाश सत्यार्थी फाउंडेशन के संपादक श्री अनिल पांडे द्वारा संचालित**– इस सत्र में श्री के. ए. विश्वनाथ, संपादक फाइनेंशियल, श्री भूपेंद्र धर्माणी, सूचना अधिकारी, हरियाणा सरकार, श्री नलिन चौहान, सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी और श्री अरूण भगत बतौर वक्ता उपस्थित थे।

वक्ताओं ने इस अवसर पर 'मीडिया आयोग' के मुद्दे पर अपने विचार रखे, ताकि मीडिया के कार्यों को नियमित रूप से संचालित किया जा सके। उन्होंने मीडिया और उसमें काम करने वाले पत्रकारों के लिए स्पष्ट नीति बनाने की वकालत की। वक्ताओं ने कहा कि सरकारी नीतियां मीडिया घरानों के लिए एक आचार संहिता का काम करेंगी।

**सत्र–3 : "धर्मपाल" व्याख्यानः नेटवर्क 18 समूह के पत्रकार श्री केशव कुमार द्वारा संचालित–**

श्री अतुल कृष्ण भारद्वाज– टीवी पर रामकथा और भगवत कथा के संचालक के रूप में दिखाई देने वाले श्री अतुल कृष्ण भारद्वाज ने धर्म और कर्तव्य पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि गति के कारण समाचारों का मूल्य घट रहा है। उन्होंने नारद का जिक्र करते हुए कहा कि नारदमुनि अपने आसपास में घट रहे सकारात्मक परिदृश्यों को उभारते थे। उन्होंने युवा विद्यार्थियों से कहा कि नारद की तरह वे भी सकारात्मक खबरों को प्राथमिकता दें।

**साध्वी देजा क्रॉस** जो अब देजा ओम के नाम से जानी जाती हैं ने 'अमेरिकन ड्रीम्स' पर बोलते हुए उन दिनों की याद ताजा कीं, जब वे अमेरिका रहती थीं और उन्होंने बाद में सब कुछ छोड़कर भारत आने का निश्चय किया, "वहां सब कुछ था, लेकिन फिर भी एक शून्य था। भारत में आकर वे आध्यात्मिक खोज के कार्य में व्यस्त हो गई और उन्होंने संतों व साधियों को रेखांकित करते हुए 'भारत का धार्मिक जीवन' पर कार्य किया। उन्होंने ऋषिकेश कला व फिल्म मेला में आध्यात्मिकता के बारे में लोगों को जागरूक किया। इस मेले में भारत के आध्यात्मिक जीवन पर आधारित 25 फीचर और लघु फिल्में प्रदर्शित की गई थीं।

**सत्र–4 : वंचितों के समक्ष प्रश्न– श्री राजीव रंजन प्रसाद द्वारा संचालित**

इस सत्र में श्री एएसआरपी कलूरी पूर्व आईजी बस्तर क्षेत्र, डॉ. दिवाकर मिंज, प्रोक्टर रांची विश्वविद्यालय और डॉ. बुद्ध सिंह, सहायक प्रबंधक जेएनयू प्रमुख वक्ता थे।

प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए **डॉ. दिवाकर मिंज,** जिन्हें आदिवासियों के बीच काम करने का लंबा अनुभव रहा है, ने कहा कि आदिवासियों में आत्मविश्वास का अभाव सभी समस्याओं की प्रमुख जड़ है। उन्होंने आदिवासी बच्चों की शिक्षा के महत्व पर भी बात की। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि आज भी काले जादू का आरोप लगाकर आदिवासी लोगों को प्रताड़ना दी जाती है और उन्हें चोट पहुंचाई जाती है।

सेमिनार में अपना उद्बोधन देतीं साध्वी देजा क्रॉस।

**डॉ. बुद्धसिंह** ने अपने संबोधन में कहा कि नक्सलवाद, आतंकवाद का ही एक पर्याय है और इसे रोका जाना चाहिए। नैतिक पत्रकारिता पर बल देते हुए उन्होंने इस बात पर रोष जताया कि आज बुद्धिजीवियों को भी देशद्रोही करार दिया जा रहा है, जो एक गलत प्रवृत्ति है। उन्होंने उन लोगों व समूहों की आलोचना की जो ऐसे देशद्रोही विचारों का झूठा प्रचार करते हैं।

**श्री एएसआरपी कलुरी**–बस्तर क्षेत्र के पूर्व आई जी श्री एएसआरपी कलूरी ने अपने संबोधन में आदिवासियों के मुद्दे उठाते हुए कहा कि आदिवासी साधारण होते हैं, जो अपनी भूमि ओर रोजगार बचाने में और अपनी संस्कृति के उत्थान में व्यस्त रहते हैं। उन्होंने कहा, "आदिवासी सीमित संसाधनों से असीमित खुशियां प्राप्त करते हैं।"

उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि अपेक्षाओं और अनुभवों में साफ अंतर होता है, जिसे समझे जाने की आवश्यकता है। उन्होंने नक्सली समस्या को एक भौगोलिक दुर्घटना बताया, जो आंध्रप्रदेश और बस्तर के आदिवासी इलाकों में फैली हुई है। उन्होंने कहा कि माओवादी आदिवासियों को क्रांति की अवधारणा के बारे में बरगलाकर उन्हें प्रभावित करते हैं।

उन्होंने कहा कि, "40 लाख आदिवासियों के पास अभिव्यक्त करने के लिए आवाज नहीं है। मुट्ठी भर कुछ लोग, जिनके पास कुछ अनुभव नहीं है वे उनकी आवाज बने हुए हैं।" उन्होंने कहा कि आदिवासियों को एक अच्छा विकल्प दिए जाने की आवश्यकता है और उन्हें नौकरी,

आदिवासियों के मुद्दे पर अपने विचारों को व्यक्त करते बस्तर रेंज के पूर्व आईजी श्री ए. एस. आर. पी. कलूरी।

शिक्षा और विकास के माध्यम से समाज की मुख्यधारा में जोड़ना चाहिए। उन्होंने पीपल्स लिबरेशन गुरिल्ला आर्मी को समाप्त करने पर भी बल दिया।

श्री कलूरी ने आदिवासी लोगों की दुर्दशा का गलत लाभ उठाने के लिए शिक्षाविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी दोषी ठहराया। उन्होंने कहा कि माओवादी विद्रोहियों ने भी उन्हें हानि पहुंचाई है। कुछ शिक्षाविदों और विदेशी गैर सरकारी संगठनों का गठबंधन विकास को आदिवासियों तक पहुंचाने का इच्छुक नहीं है, यह लोग ये भी नहीं चाहते हैं कि आदिवासियों को रोजगार मिले।

उन्होंने कहा कि यदि बस्तर में पांच लोग भी मेरे बारे में कुछ बुरा कहें, तो मैं यहां से चला जाऊंगा। उन्होंने बताया कि दिल्ली में यह मेरी शुरूआत है और मेरे बारे में जो तस्वीर कुछ 'पटकथा लेखकों' ने बनाई है, वह शीघ्र ही परिवर्तित हो जाएगी।

**सत्र–5– जम्मू कश्मीर के ज्वलन्त मुद्दे – श्री उमेश चतुर्वेदी, वरिष्ठ पत्रकार द्वारा प्रस्तुत**– इस सत्र में प्रसिद्ध पत्रकार श्री जवाहर कौल, श्री अरूण कौल, श्री अरूण कुमार, जम्मू कश्मीर अध्ययन केन्द्र, कर्नल (से॰ नि॰) जसवंस सिंह उपस्थित थे।

वक्ताओं ने जम्मू–कश्मीर के मुद्दे पर अपनी गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर का मुद्दा आज जम्मू बनाम कश्मीर के रूप में देखा जा रहा है, जो हानिकारक है। उन्होंने सोशल मीडिया की भूमिका पर चिन्ता व्यक्त की, जिसने घाटी में हिंसा को बढ़ावा देने में मदद की।

कर्नल जयवंस सिंह ने कहा कि सही सूचनाओं के अभाव और गलत सूचनाओं के प्रसार ने जम्मू कश्मीर में वर्तमान स्थिति को जन्म दिया है।

इसी प्रकार के विचार व्यक्त करते हुए श्री जवाहर कौल ने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि जम्मू कश्मीर के समाचार पत्रों का दिल्ली के अखबारों के साथ तुलनात्मक विश्लेषण किया जाए। उन्होंने कहा कि खासकर जम्मू कश्मीर के विषय में स्थानीय पत्रकारों को अपनी भूमिका समझनी होगी और उन्हें वहां के मुद्दों की रिपोर्टिंग बेहद जिम्मेदारी से करनी होगी।

श्री अरूण कुमार ने दृढ़ता से दोहराया कि जम्मू कश्मीर एक खूबसूरत प्रांत है। यहां के सभी लोगों के सभी कोनों में भारत बसा है। यह एकीकृत भारत है, जम्मू कश्मीर एक अलगाववादी प्रान्त नहीं है, जैसा प्रायः इसे प्रचारित किया जाता है। राज्य के 70 प्रतिशत भाग में लद्दाख, कश्मीर, लेह, कारगिल है, जो किसी और चीज की बजाय शान्ति से ज़्यादा मुहब्बत करता है।

उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर अलगाववाद पसंद राज्य है या यह भारत से अलग है, यह मुट्ठी भर लोगों की धारणा है। इस धारणा को व्यापक तौर पर प्रचारित किया गया है। इस धारणा ने जम्मू कश्मीर की पूरी व्यवस्था और विचारों पर कब्जा कर लिया है। ऐसे में मीडिया की जिम्मेदारी बनती है कि वो इसे परिवर्तित करने में अपनी भूमिका निभाए। जम्मू कश्मीर के संवेदनशील मसले को मीडिया अपनी दूरदर्शिता और जिम्मेदारी से हल कर सकती है।

**सत्र–5– "इतिहास का पुनर्लेखनः– एक आवश्यकता या साजिश"**– श्री रवि शंकर, निदेशक सभ्यता अध्ययन केन्द्र– इस सत्र को श्री अतुल कोठारी, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, सुश्री कुसुम लता केडिया, निदेशक भारत भवन भोपाल, श्री आनन्द वर्धन, दिल्ली, इंस्टीच्यूट ऑफ हैरीटेज मैनेजमैंट, श्री प्रमोद दुबे, एनसीईआरटी ने संबोधित किया। वक्ताओं ने इतिहास के विभिन्न मुद्दों पर बात की। इन लोगों ने इतिहास के दोबारा लेखन के विभिन्न आयामों पर विमर्श किया। वक्ताओं का कहना था कि इतिहास किसी भी समाज का दर्पण होता है। उन्होंने समाज के किसी भी वर्ग की भावनाओं को ठेस पहुंचाए बगैर समाज को सत्य का आइना दिखाया।

## 'अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर योग और पर्यावरण' विषय पर चर्चा

तीसरे अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर गांधी दर्शन में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें 800 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। समिति द्वारा दिल्ली यातायात पुलिस के सहयोग से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें टैगोर फाउंडेशन के प्रशिक्षकों ने उपस्थित लोगों से योगाभ्यास करवाया।

इस अवसर पर 'योग और पर्यावरण' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसमें फरीदाबाद के विजेन्द्र माधव ने अपने विचार रखे। उन्होंने योगाभ्यास की विभिन्न मुद्राओं और उनके लाभों के बारे में लोगों को जानकारी दी। डॉ. नवदीप जोशी ने लोगों को योग और ध्यान के बारे में बताया व 'योग निद्रा' का अभ्यास करवाया।

गांधी दर्शन में तृतीय योग दिवस के मौके पर योगाभ्यास करवाते योगाचार्य।

योगाभ्यास की क्रियाओं को देखते श्री राजेश मेहता।

## 'गांधी और प्राकृतिक स्वास्थ्य' पर सेमिनार

मनुष्य को स्वस्थ बनाए रखने में प्राकृतिक चिकित्सा बहुत आवश्यक है। यह उपचार का साधारण तरीका है, जो किसी भी तरह की बीमारियों से लड़ने में सक्षम है। महात्मा गांधी ने भी प्राकृतिक दवाओं की परिकल्पना को समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचाने की कल्पना की थी।" यह शब्द आरोग्य मन्दिर गोरखपुर के डॉ. विमल कुमार मोदी ने कहे।

(ऊपर) समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला आरोग्य मंदिर में उपस्थित लोगों को संबोधित करती हुईं।
(नीचे) सेमिनार के दौरान प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति का प्रदर्शन करती विशेषज्ञ।

डॉ. मोदी समिति द्वारा प्राकृतिक चिकित्सा प्रेमी संस्थान, आरोग्य मन्दिर गोरखपुर के सहयोग से आयोजित 'गांधी और प्राकृतिक स्वास्थ्य' विषय पर सेमिनार में बोल रहे थे।

श्रीमती गीता शुक्ला ने कहा कि 1945 में गांधीजी ने बीमारियों की रोकथाम के लिए प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व को समझा। उन्होंने कहा कि इस मामले पर लोगों की जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। डॉ. स्मिता मोदी ने महिला संबंधी रोगों व उनके उपचार के बारे में बात की।

डॉ. पीयूष पाणि पांडे ने अष्टयोग और प्राकृतिक चिकित्सा के लाभ के बारे में बताया। इस मौके पर डॉ. राजकुमार सिंह, सुश्री कुमुद रानी, डॉ. निष्ठा मिश्रा, श्री केदार नाथ, सिकन्दर कुमार आदि उपस्थित थे।

## गांधीजी के रचनात्मक कार्यों पर सेमिनार

समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला अन्य विशिष्ट जनों के साथ गांधीजी को श्रद्धांजलि अर्पित कर, सेमिनार का शुभारंभ करती हुईं।

समिति द्वारा उत्तर प्रदेश गांधी स्मारक निधि के सौजन्य से 'गांधीजी के रचनात्मक कार्यों' पर आधारित सेमिनार का आयोजन किया गया। लखनऊ के गांधी भवन में 27 जून, 2017 को आयोजित इस कार्यक्रम का आरम्भ स्व. श्री रघुनाथ कौल की पुण्यतिथि पर उनके स्मरण से हुआ। मुख्य वक्ता के तौर पर पूर्व आईएएस श्री विनोद शंकर चौबे मौजूद थे, अध्यक्षता पं. रामप्यारे त्रिवेदी ने की। कार्यक्रम में श्रीमती गीता शुक्ला व समिति के अन्य सदस्यों ने भी शिरकत की।

अपने मुख्य सम्बोधन में श्री विनोद शंकर चौबे ने कहा कि महात्मा गांधी ने किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार के विरूद्ध संघर्ष किया था, वे इसके खिलाफ थे। किसानों की

लखनऊ में आयोजित सेमिनार को संबोधित करते विशिष्ट अतिथि व उन्हें सुनते बच्चे।

आत्महत्या का मुद्दा उठाते हुए उन्होंने कहा कि यदि किसान महात्मा गांधी की शिक्षाओं पर चलें, तो वे आत्महत्या से बच पाएंगे।

इस मौके पर लखनऊ के खादी ग्रामोद्योग अधिकारी श्री अनिल सिंह, श्री संजय राय, श्री सूर्यमन गौतम, श्री रमेश भाई, श्रीमती आशा सिंह, श्री रामकिशोर सिंह और श्रीमती पुष्पा गुप्ता भी उपस्थित थे।

**"बुढ़ापे में कैसे स्वस्थ व सक्रिय जीवन जीएं" विषय पर सेमिनार**

समिति द्वारा हैल्दी एजिंग इण्डिया, मैडटैक और जराचिकित्सा विभाग के सौजन्य से 1 जुलाई, 2017 को गांधी दर्शन में सेमिनार का आयोजन किया गया, जिसका विषय था– "बुढ़ापे में कैसे स्वस्थ व सक्रिय जीवन जीएं"। इस कार्यक्रम में देश भर से आए वरिष्ठ चिकित्सकों ओर एम्स के जराचिकित्सा विभाग के डॉक्टर ने बुजुर्गों को स्वस्थ व सक्रिय जिन्दगी जीने के गुर सिखाएं।

इस मौके पर एम्स के सहायक प्रो॰ डॉ॰ प्रसून चटर्जी उपस्थित थे। कार्यक्रम में तय किया गया कि एनजीओ के सहयोग से एम्स, आर्थिक व शारीरिक रूप से कमजोर 50 बुजुर्गों को विभिन्न स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवाएगा। इसके लिए वरिष्ठ नागरिक उनकी स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं के अनुसार विभिन्न वृद्धाश्रमों से गोद लिए जाऐंगे। इसके तहत एम्स का जराचिकित्सा विभाग और

(ऊपर) गांधी दर्शन में दीप प्रज़्ज्वलन कर सेमिनार का उद्घाटन करते विशिष्ट जन।
(केंद्र में) सेमिनार को संबोधित करते श्री बसंत।
(नीचे) कार्यक्रम में उपस्थित बुजर्ग गण।

हैल्दी एजिंग इंडिया उन्हें उनके द्वार पर मुफ्त दवा व आपातकालीन स्थिति में चिकित्सा केन्द्र ले जाने के लिए निःशुल्क परिवहन व उपचार उपलब्ध करवाएगा।

यह निर्णय एक सर्वे के सामने आने के बाद लिया गया। इस सर्वे में एम्स के जराचिकित्सा विभाग द्वारा की गई पहल के अनुसार घरों में रहने वाले 80 प्रतिशत लोग स्वास्थ्य सुविधाओं से महरूम हैं। इस स्टडी के दौरान करीब 20 वृद्धाश्रमों में रह रहे 1200 बुजुर्गों और समाज के 4000 बड़ी आयु वाले लोगों से संपर्क किया गया।

गांधी दर्शन में आयोजित सेमिनार में चिकित्सकों, विशेषज्ञों और वरिष्ठ नागरिकों के पैनल को संबोधित करते समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

सर्वे के बारे में बात करते हुए डॉ॰ प्रसून चटर्जी ने कहा कि, "एक सर्वे के अनुसार अधिकतर बुजुर्गों को मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय संबंधी रोग जैसी अनेक स्वास्थ्य समस्याएं हैं, जिन्हें नियमित जाँच और लम्बे समय तक दवा की आवश्यकता है। यह भी देखा गया है कि कुछ उम्र संबंधी मामलों में कमजोरी, डिमेंशिया, तनाव लोगों में फैल रहा है। ऐसा जीवन शैली और पर्यावरणीय कारणों से भी होता है।

उन्होंने कहा कि बुजुर्ग लोगों को गोद लेने का उद्देश्य केवल उन्हें स्वास्थ्य सुविधाएं और दवाएं उपलब्ध करवाना नहीं है, अपितु उन्हें बेहतर जीवन जीने, खान–पान प्रबंधन और नियमित तौर पर व्यायाम करने के लिए प्रेरित करना भी है।

इन गतिविधियों से वृद्धाश्रमों में रह रहे बुजुर्गों और समाज के अन्य बुजुर्गों के जीवन स्तर को बढ़ाने में मदद मिलेगी, जिनसे वे बेहतर जीवन जीने की प्रेरणा पा सकेंगे। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे स्थानीय जरूरतमंद बुजुर्गों को गोद लेने के लिए आगे आएं।

इस कार्यक्रम में 'सक्रिय बुढ़ापा और तनाव प्रबंधन' विषय पर एक परिचर्चात्मक सत्र का आयोजन किया गया। इस मौके पर महात्मा गांधी द्वारा अपनाई गई प्राकृतिक उपचार व्यवस्था और तनाव दूर करने के उपायों पर भी चर्चा की गई।

इसके माध्यम से युवाओं को बुजुर्गों की सेवा के लिए आगे आने को प्रेरित किया गया।

## प्रसिद्ध पत्रकार श्री प्रभाष जोशी को श्रद्धांजलि

### संसद को भारत में कृषि संकट पर गंभीरता से चर्चा करनी चाहिए : श्री पी. साईनाथ

वरिष्ठ पत्रकार श्री पी. साईनाथ ने कहा कि संसद को कृषि संकट पर 10 दिवसीय सत्र बुलाकर चर्चा करनी चाहिए। अन्य विषय पर तो प्रतिदिन चर्चा की जाती है।

उन्होंने कहा, "दलगत राजनीति से ऊपर उठकर कृषि संकट पर स्वामीनाथन रिपोर्ट पर चर्चा और बाजार व्यवस्था में किसानों की कमजोर स्थिति पर चर्चा होनी चाहिए।"

श्री पी साईनाथ हिन्दी पत्रकारिता के प्रणेता एवं श्री प्रभाष जोशी के 80वें जन्मदिवस पर गांधी दर्शन में आयोजित 'प्रभाष जोशी स्मृति व्याख्यान' में बोल रहे थे। दिनांक 16 जुलाई, 2017 को आयोजित इस व्याख्यान का विषय था– "किसानों का संकट और मीडिया"।

श्री साईनाथ ने कहा कि दिल्ली में किसानों पर संकट है, इसलिए रिपोर्टिंग उस संकट की होनी चाहिए। लेकिन यहां संवाददाता कृषि मंत्रालय के बयान को मान्यता देता

गांधी दर्शन में आयोजित 'प्रभाष प्रसंग' में व्याख्यान देते वरिष्ठ पत्रकार श्री पी. साईनाथ। कार्यक्रम में मौजूद समाज के विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य लोग।

वरिष्ठ पत्रकार श्री पी. साईनाथ (बाएं से चौथे) अन्य विशिष्ट अतिथियों के साथ प्रभाष जोशी पर पुस्तक का विमोचन करते हुए। (दाएं) प्रसिद्ध लोक कलाकार श्री प्रहलाद सिंह टिपाणिया कबीर भजनों को प्रस्तुत करते हुए।

है, और कृषि मंत्री किसानों के बारे में रिपोर्टिंग को अपने बयानों का आधार बनाता है। ऐसे में वास्तविक चीजें सामने कैसे आएंगी।

प्रभास प्रसंग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में केन्द्रीय रेल राज्य मंत्री श्री मनोज सिन्हा मुख्य अतिथि थे, अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार व राज्यसभा सांसद श्री हरिवंश ने की। वरिष्ठ साहित्यकार श्री विश्वनाथ त्रिपाठी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। वरिष्ठ पत्रकार व आईजीएनसीए के अध्यक्ष श्री राम बहादुर रॉय भी इस मौके पर मौजूद थे।

किसान और विकास के मुद्दे पर पत्रकारिता के लिए पहचाने जाने वाले श्री पी. साईनाथ ने कहा कि वास्तव में किसान की कोई उपयुक्त परिभाषा नहीं है। उन्होंने कहा, "पत्रकारिता, जिसे किसानों के समक्ष उत्पन्न संकट को सामने लाना चाहिए, वह नहीं ला पा रही है और किसानों के संकट को समाचार पत्रों में अपेक्षित स्थान नहीं मिल पाता। किसी भी समाचार पत्र में इस विषय का नियमित संवाददाता नही है।"

उन्होंने कहा, "भारत में कृषि संकट 1971 के बाद शुरू हुआ, जो अब दिन–ब–दिन बढ़ता जा रहा है। किसानों की जनसंख्या निरन्तर गिर रही है। उन्हें आत्महत्या के लिए मजबूर किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि पत्रकार सरकार द्वारा दिए गए आंकड़ों का विश्लेषण करते हैं, लेकिन वे किसानों की स्थिति देखने खेत–खलिहानों में नहीं जाते है। राष्ट्रीय राजधानी से प्रकाशित होने वाले 67 प्रतिशत अखबारों के प्रथम पृष्ठ पर दिल्ली से संबंधित खबरें होती हैं।

कृषि संकट की ओर मीडिया घरानों की उदासीनता पर दुख व्यक्त करते हुए श्री साईनाथ ने कहा कि मीडिया के मालिकों का सारा ध्यान राजस्व जुटाने की तरफ है, ना कि किसान संबंधी रिपोर्ट छापने की ओर। सभी अखबारों में मार्केटिंग का प्रभाव है और सभी अखबारों में आठ से दस संवाददाता कारोबार संबंधित समाचारों के संकलन के लिए रखे गए हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि कृषि खबरों को अखबारों में बहुत ही सीमित स्थान मिलता है। संबंधित विषयों पर विशेषज्ञता अब समाप्ति की ओर है।

श्री साईनाथ ने कहा कि, "केन्द्र सरकार की नीति आयोग का अनुमान है कि किसानों की आत्महत्या में गिरावट आ रही है। किसानों और मजदूरों के हित के लिए काम करने वाले नाबार्ड का 2016 के बजट का 53 प्रतिशत मुम्बई शहर के लिए रखा गया है।

उन्होंने कहा कि पैसा कहाँ आबंटित होगा, जब बांटने वाले को पता ही नहीं कि कौन किसान गाँव में और कौन शहर में है। यहां तक कि बाराबंकी में ज़मीन खरीदने के बाद अमिताभ बच्चन भी एक किसान है।

उन्होंने कहा कि किसान पानी और बिजली की समस्या का भी सामना कर रहे हैं, लेकिन मीडिया कभी इस संकट की गहराई में नहीं जाता। ऐसी स्थिति में मेरा केन्द्र सरकार और राजनीतिक दलों को सुझाव है कि पार्टी लाइन से ऊपर उठकर इस विषय पर 10 दिवसीय संसद सत्र बुलाया जाए। इस सत्र में कृषि संकट से जुड़े सभी मुद्दों पर गंभीरता से चर्चा हो और उस चर्चा से संकट के समाधान के लिए कोई दिशा मिले। इस अवसर पर प्रभाष जोशी की आत्मकथा का विमोचन भी किया गया।

इससे पूर्व समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने अतिथियों का स्वागत किया और समिति के कार्यों की जानकारी दी। प्रसिद्ध लोक गायक श्री प्रहलाद सिंह तिपानिया ने कबीर भजन प्रस्तुत किए।

## "विविध संस्कृति के संदर्भ में" बालक–हिंसा–शान्ति निर्माण के लिए एकजुट समाजः एक सेमिनार

समिति द्वारा गांधी दर्शन में 10 अगस्त, 2017 को विविध संस्कृति के संदर्भ में 'बाल हिंसा–शान्ति निर्माण के लिए एकजुट समाज' विषय पर सेमिनार का आयोजन किया गया। शान्ति आश्रम कोयम्बटूर के सौजन्य से आयोजित यह कार्यक्रम भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर आयोजित किया गया। इस मौके पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, डॉ॰ सुश्री वीनू अरम, निदेशक शान्ति आश्रम उपस्थित थे।

आध्यात्मिक गुरूओं द्वारा प्रार्थना की प्रस्तुति।

शांति आश्रम की निदेशक डॉ. वीनू आरम, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान को अंगवस्त्रम् भेंट करते हुए।

संवाद के दौरान एक वक्ता को ध्यान से सुनते डॉ. विजयराघवन गोपाल (बाएं)

इस कार्यक्रम में अकादमियन, लेखक, सामाजिक वैज्ञानिक, मीडिया प्रतिनिधि, चिकित्सक और अन्य क्षेत्रों के लोगों ने बाल हिंसा के बारे में चर्चा करते हुए इसकी रोकथाम के उपायों और बाल विकास के बारे में विमर्श किया।

अपने संबोधन में श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने भारत छोड़ो आंदोलन के आह्वान के समय महात्मा गांधी की निर्भीकता का जिक्र करते हुए कहा कि महात्मा गांधी ने जब अंग्रेजों भारत छोड़ो का आह्वान किया, तो उनके एक आह्वान पर लाखों भारतीय अंग्रेज सरकार की जड़े उखाड़ने के लिए चल पड़े थे। उन्होंने कहा कि बच्चों को सही दिशा में मोड़ना और प्रशिक्षित करना चाहिए, ताकि वे नागरिकों के उत्थान और समाज के लिए अपना बेहतर दे सके।

वक्ताओं ने दोहराया कि बच्चे और युवा आज एक तेजी से वैश्वीकरण की ओर बढ़ते समाज में रह रहे हैं और सीखने व विभिन्न संस्कृतियों के लोगों से संपर्क करने की उनकी क्षमता असाधारण है, फिर भी वे एक ऐसी दुनिया में भी रह रहे हैं, जो धार्मिक कट्टरवाद और अतिरेकता, नकारात्मक रूढ़िवादिता, हिंसा व अविश्वास में जकड़ी हुई है।

इससे बच्चों और उनकी दुनिया को देखने के नजरिए पर गहरा प्रभाव पड़ता है। औपचारिक शिक्षा की प्रतियोगी मांग की पृष्ठभूमि में बच्चे बिना दूसरों की प्रशंसा के आगे बढ़ रहे हैं और अन्य लोगों से खूब सीख रहे हैं और प्रतिभागिता कर रहे हैं।

कार्यक्रम के प्रमुख वक्ताओं में स्टेप संस्था के श्री इन्द्रनील चौधरी श्री कृष्ण कुमार गांधी ग्राम विश्वविद्यालय, डॉ॰ ए के मर्चेन्ट, श्री अदिति पारेख, श्री विक्टर, श्री पी नारायणन, राज्यसभा सचिवालय, श्री जेम्स वैलिथ नाज फाउंडेशन, श्री बेला दास कार्यकारी निदेशक एआईसीडब्ल्यूइटीई, नीमा शेरपा, करमापा अन्तरराष्ट्रीय बौद्ध संस्थान, अक्षित जैन, सना परवीन, इस्लामिक रिलीफ इण्डिया, मौलाना अशरफुल कंसार मिस्बाली, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, हेदी हडसेल, हार्टफोर्ड सेमिनरी, रीबेका, रियोस कोहव शामिल थे।

गांधी दर्शन में उपस्थित विभिन्न देशों के वक्तागण अपने विचार साझा करते हुए।

वक्ताओं ने बच्चों के अधिकारों पर भी चर्चा की। वक्ताओं ने कहा कि बच्चों के सीखने के लिए, समाज में भाग लेने और परस्पर सहयोग करने के लिए शिक्षा एक सुरक्षित मंच होनी चाहिए।

सत्रों में निम्नलिखित विषय शामिल किए गए–

- बहुसांस्कृतिक संदर्भों में एकजुट समाज के निर्माण की चुनौतियां और शिक्षा प्रणाली में चुनौतियों को देखने के लिए आकार संवर्धन।
- औपचारिक और गैर औपचारिक क्षेत्र में शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में, समेकित समाज को बढ़ावा देने में बच्चों की भूमिका और भागीदारी।
- भारत के युवाओं और बच्चों के साथ सहयोगात्मक जगह और एकजुट समाज का निर्माण।

**चिन्तन बैठक–राष्ट्र निर्माण के लिए सतत् विकास और बुद्धिशीलता। देश निर्माण का एक खाका तैयार करना।**

प्रज्ञा प्रवाह के सौजन्य से गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा तीन दिवसीय बुद्धिशीलता सत्र 'सतत् विकास राष्ट्र निर्माण के लिए' विषय पर आयोजित किया गया। गांधी दर्शन परिसर में 24–27 अगस्त, 2017 को हुए इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख श्री मोहन भागवत ने भी शिरकत की।

इस कार्यक्रम में प्रमुखता से आर्थिक प्रगति, सामाजिक विकास और प्राकृतिक पर्यावरण के संरक्षण पर चर्चा की गई। वक्ताओं ने कहा कि ये वो बड़े मुद्दें हैं, जिसका सामना समूचा वैश्विक समाज कर रहा है।

वक्ताओं ने कहा कि सतत् विकास हेतु सक्रिय और ज्ञानवान नागरिकों की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त निर्णायक व्यक्तित्वों की भी ज़रूरत है, जो जटिल और परस्पर आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर सही निर्णय ले सकें। कार्यक्रम में अर्थव्यवस्था के गांधीवादी मॉडल के महत्व पर भी चर्चा की गई।

वक्ताओं ने इस अवसर पर कहा कि समग्र और सतत विकास के लिए सक्रिय और ज्ञानवान नागरिकों व सूचना प्राप्त निर्णायक लोगों की आवश्यकता है, जो मानव समाज द्वारा झेली जा रही जटिल और अंतर संबंधित आर्थिक, सामाजिक और जलवायु के मुद्दों पर सही निर्णय ले सके।

कार्यक्रम में गांधीवादी आर्थिक मॉडल, जो कम खपत, प्राकृतिक संसाधनों के कम दोहन को बढ़ावा देती है के बारे में विस्तार से चर्चा की गई। इसके अलावा युवाओं की देश के विकास में भूमिका और उन्हें कैसे राष्ट्र निर्माण के कार्यों में लिया जाए, पर भी विमर्श किया गया।

**सामाजिक न्याय और विकास के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण के प्रचार विषय पर राज्य स्तरीय सम्मेलन**

आचार्य विनोबा भावे की 123वीं जयन्ती और चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूरे होने के मौके पर विनोबा सेवा प्रतिष्ठान की ओर से 11–12 सितंबर, 2017 को राज्य स्तरीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन का विषय था–सामाजिक न्याय और विकास के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण का प्रचार। इसमें 600 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में ओडिशा के वित्त मंत्री श्री शशि भूषण बेहरा मुख्य अतिथि थे।

श्री बेहरा ने अपने संबोधन में कहा कि चम्पारण प्रयोग ने महात्मा गांधी की नीतियों, निर्णयों और कार्यों के महत्व को सिद्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि सामाजिक आर्थिक न्याय के लिए भूदान आंदोलन एक अन्य आजादी का आन्दोलन था।

सम्मेलन के उद्देश्यों का जिक्र करते हुए प्रसिद्ध मानवाधिकार कार्यकर्ता और वीएसपी के सचिव श्री मनोज जेना ने कहा कि वह गांधीजी के संदेश 'आप वह परिवर्तन स्वयं में लाइए, जो आप दूसरों में देखना चाहते हैं।' से गहरे प्रभावित हैं। उनकी संस्था का लक्ष्य ज़्यादा रचनात्मक कार्यकर्ता बनाना और गांधी, विनोबा की विचारधारा को युवाओं में लोकप्रिय करना है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2019 में महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती है, जिसे उनकी संस्था बड़े स्तर पर मनाएगी।

उनकी संस्था वीएसपी महात्मा गांधी की 150वीं जयन्ती पर ओडिशा के 150 गांवों को मॉं कस्तूरबा आश्रम गांव बनाकर, वहॉं हिंसा मुक्त, नशा मुक्त और मलमुक्त गांव का निर्माण करेगी।

सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते विशिष्ट अतिथिगण।

सम्मेलन में अपने विचार प्रकट करते हुए एक स्वतंत्रता सेनानी।

इस अवसर पर प्रसिद्ध भूदान कार्यकर्ता श्री पारेश्वर प्रधान, श्री उपेन्द्र महापात्र, श्री मुक्तेश्वर प्रधान, ग्रीन नोबल पुरस्कार विजेता श्री परौला सामन्त्रा को गांधी–विनोबा शान्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कलिंगा सामाजिक विज्ञान संस्थान को भी विश्व के प्रथम आदिवासी विश्वविद्यालय का दर्जा पाने पर विशेष सम्मान दिया गया।

उद्घाटन के पश्चात कार्यक्रम का पहला सत्र प्रसिद्ध पत्रकार श्री रबिदास की अध्यक्षता में हुआ, जिसका विषय था– सबके लिए न्याय और सम्मान। वक्ता के तौर पर भूदान कार्यकर्ता श्रीमती बिराजा देवी, डॉ॰ पाबक कानूनगो आमंत्रित थे। दिन के अंत में हुए सत्र का विषय था–युवा और राष्ट्र। इसके मुख्य वक्ता राष्ट्रीय युवा योजना प्रशिक्षक श्री निरोद खूंटिया, राष्ट्रीय संयोजक श्री मधुसूदन दास, सामाजिक कार्यकर्ता श्री निराकार बरूआ और युवा पत्रकार श्री ज्ञानरंजन सामंतरे थे।

दूसरे दिन का सत्र स्वतंत्रता सेनानियों और भूदान कार्यकर्ताओं के अनुभवों पर विमर्श से हुआ। कार्यक्रम में विभिन्न सत्र थे–

- गांधी–विनोबा बीता हुआ कल नहीं, भविष्य हैं– वाद–विवाद प्रतियोगिता
- आज की महिला : मुद्दें, चुनौतियां और समाधान– श्रीमती लतिका प्रधान, राज्य सामाजिक कल्याण बोर्ड।

मुख्य वक्ता के तौर पर प्रसिद्ध भूदान कार्यकर्ता सरोजिनी पात्रा, श्रीमती बिनोदिनी देवी, महिला राजनेता सुश्री सस्मिता बेहरा और सुश्री मंदाकिन कर उपस्थित थीं। इस सत्र का संचालन महिला अधिकार अभियान की उपाध्यक्षा डॉ. रीना राउत्रे ने किया।

दो दिवसीय सम्मेलन के समापन समारोह का संचालन वीएसपी के सचिव श्री मनोज जेना ने किया। ओडिशा के पूर्व मंत्री श्री निरन्जन पट्नायक, श्री बिस्वभूषण हरिचन्दन, भारतीय चुनाव आयोग के वरिष्ठ सलाहकार डॉ॰ भगवान प्रकाश, श्री पदमाकर गुरू, श्री लक्ष्मीकान्त रथ, श्रीमती सरोजिनी पात्रा, श्रीमती बिनोदिनी देवी, सुश्री कविता परिदा, सस्मिता बेहरा, सुश्री मन्दाकिनी कर आदि उपस्थित थे।

### स्वच्छता पर सेमिनार आयोजित

समिति द्वारा सीसीबीओएस के सौजन्य से 17–18 सितम्बर को स्वच्छता पर सेमिनार गुन्नूर उत्तर प्रदेश के डीएवी इंटर कॉलेज में हुआ। इसमें 8000 से ज़्यादा युवाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम में स्वच्छता मशाल डीएवी कॉलेज के प्राचार्य श्री योगेन्द्र कुमार यादव को प्रदान की गई।

इस अवसर पर स्वच्छता अभियान भी चलाया गया। विद्यार्थियों ने अनेक जगहों को कचरा मुक्त किया और लोगों को भी स्वच्छता अपनाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम में श्री राजेश गोयल, अध्यक्ष आईआईपी फाउंडेशन, भारती कुमुद, संस्थापक भारत विकास परिषद्, डॉ॰ राजेश यादव, सचिव डीएवी कॉलेज, श्री अशोक गौतम, प्रदेशाध्यक्ष गौवंश हत्या मांस निर्यात निरोधक परिषद् ने भाग लिया।

### शिक्षा, कार्य और ग्रामीण विकास पर राष्ट्रीय विमर्श– नीति निर्धारण में गांधीवादी शैक्षणिक विचार

शिक्षा, कार्य और ग्राम विकास पर राष्ट्रीय विमर्श कार्यक्रम का आयोजन 3–5 अक्तूबर, 2017 तक किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन शैक्षणिक योजना और प्रशासन राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, एनयूईपीए के सहयोग से किया गया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में गांधीवादी आदर्शों की प्रासंगिकता को समकालीन सामाजिक आर्थिक संदर्भ में समझना और ग्रामीण शिक्षा और कौशल विकास में इसे लागू करने के मार्गों को तलाशना था।

स्वच्छता अभियान के तहत गन्नौर में आयोजित स्वच्छता रैली में भाग लेते युवा।

इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में समिति के पूर्व निदेशक डॉ. एन राधाकृष्णन ने मुख्य व्याख्यान दिया। उन्होंने कार्यक्रम के उद्देश्यों को रेखांकित करते हुए गांधीजी के सपनों का भारत बनाने की दिशा में कार्य करने का सुझाव दिया। श्री राधाकृष्णन ने कहा कि ग्राम विकास के लिए गांधीजी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

समिति के कार्यक्रम अधिकारी ने शांति निर्माण की दिशा में गांधीजी के अहिंसक संचार की अवधारणा का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि गांधीजी के अहिंसक संचार की परिकल्पना को आत्मसात कर, शांति की संस्कृति को कायम रखा जा सकता है।

### "सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य का राज्याभिषेक और महात्मा गांधी के सपनों का भारत" पर परिचर्चा

समिति द्वारा इंद्रप्रस्थ योगक्षेम सेवा न्यास के सौजन्य से 7 अक्तूबर, 2017 को "सम्राट हेमचंद्र विक्रमादित्य का राज्याभिषेक और महात्मा गांधी के सपनों का भारत" पर परिचर्चा का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया, जिसमें 500 लोगों ने भाग लिया। इस मौके पर श्री कृष्ण गोपाल, श्री बाल मुकुन्द और श्री विनायक राव देशपांडे विशिष्ट अतिथि थे।

गौरतलब है कि हेमचंद्र विक्रमादित्य, को इतिहास में हेमू के नाम से जाना जाता है। वह प्रथम हिन्दू सम्राट थे और सूरी साम्राज्य के सम्राट आदिल शाह सूरी के मुख्यमंत्री थे। ये उस समय की बात है, जब मुगल और अफगान उत्तर भारत पर कब्जा करने के लिए लड़ रहे थे। वे पंजाब से बंगाल तक अफगान लड़ाकों से लड़े और उन्होंने हुमायूं और अकबर के योद्धाओं से भी आगरा और दिल्ली में युद्ध किया। उन्होंने आदिल शाह के लिए 22 युद्ध लड़े।

इस अवसर पर वक्ताओं ने राष्ट्रवाद की अवधारणा पर अपने विचार रखे और प्रतिभागियों से राष्ट्र निर्माण के लिए कार्य करने को कहा।

### बुद्ध और गांधी के पथ पर : एक संवाद

समिति द्वारा अहिंसा ट्रस्ट के सौजन्य से 'बुद्ध और गांधी के पथ पर' विषय पर एक संवाद कार्यक्रम का आयोजन 21 अक्तूबर, 2017 को किया गया।

इसमें वियतनाम के जेन गुरू थिच नैश के 80 अनुयायियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन धर्माचार्य शांतम सेठ और समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने किया। इस संवाद का उद्देश्य बुद्ध और गांधी की शिक्षाओं का विश्व शांति की दिशा में महत्व बताना था।

धर्माचार्य शांतम सेठ ने कहा कि बुद्ध का सिद्धांत अहिंसा को सर्वाधिक महत्व देता है। बुद्ध ने अहिंसा को सामाजिक मजहब के तौर पर प्रचारित किया। महात्मा बुद्ध मानते थे कि युद्ध, विवाद और हिंसा किसी भी समस्या का हल नहीं हैं। केवल शांति और अहिंसा से ही समाज की समस्याओं का हल निकल सकता है। बुद्ध ने सदैव समपर्ण और शांति का संदेश लोगों को दिया। श्री सेठ ने कहा कि गांधीजी के मुताबिक अहिंसा के वास्तविक पुजारी को बिना किसी मनोरथ के हमेशा मरने को तैयार रहना चाहिए। अहिंसा कमजोरी नहीं है, इसके माध्यम से हम अपनी ऊर्जा को मानव मात्र की भलाई में लगा सकते हैं।

### "परस्पर सहअस्तित्व पर प्रकृति–मानव–वन्यजीवन श्रृखंला" पर दो दिवसीय सेमिनार

गांधी स्मृति और दर्शन समिति, दिल्ली और नारी मंच के तत्वावधान में "परस्पर सहअस्तित्व पर प्रकृति–मानव–वन्यजीवन श्रृखंला" विषय पर दो दिवसीय सेमिनार दिनांक 6–7 अक्तूबर, 2017 को आयोजित किया गया। राजपूताना सोसायटी ऑफ नेचुरल हिस्ट्री के सहयोग से आयोजित यह कार्यक्रम राजपूताना शाकुंतलम रिजोर्ट गांव रामनगर, भरतपुर में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के सदस्य डॉ. स्वराज विधान मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर श्री अभय सिंह, डी. डी. एम नाबार्ड, सुश्री साधना गौड, नारी मंच, श्री सुरजीत सिंह बंजारा सोसायटी फॉर कल्चरल एंड नेचुरल हैरिटेज, श्री उमेश चंद्र गौड़ सीसीबीओएस, डॉ. सरिता मेहरा, डॉ. बी. के. गुप्ता सहायक प्राध्यापक एमएसजे कॉलेज भरतपुर उपस्थित थे।

इस सेमिनार में विभिन्न क्षेत्रों से आए विद्वान विशेषज्ञों ने सदियों पुरानी प्रकृति–मानव और जंगली जीवन के आपसी जुड़ाव पर गहन बातचीत की। इस मौके पर पर्यावरण, वन्यजीवन, मीडिया और अन्य अकादमिक विद्वानों ने अपने–अपने विचारों से लोगों को अवगत करवाया। दिल्ली से डॉ गोविन्द सिंह, डॉ. विनय सिंह कश्यप, जयपुर, डॉ. विवेक शर्मा, अजमेर, श्री अनिल रोजर्स उदयपुर, श्री मुकेश पंवार डूंगरपुर, श्री दिवाकर यादव अजमेर सहित पर्यावरण, मीडिया, वन्यजीवन व अन्य क्षेत्रों के विद्धानों ने इस बातचीत में हिस्सा लिया।

सेमिनार में विकास गतिविधियों में ग्रामीण और शहरी भेदभाव को दूर करने पर जोर दिया गया। विकास की प्रक्रिया सतत चलती रहे, इसके लिए आवश्यक है कि यह केवल आर्थिक वृद्धि आधारित ना हो, अपितु विकासात्मक गतिविधियों में पर्यावरण को बचाने और समाज के सभी वर्गों के सामाजिक विकास पर भी फोकस किया जाना चाहिए। वक्ताओं का कहना था कि पर्यावरण प्रदूषण आज एक गंभीर समस्या है और यदि समय रहते इसके कारगर उपाय नहीं निकाले गए, तो पूरी दुनिया के लिए एक बड़ा खतरा पैदा हो जाएगा।

गांधी स्मृति के प्रार्थना स्थल में ध्यान सत्र के दौरान उपस्थित लोग।

वियतनाम के जेन गुरू थिच नच हन के अनुयायी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू को पुस्तक भेंट करते हुए।

गांधी स्मृति में विमर्श के दौरान अपनी बात रखतीं एक प्रतिभागी।

(ऊपर) सीसीबीओएस के अध्यक्ष डॉ. उमेश चंद्र गौड़, राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की सदस्य श्री स्वराज विधान को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए। (नीचे) कार्यक्रम में उपस्थित लोग।

सेमिनार का पहला सत्र प्रसिद्ध वन्यजीव वैज्ञानिक डॉ. सत्य प्रकाश मेहरा ने संचालित किया। पहला सत्र ग्रामीण माहौल में राजपूताना शाकुंतलम, गांव रामनगर में आयोजित किया गया, जबकि दूसरा सत्र जे. के. कॉलेज भरतपुर में हुआ।

इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि अपने संबोधन में डॉ. स्वराज विधान ने भारत की समृद्ध विरासत की चर्चा की, जिसमें सभी लोग शांति और सद्भाव से प्रकृति और वन्यजीवन के बीच रहते थे। दो दिवसीय इस सेमिनार का प्रमुख आकर्षण प्रकृति और वन्यजीवन पर आधारित डाक टिकट संग्रह का प्रदर्शन रहा।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग की सदस्य श्री स्वराज विधान, समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ।

इस डाक टिकट संग्रह में श्री रवि खेमसरा और श्रीमती पुष्पा खेमसरा ने विश्व भर से विभिन्न कालखंडों की करीब साढ़े तीन लाख डाक टिकटों का संचयन किया है। खेमसरा दंपत्ति वन्यजीवन पर आधारित इन डाक टिकटों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता फैलाने का कार्य कर रहे हैं, जिसे सभी ने सराहा।

डॉ. गोविन्द सिंह ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के विचारों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि गांधीजी समावेशी विकास के पैरोकार थे। वे चाहते थे कि विकास केवल कुछ लोगों तक सीमित न रहे, अपितु यह समाज के अंतिम वर्ग के लोगों तक पहुंचे, तभी उसका महत्व है। उन्होंने कहा कि आज आसपास के क्षेत्रों को साफ–सुथरा रखना वक्त की एक मांग है, इसके लिए युवाओं को आगे आना चाहिए और पूरे जोश से स्वच्छता अभियान से जुड़ना चाहिए।

सेमिनार के दूसरे दिन भरतपुर के गांव उमरैंड के खेतों का दौरा किया गया। सभी गणमान्य विशेषज्ञों ने गांव उमरैंड में हाल ही में बनाए गए बांध का अवलोकन किया। यह बांध कोका कोला फाउंडेशन के सहयोग से बनाया गया है। डॉ. सरिता मेहरा ने इस बांध को बनाने में आई कठिनाईयों और पेचिदगियों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस बांध के निर्माण से आसपास के लोगों को काफी लाभ मिलेगा।

उमरैंड गांव के लोगों और आसपास के गांवों के लाभ के लिए बनाए गए इस चेक डैम के निर्माण की डॉ. स्वराज विधान और अन्य प्रतिभागियों ने काफी प्रशंसा की।

इस मौके पर भूतपूर्व सरपंच श्री तुलसीराम, श्री उदयभान गूर्जर, श्री वीरपाल सिंह और श्री वीरपाल गूर्जर भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में बाबा साहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर को श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। वक्ताओं ने इस अवसर पर लोगों को मेहनत और लगन से काम करने और देशहित में आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि लोगों को बाबा साहेब के कदमों पर चलना चाहिए और अपने बच्चों को उचित शिक्षा दिलानी चाहिए, विकास के लिए संघर्ष करना चाहिए और अपने हकों को पाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। वक्ताओं का कहना था कि बाबा साहेब के जीवन से हम प्रेरणा ले सकते हैं।

### शराबबंदी और महिला सशक्तिकरण पर एक दिवसीय कार्यशाला

समिति की ओर से शराबबंदी और महिला सशक्तिकरण पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 8 अक्तूबर, 2017 को उत्तराखंड के रूद्रप्रयाग में आयोजित किया गया। केदार–बद्री मानव श्रम समिति उत्तराखंड के सौजन्य से आयोजित इस कार्यशाला में 12 गांवों की 400 महिलाओं ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत यज्ञ के साथ की गई। इस मौके पर विभिन्न महिला मंगल दलों की महिलाओं ने अपने क्षेत्रों में शराबबंदी लागू करने के लिए किए गए प्रयासों का जिक्र किया। महिला मंगल दल बडासु की महिलाओं ने शराबबंदी पर लघु नाटिका प्रस्तुत की।

इस अवसर पर शराबबंदी के प्रभावों और परिवारों को उससे मिलने वाले लाभों के बारे में चर्चा की गई। चर्चा के दौरान एक बालिका प्रतिभागी ने जोर देकर कहा कि यदि उसके शादी समारोह के दौरान कोई शराब परोसने की शर्त लागू करेगा, तो वह उस शादी को तोड़ देगी।

यह कार्यक्रम एक यादगार कार्यक्रम रहा, क्योंकि इसमें उपस्थित अधिकांश महिलाओं ने करवा चौथ का व्रतधारण कर रखा था और उन्होंने इसकी परवाह न करते हुए उत्साह और उमंग से इस कार्यक्रम में भाग लिया।

### "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और पंचायती राज" पर सेमिनार

समिति द्वारा "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और पंचायती राज" पर सेमिनार का आयोजन 13 से 14 अक्तूबर को, गांधी स्मारक निधि के सौजन्य से किया गया। अनासक्ति आश्रम कौसानी, उत्तराखंड में आयोजित इस कार्यक्रम में आसपास के क्षेत्रों के करीब 100 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य वक्ताओं में, सुश्री राधा भट्ट, श्रीमती जागृति राही, श्री मोहन सिंह दोसाद, प्रो. अवधेश तिवारी, डॉ. कृष्ण सिंह बिष्ट, प्रो. हरिशचंद्र सिंह भावरे, श्री देवेंद्र बिष्ट, श्री लालजी बाजेता, श्री दिनेश कुमार अवस्थी, श्री पी. आर. विश्वकर्मा, श्री पी. सी. पांड्या, श्री लाल बहादुर राय शामिल थे।

कार्यक्रम में अनेक सामाजिक कार्यकर्ता, वरिष्ठ गांधीजन और अन्य गणमान्य वक्ताओं ने ग्राम स्वराज, पंचायती राज, महिला सशक्तिकरण, जैविक खेती, पर्यावरण और प्रकृति व भारत के प्रत्येक गांव के समग्र विकास पर अपने विचार रखे। वक्ताओं ने कहा कि समानता की परिकल्पना, अस्पृश्यता की रोकथाम, स्वच्छता आदि गांधी जी के मुख्य सामाजिक कार्य थे। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे भी गांधीजी के इन कार्यों को अपनाएं और अपना व अपने देश के विकास में योगदान दें।

समिति की श्रीमती रीता कुमारी और श्री गुलशन गुप्ता ने विषय विशेषज्ञ के तौर पर कार्यशाला में भाग लिया।

समूह अभ्यास में मगन प्रतिभागी।

## पत्रकारिता का गांधीवादी दृष्टिकोण पर सेमिनार

मानव रचना विश्वविद्यालय फरीदाबाद में 24 अक्तूबर, 2017 को समिति की ओर से पत्रकारिता का गांधीवादी दृष्टिकोण विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वरिष्ठ गांधीवादी श्री रमेश शर्मा, समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू प्रमुख वक्ता थे।

इस अवसर पर महात्मा गांधी की पत्रकारिता के आजादी के संघर्ष में प्रभाव, सत्याग्रह पर उनके लेखन के प्रभाव, गांधीजी द्वारा निकाले गए जर्नल की आजादी की लड़ाई में भूमिका आदि विषयों पर गहनता से चर्चा की गई। कार्यक्रम में मानव रचना विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन. सी. वाघवा, मीडिया स्टडीज विभाग की डीन डॉ. नीमो धर ने भी अपने विचार रखे। करीब 100 प्रतिभागी इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

## गांधी उत्सव और सेमिनार

समिति द्वारा दिशा ग्रामीण विकास मंच के सौजन्य से "गांधी उत्सव और सेमिनार" कार्यक्रम का आयोजन 2–4 अक्तूबर, 2017 को भागलपुर बिहार के बैजनी में किया गया। इस अवसर पर एक सद्भावना यात्रा और प्रभात फेरी का आयोजन भी किया गया।

कौसानी मे आयोजित 'महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य' विषय पर सेमिनार के दृश्य।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में शिरकत करने वाले प्रमुख लोगों में सर्वसेवा संघ वाराणसी के पूर्व अध्यक्ष श्री अमर भाई, स्वतंत्रता सेनानी श्री रविंद्र भाई, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापक श्री सौरभ वाजपेयी, श्री देबाशीष, श्री एन. के. जानी, गंगा जगाओ अभियान के श्री निलय उपाध्याय, श्री बलराम शास्त्री, विश्व मानव सेवा आश्रम नरकटियागंज के श्री शत्रुघ्न भाई, सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री तनुजा मिश्रा शामिल थे।

अपने संबोधन में श्री अमरनाथ भाई ने कहा कि विश्व तबाही के कगार पर खड़ा है और अहिंसा इससे बचने का एकमात्र उपाय है। उन्होंने युवाओं को गांधीजी को समझने और उनके विचारों को अपने जीवन में ढ़ालने का आह्वान किया।

इस मौके पर अनेक वक्ताओं ने महान भारतीय संस्कृति और शांति व अहिंसा की विरासत के बारे में चर्चा करते हुए बताया कि कैसे महात्मा गांधी ने अपने जीवन और

गतिविधियों में इन विचारधाराओं को अपनाया। उन्होंने कहा कि युवाओं को महात्मा गांधी की शिक्षाओं को स्वीकार करने और समाज की मदद करने के लिए आगे आना चाहिए। वक्ताओं ने यह भी कहा कि लोगों को गांधी के जीवन की बेहतर समझ रखकर, महात्मा गांधी के बारे में प्रचलित गलतफहमियों को दूर करना चाहिए।

गांधी उत्सव में काफी संख्या में युवा प्रतिभागियों ने भाग लिया। यह सेमिनार गांधीजी की वर्तमान समय और आने वाले समय में प्रासंगिकता को स्थापित करने में सफल रहा।

इस अवसर पर संगीत, नृत्य, गायन और नाटक पर आधारित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का समापन इस निश्चय के साथ हुआ कि सभी प्रतिभागी पुनः मिलेंगे और गांधी मार्ग पर चलने का प्रयत्न करेंगे, जो कि जीवन के लिए सबसे अच्छा मार्ग है।

### गांधीजी के रचनात्मक कार्य–एक सेमिनार

समिति द्वारा पर्यावरण और सामाजिक अनुसंधान केन्द्र वाराणसी के सहयोग से 'गांधीजी के रचनात्मक कार्यों'' पर लंका स्कूल सभागार, वाराणसी में सेमिनार का आयोजन किया गया। दिनांक 30 अक्तूबर, 2017 को हुए इस कार्यक्रम में पूर्व पंचायत विकास निदेशक श्री सुरेंद्र सिंह मुख्य अतिथि थे।

अपने संबोधन में श्री सिंह ने कहा कि महात्मा गांधी सदैव रचनात्मक कार्यों के माध्यम से ग्रामीण विकास के कार्यों में तत्पर रहते थे। खादी को बढ़ावा देकर, उन्होंने ग्राम विकास की अवधारणा को एक नया आयाम दिया। वास्तव में खादी स्वावलंबन, आत्म निर्भरता और प्रगति की प्रतीक है।

सेमिनार में प्रो. पी. के. मिश्रा, श्री आर. बी. सिंह, श्री रूपेश पांड्या, श्री संजय शुक्ला, श्री चंद्रशेखर मिश्रा, श्री शिवेंद्र और श्री शंकर कुमार सिंह, श्री प्रदीप भारती आदि उपस्थित थे।

समिति की प्रतिनिधि सुश्री रचना राठौर ने समिति की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि गांधीजी की 150वीं जयंती के मौके पर समिति अनेक कार्यक्रमों का आयोजन करेगी और युवाओं को गांधीजी के रचनात्मक कार्यों से जोड़ेगी।

### "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और किसान" विषय पर सेमिनार

समिति द्वारा जोर की ढ़ाणी के सौजन्य से राजस्थान के सीकर में 31 अक्तूबर, 2017 को 'महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और किसान' विषय पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समिति का प्रतिनिधित्व वरिष्ठ फेलो डॉ. बी. मिश्रा और श्री समीर बनर्जी ने किया। इस अवसर पर श्री स्वामी सत्यनारायण, किसान संघ के श्री परमानंद जी, श्री कानसिंह निर्वाण और काफी संख्या में किसान और ग्रामीण युवा उपस्थित थे।

कार्यक्रम में समिति के श्री समीर बनर्जी ने समिति की किसान आधारित गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसानों की समस्याओं का हल गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रमों में है।

श्रमदान व सफाई अभियान, दिशा ग्रामीण मंच के सदस्यों की नियमित गतिविधि है

श्री बी. मिश्रा ने गांधी के रचनात्मक कार्यों को किसानों के लाभ और संपूर्ण ग्राम विकास के लिए आवश्यक बताया। इस मौके पर क्षेत्र के किसानों ने अपनी समस्याओं के बारे में लोगों को अवगत करवाया।

कार्यक्रम में श्री स्वामी सत्यनारायण, श्री महेश जी, श्री कानसिंह निर्वाण जी, श्री मलिराम जी नेहरा, श्री पूरणमल जी ने अपने विचार रखते हुए पूर्व प्रधानमंत्री चौ. चरण सिंह को याद किया। श्री मलिराम ने स्वच्छता, गांवों में शौचालयों की आवश्यकता और गायों के संरक्षण के मुद्दे को प्रमुखता से उठाया। वरिष्ठ किसानों को डॉ. बी. मिश्रा और श्री समीर द्वारा सम्मानित किया गया।

### 'गांधी और धर्म' विषय पर आयोजित गांधी मेले का समापन

समिति द्वारा इंडियन सोसायटी ऑफ गांधीयन स्टडीज (आईएसजीएस) वर्धा के सौजन्य से तीन दिवसीय गांधी मेला का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में किया गया। यह मेला आईएसजीएस के 40वें वार्षिक सम्मेलन के तहत आयोजित किया गया, जिसका समापन 2 नवम्बर, 2017 को हुआ। इस कार्यक्रम में शिक्षाविदों, लेखकों, प्राध्यापकों समेत कुल 500 लोगों ने भाग लिया।

ग्रामीण विकास के पूर्व निदेशक श्री सुरेंद्र अन्य अतिथियों के साथ कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए। इस अवसर पर उपस्थित स्कूली बच्चे।

इस अवसर पर अपने संबोधन में प्रो. रामजी सिंह ने कहा कि ऐतिहासिक भारतीय संस्कृति हमें एक और अखंड बने रहने के लिए प्रेरित करती है। हमारा पूरा ध्यान किसी धर्म विशेष से लड़ने की बजाय मानवता की सुरक्षा पर होना चाहिए। आज अहिंसा के प्रचार की आवश्यकता है, यही युद्ध का एकमात्र विकल्प है।

कार्यक्रम में अनेक विशिष्ट अतिथि उपस्थित हुए, जिनमें समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, डॉ. इमाम अहमद उमर इलियासी, मुख्य इमाम अखिल भारतीय इस्लाम संस्थान, प्रो. ए. डी. एन. वाजपेयी, भूतपूर्व कुलपति शिमला विश्वविद्यालय, श्री शंकर कुमार सान्याल, अध्यक्ष हरिजन सेवक संघ, श्री लक्ष्मीदास, अध्यक्ष अखिल भारतीय ग्रामोद्योग महासंघ, श्री कमल टावरी भूतपूर्व सचिव भारत सरकार, श्रीमती शैला राय अध्यक्ष आईएसजीएस, श्रीमती मंजूश्री मिश्रा गांधी निधि, श्री बसंत, आजीवन सदस्य आईएसजीएस, श्री सूरज सदन, प्रसिद्ध कलाकार, सुश्री मैरी एल्काइन फ्रांस और श्री नैथाइल लेपलटाइर संस्थापक कॉन्शियस फ्यूचर फ्रांस शामिल थे। कार्यक्रम का संचालन समिति की पुस्तकाल्याध्यक्षा श्रीमती शाश्वती झालानी ने किया।

इस अवसर पर अपने संबोधन में वक्ताओं ने वैश्विक शांति स्थापना की आवश्यकता पर बल दिया। वक्ताओं का कहना था कि धर्म और धार्मिक संगठन इस दिशा में प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। इसके अलावा 2019 में आने वाली गांधीजी की 150वीं जयंती को मनाने के बारे में भी चर्चा की गई और जयंती समारोह के लिए अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का आह्वान भी किया गया।

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने अपने स्वागत भाषण में युवाओं को महात्मा गांधी की शिक्षाओं से जोड़ने का आह्वान किया। इस मौके पर कीर्ति प्रकाशन जयपुर की पुस्तक "गांधी विधि का सामयिक संदर्भ" और डॉ विनय कुमार के जर्नल "गांधी अध्ययन" का विमोचन भी किया गया।

तीन दिवसीय इस मेले में निम्नलिखित सत्र हुए:

- बुद्ध, गांधी, आध्यात्मिकता और धर्म
- भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक प्रकृति : गांधी की प्रासंगिकता और योगदान
- सार्वभौमिक शांति : गांधीवादी लेखन और संदर्भ
- हिन्दुत्व : सिद्धांत और गांधीवादी व्याख्या
- मूल्य और समाज : गांधीजी का आवर्धन
- सांप्रदायिक शांति : गांधीवादी मार्ग
- गांधी की पुनर्यात्रा : साहित्य, मीडिया और सिनेमा
- धर्म : परिकल्पना, संदर्भ और गांधी
- भारत की सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि : गांधी की अनुगूंज
- सामाजिक सद्भाव : आध्यात्मिक संदर्भ
- भारतीय संस्कृति में अहिंसा : गांधी की विरासत
- समाजिक–आर्थिक पुनर्निर्माण : गांधी का दृष्टिकोण
- गांधी का मूल्य और तकनीक : समकालीन प्रासंगिकता

### जापान के वर्ल्ड पीस आर्ट प्रतिनिधिमंडल के साथ संवाद

समिति के तत्वावधान में जापान के वर्ल्ड पीस आर्ट एक्जीबिशन के सदस्यों के साथ एक संवाद कार्यक्रम गांधी दर्शन में 10 नवम्बर, 2017 को आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम जापान और भारत के बीच शांतिपूर्ण रिश्तों को बनाए रखने के उद्देश्य से किया गया। जापान का यह प्रतिनिधिमंडल ललित कला अकादमी में आयोजित 25वें वर्ल्ड पीस आर्ट एक्जीबिशन कार्यक्रम में अपनी कला का प्रदर्शन करने हेतु आया था।

(ऊपर) विश्व शांति कला जापान के प्रतिनिधि पौधारोपण करते हुए।
(नीचे) प्रतिनिधियों का सम्मान करते श्री एस. ए. जमाल और डॉ. वेदाभ्यास कुंडू।

कैनवास पर गांधीजी की तस्वीर को उकेरते जापानी कलाकार व गांधी दर्शन परिसर में महात्मा गांधी की प्रतिमा के समक्ष उपस्थित जापानी प्रतिनिधिमंडल के सदस्य। साथ में समिति के सदस्य भी हैं।

इस प्रदर्शनी का उद्घाटन अकादमी के प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. कृष्णा शेट्टी ने किया था। इसमें कलाकारों ने जापान के विभिन्न क्षेत्रों की बेहतरीन कलाओं के 211 नमूने पेश किए। यह कार्यक्रम मदर टेरेसा को उनकी 20वीं पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि के रूप में था।

गांधी दर्शन में प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व कर रहे, कोली आर्ट के सीईओ श्री हिडेतोशी का स्वागत समिति के प्रशासनिक अधिकारी श्री शाहिद अहमद जमाल ने किया। जबकि वरिष्ठ कलाकार श्री रायशू एन. और सुश्री इशी का सम्मान समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू ने किया।

प्रतिनिधिमंडल ने गांधी दर्शन परिसर में महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित किए और उन्होंने परिसर में पौधारोपण भी किया। इस अवसर पर यूनेस्को सांस्कृतिक केन्द्र जापान के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

**समग्र योग (होलिस्टिक योगा) पर राष्ट्रीय कार्यशाला : एच 3 (स्वास्थ्य, प्रसन्नता और समरसता)**

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और दौलतराम कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में समग्र योग (होलिस्टिक योगा) : एच 3 (स्वास्थ्य, प्रसन्नता और समरसता) पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 10 से 11 नवम्बर, 2017 तक किया गया।

इस सम्मेलन का उद्देश्य होलिस्टिक योगा अर्थात समग्र योग की अवधारणा का उसके तीन पहलुओं हैल्थ, हैप्पीनेस और हारमनी (स्वास्थ्य, प्रसन्नता और समरसता) के दृष्टिकोण से विवेचना करना और व्यस्त शहरी जीवन के दौर में योग के समग्र और व्यवहारिक पहलू का प्रचार–प्रसार करना था।

चूंकि इस विषय का क्षेत्र काफी बड़ा था, इसलिए सम्मेलन निम्नलिखित उद्देश्यों पर केन्द्रित रहा–

- योग का प्रसार घर–घर और कोने–कोने तक करना : एक अभ्यास के रूप में, एक अकादमिक विषय के रूप में, शोध के विषय के रूप मे, इसे किसी के जीवन में शामिल करने के तौर पर। गंभीरता, निष्कपटता और योग के प्रति प्रतिबद्धता के साथ।
- योग की व्यवस्था का समाज में समावेश करते हुए योग को दैनिक सामाजिक जीवन, पेशेवर जीवन, पारिवारिक जीवन का भाग बनाना।
- लोगों को योगा के सिद्धांतों और नियमों से अवगत करवाना, ताकि योग को सिर्फ दर्शन और विचार ही नहीं, अपितु जीवंत सच्चाई बनाया जा सके।

- योग द्वारा लोगों खासकर युवाओं के जीवन में आए व्यवहारिक परिवर्तनों को उभारना, विश्लेषण करना और उसे रिकॉर्ड करना।
- योग को मानवता के लिए प्रकाशस्तंभ के रूप में दर्शाना।
- योग का अंत के रूप में नहीं, अपितु साधन के रूप में विश्लेषण करना।
- योग को मानव जाति के विकास की दिशा में तेजी, वृद्धि और योगदान वाला रास्ता साबित करना।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि थे– श्री शेखर दत्त, पूर्व राज्यपाल छत्तीसगढ़, और पद्मश्री श्री जे. एस. राजपूत लेखक। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्या डॉ. सविता रॉय के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. एच. एस. प्रसाद ने की।

सम्मेलन में कुल तीन समग्र सत्र, पांच तकनीकी सत्र और एक यूफोनिक योग कार्यशाला थी। समग्र सत्र के आमंत्रित अतिथियों में पद्मश्री डॉ. के. के. अग्रवाल फिजिशियन, हृदय रोग विशेषज्ञ और आईएमए के राष्ट्रीय अध्यक्ष, दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो. एच. एस. प्रसाद, और जेएनयू के सामाजिक विज्ञान स्कूल की दर्शन केन्द्र की अध्यक्षा प्रो. बिन्दु पूरी शामिल थे।

प्रथम दिन तीन समग्र सत्र और एक तकनीकी सत्र हुए, इनकी अध्यक्षता दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय के दर्शन विभाग के डॉ. आर. एम. सिंह ने की, सम्मेलन में आए प्रतिनिधियों ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन आयोजित चार तकनीकी सत्रों की अध्यक्षता डॉ. आदित्य कुमार गुप्ता, दर्शन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. मीतू खोसला, सहायक प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, दौलतराम कॉलेज, डॉ. रजनी साहनी, सहायक प्रोफेसर मनोविज्ञान विभाग, दौलतराम कॉलेज और डॉ. सुनिता, दुरंगल, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग दौलतराम कॉलेज ने की।

इसके अतिरिक्त 'योग की सद्भावना', 'यूफोनिक योग के माध्यम से संगीत और नृत्य,' के सत्र, क्यूरेटर श्रीमती श्रुति, चतुरलाल शर्मा, योग गुरू श्री हरिओम व ओडिसी प्रतिपादक श्रीमती रौद्री सिंह के सानिध्य में संपन्न हुए।

समापन सत्र में यूनिसेफ दिल्ली की पूर्व शिक्षा विशेषज्ञ और जयपुर राजस्थान की पूर्व शिक्षा और महिला सशक्तिकरण प्रमुख डॉ. सुष्मिता दत्त उपस्थित थीं। इस सम्मेलन में समग्र योग के विभिन्न पहलुओं पर अर्थपूर्ण अकादमिक चर्चा की गई। इसकी विशेषता एक अनूठे बहु विषयक सम्मेलन की

दिल्ली विश्वविद्यालय में योगाभ्यास करते लोग।

रही, जिसमें विभिन्न स्वास्थ्य, कानून और शिक्षा के ज्ञाता एक साथ एक मंच पर आए। यह विविधता केवल आमंत्रित व्याख्यानों, पत्र प्रस्तुतिकरण में ही नहीं देखी गई, अपितु इसे प्रतिभागिता में भी महसूस किया गया।

आज समय की यह मांग है कि विविधतापूर्ण प्रकृति वाले अनेक सम्मेलन आयोजित किए जाए, जिसके माध्यम से विभिन्न प्रतिभागी एक जगह पर एकत्र हों और मानव जाति के अस्तित्व से संबंधित मुद्दों पर चर्चा करें। ये बुद्धिजीवी प्रतिभागी निश्चित तौर पर बेहतर विश्व के निर्माण के लिए अधिकाधिक उत्पादक कदम उठाएंगे।

## छठा गांधी दर्शन–मिशन समृद्धि सम्मेलन आयोजित

महाराष्ट्र के वर्धा में छठा गांधी दर्शन–मिशन समृद्धि सम्मेलन का आयोजन 22 से 24 नवम्बर, 2017 को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री अरूण जैन, सीईओ पोलरिस कन्सल्टिंग एवं सर्विसेज लिमिटेड, श्री शैलेश नवल, जिला कलेक्टर, श्री अपूर्व बजाज अध्यक्ष कमलनयन जमुनालाल बजाज फाउंडेशन, ग्लोसेल के श्री सबाहत अजीम, 'हिवारे बाजार' के सरपंच श्री पोपट राव पवार, श्री बसंत सिंह, डॉ. बी.डी. मिश्रा, श्री नरेंद्र मेहरोत्रा, श्री राम पप्पू उपस्थित थे।

सम्मेलन में वक्ताओं ने नई तालीम की सनातन परिकल्पना का समर्थन किया और इसे विभिन्न राज्यों में आजीविका, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्रों से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने तक्र दिया कि बेहतर अभ्यास के लिए 'कनेक्ट, सेलिब्रेट और कैटालाइज' की आवश्यकता है।

श्री शैलेश नवल ने कहा कि हमारे देश के कृषि परिदृश्य को आकार प्रदान करने में ग्रामीण तकनीक का बहुत महत्व है। निजी क्षेत्र में सह–अस्तित्व की सराहना करते हुए उन्होंने विपणन और उपभोक्तावाद की वर्तमान भूमिका को संवारने में पिछड़े और अगड़े वर्ग के संबंधों के महत्व के बारे में भी चर्चा की।

सीकर राजस्थान और महाराष्ट्र विदर्भ के सूखा प्रभावित क्षेत्रों के बारे में टिप्पणी करते हुए श्री अपूर्व बजाज ने कहा कि उनकी संस्था प्रमुख रूप से सिंचाई वाले क्षेत्रों को बढ़ाने और फसल विविधता बायोगैस और सौर उर्जा को नवीकरणीय उर्जा के स्रोत के रूप में इस्तेमाल करने पर जोर देती है।

इसके अतिरिक्त ग्रामीण महिलाओं को कार्यशालाओं और प्रशिक्षण के माध्यम से सशक्त बनाने का काम किया जाता है। उन्होंने कहा, "सिंचाई के दायरे में 44000 एकड़ भू भाग लाया जा चुका है, फसल की खेती 14000 एकड़ पर, भूगर्भ जल 6 से 8 फीट ऊपर लाया गया है और 8 सौर सिंचाई पम्प सीकर में संस्था के बेहतरीन सहयोग से लगाए गए हैं।"

उन्होंने 'परिवर्तन के लिए डिजाइन' के बारे में बात की, जो कि एक वैश्विक विचार है, जहां करीब 150 स्कूलों के बच्चे एक बेहतर विश्व के लिए काम करने के लिए प्रेरित हुए हैं। उन्होंने कहा कि संस्था अब वर्धा में वर्तमान मार्केटिंग नेटवक्र को मजबूत और सहयोग देने की दिशा में काम कर रही है।

सेमिनार को संबोधित करते हुए श्री सबाहत अज़ीम ने 'ग्लोसेल' की अवधारणा के बारे में परिचय दिया। उन्होंने कहा कि यह दुर्गम क्षेत्र के लोगों को मोबाइल स्वास्थ्य सुविधा देने से संबंधित है।

सम्मेलन के पहले दिन का समापन गांधी दर्शन–मिशन समृद्धि सम्मान 2017 के वितरण के साथ हुआ। यह सम्मान ग्रामीण आंत्रप्रन्योरशिप, पंचायती राज, ग्रामीण शिल्पकार और नवाचारों, शोषितों के सशक्तिकरण क्षेत्र में गांधीजी के रचनात्मक कार्यों में संलग्न व्यक्तियों और संस्थाओं को प्रदान किया जाता है।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में यह पुरस्कार रचनात्मक सामाजिक कार्य में संलग्न 21 विस्मृत नायकों को प्रदान किए गए। जिनके नाम इस प्रकार हैं–

**व्यक्तिगत वर्ग**– श्री आदर्श मुनि त्रिवेदी, जबलपुर मध्यप्रदेश, श्री गुरजीत सिंह रांची, सुश्री अंजू कुंजूर रांची, झारखंड, श्री चंद्रभूषण तिवारी, लखनऊ, डॉ. रविन्द्र कोहले, महाराष्ट्र, श्री कान सिंह निर्वाण, राजस्थान, श्री विवेक चतुर्वेदी, कानपुर, श्री कंवल सिंह सेनापति, हरियाणा, श्रीमती गीता वर्मा, बोकारो, झारखंड, श्री रविन्द्र शर्मा आदिलाबाद, तेलंगाना, श्रीमती आत्मप्रभा, देवेन्द्र कुमार वर्धा महाराष्ट्र और श्री खल्लारकर गुरूजी वर्धा, महाराष्ट्र।

**संस्था वर्ग**– विवेकानन्द केन्द्र, तमिलनाडु, सती संस्था, बस्तर छत्तीसगढ़, रामकृष्ण ट्रस्ट भुज, गुजरात, दुर्गा मंडल महिला विकास संस्थान, जमुई बिहार, सिन्गरोली प्रदूषण मुक्त वाहनी संस्था रेनूकूट, उत्तर प्रदेश, थारू एरिया स्माल एंड रिसोर्स कम्यूनिटी एसोसिएशन संस्थान रामनगर, पूर्वी चम्पारण बिहार, समता महिला मंडल रायपुर, छत्तीसगढ़ और अखिल भारतीय मताधिकार संघ संस्था लखनऊ, उत्तर प्रदेश।

सम्मेलन के दूसरे दिन शामिल होने वाले वक्ताओं में प्रमुख थे– श्री शांतिलाल मुत्ता, श्री अमित, नयी तालीम सेवाग्राम वर्धा से सुश्री सुषमा जी, तरकीबियां फाउंडेशन की सुश्री आकांक्षा, डॉ. वाल्मीकि, प्राथमिक शिक्षा अधिकारी। वक्ताओं ने इस अवसर पर सरकार के साथ सामाजिक क्षेत्र को एकीकृत करने के लिए मूल्यपरक शिक्षा पर विस्तृत नीति बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने 'इमेजिन', 'डू' और 'शेयर' के विचारों पर चर्चा की और कैसे विद्यार्थी और अध्यापक के बीच गुणवत्तापूर्ण रिश्तों को विकसित करने में इन विचारों का इस्तेमाल किया जाए, इस पर मंथन किया।

इन सब कवायदों का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा परिदृश्य में हितधारक दृष्टिकोण के संदर्भ में तीन प्रमुख प्रश्नों के उत्तर ढूंढना था। ये थे–'शिक्षा की वर्तमान स्थिति क्या है?' 'शिक्षा की बेहतरीन स्थिति क्या होनी चाहिए?' और 'शिक्षा की प्रासंगिकता और उद्देश्य क्या है?'

यह समस्त कवायद वर्धा जिला में शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाने और हितधारकों से समाधान और सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के उद्देश्य से की गई थी।

### गीता ज्ञान विमर्श व्याख्यान आयोजित

श्रीमद्भागवत गीता जयंती पर्वोत्सव कार्यक्रम के तहत 10 दिसंबर, 2017 को गांधी दर्शन में गीता ज्ञान विमर्श का आयोजन टैक्नो वैदिक मिशन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय और समिति के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम में 76 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। इग्नू के पूर्व कुलपति और इतिहासकार प्रो. रविन्द्र कुमार ने मुख्य व्याख्यान दिया, प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता प्रो. दीनबंधु पांडे ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अनेक शिक्षाविद्, लेखक, स्कॉलर आदि ने इस कार्यक्रम में अपने विचार रखे।

इस मौके पर अपनी बात रखते हुए प्रो. रविन्द्र कुमार ने कहा कि परंपरा और संस्कृति सनातन हैं और ये किसी विशेष समय के दायरे में नहीं बंधे हैं। ये निरंतर नहीं हैं, फिर भी, ये समय के साथ बढ़ते हैं।

उन्होंने कहा कि गीता बोली नहीं गई है, न ही लिखी गई है, लेकिन जैसे हमारे ऋषि दिव्य दृष्टि रखते थे,

उसी तरीके से श्रीकृष्ण ने अर्जुन का भूतकाल, भविष्य और वर्तमान, अपनी दिव्य दृष्टि से प्रस्तुत कर दिया था। श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि तुम जो आनंद भोग रहे हो, वह तुम्हारे द्वारा लिए गए निर्णयों के कारण है और वर्तमान समय में लिए गए तुम्हारे निर्णय भविष्य में लाभ का निर्माण करेंगे।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में इतिहासकार और आईसीएसएसआर के प्रो. दीनबंधु पांडे ने गीता के प्रथम श्लोक के प्रथम शब्द की व्याख्या की। उन्होंने कहा कि पुस्तकों की जिम्मेदारी है कि उसके माध्यम से लोगों को गीता की नई व्याख्या समझने को मिले।

इस अवसर पर डॉ. के. डी. प्रसाद क्षेत्रीय निदेशक इग्नू, श्री आर.के ग्रोवर, निदेशक दिल्ली राज्य कैंसर मेडीकल संस्थान, श्री अरूण कुमार पांडे, टैक्नो वैदिक फाउंडेशन, कारीगर पंचायत के श्री बसंत, इंडोलॉजी फाउंडेशन के संस्थापक श्री ललित मिश्रा भी उपस्थित थे।

**"पर्यावरण संरक्षण–गांधीवादी विचार और दृष्टिकोण के माध्यम से उपलब्धि के अवसर और चुनौतियां" पर राष्ट्रीय सेमिनार।**

समिति द्वारा पर्यावरण और भौगोलिक सूचना विज्ञान संस्थान, करियर प्लस एजूकेशनल सोसायटी दिल्ली और समुदाय आधारित संस्थाओं के भारतीय परिसंघ के संयुक्त तत्वावधान में "पर्यावरण संरक्षण–गांधीवादी विचार और दृष्टिकोण के माध्यम से उपलब्धि के अवसर और चुनौतियां" पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

सम्मेलन में उपस्थित लोगों को संबोधित करतीं, केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती कृष्णा राज।

दिनांक 14–15 दिसम्बर को डिप्टी स्पीकर हॉल, कंस्टीट्यूशन क्लब, नई दिल्ली में आयोजित इस कार्यक्रम की मुख्य अतिथि कृषि और किसान कल्याण राज्यमंत्री श्रीमती कृष्णा राज थीं। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने कहा कि प्रदूषण का मुख्य कारण भारतीय परंपराओं से दूर होना है, इसे भारतीय वेद परंपराओं और ज्ञान–विज्ञान व आत्म संयम की मदद से कम किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान की प्रशंसा करते हुए, राष्ट्रीय सफाई कर्मचारी आयोग के अध्यक्ष श्री मनहर वालजी भाई, जो विशिष्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित थे, ने कहा कि पर्यावरण का संरक्षण और स्वच्छता पड़ोसियों की मदद के बिना संभव नहीं है।

सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक डॉ. बिन्देश्वर पाठक ने गांधीवादी मूल्यों को प्रतिपादित करते हुए कहा कि केवल समाज के प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी से ही इस समस्या को दूर किया जा सकता है।

शिक्षा संस्कृति उत्थान ट्रस्ट के राष्ट्रीय सचिव श्री अतुल कोठारी ने कहा कि इस संकट का निदान केवल आध्यात्मिकता कर सकती है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि वे अपने जीवन में 19 बिन्दुओं को अपनाएं। आध्यात्म और धर्म में अंतर को परिभाषित करते हुए उन्होंने कहा कि आध्यात्मिकता का अर्थ निःस्वार्थ भाव से किसी काम को करना है।

राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के सदस्य श्री स्वराज स्कॉलर ने प्रदूषण की समस्या के समाधान के लिए संस्था द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सुलभ इंटरनेशनल द्वारा किए गए कार्य अनुकरणीय हैं।

कार्यक्रम में प्रसिद्ध कवि गजेन्द्र सोलंकी ने पर्यावरण पर अपनी सुंदर कविता पेश की।

कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले अनेक लोग उपस्थित हुए। श्री बसंत जी, पूर्व सलाहकार गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, डॉ. मनोज कुमार, डीन, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय भी इस अवसर पर मौजूद थे।

कार्यक्रम में आचार्य शैलेश, डॉ. उमेशचंद्र गौड़, अरूण तिवारी, कमांडर वीरेंद्र जेटली, डॉ. प्रमोद और श्री अनुज अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे। इस मौके पर मिशन क्लीन पत्रिका भी जारी की गई।

दूसरे दिन भावी प्रशासकों और अधिकारियों के बीच परिचर्चा का आयोजन भी किया गया, जिसमें पर्यावरण संरक्षण में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता पर चर्चा हुई। इस परिचर्चा का एक महत्वपूर्ण पहलू यह रहा कि यह उन युवाओं के बीच आयोजित की गई, जो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं।

कांस्टीट्यूश्नल कल्ब में स्मारिका का विमोचन करते विशिष्ट अतिथिगण।

इसकी शुरूआत हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्री गजेंद्र सोलंकी द्वारा पर्यावरण प्रदूषण पर आधारित व्याख्यान से हुई। उन्होंने कहा कि आज सांस्कृतिक प्रदूषण से बचने की आवश्यकता है।

सफाई अभियान के युवाओं के प्रेरणास्रोत श्री हिमदविश सुवन ने स्वच्छता के लिए युवाओं से आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि व्यक्तिगत तौर पर कदम उठाए बगैर समस्या का समाधान नहीं हो पाएगा।

हिन्दू कॉलेज के प्रो. डॉ. राजेन्द्र ने संस्कृत, संस्कृति और पर्यावरण के संबंधों का खाका खींचा।

वाइस ऑफ कम्यूनिटी पत्र के प्रधान संपादक डॉ. उमेश चंद्र गौड़ ने कार्यक्रम के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए आए हुए अतिथियों का आभार प्रकट किया। करियर प्लस एजुकेशनल सोसायटी की निदेशक श्रीमती अनुज अग्रवाल और सचिव नीरज कुशवाहा एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी इस कार्यक्रम में शिरकत की।

**जनता के स्वास्थ्य को बेहतर करने के लिए भारतीय जराचिकित्सा अकादमी के प्रयास**

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) और

(ऊपर) विशिष्ट अतिथि, दीप प्रज्ज्वलन कर, कार्यक्रम की शुरूआत करते हुए। (नीचे) अपने विचार व्यक्त करते वरिष्ठ गांधीवादी श्री बसंत।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय जराचिकित्सा अकादमी का 15 वां वार्षिक सम्मेलन 16–17 दिसंबर, 2017 को जवाहरलाल नेहरू ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया।

इसका संयोजन एम्स के जराचिकित्सा विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रसून चटर्जी ने किया। उद्घाटन समारोह में समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत जी के अतिरिक्त प्रो. जी. एस. शांति, श्री मैथ्यू चेरियन, डॉ. ए. बी. डे, डॉ. विनोद कुमार और डॉ. अरविन्द जैन सहित देश के विभिन्न भागों से आए 200 चिकित्सक उपस्थित थे।

उद्घाटन समारोह में अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री बसंत जी ने वैकल्पिक दवा पर गांधीजी का दृष्टिकोण और सक्रिय बुढ़ापे पर गांधीजी के विचारों पर अपनी नजरिया प्रस्तुत किया। इस अवसर पर उपस्थित कुछ प्रस्तोताओं में शामिल थे–

- डॉ. ए. बी. रॉय, जराचिकित्सा विभाग, एम्स–एलएसीआईः भारत की भविष्य की स्वास्थ्य जरूरतों पर नवपरिवर्तन
- विनोद कुमार, जी. एस. रघुनाथ बाबू और आर. बागे, मेडीसन विभाग, सेंट सटीफन अस्पताल–चिरकालिक प्रतिरोधीय फुफ्फुसीय रोग और वृद्धावस्थाः एक दोहरा खतरा।
- डॉ. अरविन्द कस्तूरी, सामुदायिक स्वास्थ्य विभाग, सेंट जोहन मेडीकल कॉलेज, बैंगलोर–बड़ों तक पहुंचनाः जराचिकित्सा में संभावित अवसर।
- डॉ. आशिमा नेहरा, अतिरिक्त प्राध्यापक, क्लीनिकल तंत्रिका मनोविज्ञान, तंत्रिकाविज्ञान केन्द्र, एम्स, नई दिल्ली' –न्यूरोकॉगनिटीव की चुनौतियां, वृद्ध जनसंख्या में विश्लेषण।
- डॉ. स्टीव पॉल, जराचिकत्सा विशेशज्ञ, जुबली मिशन मेडीकल कॉलेज, त्रिचूर, केरल–होमकेयर–विकसित परिदृश्य।

इस दो दिवसीय सेमिनार में प्रतिभागियों के साथ विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए :

1. ग्रामीण भारत में सक्रिय वृद्धावस्था : स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंच मजबूत करने के लिए नीतियां– डॉ. संजोगिता सचदेव और डॉ. जे. सी. सचदेव।
2. वृद्धों के शारीरिक, स्वायत्त और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रेक्षा ध्यान के प्रभाव– डॉ. अरविंद जैन।
3. वृद्धों की देखभाल में नर्स की भूमिका– डॉ. मॉली बाबू और डॉ. हरिन्दर गोयल।

सृजन शक्ति संगम में अपने विचारों को व्यक्त करते वक्तागण।

अपने विचार व्यक्त करतीं एक प्रतिभागी, जबकि श्री गोविन्दाचार्य (दांए से दूसरे) उन्हें सुनते हुए।

4. बुढ़ापे की अवधारणा– डॉ. बिमल कपूर, सुश्री कमलेश चांडेलिया।
5. जराचिकित्सा में चुनौतीपूर्ण मुद्दे– डॉ. गौरी सेनगुप्ता, डॉ. डी. थंगम और अन्य।

## सृजन शक्ति संगम–लघु गांधी की खोज में

## महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों पर संवाद–सह–प्रशिक्षण कार्यक्रम

आज हजारों ऐसे लोग और संस्थाएं हैं, जो महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित रचनात्मक कार्यों के मॉडल पर कार्य कर रहे हैं। दुर्भाग्यवश वे आपस में भली प्रकार से जुड़े हुए नहीं है। इसलिए उनके पास एक विशालतम तस्वीर इस संदर्भ में नहीं है। गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने इस संदर्भ में चीजों को बेहतर करने के लिए एक छोटा कदम उठाया है।

समिति द्वारा सनातन किष्किंधा मिशन और भारत विकास संगम के सहयोग से सृजन शक्ति संगम का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में 28 दिसम्बर, 2017 से 1 जनवरी 2018 तक किया गया। कार्यक्रम में रचनात्मक कार्यों पर अपने अनुभव बताने के लिए अपने–अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ मौजूद थे।

इस कार्यक्रम में जाने–माने लोग रचनात्मक कार्यों पर अपने अनुभवों को बताने के लिए उपस्थित थे। श्रोताओं में देश के विभिन्न भागों से आए करीब 45 युवा स्वयंसेवक और 100 सामाजिक कार्यकर्ता शामिल थे।

इनमें से कुछ प्रमुख विशिष्ट लोग थे– श्री के. एन. गोविंदाचार्य, भारत विकास संगम, श्री बसवराज पाटिल, राज्यसभा सांसद, श्री महेश शर्मा, शिवगंगा, झाबुआ, स्वामी अभयानंद, रामकृष्ण आश्रम, गदग कर्नाटक, श्री माधव रेड्डी, वन्दे मातरम् फाउंडेशन, तेलंगाना, सुश्री इंदुमति काटधरे, प्रसिद्ध स्कॉलर और शिक्षाविद्, श्री संजय सिरनूरकर, विजन इंडिया फाउंडेशन नई दिल्ली, श्री सूर्यकान्त जालान सुरभि शोध संस्थान वाराणसी, यूपी, श्री चंद्रशेखर प्राण, वरदान, इलाहाबाद, श्री वेणुगोपाल रेड्डी, एकलव्य फाउंडेशन तेलंगाना, श्री संजय पाटिल, समन्वयक सृजन शक्ति संगम, श्री अजीत सारंगी, समन्वयक भारत विकास संगम, श्री संजय सिंह सज्जन गोकुल फाउंडेशन बिहार, सुश्री आस्था, श्री आनन्द, सुश्री प्रीति, श्री अरूप और श्री विश्वास गौतम।

सृजन शक्ति संगम के तहत युवा स्वयंसेवकों के लिए 28 दिसम्बर, 2017 से 1 जनवरी 2018 तक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविर सनातन किष्किंधा मिशन के सहयोग से किया गया। युवाओं ने गांधीजी के विचारों और रचनात्मक कार्यों के महत्व का वर्णन किया। 30 दिसंबर, 2017 से 1 जनवरी, 2018 तक प्रतिभागी युवा सृजन शक्ति के समन्वय और संस्थागत मुद्दों में संलग्न रहे।

कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, हरियाणा, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असम और गुजरात के प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

### वनस्पति और जीव को संरक्षित कर, पर्यावरण का संरक्षण करना

समिति द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र सीतामढ़ी बिहार के सौजन्य से 'पर्यावरण संरक्षण संभावना और उपलब्धियां व चुनौतियां: गांधीवादी विचार' विषय पर दो दिवसीय राज्य स्तरीय सेमिनार का आयोजन बिहार के सीतामढ़ी में 3–4 फरवरी, 2018 को किया गया। इस अवसर पर शहरी विकास मंत्री श्री सुरेश शर्मा मुख्य अतिथि थे।

अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि खराब वातावरण और प्रदूषण की चिंताजनक स्थिति गंभीर चिंता का विषय है। समय के परिवर्तन के साथ–साथ ध्वनि का डेसीबल और पानी का प्रदूषण स्तर तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने वनस्पतियों और वन्य जीवों को बचाने की आवश्यकता पर बल दिया। "हम पीपल और तुलसी जैसी वनस्पतियों की पूजा करते हैं, लेकिन वृक्षों को बचाने के लिए पर्याप्त कदम नहीं उठाते हैं। हमें स्थिति को ठीक करने के लिए एक साथ आगे आना होगा।" उन्होंने जोड़ा।

माननीय सांसद श्री रामकुमार शर्मा ने पर्यावरण को बचाने में किसानों की भूमिका का जिक्र किया। "विश्व आज ग्लोबल वार्मिंग की चपेट में हैं और हम वृक्षारोपण और अन्य पर्यावरणीय गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं। इस दिशा में जैविक खेती भी एक सकारात्मक कदम साबित हो सकती है।" इस कार्यक्रम में अनेक वक्ताओं ने भाग लिया, जिन्होंने पर्यावरण प्रदूषण रोकने और भारत को बापू के सपनों का देश बनाने का आह्वान किया।

सेमिनार में उपस्थित विशिष्ट जन को संबोधित करते भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद डॉ. विनय सहस्रबुद्धे।

### श्रीमद् भागवत गीता के भागवत दर्शन पर सेमिनार

भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् के अध्यक्ष और राज्यसभा सदस्य डॉ. विनय सहस्रबुद्धे ने कहा कि, "श्रीमद् भागवत

श्रीमद्भगवत गीता के शाश्वत दर्शन पर चर्चा में तल्लीन देश के विभिन्न भागों से आए बुद्धिजीवी।

गीता हमारी अद्भुत विचारशील विरासत है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का एक प्रबल माध्यम है।"

डॉ. सहस्रबुद्धे श्रीमद्भगवत गीता के दर्शन पर आयोजित दो दिवसीय सेमिनार के उद्घाटन अवसर पर बोल रहे थे। यह सेमिनार 25–26 मार्च, 2018 को राजघाट स्थित गांधी दर्शन में गांधी स्मृति और दर्शन समिति व अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के तत्वावधान में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. सहस्रबुद्धे ने कहा कि "गीता पर भारत और विदेशों में अनेक व्याख्यान होते हैं, लेकिन गीता को समझने और इसके संदेशों को लोगों के सामने लाने का काम कम हो रहा है।"

समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने कहा कि अपने जीवन में महात्मा गांधी ने गीता को लोकप्रिय किया और इस पुस्तक ने उन्हें कर्मयोगी बनाया।

उद्घाटन समारोह के बाद दो सत्रों का आयोजन किया गया।

### दूसरा दिन

डॉ. बजरंग लाल गुप्ता ने कहा कि श्रीमद्भागवत गीता एक ऐसा ग्रंथ है, जो हमें अपने कर्तव्य पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। वह दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार के समापन अवसर पर बोल रहे थे।

अपने प्रमुख संबोधन में श्री गुप्ता ने कहा कि ज्ञान योग, भक्ति योग और कर्मयोग पर गीता में बहुत कुछ चर्चा की गई है। उन्होंने कहा कि गीता मात्र एक ग्रंथ नहीं, अपितु एक संस्थान है, जिससे जीवन जीने की कला सीखी जा सकती है। उन्होंने जीवन में लक्ष्य प्राप्ति के लिए मजबूत संगठन बनाने पर बल दिया।

कार्यक्रम के दूसरे दिन आयोजित विमर्श में, डॉ. विद्या बिन्दं सिंह, डॉ. भारतेंदु पाठक, जम्मू कश्मीर, डॉ. रामशरण गौड़ दिल्ली, डॉ. दिनेश प्रताप सिंह, महाराष्ट्र, डॉ. नीलू कुमारी, बिहार, श्री मंजर उल वसाई, यूपी, सुश्री हंसा अगोला दिल्ली ने भाग लिया।

वार्ता के चौथे सत्र में, डॉ. रामेश्वर मिश्रा, पश्चिम बंगाल, डॉ. सुप्रिया सहस्रबुद्धे, पुणे, डॉ. सुदीप बासु, पश्चिम बंगाल, डॉ. जोराम नबम, अरूणाचल प्रदेश और डॉ. जनार्दन यादव बिहार ने भी अपने विचार रखे। इस सत्र का संचालन उत्तर प्रदेश के डॉ. उमेश शुक्ला ने किया।

इससे पूर्व कार्यक्रम में दिल्ली विधानसभाध्यक्ष श्री रामनिवास गोयल ने भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि गीता की पूजा हमारे घरों में की जाती है। यह एक पवित्र ग्रंथ है।

इस मौके पर अखिल भारतीय साहित्य परिषद् के श्री श्रीधर पारादर, परिषद के मुख्य मंत्री श्री ऋषि कुमार मिश्र, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

### महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और उनकी प्रासंगिकता पर सेमिनार

समिति द्वारा आचार्य काकासाहेब कालेलकर लोक सेवा केंद्र बड़गांव बूंदी राजस्थान में "महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य और उनकी प्रासंगिकता" पर 29–30 मार्च, 2018 को दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इसमें करीब 250 प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं से गांधीजी के रचनात्मक कार्यों के बारे में बात करते कार्यक्रम संचालक

गांधी दर्शन में 'गंगा बचाओ' पैनल वार्ता में अपने विचार रखती श्रीमती रामा राउत (बांए से तीसरी)

कार्यक्रम के आरंभ में श्रीमती सावित्री भारद्वाज ने समिति और आचार्य काकासाहेब लोकसेवा केंद्र की गतिविधियों की जानकारी दी। प्रो. रमेश भारद्वाज ने सेमिनार की विषयवस्तु से लोगों को अवगत करवाया।

राजस्थान सरकार के बाल विकास विभाग की पूर्व उपनिदेशक श्रीमती शोभा पाठक ने महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यों पर अपने विचार रखे। इसके अतिरिक्त लिटिल एंजल्स स्कूल की प्राचार्या श्रीमती रेखा शर्मा, श्रीमती सरोज शर्मा, संस्कृत महाविद्यालय बूंदी की प्राचार्या श्रीमती अर्चना शर्मा, श्रीमती संतोष शर्मा, श्रीमती शकुंतला शर्मा, श्रीमती सुमन शर्मा, श्रीमती कविता शर्मा और श्रीमती भावना सिंह ने भी कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए।

दूसरे दिन डॉ. गीतांजली देवी और श्रीमती बिमला ने प्रतिभागियों को योग और प्राकृतिक चिकित्सा के लाभ गिनाए। प्रतिभागी स्कूलों के बच्चों ने संगीत, भाषण, कहानी और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं ने एकल और समूह लोक कलाओं का प्रदर्शन किया।

दिनांक 29 मार्च, 2018 को समापन सत्र का आयोजन किया गया। इस समारोह में भारी संख्या में किसानों, मजदूरों, व्यवसायियों, अध्यापकों, विद्यार्थियों व महिलाओं ने उत्साह से भाग लिया।

## दांडी मार्च की 88वीं वर्षगांठ पर 'गंगा बचाओ' पर पैनल वार्ता आयोजित

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा गंगा बचाओ अभियान के सौजन्य से 'गांधी, गंगा, गिरीराज' पर पैनल वार्ता गांधी दर्शन में आयोजित की गई। दिनांक 12 मार्च, 2018 को दांडी मार्च की 88वीं वर्षगांठ के मौके पर आयोजित इस कार्यक्रम में नदियों के संरक्षण पर विचार–विमर्श किया गया। इसमें करीब 25 लोगों ने भाग लिया।

प्रतिभागियों ने कार्यक्रम में नदियों की स्वच्छता को सुनिश्चित करने पर बल दिया। विशेषतः घाटों की सफाई और वातावरण की शुद्धता पर बातें की गई। राष्ट्रीय महिला संस्थान की अध्यक्षा श्रीमती रामा राउत ने वार्ता में प्रमुख भूमिका निभाई। उन्होंने अपने संबोधन में गंगा व दूसरी नदियों के संरक्षण के लिए युवाओं को आगे आने का आह्वान किया।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। इस कार्यक्रम के सह संयोजक कस्तूरबा गांधी राष्ट्रीय स्मृति ट्रस्ट, इंदौर और अहिंसा विश्व भारती नई दिल्ली थे।

# पूर्वोत्तर में कार्यक्रम

**'प्रकृति–मानव–वन्यजीवन परस्पर सहअस्तित्व : गांधीवादी दर्शन' एक कार्यशाला**

समिति द्वारा सीसीबीओएस के सौजन्य से 'प्रकृति–मानव–वन्यजीवन परस्पर सहअस्तित्व : गांधीवादी दर्शन' विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला 7–8 अगस्त, 2017 को दीमापुर नागालैंड में आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में समिति के पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता ने भाग लिया।

सुश्री लियांग्सी निउमा अपने विचार व्यक्त करती हुई।

श्री ओबेड स्यू कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए।

सुश्री के.एला ने अतिथियों और संसाधन व्यक्तियों का परिचय कराते हुए कार्यक्रम के उद्देश्यों और परिकल्पना की जानकारी दी। साकुस मिशन कॉलेज की प्राचार्या डॉ. अरेंला अय्यर ने कहा कि यह कार्यक्रम सभी प्रतिभागियों के लिए लाभकारी साबित होगा और इसके अच्छे परिणाम सामने आएंगे। दीमपुर के मुख्य वन्यजीव वार्डन श्री सत्यप्रकाश त्रिपाठी ने प्रमुख भाषण दिया।

उन्होंने गांधीजी की अहिंसा की अवधारणा का जिक्र करते हुए प्रकृति–मानव–वन्यजीवन संबंधों में अहिंसा के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि पहले मानव–वन्यजीवन संबंधी संघर्ष नहीं होते थे, लेकिन अब यह खूब होते हैं। यह संघर्ष इसलिए होते हैं, क्योंकि जनसंख्या विस्फोट के कारण वन्यजीवों के लिए स्थान कम होते जा रहे हैं और वन्यजीवन के लिए उपयुक्त स्थान मानव ने ले लिए हैं। इसके अतिरिक्त हमारे स्वार्थों के चलते प्रकृति का दोहन जारी है।

उन्होंने वन्यजीवन संरक्षण संबंधी केन्द्रीय कानून और नागालैंड के कानूनों की जानकारी दी। वन्यजीव–मानव के संघर्षों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि क्षेत्र के कुछ जिलों को 'हाथी गलियारा' के रूप में जाना जाता है, वहां खासकर वोखा, मोकोचुंग और जुनेबोटो में मनुष्य और वन्यजीवों में संघर्ष होता है।

श्री गुलशन गुप्ता ने प्रतिभागियों को कुछ विमर्शात्मक खेल करवाए। इन गतिविधियों के माध्यम से उन्होंने संचार के महत्व और मनुष्य–वन्यजीवों के संबंधों को महत्व देकर प्रकृति और पर्यावरण को बचाने का संदेश दिया। प्रथम दिन आयोजित विभिन्न सत्र थे–

- पर्यावरण संबंधी मुद्दों को समझना। हम कैसे कार्य करें?
- लुप्तप्राय प्रजातियों की नियमानुसार रक्षा

दूसरे दिन कॉलेज के इको क्लब के साथ सत्र हुए। सत्र का आरंभ पिछले दिन के अनुभवों के साथ सहायक प्राध्यापक मोनथुंग ने किया। उन्होंने बताया कि इको क्लब की स्थापना का उद्देश्य पर्यावरण को स्वच्छ बनाना है।

नागालैंड जूलोजिकल पाक्र के सहायक वन्य संरक्षक श्री ओबेड स्यू ने विश्व के भूमि उपयोग आंकड़ों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 38 प्रतिशत भूमि खेती के लिए इस्तेमाल की जाती है, जबकि 15 प्रतिशत जैव विविधता संरक्षण के लिए उपयोग होती है। इन आंकड़ों के आधार पर उन्होंने बताया कि मनुष्य की जनसंख्या और गतिविधियों में वृद्धि के कारण मानव और वन्य जीवों में संघर्ष के मामलों में भी वृद्धि हो रही है।

उन्होंने नेपाल के चितवन राष्ट्रीय पाक्र की केस स्टडी के निष्कर्ष बताते हुए कहा कि वहां टाइगर और मानव शांतिपूर्ण तरीके से रह रहे हैं। उन्होंने नागालैंड राज्य के संदर्भ में आर्टिकल 371, की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लोगों की गतिविधियां, राज्यों की जिम्मेदारी और सामूहिक जिम्मेदारी तय करके हम वन्यजीवों को संरक्षित कर सकते हैं।

फिंगरप्रिन्ट्स के श्री होंग्बा ने युवा और संरक्षण विषय पर सत्र को संबोधित किया। उन्होंने गांधीजी को उद्धृत करते हुए कहा कि गांधी जी ने कहा था, "प्रकृति मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकती है, लेकिन उसके लालच की पूर्ति नहीं कर सकती।" उन्होंने कहा कि पहला कदम यह है कि हमें पर्यावरण और वन्यजीवन की कदर करनी होगी। छोटे से छोटा प्राणी भी पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए हमें प्रकृति के सभी प्राणियों से प्रेम करना चाहिए। दूसरा कदम यह है कि इन बातों को अपने कर्मों में उतारना होगा। यहां राजनीतिक कदम उठाने होंगे जैसे–अनुबंध, सम्मेलन, घोषणाएं, परामर्श और प्रोटोकॉल, हमें जीवन शैली को संयमित करना होगा, जहां सभी की भूमिका महत्वपूर्ण, प्रकृति प्रेमी, उर्जा बचाने वाली और स्थिर हो।

दीमापुर के मुख्य वन्यजीव वार्डन श्री सत्यप्रकाश त्रिपाठी वन्य जीवन पर अपने विचार प्रकट करते हुए।

उन्होंने कहा कि युवा संरक्षण में अपने कार्यों की बदौलत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उन्होंने कहा कि युवा काफी संख्या में हैं, वे ज्ञानवान और उर्जावान हैं, उनके पास संकल्प शक्ति, तकनीक, उर्जा का भंडार है, जो उन्हें बेहतर कार्य करने के लायक बनाते हैं।

सुश्री के. एला, निदेशक प्रोडीगल्स होम ने कहा कि प्रतिभागियों को पर्यावरण के संबंध में काफी ज्ञान अर्जित करना चाहिए। उन्हें छोटे मगर महत्वपूर्ण कार्य, जैसे ऊर्जा बचाव, कूड़े को कम करना, संसाधनों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग आदि करके, व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने की शुरूआत करनी चाहिए। इस अवसर पर अनेक सुझाव भी आए। वृतचित्रों का प्रदर्शन भी किया गया। वक्ताओं ने इस बात पर बल दिया कि ऐसे कार्यक्रम अन्य जगहों पर भी होने चाहिए।

श्री गुलशन गुप्ता ने स्वयंसेविता पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि स्वयंसेविता विशिष्ट होनी चाहिए और एक टीम बनाकर इसे किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसके लिए पहला कदम ज्ञान प्राप्त करना है और उसके बाद सहभागियों के साथ विचार साझा किए जाने चाहिए। स्वयंसेविता समर्पण और सेवा की भावना मांगती है। उन्होंने कहा कि स्वयंसेविता में समय बड़ा उपयोगी होता है, इसलिए समय प्रबंधन अति आवश्यक है। सत्र में अनेक दिलचस्प खेल व अभ्यास करवाए गए।

इस कार्यशाला में प्रतिभागियों से निम्नलिखित सुझाव आए:

- ऐसे कार्यक्रम सामान्य जन के लिए कॉलोनी स्तर पर आयोजित किए जाएं–वन्यजीव विभाग ऐसे कार्यक्रमों के लिए संसाधन व्यक्तियों को उपलब्ध करवाए
- एक विशिष्ट विषय पर कार्यशाला की जाए, क्योंकि पर्यावरण का विषय एक बहुत व्यापक विषय है।
- इको क्लबों को राज्य से बाहर के बेहतर इको क्लबों का दौरा करवाया जाए।
- इको क्लब के प्रयासों को मजबूती प्रदान करने के लिए परामर्शदात्री समिति बनाई जाए।
- इको क्लब के लिए मासिक कार्य योजना लाई जाए।
- गांधी स्मृति और दर्शन समिति एवं एनजीओ के सहयोग से संरक्षण प्रयासों को मजबूत किया जाए और समान कार्यशाला आयोजित की जाएं।

सुश्री असुंगिया अनिचारी, सहायक प्राध्यापिका, एसएम कॉलेज ने धन्यवाद प्रस्ताव की प्रस्तुति से कार्यशाला का समापन किया।

### कला संस्कृति संगम का आयोजन

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने नॉर्थ इस्ट कल्चरल सिम्पोजियम के सौजन्य से तीन दिवसीय कला संस्कृति संगम कार्यक्रम का आयोजन गरूड़ाचल विद्यापीठ बेलबेरी, दक्षिण पश्चिम गारो हिल्स मेघालय में किया। इस कार्यक्रम में 250 स्थानीय कलाकारों ने अपनी अदभुत पारंपरिक सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में करीब 1000 लोगों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

**प्रथम दिन : 8 सितंबर, 2017**

कला संस्कृति संगम का उद्घाटन 8 सितंबर, 2017 को हुआ। इसके मुख्य अतिथि श्री अल्बर्ट जी मोमिन रहे। विशिष्ट अतिथि के रूप में सामाजिक कार्यकर्ता श्री बलराम दास राय, श्री राम सिंह उपस्थित थे। समिति का प्रतिनिधित्व पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता ने किया।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में समिति द्वारा आयोजित कला संस्कृति संगम के दृश्य।

कार्यक्रम का आगाज श्री अलबर्ट जी मोमिन, श्री श्यामेंद्र ब्रहमचारी साधु बाबा ने भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर किया। गरूड़ाचल विद्यापीठ के विद्यार्थियों ने इस मौके पर वन्दना प्रस्तुत की। स्वागत भाषण गरूड़ाचल विद्यापीठ के प्रभारी और सामाजिक कार्यकर्ता श्री राहुल पारीक ने दिया।

मुख्य भाषण श्री गुलशन गुप्ता ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर उपस्थित अन्य वक्ताओं में श्री बलराम दास राय, बीडीओ, श्री अल्बर्ट जी मोमिन आदि शामिल थे।

प्रथम दिन गारो हिल्स मेघालय की विभिन्न जनजातियों जैसे गारो, कोच, डालू, हजोंग ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर गारो टीम द्वारा गारो जनजाति के पारंपरिक विवाह का प्रदर्शन सबके आकर्षण का केंद्र रहा। इस प्रस्तुति से कलाकारों ने उपस्थित जन का मन मोह लिया।

**दूसरा दिन : 9 सितंबर, 2017**

दूसरे दिन की शुरूआत प्रातः वन्दना के साथ हुई। बेलबेरी के कोच समुदाय द्वारा वर्षा की देवी इंदिरा की प्रशस्ति में प्रस्तुति ने लोगों का मन मोह लिया। मणिपुर के श्री बिस्वेश्वर शर्मा ने थांग–ता मार्शल आर्ट कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में हेमन्त कालिता के नेतृत्व में नौगांव की टीम ने पारंपरिक बिहू नृत्य प्रस्तुत किया। इस नृत्य की प्रस्तुति ने उपस्थित जनों को तालियां बजाने पर मजबूर कर दिया। अरूणाचल की टीम ने श्री देलोंग पडुंग की अगुवाई में योयो गंगा की प्रस्तुति दी। यह अरूणाचल प्रदेश राज्य की आदिवासी कला का एक प्रकार व विरासत नृत्य है।

जयंतिया हिल्स मेघालय की टीम ने श्री हेबर्मी सुनघो के नेतृत्व में पारंपरिक जयंतिया नृत्य प्रस्तुत किया।

**तीसरा दिन : 10 सितंबर, 2017**

कार्यक्रम के अंतिम दिन स्थानीय विधायक (दक्षिण पश्चिम गारो हिल्स मेघालय के अमपाती विधानसभा क्षेत्र,) श्री विनर डी संगमा सरकार के प्रतिनिधि के रूप में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे।

विशिष्ट अतिथि के तौर पर श्रीमती सादिया रानी संगमा, सीईओ गारो हिल्स स्वायत्त जिला परिषद तुरा और श्री

नृपेंद्र कोच एमडी, गारो हिल्स स्वायत्त जिला परिषद, श्री भूपेंद्र हजोंग, ईएम गारो हिल्स स्वायत्त जिला परिषद उपस्थित थे।

इसके अतिरिक्त श्री श्यामानंद ब्रह्मचारी, श्री धर्मेंद्र कोच, अध्यक्ष, गरूड़ाचल विद्यापीठ बेलबेरी और समिति के श्री गुलशन गुप्ता भी उपस्थित थे।

सनिति द्वारा पूर्वोत्तर क्षेत्र में आयोजित कला संस्कृति संगम में विभिन्न लोककलाओं के रंग को प्रस्तुत करते कलाकार

समिति द्वारा आयोजित कला संस्कृति संगम में उपस्थित बच्चे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति में कोच लोक नृत्य, त्रिपुरा के होजागिरी नृत्य ने लोगों को आकर्षित किया।

इस अवसर पर चालीस मिनट की अवधि का फैशन शो 'परिधानम्' प्रस्तुत किया गया, जिसका खूबसूरत संचालन और संयोजन पासीघाट अरूणाचल प्रदेश के श्री देलोंग पडुंग ने किया। इस कार्यक्रम में 24 स्थानीय लड़के व लड़कियों ने हिस्सा लिया।

इस तीन दिवसीय प्रस्तुति के अंत में गारो हिल्स क्षेत्र मेघालय और मेघालय शिक्षा समिति के निरीक्षक श्री कमल कुमार श्रीवास्तव ने अतिथियों का धन्यवाद किया और गांधी स्मृति और दर्शन समिति का आभार प्रकट किया।

### परस्पर सह अस्तित्व पर कार्यशाला का आयोजन

समिति द्वारा जवाहर नवोदय विद्यालय महेंद्रगंज, दक्षिण–पश्चिम गारो हिल्स मेघालय के सौजन्य से प्रकृति–मानव और वन्यजीवन परस्पर सहअस्तित्व पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। करीब 120 लोग इस कार्यशाला में सम्मिलित हुए।

इसका उद्घाटन स्कूल के प्राचार्य डॉ. संतोष गौड़ ने किया। इस अवसर पर श्री आनंद कोच, प्राचार्य बशबारी सेकेंडरी स्कूल, दक्षिण–पश्चिम गारो हिल्स, श्री राहुल पारीक शारीरिक शिक्षा प्रभारी गरूड़ाचल विद्यापीठ, समिति के पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता उपस्थित थे।

कार्यशाला का उद्देश्य पर्यावरण के मुद्दों पर विद्यार्थियों का ध्यान खींचना था। लोगों को संबोधित करते हुए श्री राहुल पारीक ने गारो हिल्स के युवाओं की वास्तविक तस्वीर का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में बहुत अवसर हैं,

लेकिन हम यहां के समय, ऊर्जा और संसाधनों को पर्याप्त ढंग से इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। यहां सही निर्देश और दिशा दिखाने वालों के अभाव के कारण हो रहा है।

आनन्द कोच ने युवाओं के सकारात्मक दृष्टिकोण को रेखांकित करते हुए कहा कि युवाओं को अपने समाज का समूह बनाना चाहिए और राष्ट्र की प्रगति के लिए सक्षम युवा शक्ति का निर्माण किया जाना चाहिए।

दक्षिण–पश्चिम गारो हिल्स मेघालय में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित जवाहर नवोदय विद्यालय के विद्यार्थी

इस अवसर पर श्री गुलशन गुप्ता ने विकास का सकारात्मक दृष्टिकोण और युवाओं की भावनाएं विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

उन्होंने कहा कि विकास एक सामूहिक उत्तरदायित्व है। हमें अपने जीवन की सारी ऊर्जा और शक्ति का उपयोग अपने गांव और कस्बे की उन्नति करने में करना चाहिए। हमारे क्षेत्र में कोई अन्य विकास नहीं कर सकता। बाहर से आने वाले लोग केवल व्यवसायी हैं, वे सामाजिक कार्यकर्ता नहीं है।

उन्होंने कहा कि वे आपका ही संसाधन और लोग इस्तेमाल करेंगे और यहां से करोड़ों कमाएंगे, लेकिन स्थानीय लोगों की स्थिति वही रहेगी, जो आज है।

उन्हें अपने भवन बनाने के लिए हमें अपनी जमीन उपलब्ध नहीं करवानी चाहिए। उन्होंने कहा, "गांव का आदमी गांव में रूकेगा तो ही गांव का पानी गांव में रूकेगा।"

कार्यशाला में एक–दूसरे के अनुभवों पर भी मंथन किया गया। प्रतिभागियों ने तय किया कि इन मुद्दों पर भविष्य में भी मिलकर चर्चा जारी रखी जाएंगी।

## राष्ट्रवाद, धर्मनिरेपक्षता और अनेकत्व का पुनर्विष्कारः मीडिया, संभाषण और विखंडन पर सेमिनार

राष्ट्रवाद, धर्मनिरेपक्षता और अनेकत्व का पुनर्विष्कार : मीडिया, संभाषण और विखंडन पर दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन 11 से 12 नवम्बर, 2017 को गुवाहाटी में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन मिजोरम विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग द्वारा गुवाहाटी विश्वविद्यालय के संचार और पत्रकारिता विभाग के सहयोग से पूर्वोत्तर भारत में मीडिया शिक्षा की स्वर्ण जयंती के अवसर पर किया गया।

कार्यक्रम में इंडिया रिव्यू के सेवानिवृत संपादक श्री जे. वी. लक्ष्मण राव प्रमुख वक्ता के तौर पर उपस्थित थे। अपने संबोधन में श्री राव ने राष्ट्रवाद, मीडिया संभाषण और विकास नीतियों की चर्चा भारत और अमेरिका के संदर्भ में की।

गुवाहाटी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मृदुल हजारिका ने वर्तमान परिस्थितियों के संदर्भ में मीडिया की भूमिका पर अपने विचार रखे और शांति व अहिंसा के प्रसार के लिए मीडिया के राजनीतिक संस्थानों के साथ साझेदारी की आवश्यकता पर बल दिया।

संगठन कमेटी के अध्यक्ष प्रो. के. वी. नागराज ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में राष्ट्रवाद और धर्मनिरपेक्षता की गांधीवादी परिकल्पना पर गहनता से अपने विचार रखे। उन्होंने स्वराज और सुराज की स्थापना के लिए सविनय अवज्ञा के महत्व को रेखांकित किया।

इस सेमिनार में "विकासात्मक संचार" पर नौ समानान्तर सत्र हुए, जिसमें अनेक लेखक उपस्थित हुए और उन्होंने विकास के गांधीवादी मॉडल का विश्लेषण किया।

12 नवम्बर को, दूसरे विस्तृत सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें प्रो. टी. के. थॉमस, प्रो. सहिदुल हसन, प्रो. देवेश किशोर और प्रो. प्रमोद कुमार जेना ने भाग लिया। इसकी अध्यक्षता पूर्वोत्तर कॉन्सिल शिलॉन्ग के श्री मानस राजन महापात्रा ने की।

सेमिनार में 400 से अधिक प्रतिनिधियों/प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसका संयोजन गुवाहाटी विश्वविद्यालय के संचार और पत्रकारिता विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. अनुकरण दत्ता और उनकी टीम ने किया।

## बच्चे और क्षमता निर्माण

समिति द्वारा महिला और बाल देखभाल मिशन के सौजन्य से "बच्चे और क्षमता निर्माण" विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 15 दिसम्बर, 2017 को मणिपुर के जिला इम्फाल स्थित लेइकाई में आयोजित किया गया। इसमें मणिपुर के अलग–अलग क्षेत्रों से आए 102 बच्चों ने भाग लिया।

**कार्यशाला के निम्नलिखित उद्देश्य थे:**

- मणिपुर में शांति निर्माण में बच्चों की भागीदारी बढ़ाना।
- शांति निर्माण में बच्चों की भूमिका के प्रति लोगों को संवेदनशील बनाना।
- शांति निर्माण में बच्चों की क्षमता को रेखांकित करना।

इम्फाल में 'बच्चे और क्षमता निर्माण' कार्यक्रम में बच्चों को संबोधित करते संसाधन व्यक्ति

**सत्रों का संचालन करने वाले संसाधन व्यक्ति थे'**

1. डॉ. धनबीर लेश्राम, सामाजिक विज्ञानी
2. श्री सोइबम, नान्दो, पूर्व बाल विकास कमेटी
3. सुश्री रणबाला लेश्राम, बाल अधिकार कार्यकर्ता

प्रतिभागियों ने इस मौके पर राष्ट्र निर्माण में बच्चों की भूमिका पर गहन मंथन किया। चर्चा में शामिल लोगों का कहना था कि बच्चों की सक्रिय भागीदारी ही राष्ट्र निर्माण व शांति स्थापना में नींव के पत्थर के रूप में काम करेगी। बच्चे योग्यता में ज्यादा महत्वपूर्ण क्षमता निर्माता होते हैं। हमें उन्हें सुनना चाहिए और उनके प्रयासों में उनका सहयोग करना चाहिए।

प्रतिभागियों ने कहा कि यदि युवा लोगों को अपने विचारों इच्छाओं को व्यक्त करने का मौका मिले, तो यह पाया गया है कि उनकी अभिव्यक्ति ताजा, साहसी और उम्मीद भरी होती है। व्यस्कों को बच्चों की क्षमता को कम नहीं आंकना चाहिए। वे अच्छे शांति निर्माता और राष्ट्र निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

वक्ताओं ने इस बात को रेखांकित किया कि बच्चों को समाज में सक्रिय भागीदारी का पूरा मौका दिया जाना चाहिए।

## परंपरागत वस्त्रों और हैंडीक्राफ्ट पर चार दिवसीय कार्यशाला

अरूणाचल प्रदेश की एक युवती पारंपरिक कला में अपने हाथ आजमाती हुई।

समिति द्वारा परंपरागत वस्त्रों और हैंडीक्राफ्ट पर चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन जिला ग्रामीण विकास अभिकरण, अरूणाचल प्रदेश के सहयोग से दिनांक 27 जनवरी से 1 फरवरी को किया गया। इस कार्यक्रम में अरूणाचल प्रदेश के जिला एंजो से 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया, इन्हें विशेषज्ञों ने प्रशिक्षित किया।

## अरूणाचल प्रदेश की परंपरागत औषधियों के प्रयोग पर कार्यशाला आयोजित

जिला ग्रामीण विकास अभिकरण द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 31 जनवरी से 1 फरवरी, 2018 तक एंजो जिला, अरूणाचल प्रदेश में किया गया। इसका

विषय था– अरूणाचल प्रदेश की परंपरागत औषधियों के प्रयोग। इसमें चयनित 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

## गांधीवादी दर्शन और शांति पत्रकारिता पर सेमिनार और कार्यशाला का आयोजन

तेजपुर विश्वविद्यालय में आयोजित सेमिनार में अपने विचार व्यक्त करते हुए विशिष्ट वक्तागण।

समिति द्वारा तेजपुर विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के सौजन्य से गांधीवादी दर्शन और शांति पत्रकारिता पर सेमिनार और कार्यशाला का आयोजन 21–22 फरवरी, 2018 को किया गया।

इस दो दिवसीय कार्यशाला में मीडिया क्षेत्र के विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा शांति पत्रकारिता का विषय समझाते हुए महात्मा गांधी के अनुभवों और विचारों पर व्याख्यान दिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत गांधीजी के प्रिय भजन 'रघुपति राघव राजा राम' के साथ हुआ। जनसंचार विभागाध्यक्ष श्री अभिजीत बोहरा ने आए हुए अतिथियों का स्वागत किया और उनका आभार प्रकट किया। विश्वविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. अंजुमन ने आज की मीडिया पर अपने विचार रखे। कला और सामाजिक विज्ञान स्कूल के डीन प्रो. पी. के. दास और विश्वविद्यालय रजिस्ट्रार भी इस मौके पर उपस्थित थे।

असम ट्रिब्यून के अतिरिक्त संपादक श्री पी. जे. बरूआ ने कार्यक्रम की विषय वस्तु पर अपने विचार रखते हुए कहा कि महात्मा गांधी में गेम चेंजिंग पत्रकार के तमाम गुण थे, इन्हीं गुणों के कारण बिना किसी हिंसा और खून बहाए, ब्रिटिश सरकार भारत छोड़ने पर सहमत हुई। उन्होंने सुझाव दिया कि सभी मीडिया कर्मियों को इतिहास में झांकना चाहिए ताकि वे शांति पत्रकारिता की कला को समझ सकें। समानता और न्याय के लिए यह क्रांति उत्पन्न कर सकती है।

"गांधीवादी दर्शन पत्रकारिता के कार्य में आज भी उतना ही प्रासंगिक है, महात्मा गांधी केवल राष्ट्रपिता ही नहीं थे, अपितु वे सच्ची पत्रकारिता के भी पिता थे। उनके दर्शन को लागू करने के लिए बहुत बड़ा साहस और नैतिक मजबूती की आवश्यकता है।"

उनका विश्वास था कि "अहिंसा शाश्वत है और यह किसी के परिवार, समाज और संसार, सब में इस्तेमाल की जा सकती है। अहिंसा की तकनीक के माध्यम से, किसी विरोधी को नैतिक रूप से बदला जा सकता है।"

"यदि हम पूर्वोत्तर जैसे विवादित क्षेत्र में रहते हैं, तो वहां मीडिया को सदैव जिम्मेदारीपूर्ण पत्रकारिता का प्रयास करना चाहिए, ताकि शांति, सांप्रदायिक सौहार्द और मनुष्य एकता को कोई नुकसान न पहुंचे।" उन्होंने आगे कहा।

डॉ. बरूआ ने "जीवन के पुनर्निर्माण की कहानियों की खोज और विवाद प्रभावित क्षेत्रों में पुनर्वास दोष की अनकही कहानियां" और "झगड़ों को कवर करने की चुनौतियां और मुद्दे : एक संपादक का दृष्टिकोण" विषय पर भी अपने विचार रखे।

विद्यार्थियों ने इस अवसर पर एक पोस्टर प्रदर्शनी भी लगाई। उन्होंने जीवन का गांधीवादी मार्ग, पुलित्जर पुरस्कार विजेताओं, शांति पत्रकारिता में करने और न करने वाली चीजें, पत्रकारों का शोषण, पूर्वोत्तर में विवाद आदि पर आधारित कलाकृतियों का प्रदर्शन भी किया।

समापन सत्र का अवसान तेजपुर विश्वविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. जुनाली डेका के समापन भाषण से हुआ।

प्रथम दिन आमंत्रित विशेषज्ञों और विद्यार्थी प्रतिभागियों के बीच खुली परिचर्चा हुई, जिससे जानकारियों के आदान–प्रदान को एक मंच मिला और प्रतिभागियों ने अनेक नई बातें विशेषज्ञों से जानी।

स्वतंत्र पत्रकार और लेखक श्री राजीव भट्टाचार्जी ने क्षेत्र रिपोर्टिंग में होने वाली घटनाओं का जिक्र करते हुए बताया कि विवादों की रिपोर्टिंग करते समय एक पत्रकार के लिए निष्पक्षता बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है।

तेजपुर विश्वविद्यालय में आयोजित सेमिनार में उपस्थित युवा प्रतिभागी।

नेजाइन की संपादक डॉ. सईद मुर्तजा अलफरीद हुसैन, सहायक प्राध्यापक असम विश्वविद्यालय ने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि शांति पत्रकारिता की बारीकियों को समझें। उन्होंने इस संबंध में विश्व भर के उदाहरण देते हुए शांति पत्रकारिता के विषय को अधिक स्पष्टता से समझाया।

प्रतिभागियों में से श्री अमलन ज्योति दास, निदर्षना महंत, तीर्थराज गोहेन और आर. के. यईबिरन सेना ने गांधीजी और शांति पत्रकारिता, विवादों में मीडिया की भूमिका, शांति पत्रकारिता बनाम युद्ध पत्रकारिता और पूर्वोत्तर में शांति पत्रकारिता विषयों पर अपने विचार रखे।

### दूसरे दिन

डॉ. सईद मुर्तजा अलफरीद हुसैन के संचालन में शांति पत्रकारिता विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें तेजपुर विश्वविद्यालय के जनसंचार पत्रकारिता और विकासात्मक संचार विद्यार्थियों को गांधी दर्शन और शांति पत्रकारिता की मूलभूत जानकारियों से अवगत करवाया गया।

उन्होंने दूसरे और चौथे सेमेस्टर के विद्यार्थियों को शांति और मतभेद पत्रकारिता के भेद बताए। उन्होंने विद्यार्थियों को शांति संबंधी समाचारों के प्रसार और लोगों में शांति स्थापना की सूचना फैलाने के गुर भी सिखाएं।

विद्यार्थियों ने इस मौके पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के विवादों के वास्तविक उदाहरणों के बारे में चर्चा की। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण मुद्दों पर सकारात्मक चर्चा और वाद–विवाद भी किए गए।

### स्कूली बच्चों में क्षमता निर्माण और नेतृत्व प्रशिक्षण

समिति द्वारा खा–इम्फाल उच्च विद्यालय इम्फाल में 24–25 मार्च, 2018 को स्कूली बच्चों में क्षमता निर्माण और नेतृत्व प्रशिक्षण विषय पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कस्तूरबा गांधी इंस्टीच्यूट ऑफ डेवलेपमैंट के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में वंगाई इम्फाल के जोनल शिक्षा अधिकारी श्री वाई हेमचंद्र सिंह मुख्य अतिथि थे। विशिष्ट अतिथि के तौर पर केजीआईडी मणिपुर के अध्यक्ष श्री एन इनोचा सिंह उपस्थित थे, अध्यक्षता श्रीमती एल रंघोनी देवी, मुख्याध्यापिका खा–इंफाल उच्च विद्यालय ने उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता की।

समिति द्वारा केजीआईडी इम्फाल के सौजन्य से आयोजित कार्यक्रम में अपने विचारों से लोगों को अवगत करवाते विषय विशेषज्ञ।

अपने स्वागत भाषण में डॉ. ओ. सरिता देवी सचिव केजीआईडी ने कहा कि केजीआईडी ने समिति के सहयोग से बच्चों और युवाओं के लिए शांति निर्माण, क्षमता निर्माण, नेतृत्व प्रशिक्षण, स्वयंसेवक प्रशिक्षण, कौशल विकास कार्यक्रम पर आधारित अनेक कार्यशालाओं का आयोजन

मणिपुर में आयोजित कार्यशाला में विभिन्न गतिविधियों में तल्लीन बच्चे।

किया है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी देश के स्तंभ हैं और इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों के भविष्य को आकार प्रदान करना और उनके नेतृत्व गुणों को विकसित करना है।

श्री वाई. हेमचंद्र सिंह ने कहा कि अधिक अंक अर्जित करने के लिए विद्यार्थियों को निर्धारित किताबों के अलावा संदर्भ पुस्तकों को पढ़ना होगा, इससे उनके ज्ञान में वृद्धि होगी। उन्होंने कहा कि, "नेता पैदा नहीं होते, उन्हें बनाया जाता है।"

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में अनेक सत्र हुए–

- प्रथम सत्र–श्रीमती लोंजाम एलेना देवी, नेहरू युवा केंद्र संगठन की प्रशिक्षक ने 'स्वास्थ्य और स्वच्छता के महत्व' विषय पर चर्चा करते हुए खुले में शौच मुक्त गांव के रूप में फेयांग और थांगा गांव का उदाहरण प्रस्तुत किया।
- दूसरा सत्र अखिल भारतीय आकाशवाणी इम्फाल के कार्यक्रम कार्यकारी बिजया युमलेम्बन के साथ हुआ। इसका विषय था–'करियर मार्गदर्शन और परामर्श।
- तीसरा सत्र डॉ. ओ. सरिता देवी द्वारा बच्चों में संचार कौशल की आवश्यकता विषय पर आयोजित किया गया।
- प्रथम सत्र "गांधी को जानो" पर आधारित था, जिसमें डॉ. ओ सरिता देवी ने महात्मा गांधी के जीवन पर आधारित 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' प्रदर्शनी का मार्गदर्शन दौरा करवाया।
- दूसरा सत्र–इस सत्र में 'हमारा पर्यावरण बचाओ' विषय पर चित्रकला प्रतियोगिता हुई। इसके निर्णायक इम्फाल कला महाविद्यालय के उपप्राचार्य डॉ. के देलीकुमार सिंह थे। इसके विजेता थे– दोगलास लामायम, सेंट जॉर्ज स्कूल प्रथम, लिंथोई सपम, के. वी. इम्फाल द्वितीय व सोनिका थोंगम, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय तृतीय। सभी विजेताओं को क्रमशः 1500, 1000 और 500 रू का नकद पुरस्कार दिया गया।
- तीसरा सत्र–इस सत्र में 'सत्य, प्रेम और शांति' विषय पर कथा वाचन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता के निर्णायकों में श्री जी. श्यामानंद शर्मा और श्रीमती सुशन मोईरंगथेम थे। इस प्रतियोगिता के विजेता जिन्होंने रू. 1500/–, रू. 1000/– व रू. 500/– नकद पुरस्कार जीता, वे थे– वीनस खुंदराकपम, लिटिल फलॉवर स्कूल, लोकराकपम हेनी, मारिया मोंटेसरी स्कूल और लेइमा देवी खा–इम्फाल उच्च विद्यालय।

मणिपुर में आयोजित कार्यक्रन में बच्चों की सांस्कृतिक प्रस्तुति कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण रही।

समिति द्वारा इम्फाल के कस्तूरबा गांधी विकास संस्थान को सौंपी गई महात्मा गांधी के जीवन और संदेशों पर आधारित प्रदर्शनी के बारे में प्रतिभागी बच्चों को बताती डॉ. ओ. सरिता देवी।

समापन सत्र समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. प्रेमचंद सिंह, सहायक प्राध्यापक, काकचिंग खुनोउ कॉलेज, उपस्थित थे। विशिष्ट अतिथि के तौर पर श्री एन. इनोचा सिंह, अध्यक्ष, केजीआईडी और श्रीमती एल. रनधोनी देवी, मुख्याध्यापिका, खा–इम्फाल उच्च विद्यालय उपस्थित थीं। इस मौके पर प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में हुई सांस्कृतिक कलाओं को प्रस्तुत किया :

1. के. मोनिका और उसके साथी, नूरेई तांगबी (समूह नृत्य)
2. केइशाम अंजलि, वांग मागी खोइमू (एकल नृत्य)
3. के. लेइमा और उसके साथी, नोंगथंग (समूह नृत्य)
4. एल. शेली देवी और उसके साथी, थांग ता (मार्शल आर्ट।)

**"पूर्वोत्तर में सांस्कृतिक एकता और शांति स्थापना में युवा" विषय पर ऑरिएंटेशन एवं कार्यशाला**

समिति द्वारा संस्कार भारती पूर्वोत्तर के सहयोग से "पूर्वोत्तर में सांस्कृतिक एकता और शांति स्थापना में युवा" विषय पर ऑरिएंटेशन कार्यशाला का आयोजन किया गया। नागालैंड के दीमापुर में 25–29 मार्च 2018 को आयोजित इस कार्यक्रम में युवा कला साधना शिविर का आयोजन भी किया गया।

पांच दिवसीय इस कार्यक्रम के समापन समारोह में नागालैंड सरकार के माननीय पीएचईडी मंत्री श्री जैकब जिमोमी मुख्य अतिथि थे। विशिष्ट अतिथि के तौर पर श्री अमीर चंद्र, अखिल भारतीय सह संयोजन सचिव, संस्कार भारती, डॉ. धनंजय कुशरे क्षेत्र प्रमुख, श्री पंकज सैकिया और जीतेन शर्मा वरिष्ठ कलाकार उपस्थित थे।

कला साधक के कलाकारों की रंगारंग प्रस्तुति इस पांच दिवसीय कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण का केंद्र रही। कला के विभिन्न क्षेत्रों जैसे, नृत्य, चित्रकला, संगीत के प्रसिद्ध कला गुरूओं के संयोजन में कलाकारों ने बेहतरीन प्रस्तुतियों से समां बांध दिया।

# राष्ट्रभाषा हिन्दी–हमारी पहचान

### 'हिन्दी साहित्य में गांधी और दिनकर की राष्ट्रीय चेतना' पर संवाद

समिति द्वारा जयते फाउंडेशन के सौजन्य से 'हिन्दी साहित्य में गांधी और दिनकर की राष्ट्रीय चेतना' विषय पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन 28 जुलाई, 2017 को किया गया। पंजिम गोवा में आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन गोवा की माननीय राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा ने किया।

1) गोवा की राज्यपाल माननीय श्रीमती मृदुला सिन्हा अन्य अतिथियों के साथ दीप प्रज्ज्वलन कर, कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए।

2) श्रीमती मृदुला गर्ग अपने विचार व्यक्त करती हुईं।

3) अन्य अतिथियों के साथ श्रीमती मृदुला गर्ग पुस्तिका का विमोचन करती हुई।

इस कार्यक्रम में 600 से अधिक लोग शामिल हुए। प्रमुख रूप से उपस्थित होने वाले गणमान्य लोगों में पूर्व केन्द्रीय मंत्री श्री सी. पी. ठाकुर, रामधारी सिंह की पौत्री श्रीमती ऊषा ठाकुर और सुश्री वृषाली एस. मांडेरकर, हिन्दी विभागाध्यक्ष, गोवा विश्वविद्यालय शामिल थे। मुख्य वक्ता के तौर पर जाने–माने साहित्यिक आलोचक डॉ. ओम निश्चल उपस्थित थे।

इस अवसर पर वक्ताओं ने महात्मा गांधी और राष्ट्रकवि दिनकर के साहित्य में निहित राष्ट्रवाद पर अपने विचार रखे। वक्ताओं का कहना था कि यद्यपि दोनों की विचारधारा अलग थी, लेकिन उनके उद्देश्य समान थे। दोनों राष्ट्रीय एकता व राष्ट्रीय चेतना जगाने की दिशा में प्रयासरत रहे।

### हिन्दी पखवाड़ा आयोजित

समिति द्वारा हिन्दी दिवस के अवसर पर दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2017 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस मौके पर गांधी दर्शन और गांधी स्मृति दोनों परिसरों में श्रुतलेख, निबंध, पत्र लेखन, कविता व भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें समिति के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। निर्णायक मंडल में वरिष्ठ पत्रकार श्री धर्मेंद्र सुशांत, श्री दिनेश मिश्रा व रोजगार समाचार पत्र के संपादक श्री आनंद सौरभ शामिल हुए। प्रतियोगिताओं का संचालन श्री प्रवीण दत्त शर्मा और श्री पंकज चौबे द्वारा किया गया।

गांधी स्मृति एवं गांधी दर्शन में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा में उत्साह से भाग लेते कर्मचारी।

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिता में भाग लेते स्टाफ सदस्य। यह प्रतियोगिता गांधी स्मृति व गांधी दर्शन परिसर में निर्णायकों व संचालकों की देखरेख में हुई।

विजेताओं को सम्मानित करते श्री बसंत, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान व श्री एस. ए. जमाल।

इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं:

1. श्रुतलेख : प्रथम–मनीष कुमार, द्वितीय–प्रेमचंद, तृतीय–अजय वर्मा
2. निबंध (क वर्ग) : प्रथम–शकुंतला, द्वितीय–दीपक तिवारी, तृतीय–शैलेष

   निबंध (ख वर्ग) : प्रथम–सुनील कुमार, द्वितीय–उमेश कुमार, तृतीय–राकेश शर्मा
3. कविता (क वर्ग) : प्रथम–ऋषिपाल, द्वितीय–शकुंतला, तृतीय–देशवीर सिंह

   कविता (ख वर्ग) :प्रथम– विजय कुमार, द्वितीय–स्मिता भान, तृतीय–उमेश कुमार
4. पत्र लेखन (क वर्ग) : प्रथम–नरेश कुमार, द्वितीय–शकुंतला, तृतीय–देशवीर सिंह

   पत्र लेखन (ख वर्ग) : प्रथम–शिवदत्त गौतम, द्वितीय–मनीष कुमार, तृतीय–उमेश कुमार
5. भाषण (क वर्ग) : प्रथम–मनीष कुमार, द्वितीय–देशवीर सिंह, तृतीय–दीपक तिवारी

   भाषण (ख वर्ग) : प्रथम–धर्मराज, द्वितीय–रूबी तिवारी, तृतीय–श्यामलाल

सभी विजेताओं को 28 अक्तूबर को हुए एक कार्यक्रम में पुरस्कृत किया गया। वरिष्ठ गांधीजन श्री बसंत और समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने सभी विजेताओं को पुरस्कृत किया।

## राष्ट्रभाषा उद्घोष सम्मेलन

समिति द्वारा राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास, दिल्ली सर्वोदय मंडल और राष्ट्रीय लोक समिति के सौजन्य से दो दिवसीय राष्ट्रभाषा उद्घोष सम्मेलन का आयोजन गांधी दर्शन परिसर में दिनांक 18–19 मार्च को किया गया। इस अवसर पर शराबबंदी पर भी चर्चा की गई। सम्मेलन में विभिन्न क्षेत्रों से आए 135 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में बिहार, मध्य प्रदेश, तमिलनाडु, ओडिशा, औरंगाबाद व अन्य राज्यों से आए लोग शामिल हुए।

दो दिवसीय इस सम्मेलन की अध्यक्षता लोक समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष और गांधीवादी चिंतक श्री गिरिजा सतीश ने की। संचालन लोक समिति के संयोजक श्री कौशल गणेश आजाद ने किया। कार्यक्रम का उद्घाटन केंद्रीय गांधी स्मृति निधि के सचिव श्री संजय सिंह ने किया। दिल्ली सर्वोदय मंडल के संयोजक डॉ. अशोक शरण ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

(ऊपर से नीचे) हिन्दी उद्घोष सम्मेलन में पत्रिका का विमोचन करते विशिष्ट अतिथि व लोगों के समक्ष अपने विचार व्यक्त करते हुए समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

सम्मेलन में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया।

श्री गिरीजा सतीश ने इस अवसर पर कहा कि हमारे संविधान निर्माताओं ने राज्य सरकारों से उम्मीद जताई थी कि वे राज्यों में शराबबंदी लागू करेंगे, लेकिन सरकारों का इस ओर ध्यान नहीं है। सन 1920–30 और 1937 के बीच आजादी के दो दशकों के बाद शराब, असम, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, ओडिशा, तमिलनाडु, गुजरात और केरल में प्रतिबंधित हुई है।

अपने उद्घाटन संबोधन में केंद्रीय गांधी स्मृति निधि के सचिव ने कहा कि शराब देश की गंभीर समस्याओं में से एक है। उन्होंने कहा कि महाविद्यालयों में, जहां देश का भविष्य आकार लेता है, कई बच्चे कॉलेज परिसर में नशीली दवाओं का इस्तेमाल करते हैं, जो कि युवा पीढ़ी के लिए सबसे खतरनाक है।

इसकी रोकथाम के लिए जनता की कमेटी को काम करना चाहिए। आने वाले वर्ष 2019 में हम महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाएंगे। उससे पहले केंद्र सरकार को एल्कोहल पर सख्त कानून बना देने चाहिए।

बिहार की लोक समिति के अध्यक्ष श्री विजय कुमार सिंह कि देश में संपूर्ण नशाबंदी होनी चाहिए। आज 1974 से भी स्थिति खराब है। शराब को रोकने और नशाबंदी रोकने के लिए कुशल नेतृत्व की आवश्यकता है। आज युवाओं को इस संबंध में अधिक जागरूक करने की जरूरत है।

इस मौके पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने अनेक पुस्तकों का विमोचन किया। प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए।

# ऑरिएंटेशन कार्यक्रम

**गैर महाविद्यालयी महिला शिक्षा बोर्ड अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यशाला एवं ऑरिएंटेशन कार्यक्रम**

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, रामभाउ महलगी प्रबोधिनी और गैर महाविद्यालयी महिला शिक्षा बोर्ड के संयुक्त तत्वावधान में अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन 30 जुलाई, 2017 को गांधी दर्शन में किया गया। इस कार्यक्रम में कुल 5 सत्रों में शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।

परियोजना के कार्यकारी अधिकारी श्री रवि पोखरणा ने कहा कि, "इस अभियान का उद्देश्य 30000 बालिका विद्यार्थियों के जीवन में परिवर्तन लाना और उनके जीवन स्तर को उठाना है।" गैर महाविद्यालयी महिला शिक्षा बोर्ड हर वर्ष उन अनेक बालिकाओं का जीवन संवारती है, जो समाज के हाशिए पर जीवन गुजार रही हैं।"

उद्घाटन सत्र में आईसीएसएसआर के सदस्य सचिव डॉ. वी. के. मल्होत्रा, उपाध्यक्ष श्रीमती नयना सहस्रबुद्धे एनएसडब्ल्यूबी की निदेशक डॉ. अंजु गुप्ता उपस्थित थे। वक्ताओं ने कार्यक्रम में कहा कि महिलाओं को सामाजिक–आर्थिक रूप से मजूबती प्रदान कर, उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाया जा सकता है।

गांधी दर्शन में ऑरिएंटेशन कार्यक्रम में उपस्थित श्रीनती नयना सहस्रबुद्धे, श्री रवि पोखरणा व अन्य।

**क्षमता निर्माण में अध्यापकों की भूमिका :**

"शिक्षा में लिंग संवेदना और मुझमें नेता" सत्र का संचालन प्रो. पी. बी. शर्मा, डॉ. सी. बी. शर्मा, श्रीमती नयना सहस्रबुद्धे और सुश्री भावना लूथरा ने किया। इसमें शिक्षकों की समाज और राष्ट्रनिर्माण में विभिन्न आयामीय भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर चर्चा की गई। श्रीमती नयना सहस्रबुद्धे ने कहा कि लिंग समानता का मतलब केवल महिला और पुरूषों को हर स्तर पर समान आंकना नहीं है, बल्कि स्त्रियों की अलग पहचान बनाना भी है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की समाज को आकार प्रदान करने में महत्ती भूमिका है।

- **विशेष व्याख्यान–ज्ञान से परे सीखना**

प्रो. पी. बी. शर्मा ने कहा कि शिक्षा व्यक्ति को साहसी और पर्याप्त योग्य बनाती है और उसकी क्षमताओं का विकास करती है। उन्होंने कहा कि भारतीय शिक्षा अपनी मूल्य व्यवस्था से बिल्कुल कट गई है। हमें अपनी पारंपरिक ज्ञान व्यवस्था को आज की शिक्षा के साथ मिलाकर चलना चाहिए। इस ज्ञान के साथ व्यक्ति अपनी बुद्धि को बढ़ा सकता है और एक अच्छे चरित्र का निर्माण भी कर सकता है।

**सत्र 1 : राष्ट्र निर्माण में शिक्षकों की भूमिका**

डॉ. सी. बी. शर्मा ने कहा कि मैकालेवाद ने भारतीय शिक्षकों का मनोबल तोड़ा है। एक अमूल्य देश और समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों के प्रति समाज का नजरिया बदला जाए। हमें अपनी पाठ्यपुस्तकों में श्रवण कुमार की कहानी का पुनर्परिचय करवाना चाहिए। प्राचीन समय में शिक्षक समाज की समृद्धि के लिए कार्य किया करते थे। एक महान देश के निर्माण हेतु हमें अपने अध्यापकों को नेताओं में परिवर्तित करना होगा जो हमारे समाज को समृद्ध बनाने की दिशा में काम करे।

**सत्र 2 : समाज में लिंग संवेदीकरण**

श्रीमती नयना सहस्रबुद्धे ने समाज में लिंग संवेदना के मुद्दे को उभारा। उन्होंने कहा कि बच्चों को दिए जाने वाले उपहार उन पर महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ते हैं। प्रत्येक कहानी के 3 आयाम होते हैं। ये हैं, मूलपाठ, संदर्भ और पाठ पूर्व, जिन्हें लिंग रूढ़िवादिता से दूर रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि महिलाओं को सशक्त बनाकर ही समाज को सशक्त बनाया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि लिंग समानता का मतलब केवल महिला और पुरूषों को हर स्तर पर समान आंकना नहीं है, बल्कि स्त्रियों की अलग पहचान बनाना भी है।

गांधी दर्शन में गैर महाविद्यालय अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का दृश्य।

### सत्र 3 : मुझमें विद्यमान नेता

श्रीमती भावना लूथरा ने अपनी प्रस्तुति से सबको यह अहसास करवाया कि सबमें एक नेता विद्यमान है। उन्होंने कहा कि आप अकेले ऐसे हैं, जो स्वयं को अपनी क्षमताओं से उपलब्धि हासिल करने से रोक रहा है। उन्होंने स्वयं की ख्याली बाधाओं से पार पाने का आग्रह किया।

श्रीमती रश्मि दास, डॉ. अंजू गुप्ता, श्री रवि पोखरणा, श्रीमती ज्योति और डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने भी अपना व्याख्यान दिया।

### योग और प्राकृतिक चिकित्सा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए योग शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम

समिति द्वारा गांधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा समिति एवं योग और प्राकृतिक चिकित्सा की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए योग शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 से 7 सितंबर,

गांधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा समिति के डॉ. पुनीत मलिक दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम आरंभ करते हुए। उनके साथ गांधी मिशन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नारायण भट्टाचार्जी, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान व श्रीमती रीता कुमारी

2017 को आयोजित किया गया। इस सेमिनार में विभिन्न राज्यों से आए 1600 प्रशिक्षक शामिल हुए।

श्री लक्ष्मीदास, श्री नारायण भाई और अन्य विशिष्ट अतिथियों ने आज के जीवन में प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व के बारे

गांधी दर्शन में योग व प्राकृतिक चिकित्सा पर कार्यक्रम में मंथन करते हुए प्रतिभागी।

में लोगों को बताया। समिति की पुस्तकालयाध्यक्षा श्रीमती शाश्वती झालानी ने कार्यक्रम संचालित किया। गांधी स्मारक प्राकृतिक चिकित्सा समिति के डॉ. पुनीत मलिक ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए प्राकृतिक चिकित्सा के महत्व से लोगों को अवगत करवाया।

इस अवसर पर समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और समिति के पूर्व सलाहकार श्री बसंत सिंह भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में योग और श्रमदान भी किया गया।

### गांधीवादी नीतियां और आज की मीडिया विषय पर ऑरिएंटेशन कार्यक्रम

समिति की ओर से 30 अक्तूबर, 2017 को सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय, गंगटोक में जनसंचार के विद्यार्थियों के लिए गांधीवादी नीतियां और आज की मीडिया विषय पर ऑरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका संचालन समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू और पूर्वोत्तर संयोजक गुलशन गुप्ता ने किया।

इस अवसर पर वक्ताओं ने गांधीजी के पत्रकार और जनसंचारक के रूप की विशेषताओं की चर्चा की गई। विश्वविद्यालय के जनसंचार विभाग के प्रवक्ता डॉ. आशीष नायक सहित करीब 40 विद्यार्थियों ने इसमें भाग लिया।

### शैक्षणिक अभ्यासों में एकीकृत अहिंसक संप्रेषण

समिति द्वारा शैक्षणिक अभ्यासों में एकीकृत अहिंसक संप्रेषण विषय पर एक दिवसीय ऑरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किया गया। हरकाम्या कॉलेज ऑफ एजूकेशन, गंगटोक, सिक्किम में आयोजित इस कार्यक्रम में कॉलेज के 130 विद्यार्थियों ने क्लास रूम में अहिंसक तरीके से अपनी बात संप्रेषित करने के गुर सीखे।

कार्यक्रम का संचालन समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने किया। पूर्वोत्तर संयोजक श्री गुलशन गुप्ता ने भी अपने विचार रखे। इस मौके पर विशेषज्ञों ने भावी अध्यापकों को गांधीवादी अहिंसक संचार के तरीके जैसे सच्चाई, खुलापन, आपसी सम्मान, मानवीय रिश्तों का विकास आदि के बारे में बताया।

### विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार विषय पर सेवारत अध्यापकों का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम

समिति द्वारा एमिटी इंस्टीच्यूट ऑफ एजुकेशन नई दिल्ली के सहयोग से विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार विषय पर सेवारत अध्यापकों का दो दिवसीय ऑरिएंटेशन कार्यक्रम 21–22 नवम्बर, 2017 को आयोजित किया गया। इसमें दिल्ली और एनसीआर के विभिन्न विश्वविद्यालयों, स्कूलों और अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों से आए 130 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का उद्घाटन गुरूदेव रबिन्द्रनाथ टैगोर फाउंडेशन के अध्यक्ष और दिल्ली विश्वविद्यालय की विजिटिंग फैकल्टी व संचार विशेषज्ञ प्रो. टी. के. थामस ने किया। समिति के कार्यक्रम अधिकारी श्री वेदाभ्यास कुंडू, एमिटी इंटरनेशनल और ग्लोबल स्कूल की निदेशक श्रीमती मोहिना धर, एआईए साकेत की निदेशक डॉ. रंजना भाटिया इस अवसर पर उपस्थित थे।

एआईई की निदेशक डॉ. रंजना भाटिया अपने विचार व्यक्त करती हुईं। मंच पर आसीन हैं एमिटी इंटरनेशनल स्कूल की प्राचार्या श्रीमती मोहिना डार, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू और श्री टी. के. थॉमस।

श्री टी. के. थॉमस साकेत के एमिटी शिक्षा केंद्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करते हुए।

कार्यक्रम में डॉ. रंजना भाटिया ने वर्तमान समय में अहिंसा के महत्व पर अपने विचार रखे। उन्होंने वर्तमान समय में स्कूलों की स्थितियों, अध्यापकों के समक्ष उत्पन्न होने वाली समस्याओं और अध्यापक–विद्यार्थी संबंधों पर चर्चा की।

डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने उपस्थित जनों को समिति के कार्यकलापों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आज न केवल अध्यापक–विद्यार्थी के बीच विवादों के समाधान, अपितु स्टाफ के बीच विवादों पर चर्चा की जरूरत है। अहिंसक संचार और परस्पर सम्मान के माध्यम से दोनों पक्षों के लिए फायदेमंद स्थिति की आज जरूरत है।

श्रीमती मोहिना धर ने इस मौके पर एक बडे स्कूल की प्राचार्या के तौर पर और उनके व उनके स्टाफ के समक्ष आने वाली चुनौतियों से संबंधित अनुभव साझा किए। उन्होंने आज के दौर में स्कूल के परिदृश्यों का उल्लेख करते हुए अध्यापकों को व्यवहारिक ज्ञान भी दिया। उन्होंने कहा कि, "कक्षा में शांतिपूर्ण माहौल उत्पन्न करना आवश्यक है, ताकि अध्यापक और विद्यार्थी के बीच संवाद स्थापित हो सके। कक्षा में ज्ञान के सफल प्रसार के लिए तीन तत्वों का होना जरूरी हैं, ये तत्व हैं–आत्म सहानुभूति, दूसरों के प्रति सहानुभूति और ईमानदार संप्रेषण।"

### तकनीकी सत्र, प्रथम दिन

सत्र का संचालन प्रो. टी. के. थॉमस और डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने किया। "भावपूर्ण सेतु निर्माण" की अवधारणा के माध्यम से प्रो. थॉमस ने हिंसा और संचार के विचारों पर चर्चा की और प्रतिभागियों से भी इस संबंध में विचार प्रकट करने को कहा। इस परिचर्चा के निष्कर्ष के रूप में सामने आया कि संचार का अर्थ किसी के संदेश को सामान्य ढंग से समझना है और हिंसा का अर्थ है–किसी की शांतिपूर्ण स्थिति में बाधा डालना और अन्य व्यक्ति को अप्रिय स्थिति में पहुंचाना, चाहे व शारीरिक रूप से हो या मानसिक रूप से।

एआईई के प्राचार्य, अध्यापक व स्टाफ अतिथियों के साथ समूह फोटो सत्र के दौरान।

प्रतिभागियों से "टीचर" शब्द के संक्षिप्त विशेषण के बारे में पूछा गया, जिससे उन्हें अध्यापक की विशेषताओं को गांधीजी के परिप्रेक्ष्य में समझने का मौका मिला। सभी ने माना कि, "विद्यार्थी भविष्य के अभिभावक हैं, इसलिए हमें अर्थात अध्यापकों को उनका संरक्षण करना चाहिए।"

डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, ने विद्यार्थी और अध्यापक की बातचीत के बारे में संक्षिप्त विवरण समझाकर परिचर्चा सत्र का आरंभ किया। इस विवरण में छुपे संदेश का गहरा अर्थ था कि, "मेरे पास मेरे संतुलन के खोने के सिवा और कुछ खोने को नहीं है।" उन्होंने क्लासरूम के परिदृश्य में अहिंसा सहित अनेक मुद्दों के बारे में बात की और प्रतिभागियों से संवाद कायम किया। उन्होंने प्रतिभागियों से एक काल्पनिक मगर, काफी प्रासंगिक समस्या, जिसमें विद्यार्थी एक दूसरे के दृष्टिकोण से असहमत हैं और इससे छुटकारा चाहते हैं को हल करने को कहा।

### तकनीकी सत्र–दूसरा दिन

प्रो. टी. के. थॉमस ने गांधीजी के अहिंसा के विचारों और आदर्शों को कक्षा, अध्यापन–अध्ययन संदर्भ में चर्चा के साथ तकनीकी सत्र का आरंभ किया। उन्होंने अध्ययन–अध्यापन वातावरण में विद्यार्थियों की केन्द्रियता, जिससे अहिंसक संचार का निर्माण कक्षा के बाहर और भीतर हो सके, के बारे में चर्चा की। प्रो. थॉमस ने पांच तत्वों–छात्र केन्द्रियता, प्रेरणा, गतिविधि, दृढ़ता और परिवर्तन को रेखांकित किया। उन्होंने इन तत्वों का संक्षिप्त नाम "स्मार्ट" दिया।

प्रो. थॉमस ने एक गहन परिचर्चा सत्र आरंभ किया, जिसमें दैनिक स्कूल समय के दौरान पैदा होने वाली स्थिति, जिन पर हम बिना सोच–विचार के प्रतिक्रिया करते हैं और जो बड़े और छोटे अवांछनीय परिणामों का कारण बनती है, के बारे में चर्चा की।

इनमें से परिचर्चा के लिए ली गई कुछ स्थितियां इस प्रकार हैं:

1. जब विद्यार्थी अध्यापक की किसी बात से असहमत होते हैं।
2. जब अध्यापक किसी छात्र के प्रश्न का उत्तर नहीं जानते हैं।
3. जब छात्र किसी गैर जरूरी मुद्दे पर अध्यापक की राय जानना चाहता हो।
4. जब अध्यापक के प्रश्न की प्रतिक्रिया चुप्पी से दी जाए।
5. जब प्रत्यक्ष प्रश्न पूछे जाने पर विद्यार्थी अध्यापक के साथ वाद–विवाद करे।

प्रतिभागियों ने प्रतिदिन स्कूल समय में आने वाली विकट स्थितियों के संभव समाधान निकालने पर काफी कवायद की। प्रतिभागियों ने छोटे–छोटे समूह बनाकर विभिन्न समाधानों पर चर्चा की और उन्हें कक्षा के सामने रखा।

परिचर्चा के दौरान दैनिक जीवन में आने वाली स्थितियों के समाधान पर गहन मंथन हुआ, इसके साथ विद्यार्थियों में सकारात्मक मूल्यों, जैसे प्रेम, करूणा, सहानुभूति का समावेश करने और विभिन्न स्थितियों से निपटने के प्रति प्रेरित करने व समाधानकारक तरीके से सभी मामलों का हल निकालने पर भी चर्चा की गई।

डॉ. रंजना भाटिया ने समापन सत्र के दौरान सभी प्रतिभागियों का धन्यवाद किया और प्रो. टी. के. थॉमस व डॉ. वेदाभ्यास कुंडू के प्रति आभार प्रकट किया। इस अवसर पर समिति के श्री सुशील कुमार शुक्ला भी उपस्थित थे।

### "किशोर व्यवहार की समझ" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

समिति द्वारा किशोर व्यवहार की समझ विषय पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम गांधी दर्शन परिसर में 12 दिसंबर, 2017 को आयोजित किया गया, जिसे डॉ. राजीव नन्दी द्वारा संचालित किया गया। करीब 150 प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

किशोरों के व्यवहार की समझ कार्यक्रम में लोगों को संबोधित करते श्री राजीव नंदी। (नीचे) इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक श्री के. डी. प्रसाद (दांए) स्टाफ सदस्यों के साथ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान माता–पिता की भूमिका, माता–पिता का व्यवहार, जैसे मुद्दों को छुआ गया। डॉ. नन्दी ने निर्णय लेने के स्तर पर माता–पिता के व्यवहार के बारे में बोलते हुए अभिभावकों के द्विआयाम को रेखांकित किया।

उन्होंने बच्चे के चरित्र को आकार देने में अध्यापक की भूमिका के बारे में संबोधित किया और कहा कि अध्यापक का व्यवहार बच्चे पर लंबे समय तक प्रभाव डालता है। उन्होंने विभिन्न तरह के विकारों को भी रेखांकित किया जो बच्चे के मानसिक विकास पर बुरा प्रभाव डालते हैं, जैसे, 'आचरण विकार,' असामाजिक व्यक्तित्व विकार और अन्य।

उन्होंने कहा कि अभिभावकों को यह समझने की जरूरत है कि उलझने की खातिर तर्क–वितर्क करना किशोरों के लिए सामान्य बात है, और, इसलिए बच्चों को पर्याप्त मार्गदर्शन की आवश्यकता है। माता–पिता को समझना चाहिए कि किशोर अब परिपक्व हो गया है, इसलिए उनके साथी उनके लिए तेजी से महत्वपूर्ण बन जाते है।

उन्होंने कहा कि विचारकों की तरह किशोर परिस्थितियों का ताक्रिकता से कारण और प्रभाव के आधार पर विश्लेषण करना आरंभ कर देते हैं।

डॉ. नन्दी ने कहा कि व्यक्तित्व का विकास विभिन्न शारीरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक कारकों से होता है, जहां आनुवांशिकता और दिमाग एक निर्णायक भूमिका निभाते हैं। व्यक्तित्व के साथ ये 'सहनशीलता चरित्र', 'रचनात्मकता', 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता', 'योग्यता' और अन्य चीजों का भी विकास करते हैं।

उन्होंने सकारात्मक भावनाओं के बारे में अपने अनुभव भी साझा किए, इन भावनाओं को उन्होंने मनोदशा का और व्यवहार के प्रकारों का नेतृत्व करने वाला बताया, जिनके माध्यम से एक व्यक्ति को आने वाले कठिन समय के लिए तैयार किया जाता है। किशोर प्रबंधन और प्रतिभागियों के साथ परिचर्चा सत्र भी इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रमुख भाग रहे।

### आदिवासी विद्यार्थियों के कौशल विकास के लिए ऑरिएंटेशन कार्यक्रम

गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा नेहरू युवा केन्द्र संगठन के सौजन्य से 16 दिसंबर, 2017 को आदिवासी युवकों के उत्थान हेतु कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आदिवासियों के उत्थान की इस यात्रा का आरंभ छत्तीसखंड, झारखंड और ओडिशा के आदिवासी युवाओं में कौशल विकास करने के उद्देश्य से आयोजित ऑरिएंटेशन कार्यक्रम के साथ हुआ।

(बांए) कार्यक्रम में मंचासीन श्री बसंत व श्री अतुल कुमार पांडे (नीचे) कार्यक्रम के समापन पर समूह चित्र सत्र के दौरान प्रतिभागी।

आदिवासी विद्यार्थियों को प्रेरित करने के लिए श्री दीपंकर श्री ज्ञान, निदेशक गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और श्री बसंत ने 200 विद्यार्थियों के साथ वार्ता की।

लंबी भूभागीय पृथकता और दूरियों जैसी बाधाओं को दूर करने के लिए और आदिवासियों की जानकारियों को संग्रहित करने के लिए, अलग–अलग भारतीय फसलों के बारे में परिचर्चा संचालित की गई। चावल एक औषधीय

पौधा है और सतावरी का एक प्रमुख भोजन है, इसके बारे में भी वार्ता की गई।

इसके अतिरिक्त आजीविका के विकल्पों जैसे कृषि, लकड़ी की कलाकृतियां, और औषधीय पौधों पर आधारित चर्चा भी की गई।

इसके बाद क्षेत्रों के विविध कौशल जैसे मेडीकल प्रतिनिधि, ऑप्टिकल फाइबर तकनीशियन, माली, हथियार रहित सुरक्षा गार्ड आदि के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी दी गई।

इस मौके पर विद्यार्थियों को एक प्रपत्र भी दिया गया, जिसमें उनसे उनकी मूलभूत जानकारी जैसे, व्यक्तिगत जानकारी, शैक्षणिक योग्यता, प्रशिक्षण कार्यक्रम, स्थान की प्राथमिकताएं, निर्धारित कौशल विकास क्षेत्रों का कौशल और अपना पसंदीदा कौशल क्षेत्र, जो सूची में नहीं दिया गया है, जैसी जानकारियां भरवाई गई।

## सामुदायिक विकास के लिए युवा नेतृत्व विषय पर कार्यशाला का आयोजन

देश भर में युवाओं की नेतृत्व क्षमता पर आयोजित कार्यक्रमों की श्रृंखला में समिति द्वारा नेहरू युवा केंद्र, जिला केंद्रीय दिल्ली के सौजन्य से 'सामुदायिक विकास के लिए युवा नेतृत्व विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। गांधी दर्शन में 18–20 दिसंबर को आयोजित इस कार्यक्रम में जिला उत्तर–पश्चिम, पश्चिम और दक्षिण पश्चिम के 120 युवाओं ने भाग लिया।

गांधी दर्शन में युवा प्रतिभागियों को प्रेरित करते हुए श्री विश्वजीत।

कार्यशाला में अनेक निरंतर सत्रों का आयोजन किया गया। नेहरू युवा केंद्र के जिला युवा संयोजक श्री अतुल पांडे, समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. ए. जमाल और कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू इस अवसर पर उपस्थित थे।

ऑरिएंटेशन कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कहा कि आज युवा देश की बड़ी कार्य ताकत है और वे समाज में अनेक चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। उन्होंने वर्ष 2019 में आने वाली महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के संबंध में जानकारी भी दी। युवाओं से उन्होंने आह्वान किया कि वे अपने समुदाय में गांधी के रचनात्मक कार्यों के प्रसार के लिए संपर्क को बढ़ावा दें।

कार्यक्रम में डाईट के सेवानिवृत प्राचार्य डॉ. सुधीर कपूर ने विभिन्न जीवन कौशल मुद्दों पर बातचीत की। इसके अतिरिक्त अनेक सत्र भी किए गए। सत्रों का संचालन करने वाले अन्य लोग थे :

- डॉ. सुमन, सहायक प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय–सुशासन और नागरिकता
- डॉ. शिवानी– लिंग संवेदीकरण
- श्री बसंत, वरिष्ठ गांधीवादी–राष्ट्रीय एकता, नैतिक मुद्दे और राष्ट्रीय आचार–विचार व चरित्र : गांधीवादी दृष्टिकोण
- श्री विश्वजीत– प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत रोजगार सृजन गतिविधियां
- श्री राजीव गुप्ता : भारत सरकार की विभिन्न योजनाएं
- श्री जय कुमार और सुश्री पूनम यादव : डिजिटल मार्केटिंग व सोशल मीडिया

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, नेहरू युवा केंद्र के अतुल कुमार पांडे के साथ प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र देते हुए।

ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं के रोजगार हेतु उन्हें भारत सरकार की विभिन्न नई योजनाओं के बारे में बताना और उनका राष्ट्र निर्माण में योगदान सुनिश्चित करना था।

समापन सत्र में प्रतिभागियों ने समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान से परिचर्चा की। निदेशक ने इस मौके पर युवाओं को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के लिए अपनी सेवाएं देने के लिए कहा।

### डिजाइन वाली सोच सतत् उत्पादकता उत्पन्न करती है : अरूण जैन।

पोलरिस के अध्यक्ष श्री अरूण जैन ने 23 दिसंबर, 2017 को गांधी स्मृति और दर्शन समिति का दौरा किया और समिति के स्टाफ सदस्यों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम "डिजाइन बौद्धिकता : डिजाइन मन तैयार करना" संचालित किया। गांधी दर्शन परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम में करीब 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

(ऊपर) पोलरिस के अध्यक्ष श्री अरूण जैन कार्यशाला का संचालन करते हुए। (बाएं) समिति निदेशक श्री अरूण जैन को चरखा भेंट करते हुए।

परिचर्चात्मक सत्र के दौरान श्री अरूण जैन ने प्रशिक्षण बनाम सीखने के विचारों के विभिन्न बिन्दुओं पर जोर दिया। "हम सब क्या डिजाइन कर सकते हैं" की व्याख्या करते हुए उन्होंने विभिन्न उदाहरण पेश किए, जैसे मुगलों से लड़ने के लिए कैसे गुरू गोविन्द सिंह ने 'सिक्खवाद' को डिजाइन किया और कैसे इससे आत्म व्यक्तित्व में सुधार हुआ।

उन्होंने आगे डिजाइन के विभिन्न कहे और अनकहे आयामों पर ध्यान केन्द्रित किया और कहा, "जब हम छानने की प्रकिया करते हैं, तो हम सभी अच्छी चीजों को एक साथ जोड़ते हैं।" "ब्लाइंट स्पॉट्स" के बारे में बोलते हुए उन्होंने कहा कि ये 'ब्लाइंड स्पॉट्स' सोचने की क्षमता में सुधार करते हैं और जिज्ञासा को बढ़ाते हैं, जो डिजाइन प्रक्रिया को सीखने का पहला भाग है, जहां निगरानी रखना एक प्रमुख ताक्रिक कारक है।

उन्होंने ज्ञान के पांच चरणों, कौशल, विशेषज्ञता, दृष्टिकोण, विचार और संरेखण के बारे में भी बताया।

उन्होंने पांच प्रतिरोधात्मक शक्तियों–'संदेह,' 'विवाद', 'क्रोध', 'भय', 'अहम' को रेखांकित किया और कहा कि भारतीय संदर्भ में अहिंसात्मक तरीके से सोचने की प्रक्रिया, असहयोग से आती है, जिसे महात्मा गांधी ने अपने जीवन के दौरान अपनाया। "पांच प्रतिरोधात्मक शक्तियों को समकालीन बनाने की क्रिया, सौहार्दता उत्पन्न करती है।" उन्होंने कहा।

अंत में समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने श्री अरूण जैन को चरखा देकर सम्मानित किया।

### समिति स्टाफ के लिए 'क्षमता निर्माण'

समिति द्वारा अपने स्टाफ सदस्यों के लिए 28 दिसंबर, 2017 को छत्तीसगढ़ में क्षमता निर्माण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 40 सदस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर ऐतिहासिक स्थानों की यात्रा भी की गई।

### विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार पर दिल्ली होमगार्ड्स का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम

समिति द्वारा विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार पर दिल्ली होमगार्ड्स का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम 11–12 जनवरी, 2018 को राजा गार्डन दिल्ली में आयोजित किया गया। दिल्ली होमगार्ड एसोसिएशन के सौजन्य से आयोजित इस कार्यक्रम में 150 होमगार्डों ने बापू के अहिंसा के सिद्धांत को उनके दैनिक कार्यों में लागू करने के गुर सीखे।

(बाएं) दिल्ली होमगार्ड के उपकमांडेंट श्री डी. एस. रावत व (दाएं) सुश्री श्रेया जानी।

राजा गार्डन में होमगार्ड्स के ऑरिएंटेशन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री वेदाभ्यास कुंडू व प्रो. टी. के. थॉमस।

प्रसिद्ध संचार विशेषज्ञ प्रो. टी. के. थॉमस, दिल्ली होम गार्ड के डिप्टी कमाडेंट श्री डी. एस. रावत, संचार विशेषज्ञ सुश्री श्रेया जानी, एम्स की नर्सिंग अधिकारी श्रीमती संतोष जी, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू और शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला इस अवसर पर उपस्थित थे।

गांधी दर्शन एक्शन फेलो सुश्री निखत खान ने बाल कानूनों और सुश्री आकांक्षा ने लिंग संवेदीकरण पर कार्यशाला का संचालन किया।

इस दो दिवसीय ऑरिएंटेशन कार्यक्रम में होने वाले अन्य सत्र थे :

- अहिंसक संप्रेषण–डॉ. वेदाभ्यास कुंडू
- मानवता और आत्म सुधार–प्रो. टी. के. थॉमस
- दबाव प्रबंधन–सुश्री संतोषी
- मानव मनोविज्ञान–सुश्री श्रेया जानी
- गांधीवादी दर्शन–श्रीमती गीता शुक्ला

कार्यक्रम के दौरान समिति की ओर से गांधीजी के जीवन और संदेशों पर आधारित प्रदर्शनी का प्रदर्शन भी किया गया।

## स्वयंसेवी संस्थाओं का प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण व नेतृत्वपरक राजनीति और शासन में सामाजिक–आर्थिक नेता विषय पर ऑरिएंटेशन

(ऊपर से नीचे) गांधी दर्शन में कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री बी. पी. सिंह व उन्हें ध्यानपूर्वक सुनते लोग।

समिति द्वारा रामभाउ महलगी प्रबोधिनी के सौजन्य से "नेतृत्व राजनीति और शासन" विषय पर एक ऑरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 11 मार्च, 2018 को गांधी स्मृति में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य थे–

- भारत की सामाजिक–राजनीतिक जमीनी वास्तविकता पर एक गहरा नजरिया पेश करना
- नेतृत्व गुणों और क्षमताओं को बढ़ाना।
- प्रतिभागियों को राजनीति, जन मामलों, स्वयंसेवी संस्थाओं और अन्य क्षेत्रों में करियर बनाने के लिए आवश्यक कौशल उपलब्ध करवाना।

इस कार्यक्रम के परिणाम थे–

- राजनीतिक नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित कर योग्य बनाया।
- शासन के लिए मानव संसाधन को योग्य और कौशल से लैस करना

- समाजिक–राजनीतिक रूप से जागृत युवाओं की प्रतिभा को बढ़ाना।

कार्यक्रम में आए युवा प्रशिक्षकों ने गांधी स्मृति में स्थित महात्मा गांधी के बलिदान स्मारक का अवलोकन किया और बापू को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

गांधी स्मृति में कार्यक्रम के दौरान रामभाउ महलगी प्रबोधिनी समिति के सदस्य से सूचना पुस्तिका ग्रहण करते सिक्किम के पूर्व राज्यपाल डॉ. बी. पी. सिंह।

विद्यार्थियों ने इस मौके पर सिक्किम के पूर्व राज्यपाल और प्रसिद्ध विचारक श्री बाल्मीकि प्रसाद सिंह से विमर्श किया। अपने संबोधन में श्री सिंह ने अच्छे शासन के टिप्स विद्यार्थियों को दिए। उन्होंने बताया कि महात्मा गांधी के मूल्यों को आत्मसात करके सरकार प्रभावशाली काम कर सकती है, लेकिन आज के दौर में यह मूल्य कम हो रहे हैं।

उनके मुताबिक अच्छे शासन का अर्थ न्याय, सशक्तिकरण, रोजगार और सेवाओं के बेहतरीन निष्पादन को सहेजना है। उन्होंने कहा कि अच्छा शासन वह होता है, जहां लोग मुक्त और सक्रिय रूप से राजनीतिक और शासकीय कामों में मगन होते हैं। उन्होंने एक ऐसे समाज के निर्माण पर जोर दिया, जहां शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़कें जैसी सेवाएं समय पर उपलब्ध हों और ये सेवाएं गरीब से गरीब व्यक्तियों तक पहुंचाई जानी चाहिए।

अंत में उन्होंने युवाओं पर फोकस करते हुए कहा कि "युवा देश का आधार हैं। नेतृत्व, किसी निश्चित राजनीतिक संस्था का प्रमुख बनने के विचार से परे होता है, लेकिन यह नेता बनाने से संबंधित है, जो अपने सदस्यों की क्षमता जानता है और उन्हें बेहतर करने के लिए प्रेरित करता है।"

## विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार पर दिल्ली होमगार्ड्स का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम

समिति द्वारा विवादों के अहिंसक समाधान और अहिंसक संचार पर दिल्ली होमगार्ड्स का ऑरिएंटेशन कार्यक्रम 15–16 मार्च, 2018 को राजा गार्डन दिल्ली में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का आरंभ गांधी स्मृति और दर्शन समिति पर आधारित एक वृत्तचित्र के प्रसारण से हुआ। डॉ. वेदाभ्यास कुंडू ने उपस्थित जनों को समिति के कार्यकलापों की जानकारी दी।

उन्होंने इस कार्यक्रम के लाभ के बारे में बताते हुए कहा कि इससे स्थितियों का सामना बिना किसी हिंसा और आपत्ति से करने में मदद मिलेगी। प्रतिभागियों ने अहिंसा, संघर्ष और शांति की अवधारणा की काफी प्रशंसा की।

इस अवसर पर मैत्री भाव वाली पुलिस व्यवस्था पर आधारित एक लघु फिल्म का प्रदर्शन भी किया गया। इस फिल्म में दिखाया गया कि कैसे पुलिस समाज के सामने अपनी बेहतर छवि दिखा सकती है। कार्यक्रम में कार्यक्षेत्र में पेश आने वाली चुनौतियों, विभिन्न जातियों, समुदाय, लिंग के साथ विभिन्न स्थितियों का सामना करने संबंधी अनेक बातों पर चर्चा की गई।

(ऊपर ) राजा गार्डन में होमगार्डों को संबोधित करती विशेषज्ञ श्रीमती अनुपमा झा व कुमार अमिताभ। (नीचे) विशेषज्ञों से सवाल करता एक प्रतिभागी।

इस अवसर पर विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। इनमें सुश्री अनुपमा झा ने "तनाव प्रबंधन और प्रेरणा" श्री कुमार अमिताभ का 'अहिंसा और विवादों के

प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान ध्यान का अभ्यास करते प्रतिभागी।

समाधान और संवेदनशीलता', डॉ. वेदाभ्यास कुंडू द्वारा 'विवादों का अहिंसात्मक समाधान'' और सुश्री आकांक्षा द्वारा "संवेदनशीलता और अहिंसात्मक जनसंचार'' प्रमुख थे।

कार्यक्रम में समूह अभ्यास भी करवाया गया, जिसमें होमगार्डों को विभिन्न टीमों में बांटकर, उनसे कुछ प्रश्नावली हल करवाई गई। अंतिम सत्र में समूह प्रस्तुतियां, सभी समूहों द्वारा दी गई।

इस मौके पर प्रतिभागियों ने अपने कार्यशाला के अनुभवों को साझा किया। अधिकांश प्रतिभागियों ने इस प्रकार के कार्यक्रम समय–समय पर करवाने का आग्रह किया।

## सुशासन के लिए अहिंसात्मक संचार पर कार्यशाला

भारतीय सामाजिक उत्तरदायित्व नेटवर्क (आईएसआरएन) और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के संयुक्त तत्वावधान में शोधार्थियों, शिक्षाविदों, स्कॉलर और शिक्षकों के लिए "सुशासन के लिए अहिंसात्मक संचार'' विषय पर कार्यशाला का आयोजन 15–16 मार्च, 2018 को किया गया।

कार्यक्रम में माननीय न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री गिरधर मालवीय मुख्य अतिथि थे, अध्यक्षता जीबी पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थन के निदेशक प्रो. बद्रीनारायण तिवारी ने की। विशिष्ट अतिथि के तौर पर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. राजेंद्र प्रसाद उपस्थित थे।

इस कार्यक्रम में जी. बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान के निदेशक प्रो. बद्रीनारायण तिवारी, आईएसआरएन के सीईओ श्री संतोष गुप्ता, संजीवनी के सीईओ श्री उदित नारायण तिवारी और श्री पूर्णेंदु मिश्रा विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर अपने संबोधन में न्यायमूर्ति श्री गिरधर मालवीय ने देश के बेहतर भविष्य के लिए जिम्मेदार शिक्षा व्यवस्था और ईमानदार नागरिक के महत्व पर अपने विचार प्रकट किए। किसी भी प्रकार के अतिवाद के दुष्प्रभावों का जिक्र करते हुए उन्होंने विभिन्न विचारधाराओं को स्वीकारने व सहिष्णुता की प्रकृति अपनाने की जरूरत पर बल दिया। उन्होंने कहा कि समाज को जोड़े रखने के लिए अहिंसा की परिकल्पना को अपनाना आवश्यक है।

श्री संतोष गुप्ता ने अहिंसात्मक संचार और सुशासन से इसके जुड़ाव के बारे में बात की। अपने संबोधन में उन्होंने सुशासन की अवधारणा को संस्थानों के विभिन्न प्रबंधकीय कार्यों में शामिल करने पर बात की।

प्रो. बद्री नारायण तिवारी ने समाज में सुशासन की अवधारणा की जानकारी दी। उन्होंने इस संबंध में प्रकृति में पानी की भूमिका का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि जैसे पानी चट्टान से भी अधिक शक्तिशाली होता है और परिस्थितियों के मुताबिक ढल जाता है, उसी प्रकार हमें भी शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से ऐसे नागरिक तैयार करने की आवश्यकता है, जो समाज में सुशासन को लागू कर इसे सही दिशा में ले जाने का कार्य करे।

प्रो. राजेंद्र प्रसाद (बिल्कुल दाएं) अपने विचार व्यक्त करते हुए।

श्री पूर्णेंदू मिश्रा और श्री उदित नारायण शुक्ला ने अतिथियों का धन्यवाद किया।

उद्घाटन सत्र के बाद विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें सुशासन से जुड़े विभिन्न मुद्दों को उठाया गया। वक्ताओं ने सुशासन की खूबियों के बारे में बताते हुए अकादमिक क्षेत्र में इसके जरिए प्रदर्शन की क्षमता बढ़ाने व स्वयं को निखारने की बात कही। सत्र का संचालन डॉ. आनंद कुमार श्रीवास्तव, प्राचार्य सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज इलाहाबाद ने किया। उन्होंने शिक्षा के वर्तमान स्तर के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि आज की

प्रो. राजेंद्र प्रसाद।

न्यायमूर्ति गिरधर मालवीय

प्रो. ब्रदीनारायण तिवारी

शिक्षा समाज में सामान्य स्तर पर और लोगों के स्तर पर शांति कायम करने में विफल साबित हो रही है।

डॉ. प्रीति गौतम निदेशक उत्तर प्रदेश उच्च शिक्षा विभाग, इलाहाबाद, श्री संतोष गुप्ता, सीईओ आईएसआरएन, प्रो. एस. के. पंत, जी. बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान सत्र के अन्य वक्ता थे। प्रो. पंत ने इस मौके पर कहा कि सुशासन के अभाव में 'सर्व शिक्षा अभियान' जैसी कई योजनाएं अपनी पूरी क्षमता तक नहीं पहुंच पा रही हैं।

दूसरे सत्र में "अध्यापकीय कार्यों में सुशासन" विषय पर विमर्श किया गया। इसमें वक्ताओं के रूप में प्रो. पी. एन. पांडे, कुलपति एनजीबीयू इलाहाबाद, प्रो. रामजी सिंह, टीएमसी कॉलेज भागलपुर और डॉ. एसके मिश्रा सीएमपी कॉलेज इलाहाबाद उपस्थित हुए। इन लोगों ने अपने विचारों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया।

तीसरे सत्र में "सामाजिक रूप से समावेशी पर्यावरण का निर्माण" विषय पर चर्चा की गई। इसमें गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा के सहायक प्राध्यापक डॉ. संतोष तिवारी, श्री धवल जायसवाल आईपीएस, श्री जी.पी. मदान सामाजिक स्कॉलर और डॉ. उमेश प्रताप, ईसीसी कॉलेज इलाहाबाद ने अपने विचार प्रकट किए।

कार्यक्रम के दूसरे दिन "विवाद समाधान" विषय पर सत्र आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता प्रो. के. बी. पांडे पूर्व अध्यक्ष यूपी पीएससी ने प्रभावशाली तरीके से विवादों का समाधान विषय पर अपने विचार रखते हुए कहा कि विचारधारा के कारणों से होने वाले विवादों का मुख्य कारण पीढ़ीयों में गलत संचार या संपर्क की कमी होता है। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों में संवाद और एक दूसरे के प्रति समझ को विकसित करने की आवश्यकता पर बल दिया। सत्र की अध्यक्षता इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष श्री कृपाशंकर पांडे ने की।

समापन सत्र में प्रमुख वक्ता के तौर पर प्रो. एच. के शर्मा, राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, श्री जगदीश जोशी वरिष्ठ संपादक दैनिक जागरण, प्रो. अनुपम दीक्षित, संयोजक ग्राम तकनीक व विकास केंद्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय उपस्थित थे। प्रो. शर्मा ने कहा कि असरकारक व प्रभावशाली बातचीत, समाज के विवादों को दूर करने का एक शक्तिशाली जरिया है। प्रो. दीक्षित के शब्दों में क्रोध प्रबंधन समाज में प्रशावशाली भाषण देने की एक कुंजी है।

दो दिवसीय यह कार्यशाला, समापन सत्र के साथ संपन्न हुई। समापन सत्र में मुख्य अतिथि श्री प्रेम कुमार शुक्ला, राष्ट्रीय प्रवक्ता भाजपा थे। विशिष्ट अतिथि के तौर पर प्रो. के. एन. सिंह कुलपति राजर्षि टंडन खुला विश्वविद्यालय उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. बद्री नारायण तिवारी, निदेशक जी. बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान इलाहाबाद ने की। इसके अलावा श्री संतोष गुप्ता, सीईओ आईएसआरएन भी उपस्थित थे।

इस सत्र में प्रो. सिंह ने विवादों के शांतिपूर्ण समाधान की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि देश में रचनात्मक असहमतियों के लिए तो जगह हो सकती है, लेकिन अंतर्निहित विचारधारा असहमति खतरनाक है।

श्री प्रेम कुमार शुक्ला ने सुशासन पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि गांधीवादी दर्शन के माध्यम

से सुशासन संभव है। श्री संतोष गुप्ता ने सुशासन के विषय को पाठ्यक्रम में पढ़ाने की अपील की, ताकि भविष्य के नागरिकों में बेहतर सोच को विकसित किया जा सके।

कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ, जिसे श्री संतोष कुमार गुप्ता ने प्रस्तुत किया। इस

ऑरिएंटेशन कार्यक्रम को संबोधित करते श्री एस.के. मिश्रा।

कार्यक्रम में अपने विचारों को साझा करते श्री के. बी. पांडे (बीच में)

मौके पर प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गए। यह कार्यक्रम बेहद सफल रहा और इसमें अनेक शिक्षाविद्, स्कॉलर और इलाहाबाद विश्वविद्यालय, राज्य विश्वविद्यालयों, राजर्षि टंडन खुला विश्वविद्यालय, नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय और डिग्री कॉलेज के प्रवक्ता उपस्थित हुए। इसके अतिरिक्त ग्राम विकास संस्थान के 180 एमबीए विद्यार्थियो ने भी इस दो दिवसीय कार्यशाला में उत्साह से भाग लिया।

# महात्मा गांधी विनिमय कार्यक्रम

## नांगरहर विश्वविद्यालय अफगानिस्तान के विद्यार्थियों से संवाद

गांधी दर्शन में नांगरहर विश्वविद्यालय अफगानिस्तान के प्रतिभागियों को संबोधित करते समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

गांधी दर्शन परिसर में दिनांक 2 मई, 2017 को अफगानिस्तान के नांगरहर विश्वविद्यालय के 30 विद्यार्थियों का समूह कुलपति श्री नईम जन के नेतृत्व में आया। इस अवसर पर उनके साथ संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसका नेतृत्व समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने किया। इसका संचालन स्टैप्स संस्था के श्री सैम्यूअल ने किया।

चम्पारण सत्याग्रह के विषय पर बोलते हुए श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने महात्मा गांधी को एक अकेले योद्धा की संज्ञा देते हुए कहा कि उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों से लोगों को एकत्र कर अहिंसक तरीके से अन्याय के विरूद्ध युद्ध किया। उन्होंने कहा कि चम्पारण में महात्मा गांधी की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उन्होंने गरीब किसानों के मन से भय को निकाला। गांधीजी को एक महान संचारक बताते हुए उन्होंने उनके बहु आयामीय जीवन की चर्चा की। उन्होंने कहा कि उनका जीवन हमें सच्चाई को प्रकट करने का साहस प्रदान करता है।

नांगहर विश्वविद्यालय के अतिथि को शांति व सद्भाव का प्रतीक चरखा भेंट करते समिति के निदेशक।

संवाद कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए निदेशक ने कहा कि अफगानिस्तान में शांति की परंपरा कायम हो रही है, वहां भारत का बौद्ध धर्म विकसित हो रहा है।

उन्होंने जानकारी दी कि नांगरहर विश्वविद्यालय के साथ मिलकर शांति और अहिंसा पर विभिन्न पाठ्यक्रम आरंभ करने पर विचार चल रहा है। अपने संबोधन में श्री नईम जन ने कहा कि शांति, विवादों के अहिंसक रूप से समाधान और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विचारों पर आधारित प्रशिक्षण युवाओं को देने के लिए युवा शांति क्लब की स्थापना की गई है। "शांति निर्माताओं के दर्शन और उनकी विविधता के बारे में लोगों की समझ को विस्तृत रूप देना ही इसका मकसद है।" श्री नईम ने कहा "यह एक चुनौती है" उन्होंने जोड़ा।

इस मौके पर विद्यार्थियों के समूह ने राजघाट स्थित गांधी समाधि का दौरा किया और गांधी दर्शन परिसर में स्थापित 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' नामक प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

## गांधी शांति मिशन केरल के विद्यार्थियों से विमर्श

गांधी शांति मिशन केरल के 38 युवाओं ने "गांधी को जानो" यात्रा के तहत दिनांक 18 मई, 2017 को गांधी दर्शन परिसर का दौरा किया और गांधी स्मृति और दर्शन

गांधी शांति मिशन केरल के प्रतिनिधि गांधी दर्शन में प्रर्दशनी 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' में, गांधीजी द्वारा 1930 में दांडी मार्च के दौरान प्रयुक्त नाव के समक्ष चित्र खिंचवाते हुए।

समिति के स्टाफ से विमर्श किया। उन्होंने 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश' व 'भारत की आजादी का संघर्ष' नामक प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। उसके बाद उन्होंने गांधी स्मृति संग्रहालय को देखा और महात्मा गांधी के बलिदान स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

### महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के विद्यार्थियों से विमर्श

'गांधी विनिमय कार्यक्रम' के तहत समिति ने महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के छात्रों से विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया। गांधी दर्शन परिसर में 7 से 12 जून, 2017 को हुए इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सामाजिक कार्य विभाग के 27 छात्र सम्मिलित हुए। इस अवसर पर प्रो. अनुपमा सिंह, डॉ. शिव सिंह बघेल, डॉ. मिथलेश कुमार तिवारी, समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला और इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. के. डी. प्रसाद उपस्थित थे।

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने इस मौके पर विद्यार्थियों को आज के दौर में गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम के मॉडल की प्रासंगिकता के बारे में बताया। उन्होंने इग्नू जैसे शिक्षा संस्थानों की युवाओं को गुणवत्तापरक शिक्षा उपलब्ध करवाने में भूमिका की चर्चा करते हुए कहा कि इग्नू और गांधी स्मृति और दर्शन समिति साथ मिलकर महात्मा गांधी के विचारों को विभिन्न पाठ्यक्रमों के माध्यम से प्रसारित करने का काम कर रहे हैं।

वक्ताओं ने कहा कि महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के जश्न के रूप में 2019 तक 5000 विद्यार्थियों तक पहुंचने और उन्हें गांधीजी के दर्शन और विचारों से अवगत करवाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस मौके पर दिल्ली से 40 कि.मी. दूर स्थित हरियाणा के सोनीपत जिले के गांव अटेरणा का दौरा किया गया, जहां श्री कमल सिंह चौहान ने उनका स्वागत किया। छह दिवसीय इस कार्यक्रम का समापन स्वयंसेविता के माध्यम से समाज की सेवा करने के संकल्प के साथ हुआ।

### वर्धा के बच्चों हेतु गांधी विनिमय कार्यक्रम

गांधी विनिमय कार्यक्रम के तहत वर्धा, महाराष्ट्र स्थित जेड.पी. स्कूल के 25 विद्यार्थियों और 7 अध्यापकों ने सात से 10 दिसंबर को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति का दौरा किया। इस दौरे के दौरान विद्यार्थियों का परिचय मोहनदास करमचन्द गांधी से करवाने का प्रयास किया गया। विद्यार्थियों ने इस मौके पर समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के साथ कारीगर पंचायत के श्री बसंत जी से परिचर्चा की।

विद्यार्थियों का यह दौरा वर्धा कलेक्टर श्री शैलेष नवल की पहल पर डीआईईसीपीडी द्वारा चलाए गए कार्यक्रम के तहत रखा गया था। बच्चों ने इस अवसर पर राष्ट्रपति भवन और संसद भवन सहित अनेक ऐतिहासिक भवनों का अवलोकन किया।

(ऊपर) संयोजक अध्यापक को चरखा भेंट करते समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।
(नीचे) गांधी दर्शन में बच्चे अपने अध्यापकों, समिति स्टाफ व श्री बसंत के साथ चित्र खिंचवाते हुए।

# महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र

## कारगिल में महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र का उद्घाटन

(ऊपर) महात्मा गांधी व्याख्या केंद्र कारगिल के बाहर रेत पर बनी महात्मा गांधी की कलाकृति।

(नीचे) महात्मा गांधी व्याख्या केंद्र के स्थापना के अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

समिति की ओर से कारगिल में महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र की स्थापना की गई, जिसका उद्घाटन जम्मू कश्मीर के युवा और खेल मंत्री श्री सुनील शर्मा ने किया। इसका संचालन नेहरू युवा केन्द्र कारगिल द्वारा किया जाएगा। गौरतलब है कि समिति द्वारा देश के अनेक भागों में महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र की स्थापना इसलिए की जा रही है, ताकि ऐसे लोगों को एकत्र किया जाए, जो महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती पर निर्णायक भूमिका निभाने में सक्षम हों।

## नरेंद्रपुर में महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र की स्थापना

समिति द्वारा बिहार के नरेंद्रपुर में स्थापित महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्र का शुभारंभ बिहार विधानसभा के अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी ने किया। इस कार्यक्रम का आयोजन एसईएमएएफ के सौजन्य से दिनांक 12 अक्तूबर, 2017 को किया गया।

बिहार के सिवान में महात्मा गांधी व्याख्या केंद्र की स्थापना के अवसर पर उपस्थित बिहार विधान परिषद के अध्यक्ष श्री विजय कुमार चौधरी एवं अन्य। केन्द्र में लगी प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए अतिथि।

उल्लेखनीय है कि इस व्याख्या केन्द्र में महात्मा गांधी के जीवन की प्रमुख घटनाओं का अनुपम संग्रह रखा गया है। इसकी स्थापना से केवल व्याख्या केन्द्र के विद्यार्थी ही नहीं, अपितु आसपास के स्कूलों के बच्चे भी महात्मा गांधी के विचारों, उनके दर्शन और उनके जीवन से परिचित हो सकेंगे। समिति द्वारा लोगों को गांधीजी के आदर्शों उनके प्रेरणादायी जीवन और संदेशो से अवगत कराने के उद्देश्य से देश के विभिन्न भागों में महात्मा गांधी व्याख्या केन्द्रों की स्थापना की जा रही है। इन व्याख्या केंद्रों में गांधीजी से संबंधित प्रमाणिक व दुर्लभ दस्तावेजों का संकलन किया गया है।

## कस्तूरबा महिला विद्यापीठ सेवापुरी, वाराणसी

कस्तूरबा महिला विद्यापीठ वाराणसी ने वर्ष भर में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। विद्यापीठ में स्थित महात्मा गांधी व्याख्या केंद्र, जिसे समिति द्वारा वर्ष 2016 में स्थापित किया गया था, समीप के विद्यालयों के आकर्षण का केंद्र बना और इसमें समय–समय पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

सेवापुरी वाराणसी में आयोजित कार्यशाला में भाग लेती कस्तूरबा महिला विद्यापीठ की छात्राएं।

संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में समिति के सहयोग से 6 दिवसीय कार्यशाला आरंभ की गई, जिसमें बीएचयू आईआईटी सहयोगी संस्था थी। कार्यशाला में प्रो. रामकेश पटेल और प्रो. रामदासएनखाले ने गणित और विज्ञान के प्रश्नों को रचनात्मक तरीके से हल करने के गुर सिखाए। विद्यापीठ की प्राचार्या श्रीमती अनिता सिंह भी इस अवसर पर मौजूद थीं।

इसके अतिरिक्त कस्तूरबा महिला विद्यापीठ में एक श्रद्धांजलि सभा भी रखी गई। इस कार्यक्रम में छात्राओं ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि भेंट की। पं. दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महिला महाविद्यालय सेवापुरी की प्राचार्या डॉ. यशोधरा शर्मा ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। छात्राओं ने भक्ति व देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए।

कस्तूरबा महिला विद्यापीठ सेवापुरी वाराणसी के महात्मा व्याख्या केंद्र का अवलोकन करते विभिन्न स्कूलों के बच्चे।

महात्मा गांधी व्याख्या केंद्र वाराणसी के विद्यार्थियों ने अपनी संगीत प्रतिभा का प्रदर्शन किया

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत कस्तूरबा महिला विद्यापीठ सेवापुरी वाराणसी की प्राचार्या के नेतृत्व में स्वच्छता पर जागरूकता अभियान चलाते महिला विद्यापीठ के बच्चे।

गांधी दर्शन में 30 दिसंबर, 2017 को संस्कृति मंत्रालय द्वारा पोषित विभिन्न व्याख्या केंद्र के बच्चों ने संगीतमयी कार्यक्रम प्रस्तुत किया। विद्यार्थियों ने इस अवसर पर लोकगायन शैली 'चैती' और 'कजरी' की मनोहारी प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

# सृजन उद्यम केन्द्र

**चम्पारण सत्याग्रह के 100 वर्ष पूर्ण होने पर दिल्ली में कार्यरत चम्पारण के ऑटो चालकों का कौशल विकास प्रशिक्षण**

(ऊपर से नीचे) श्री विश्वजीत, श्री बसंत, श्री विश्वास गौतम प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत पूर्व कौशल मान्यता कार्यक्रम में दिल्ली में रह रहे चम्पारण के ऑटो चालकों को संबोधित करते हुए।

नैतिक और आर्थिक पुनर्निर्माण हेतु, राष्ट्रपिता ने कौशल विकास को आजादी की लड़ाई के आवश्यक हिस्से के तौर पर चुना और स्वराज प्राप्ति हेतु स्व विश्वसनीयता, स्वशासन और आत्म संतुष्टि की भावना को लोगों के मन में बैठाया। अपनी 'रचनात्मक कार्य' की अवधारणा में गांधीजी ने हम सभी को कौशल विकास के जरिए अपना चारित्रिक निर्माण, युवाओं की क्षमताओं का विकास और युवकों को सकारात्मक परिणामों के योग्य बनाने की दृष्टि दी है।

(ऊपर) समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, ऑटो चालकों को संबोधित करते हुए। साथ हैं, श्री विश्वजीत, डॉ. मंजू अग्रवाल, श्री बसंत और श्री विमल।

इसलिए गांधीजी के इस निर्देश और विरासत को प्रसारित करने और लोगों के मन में उनके जीवन और दर्शन को उतारने के उद्देश्य से गांधी स्मृति और दर्शन समिति ने कौशल विकास मंत्रालय की प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के अंतर्गत अद्वितीय और व्यापक रूप से कौशल विकास की विभिन्न योजनाओं को तैयार किया है। पूर्व कौशल प्रमाणीकरण योजना एक ऐसी ही योजना है, जिसे 24 सितंबर, 2017 को आरंभ किया गया।

डॉ. मंजू अग्रवाल

श्री प्रसन्न श्रीवास्तव

श्री एल. एन. कोठारी

पूर्व कौशल मान्यता कार्यक्रम में उपस्थित चम्पारण के ऑटो चालक।

इस योजना का प्रमुख उद्देश्य लोगों का उनकी पूर्व योग्यता के आधार पर आकलन करना, उन्हें मान्यता देना व उन्हें प्रमाणित करना है। इसके अतिरिक्त लाभार्थियों को व्यापक और स्थिर रोजगार के योग्य बनाना और सामाजिक व राष्ट्रीय एकता की भावना उनके मन में भरने के लिए गांधीजी के दर्शन से उन्हें अवगत करवाना भी इस कार्यक्रम का उद्देश्य है।

चम्पारण सत्याग्रह के सौ वर्ष पूर्ण होने के मौके पर दिल्ली और एनसीआर में ऑटो चालक के तौर पर कार्य कर रहे चम्पारण वासियों को स्वावलंबी और अच्छे सांस्कृतिक दूत

(ऊपर से नीचे) श्रीमती मंजूश्री मिश्रा, श्री प्रभात, श्री बसंत जी, डॉ. बी. मिश्रा, श्रीमती गीता शुक्ला, श्री राजदीप पाठक, डॉ. वेदाभ्यास कुंडू प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए।

बनाने के लिए समिति ने विशेष ध्यान केन्द्रित किया है। इसके तहत 16 अगस्त, 2017 को गांधी दर्शन में ऑटो चालकों के साथ एक बैठक का आयोजन किया गया। उसके बाद से 13 सत्र किए जा चुके हैं, जिसमें चम्पारण के 519 ऑटो चालक भाग ले चुके हैं।

प्रशिक्षण सत्र के लिए संसाधन व्यक्तियों के तौर पर डॉ. मंजू अग्रवाल (प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ), श्री प्रशांत श्रीवास्तव (जीवन कौशल प्रशिक्षक), श्री पवन कुमार (विषय विशेषज्ञ) और श्री लल्लन राम (विषय विशेषज्ञ), श्री विश्वजीत और श्री विश्वास गौतम थे। इन सत्रों में ऑटो चालकों की मेडीक्लेम, जीवन बीमा, व्यवसायिक और निजी

वाहन पंजीकरण संबंधी सभी समस्याओं का निराकरण किया गया। मोटर वाहन कौशल विकास परिषद् के नॉडल अधिकारी ने चालकों का आकलन किया। आकलन के सफलतापूर्वक पूर्ण होने पर प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार व प्रमाण पत्र से पुरस्कृत किया गया।

प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन करते समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान। श्री आशीष और सुश्री मौसमी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए।

एक ओर समिति द्वारा पूर्व योग्यता को मान्यता और उसे प्रमाणीकरण करने के लिए विशेष योजना चलाई गई, दूसरी ओर निचले तबके और विवाद प्रभावित इलाकों के युवाओं को रोजगार दिलाकर उन्हें मुख्य धारा में लाने के उद्देश्य से समिति ने सीमित अवधि रोजगार परियोजनाओं को आरंभ किया। निम्नलिखित समूहों को प्रशिक्षित किया गया।

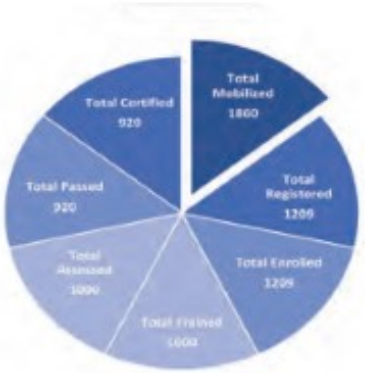

**आनंद और उत्साहः** (ऊपर) पूर्व कौशल मान्यता कार्यक्रम के सफल प्रतिभागी गांधी दर्शन में प्रसन्नता से अपने प्रमाण–पत्रों को लहराते हुए। (बाएं) दिल्ली में रह रहे चम्पारण के ऑटो चालक कार्यक्रम समाप्ति के बाद संयोजकों के साथ समूह चित्र के दौरान।

- दूसरा और तीसरा समूह : 23–24 दिसंबर और 30–31 दिसंबर, 2017– 78 प्रतिभागी
- चौथा समूह–6 जनवरी को प्रशिक्षण और 7 जनवरी, 2018 को आकलन–49 प्रतिभागी सम्मिलित

- पांचवां समूह–12 जनवरी को प्रशिक्षण और 13 जनवरी को आकलन–45 प्रतिभागी शामिल।
- छठा समूह–19 जनवरी को प्रशिक्षण और 20 जनवरी को आकलन–38 प्रतिभागी शामिल।
- सातवां समूह–27 जनवरी को प्रशिक्षण और 28 जनवरी को आकलन–41 प्रतिभागी शामिल।
- आठवां, नौवां, दसवां और ग्यारहवां समूह–4, 19, 25, 26 फरवरी–करीब 15 प्रतिभागी।
- बारहवां और तेरहवां समूह–15 और 18 मार्च, 2018–73 प्रतिभागी शामिल।

भारत सरकार की कौशल विकास योजना के तहत समिति द्वारा दिल्ली में कार्यरत चम्पारण के ऑटो चालकों के लिए पूर्व कौशल को मान्यता कार्यक्रम आरंभ किया गया। यह कार्यक्रम गांधी दर्शन राजघाट में 24 सितंबर, 2017 को शुरू किया गया। इस योजना में काफी संख्या में ऑटो चालकों ने उत्साह दिखाया।

इस कार्यक्रम के तहत प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन 24 नवंबर, 2017 को गांधी दर्शन परिसर में किया गया, जिसमें डॉ. वेदाम्यास कुंडू, श्री एस. ए. जमाल, श्रीमती गीता शुक्ला, श्रीमती शाश्वती झालानी, श्री प्रभात कुमार, श्रीमती मंजूश्री मिश्रा, श्री विश्वजीत सिंह और श्री विश्वास गौतम उपस्थित रहे।

इस कार्यक्रम के दौरान ऑटो चालकों के दैनिक जीवन और कार्यक्षेत्र में आने वाली चुनौतियों के बारे में बात की गई। वक्ताओं ने उन्हें इन चुनौतियों से निपटने के तरीके सुझाए।

इससे पूर्व 27 सितंबर, 2017 को एएसडीएस नोडल एजेंसी द्वारा एक परीक्षा आयोजित की गई। इसका परिणाम 1 अक्तूबर को जारी किया गया। इसमें भाग लेने वाले 45 परीक्षार्थियों का परिणाम शत–प्रतिशत रहा। सभी परीक्षार्थियों ने गांधी स्मृति में 2 अक्तूबर को हुए गांधी जयंती समारोह में भाग लिया।

### चरखे के लाभ विषय पर त्रैमासिक पाठ्यक्रम का शुभारंभ

समिति द्वारा गांधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय के सौजन्य से "चरखे के लाभ" विषय पर त्रैमासिक पाठ्यक्रम का शुभारंभ, 6 अक्तूबर, 2017 को किया गया।

पाठ्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर गांधी भवन में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें श्री लक्ष्मीदास, डॉ. सीता बिम्बराह, गांधी भवन की निदेशक प्रो. अनिता शर्मा और समिति की ओर से श्रीमती शाश्वती झालानी उपस्थित थी।

दिल्ली विश्वविद्यालय के गांधी भवन में चरखा कताई का प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित करतीं समिति की सुश्री रेणु।

कार्यक्रम का आरंभ सुश्री सीमा द्वारा चरखा गीत "है सुदर्शन चक्र से भी गतिमय चरखा तुम्हारा" से किया गया। श्रीमती शाश्वती झालानी ने गांधीवादी अवधारणा और चरखे के महत्व पर अपने विचार रखे। उन्होंने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति का परिचय भी लोगों को दिया।

अपने संबोधन में श्री लक्ष्मीदास ने कहा कि चरखा देश की विकेन्द्रिकृत अर्थव्यवस्था को इंगित करता है। चरखे की खोज ने गांधीजी को पूर्णतया आध्यात्मिक, आर्थिक संतुष्टि दी, जिसे उन्होंने बाद में अपने देशवासियों को दे दिया। यह स्थिर प्रगति का एक शाश्वत संदेश था, जिसने चरखे को राष्ट्रवाद का एक मजबूत प्रतीक बना दिया। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि चरखे के बारे में अधिक जानकारी के लिए वे गांधी हैरिटेज पोर्टल का अवलोकन करें।

डॉ. सीता बिम्बराह ने चरखे की पृष्ठभूमि के बारे में बताते हुए इसे कातने के लाभ के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि यह लोगों को एक–दूसरे से जोड़ता है और लोगों को एक मजबूत आर्थिक आधार प्रदान करता है।

हरिजन सेवक संघ के श्री फूलचन्द भाई ने शांति के विचार का अनुसरण करने के लिए युवाओं को चरखे का सहारा

लेने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि यह जीवन दर्शन का एक अभिन्न भाग है और इसे समर्पण के साथ ग्रहण करना चाहिए।

कार्यशाला का समापन सुश्री सीमा के 'चल मेरे चरखा प्यारे, हर भारत के संकट सारे' गीत की प्रस्तुति के साथ हुआ। चरखा कातने के प्रमाणपत्र कार्यक्रम की पहली क्लास 11 अक्तूबर, 2017 को गांधी भवन में आरंभ की गई, जिसमें 13 विद्यार्थियों ने अपना नामांकन करवाया। ये कक्षाएं गांधी भवन और गाधी दर्शन में सप्ताह में दो बार चलेंगी।

समिति की ओर से वरिष्ठ पुस्तकाल्याध्यक्षा श्रीमती शाश्वती झालानी उपस्थित थीं। इसके अतिरिक्त समिति की सुश्री रेणु भी वहां मौजूद थीं, जिसने विद्यार्थियों को चरखा कातने का प्रशिक्षण दिया। श्रीमती झालानी ने विद्यार्थियों को चरखे की प्रासंगिकता से अवगत करवाया और बताया कि कैसे यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आगे ले जाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

यह निश्चय किया गया कि गांधी दर्शन और गांधी भवन में सप्ताह में दो बार कक्षाएं लगाई जाएंगी। विद्यार्थियों ने 13 अक्तूबर, 2017 को गांधी दर्शन का दौरा किया और यहां के विभिन्न पांडालों का अवलोकन किया। उन्होंने समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान से वार्ता भी की।

यह पाठ्यक्रम आज के तकनीकी दौर में सराहनीय है, जिसमें हाथ और मन दोनों आध्यात्मिक और आर्थिक उन्नतियों के लिए काम करते हैं।

### चरखा प्रशिक्षण कार्यक्रम

समिति गांधी की तकनीकों का प्रसार करने के लिए नियमित रूप से अनेक अथपूर्ण कार्यक्रमों का आयोजन समाज के हर तबके के लिए करती है। चरखा कताई प्रशिक्षण भी एक ऐसा ही कार्यक्रम है, जिसे गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा स्कूल और कॉलेजों में चलाया जाता है।

महात्मा गांधी जी के लिए चरखा आर्थिक आजादी के लिए महत्वपूर्ण अस्त्र था और आत्म सम्मान का सूचक था। गांधीजी चाहते थे कि प्रत्येक भारतीय चरखे पर कताई करे। आज के युवा और बच्चों को भी चरखा कताई के बारे में जानने की आवश्यकता है।

समिति द्वारा 18 नवम्बर, 2017 को सफदरजंग एन्कलेव स्थित ग्रीन फील्ड स्कूल में एक विशेष चरखा कताई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। समिति की ओर से प्रतिनिधि के रूप में सुश्री रेणु और श्री धर्मराज ने

सुश्री रेणु (ऊपर) और श्री धर्मराज कुमार (नीचे) ग्रीनफील्ड स्कूल, सफदरजंग एन्कलेव के विद्यार्थियों को कताई की बारिकियां सिखाते हुए।

विद्यार्थियों को चरखा कताई की बारीकियां सिखाईं। इस कार्यक्रम में 450 से अधिक विद्यार्थियों और शिक्षकों ने उत्साह से भाग लिया। सभी चरखा के बारे में जानने और कताई सीखने के प्रति उत्सुक थे।

### अमृत कृषि खेती और महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्य

डॉ. सिद्धार्थ बिस्वास (इनसेट) गांधी दर्शन में अमृत कृषि कार्यक्रम के तहत प्रतिभागी स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए।

समिति द्वारा गांधी स्मृति और दर्शन समिति में कार्यरत बागवानों के लिए दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'अमृत कृषि' का आयोजन 11 से 13 जनवरी तक गांधी दर्शन परिसर में किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन एम्स के डॉक्टर सिद्धार्थ बिस्वास ने केन्द्रीय जल आयोग के उपनिदेशक श्री राजेश के सहयोग से किया। इस कार्यशाला में 60 लोगों ने भाग लिया।

इस मौके पर डॉ. सिद्धार्थ ने बताया कि अमृत कृषि खेती की एक पद्धति है, जो प्रकृति के प्रयोग और वैज्ञानिक पद्धति से खेत की उर्वरा शक्ति को मजबूत बनाती है।

गांधी दर्शन में अमृत कृषि कार्यक्रम में उपस्थित समिति स्टाफ व बागवानी से संबंधित लोग।

अमृत कृषि कार्यक्रम के तहत डॉ. सिद्धार्थ बिस्वास प्रतिभागियों को समझाते हुए। समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान (एकदम बाएं) भी इस मौके पर उपस्थित हैं।

इसमें खेत में पाए जाने वाले तत्वों को ही इस्तेमाल किया जाता है, जिससे उत्पादकता और फसल के पोषण को बढ़ोत्तरी मिलती है। अमृत कृषि का मुख्य सिद्धांत 'सूरज की कटाई' है।

अमृत कृषि आधुनिक समय में कृषि कार्य में आने वाली समस्याओं का समाधान करती है। इसमें स्थानीय संसाधनों जैसे गोबर, गौमूत्र, गुड़ और उपलब्ध बायोमास की सहायता से अमृत जल और अमृत मिट्टी तैयार की जाती है। अमृत जल खेत में इस्तेमाल किया जाता है और अमृत मिट्टी का प्रयोग फसल की वृद्धि के लिए होता है। इस पद्धति के तहत किसी भी तरह के कीटनाशक/उर्वरक का प्रयोग नहीं किया जाता।

कार्यशाला के दौरान, प्रतिभागियों को जैविक बगीचा व 'गंगा मां मॉडल अमृत कृषि' बनाने का प्रशिक्षण भी दिया गया।

## महिलाओं के लिए आजीविका के अवसरः युवा महिलाओं की सफलता गाथा

कौशल विकास और महिलाओं के लिए आजीविका के अवसरों का सृजन विषय पर एक परियोजना का शुभारंभ मिर्जापुर, गाजियाबाद में किया गया। इसका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं में कौशल का विकास करना और उन्हें आत्मविश्वासी व आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना था। समिति के तत्वावधान में इस परियोजना का संयोजन हुनर फाउंडेशन ने किया।

इस परियोजना के समस्त पांच प्रशिक्षण मॉड्यूल सफलतापूर्वक पूर्ण किए गए। इस योजना से जुड़ी प्रशिक्षित महिलाओं और उनकी आजीविका संबंधी विवरण इस प्रकार है।

**अवधि : 08–10–2016 से 04–08–2017 तक**

| महिलाओं की संख्या | पुनः नवीनीकरण | कागज | उत्पाद | बांस के पेन | हस्त. निर्मित होल्डर |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रशिक्षित | 26 | 22 | 9 | 5 | 9 |
| पात्रता परीक्षा | 11 | 10 | 6 | 4 | 5 |
| आजीविका प्राप्त | 8 | 4 | 4 | 3 | 5 |

कुल 61 महिलाओं को 5 प्रशिक्षण मॉड्यूल के अंतर्गत प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें से 25 महिलाएं अब आजीविका के अवसर से जुड़ी हैं। प्रशिक्षुओं का निम्नलिखित मानदंडों के आधार पर आकलन किया गया।

- बनाए गए उत्पाद की गुणवत्ता
- समय प्रबंधन
- सृजनात्मकता

हुनर–एक प्रयास: कागज से उत्पाद बनाने के केंद्र में उपस्थित प्रशिक्षु।

**चुनौतियां और समाधान**–प्रथम प्रशिक्षण मॉड्यूल से पांचवें मॉड्यूल तक आते–आते प्रशिक्षुओं की मानसिकता में परिवर्तन साफ नजर आया। प्रशिक्षण के दौरान महिलाएं आगे आईं उन्होंने परिचर्चाओं और बातचीत में हिस्सा लिया। चूंकि ये महिलाएं धीरे–धीरे बाहर की दुनिया से परिचित हो रही थीं, इसलिए नई चीजों को सीखने और अपनी पढ़ाई आरंभ करने की उनकी ललक बढ़ गई थी।

संस्थापक निदेशक सुश्री रूचि रस्तोगी ने कहा कि, "क्योंकि अब महिलाओं ने अपने नए कौशल के जरिए कमाना आरंभ कर दिया है, तो पारिवारिक बंधन भी धीरे– धीरे कम हो रहे हैं। हमने प्रशिक्षुओं के परिवार के सदस्यों से बात करना आरंभ किया है, ताकि हम उनके विचारों को बेहतर तरीके से समझें और उनके बीच की दूरी को कम कर सकें।"

उन्होंने जोड़ा, "इनमें से अनेक महिलाएं अशिक्षित अथवा बीच में ही पढ़ाई छोड़ चुकी हैं, उनकी स्कूली शिक्षा पर्याप्त रूप से नहीं हुई है। अतः हमने अपने सहयोगी एनजीओ लक्ष्मी संस्थान के सौजन्य से इनकी शिक्षा पर काम करना आरंभ कर दिया है। प्रत्येक महिला को केवल केन्द्र पर निःशुल्क शिक्षा का विकल्प इस काम के लिए नियुक्त शिक्षक द्वारा दिया गया है। अपनी पढ़ाई जारी रखने के बाद इनको राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय में पंजीकृत करवाया जाएगा।"

**परिणाम प्राप्त**

**प्रशिक्षित महिलाएं** : कुल 50 प्रशिक्षित महिलाओं में 16 ने बेहतरीन प्रदर्शन कर आजीविका अवसर को प्राप्त किया। एक बार नियमित रूप से इनका कार्य आरंभ हो जाए, तो यह अन्य प्रशिक्षुओं के लिए प्रेरक का काम करेगा और वे अपनी आजीविका कमाने के लिए गंभीर प्रयास करेंगे।

**सामुदायिक स्वीकार्यता** : हमने एक विस्तृत सामुदायिक स्वीकार्यता प्राप्त की है और लोगों ने हम पर विश्वास करना आरंभ किया है। प्रशिक्षण से अनुपस्थित रहने वालों और इसे बीच में छोड़ने वालों की संख्या घटी है।

**विश्वास बहाली**–मिर्जापुर समुदाय की महिलाओं ने इस प्रकार का अवसर अपने जीवन में प्रथम बार प्राप्त किया है। हम उन्हें नाटक, ड्रामा, जनता के बीच बोलने और बड़ी संख्या में दर्शकों के बीच अपनी बात रखना जैसे कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रेरित करते हैं। यह सब हम अपने कार्यालय में आयोजित करते हैं। कुछ इन गतिविधियों का आनंद लेते हैं, लेकिन कुछ को अब भी ऐसे आयोजनों में भाग लेने के लिए अपने परिवार से अनुमति प्राप्त नहीं होती।

गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के हुनर को पहचान देने के प्रयासों के तहत टेलरिंग व कशीदाकारी का कार्य सीखतीं महिलाएं।

# विविध कार्यक्रम

## स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन

भारत सरकार द्वारा सरकारी कार्यालयों को स्वच्छ रखने के लिए बनाए गए कार्यक्रम 'स्वच्छता पखवाड़ा' के तहत गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति ने अपने दोनों कार्यालय परिसरों, गांधी दर्शन और गांधी स्मृति में सफाई अभियान बड़े उत्साह से चलाया। इस अवसर पर सभी कर्मचारियों ने मिलकर कार्यालय परिसर को साफ–सुथरा बनाया।

गांधी दर्शन में स्वच्छता अभियान में भाग लेते विभिन्न संस्थानों के अध्यापकगण।

समिति नियमित रूप से स्वच्छता की भावना को आत्मसात करने के उद्देश्य से दिल्ली ही नहीं, अपितु देश के विभिन्न भागों में भी ऐसे अभियान चलाती है। चाहे वह राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव 2016 में स्वच्छ भारत अभियान पर नुक्कड़ नाटक हो या फिर चम्पारण के शताब्दी वर्ष के अवसर पर बिहार के विभिन्न भागों में चलाया सफाई अभियान हो, समिति हमेशा अग्रणी रहती है।

## 'चरखा सत्याग्रह' पर सेमिनार और व्याख्यान

लोकरंग के सहयोग से समिति द्वारा महात्मा गांधी के सत्याग्रह, चरखा, किसान और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम पर सेमिनार और व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में 16 जुलाई, 2017 को हुए इस कार्यक्रम में लोक संगीत का भी प्रदर्शन किया गया। भोजपुरी संगीत ग्रुप 'आखर' की प्रस्तुति ने लोगों का मन मोह लिया।

इस कार्यक्रम में प्रतिभागियों को 1915 में महात्मा गांधी के प्रथम अहिंसक आंदोलन की जानकारी दी गई। व्याख्यान और संगीत के माध्यम से चम्पारण सत्याग्रह पर केन्द्रित कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया, जिसे दर्शकों ने खूब सराहा।

कलाकारों ने अपनी कला के जरिए से स्वाधीनता आंदोलन में चरखे के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने दिखाया कि उस युग में चरखा गीत की गूंज हर घर में सुनाई देती थी और महात्मा गांधी के नेतृत्व मे लोगों को चरखे के पहिये के धागों के माध्यम से स्वराज प्राप्ति की प्रेरणा दी जाती थी। यह संगीत और ज्ञान से भरा एक अद्भुत कार्यक्रम था, जिसका संचालन श्री राजीव कुमार सिंह ने किया।

## महात्मा गांधी के दर्शन पर श्रीलंका के न्यायाधीशों के साथ विमर्श

श्रीलंका के जिला कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक के न्यायधीशों का एक 35 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल 18 अगस्त, 2017 को गांधी दर्शन परिसर पहुंचा, इसका नेतृत्व श्रीलंकाई सुप्रीम कोर्ट के न्यायधीश जस्टिस अनिल गुणरत्ने कर रहे थे।

हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास ने प्रतिनिधिमंडल से बातचीत करते हुए उन्हें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संवाद और विमर्श के माध्यम से एक–दूसरे की संस्कृति के बारे में जाना जा सकता है। महात्मा गांधी के जीवन को याद करते हुए उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी ने पहले अहिंसा को समझा और उसके बाद उसे व्यवहारिक रूप से लागू किया। उन्होंने महात्मा गांधी के दर्शन और विचार पर आधारित उनके 11 व्रतों के बारे में भी बताया, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

इससे पूर्व समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने प्रतिनिधिमंडल का स्वागत करते हुए कहा कि महात्मा गांधी का अहिंसा संबंधी दर्शन विश्व संकट का समाधान है। प्रतिनिधिमंडल ने गांधी स्मृति परिसर का भी अवलोकन किया, जहां डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली ने उनका स्वागत किया। इस अवसर पर दिल्ली न्यायिक अकादमी के

1. (बाएं से दाए) श्री चन्द्रसेन कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी दिल्ली न्यायिक अकादमी, श्रीलंका उच्चतम न्यायलय के न्यायधीश न्यायमूर्ति श्री अनिल गुणरत्ने, समिति के कार्यकारिणी सदस्य श्री लक्ष्मीदास एवं समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान परिचर्या में भाग लेते हुए।
2. माननीय न्यायधीश श्री अनिल गुणरत्ने को चरखा भेंट करते हुए समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।
3. श्रीलंकाई प्रतिनिधि मंडल को गांधी स्मृति परिसर में प्रदर्शनी के बारे में जानकारी देती हुई समिति की शोध सहयोगी डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री चंद्रेश कुमार सहित अनेक अधिकारीगण उपस्थित थे।

## शिक्षक दिवस पर समाज को आकार प्रदान करने में शिक्षकों की भूमिका पर चर्चा

शिक्षक दिवस के मौके पर 5 सितंबर, 2017 को समिति और इग्नू के तत्वावधान में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर प्रो. टी. के. थॉमस मुख्य वक्ता थे। उन्होंने अच्छे अध्यापक की विशेषताएं बताते हुए समझाया कि कैसे अध्यापक बेहतर राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान दे सकते हैं।

श्री थॉमस ने कहा कि अध्यापक समाज के असली निर्माता होते हैं। उन्हें अपने अध्यापन के दौरान अपने व्यवहार में विशेष सावधानी बरतनी चाहिए, क्योंकि शिष्य भी अपने अध्यापक का अनुसरण अपने व्यवहार में करते हैं। उन्होंने एक उपयुक्त अध्यापक की विशेषताओं को दर्शाते हुए पॉवर प्वाइंट की प्रस्तुति भी दी।

(ऊपर) शिक्षक दिवस समारोह में मंचासीन अतिथिगण।

(नीचे) कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न संस्थानों के अध्यापकगण।

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने उपस्थित लोगों को शिक्षक दिवस की बधाई देते हुए अध्यापकों को गांधीवाद के माध्यम से लोगों को शिक्षित करने की अपील की। इग्नू के क्षेत्रीय निदेशक श्री के. डी. प्रसाद ने विश्वविद्यालय द्वारा चलाए जा रहे अनेक कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने अध्यापकों का आह्वान किया कि वे बच्चों को संस्कारवान बनाने के लिए भी प्रयास करें। संचालन श्रीमती शाश्वती झालानी ने किया।

**स्वच्छता पखवाड़ा के तहत स्वच्छता अभियान चलाया**

स्वच्छता अभियान के तहत समिति द्वारा हरिजन बस्ती बुराड़ी में 25 सितंबर, 2017 को स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस मौके पर स्थानीय लोगों के साथ चौपाल पर चर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। हरिजन सेवक संघ के उपाध्यक्ष श्री लक्ष्मीदास, जिनकी अगुवाई में यह कार्यक्रम हुआ, ने इस मौके पर स्वच्छता के महत्व पर अपने विचार रखे। उन्होंने लोगों से नियमित रूप से सफाई करने का आह्वान किया। समिति के श्री विवेक भी इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत विभिन्न स्थानों पर समिति द्वारा चलाए गए स्वच्छता अभियान के कुछ दृश्य।

ओखला स्थित कस्तूरबा बालिका विद्यालय में 25 सितंबर, 2017 को स्वच्छता अभियान चलाया गया। इस अवसर पर सुश्री श्वेता महरोत्रा के नेतृत्व में स्टाफ सदस्यों ने विद्यालय परिसर की सफाई की। सुश्री महरोत्रा ने विद्यार्थियों को स्वच्छता के महत्व के बारे में जानकारी दी।

1. समिति के स्टाफ सदस्यों ने गांधी दर्शन और गांधी स्मृति परिसर में स्वच्छता पखवाड़ा के तहत सफाई की। इस अभियान का नेतृत्व समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने किया। स्टाफ सदस्यों ने इस मौके पर उत्साह से अपने कार्यालयों, आसपास के क्षेत्रों और सड़कों की सफाई की।

2. इस अवसर पर "स्वच्छ भारत–हरा भरा भारत' विषय पर निबंध प्रतियोगिता और 'स्वच्छता के महत्व' पर चित्रकला प्रतियोगिता व वाद–विवाद प्रतियोगिता भी हुई, जिसमें कर्मचारियों ने उमंग से भाग लिया।

3. राजकीय बुनियादी विद्यालय वृंदावन और सिरसिया अड्डा में 16–30 सितंबर को स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसमें बच्चों ने गांव की गलियों की सफाई की। इस मौके पर ग्रामीणों को साफ–सफाई रखने के लाभों से अवगत करवाया गया। इसके साथ–साथ ग्रामीणों को शौचालय बनवाने के लिए भी प्रेरित किया गया।

4. कस्तूरबा महिला विद्यापीठ सेवापुरी ने प्राचार्या श्रीमती अनिता देवी के नेतृत्व में स्वच्छता अभियान चलाया जिसमें महिला पीठ की छात्राओं ने उत्साह से भाग लिया। इस अवसर पर वाराणसी के विभिन्न गांवों में स्वच्छता अभियान भी आयोजित किया गया। स्वच्छता पर निबंध प्रतियोगिता कार्यक्रम का अन्य आकर्षण रही।

## प्रदूषण मुक्त दिल्ली: एक अभियान

समिति द्वारा काशियाना फाउंडेशन के सौजन्य से गांधी जयंती के मौके पर 2 अक्तूबर, 2017 को कनॉट प्लेस में 'प्रदूषण मुक्त दिल्ली' अभियान चलाया गया। इस अभियान में सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान के मुद्दे को प्रमुखता से उभारा गया। इस मौके पर चिकित्सकों ने फेफड़ों की निःशुल्क जांच की।

धुआँ मुक्त दिल्ली अभियान के मौके पर कनॉट प्लेस में आयोजित नुक्कड़ नाटक का एक दृश्य।

काशियाना फाउंडेशन की ओर से इस कार्यक्रम में एक नुक्कड़ नाटक का प्रदर्शन किया गया। एक विमर्श और हस्ताक्षर अभियान भी इस मौके पर चलाया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय मंत्री श्री गिरीराज सिंह, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. विजय सोनकर शास्त्री भी उपस्थित थे।

## गांधी, गंगा, गिरिराज : जागरूकता यात्रा का आरंभ

चम्पारण सत्याग्रह के सौ साल पूर्ण होने के अवसर पर, समिति द्वारा 'गंगा बचाओ आंदोलन' के सौजन्य से "गांधी, गंगा, गिरिराज : जागरूकता यात्रा" का आरंभ 3 अक्तूबर, 2017 को गांधी स्मृति से किया गया। यात्रा के उद्घाटन

देश की नदियों को बचाने के लिए गांधी स्मृति परिसर से आरंभ हुई यात्रा में भाग लेते विभिन्न धर्म गुरू।

(ऊपर) गांधी स्मृति से इण्डिया गेट तक मार्च निकालते लोग।

(नीचे) नदियों को बचाने को लेकर इण्डिया गेट पर एकत्रित लोग।

अवसर पर समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, गंगा बचाओ आंदोलन की संयोजिका श्रीमती रमा राउत सहित विभिन्न धर्मों के आध्यात्मिक गुरू उपस्थित थे।

जागरूकता यात्रा में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आए प्रसिद्ध व्यक्तित्व, जिनमें मुख्यतः वैज्ञानिक, गांधीवादी, विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के प्रमुख और धर्मगुरू शामिल हैं, ने शिरकत की। ये सभी साथ मिलकर जमीनी स्तर पर सभी नदियों व जल संसाधनों की प्रतीक गंगा और सभी पर्वतों, वन्यजीवन और जंगलों के प्रतीक गिरीराज हिमालय को बचाने की दिशा में काम करेंगे। सभी लोगों की जागरूकता, विकास की गांधीवादी अहिंसक संस्कृति को विकसित करेगी, जो शायद वैश्विक पर्यावरणीय संकट का एकमात्र हल है।

इस मौके पर गांधी स्मृति से इंडिया गेट तक एक जागरूकता मार्च भी निकाला गया। इसमें विभिन्न स्कूलों के करीब 200 बच्चों ने भाग लिया, जिनका नेतृत्व एशियन मैराथन चैंपियन डॉ. सुनिता गोदारा ने किया। इस कार्यक्रम के तहत वाराणसी, हरिद्वार, श्रीनगर, बद्रीनाथ सहित देश के विभिन्न स्थानों पर कार्यशाला, सेमिनार, बैठकें आदि आयोजित की जाएंगी।

## दीवाली से पूर्व स्वच्छता अभियान

स्वच्छ भारत अभियान के तहत, समिति की ओर से गांधी दर्शन और गांधी स्मृति परिसरों में स्वच्छता पखवाड़ा आयोजित किया गया। समिति की ओर से दीवाली से पूर्व दोनों परिसरों में 17 अक्तूबर, 2017 सघन सफाई अभियान चलाया, जिसमें स्टाफ के सभी सदस्यों ने भाग लिया।

दीवाली की तैयारियों को लेकर गांधी दर्शन में किए गए स्वच्छता अभियान की झलकियाँ।

## राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर एकता मार्च का आयोजन

राष्ट्रीय एकता दिवस के मौके पर 30 अक्तूबर, 2017 को एकता मार्च का आयोजन किया गया। इसमें वरिष्ठ गांधीजनों, कुलपतियों, प्राध्यापकों, शोध प्रशिक्षुओं, लेखकों, स्वयंसेवकों सहित 200 लोगों ने भाग लिया।

यह मार्च गांधी समाधि, राजघाट से आरंभ होकर किसान घाट मार्ग होता हुआ गांधी दर्शन परिसर में आकर संपन्न हुआ।

राष्ट्रीय एकता दिवस के अवसर पर वरिष्ठ गांधीवादियों के साथ समिति के स्टाफ सदस्यों ने राजघाट स्थित महात्मा गांधी की समाधि पर उन्हें नमन किया।

बाद में महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रमों और ग्राम विकास से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति भी इस मौके पर हुई।

उल्लेखनीय है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती को हर वर्ष राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है, इसकी शुरूआत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2014 में की थी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत के प्रथम गृहमंत्री श्री वल्लभ भाई पटेल को श्रद्धांजलि देना है, जिन्होंने भारत को अखंड रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

**नौवां सीएमएस वातावरण : फिल्म निर्माताओं को भारतीय वर्ग में 17 और अंतरराष्ट्रीय वर्ग में 14 पुरस्कार वितरित।**

समिति ने नवें सीएमएस वातावरण की मेजबानी की। यह भारत का एकमात्र अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण और वन्य जीवन फिल्म फैस्टिवल है, जिसका आयोजन इस बार गांधी दर्शन परिसर में 2 से 6 नवम्बर को किया गया। इस अवसर पर फिल्म निर्माताओं को विभिन्न वर्गों में 30 से अधिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इन पुरस्कारों का चयन श्री गोविन्द निहलानी की अध्यक्षता वाली ज्यूरी ने 113 नामांकित फिल्मों में से किया।

(ऊपर) सीएमएस वातावरण कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन से उद्घाटन करते हुए गांधी शांति पुरस्कार से सम्मानित श्री चंडी प्रसाद भट्ट।

(नीचे) कार्यक्रम स्मारिका के विमोचन के अवसर पर उपस्थित श्री चंडी प्रसाद भट्ट व अन्य।

इस बार इस फैस्टिवल की थीम थी–'कंजर्वेशन फॉर वाटर' (नौवां प्रतियोगी और आठवां यात्रा संस्करण), जिसमें जलवायु परिवर्तन और पानी, विश्व में पानी के लिए संघर्ष, जलवायु की परिवर्तनशीलता, खाद्य और स्वास्थ्य असुरक्षा और पर्यावरण का विनाश जैसे मुद्दों को छुआ गया।

एक भव्य पुरस्कार समारोह में डॉ. एन भास्कर राव, अध्यक्ष सीएमएस और अन्य विशिष्ट अतिथि, सम्मानित पत्रकार, पर्यावरणविद् और फिल्म निर्माता उपस्थित थे। पुरस्कृत फिल्म और फिल्म निर्माताओं की संपूर्ण सूची संलग्न है–

कार्यक्रम के दौरान गांधी दर्शन परिसर में पर्यावरण संबंधित मुद्दों और पर्यावरण संरक्षण को लेकर भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं पर आधारित प्रदर्शनी भी लगाई गई।

राष्ट्रीय वर्ग में जलाल उद् दीन बाबा की 'सेविंग द सेवियर' को बेहतरीन फिल्म का पुरस्कार मिला। अंतरराष्ट्रीय वर्ग में यह पुरस्कार टागार्ट सीगल व जॉन बेज की फिल्म 'सीडः द अनटोल्ड स्टोरी' को मिला।

**वाराणसी व्याख्या केन्द्र के विद्यार्थियों का संगीतमय प्रदर्शन**

संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रोत्साहित वाराणसी के विभिन्न व्याख्या केन्द्रों के विद्यार्थियों ने गांधी दर्शन परिसर में दिनांक 30 दिसंबर, 2017 को संगीतमयी प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अर्द्ध शास्त्रीय संगीत पर आधारित चैति और कजरी प्रस्तुत किया।

**एक शाम शहीदों के नाम**

समिति द्वारा भारत विकास परिषद नोएडा के सौजन्य से 20 जनवरी, 2018 को एक शाम शहीदों के नाम का आयोजन नोएडा में किया गया।

इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायक पद्मश्री श्री कैलाश खेर और पद्मश्री मालिनी अवस्थी ने अपनी स्वरलहरियों से शहीदों और देश के लिए अपनी जान न्यौछावर करने वाले वीर बहादुरों को श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस कार्यक्रम में करीब 2000 लोगों ने शिरकत की।

**अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर शांति प्रार्थना बैठक**

गिल्ड ऑफ सर्विसेज, विडो वार एसोसिएशन और गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा महिला दिवस के मौके पर 8 मार्च, 2018 को शांति प्रार्थना बैठक का आयोजन गांधी स्मृति परिसर में किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्रों से आए शिक्षाविदों, लेखकों, कवियों और गणमान्य लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम में पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की पत्नी श्रीमती गुरशरण कौर, प्रसिद्ध अभिनेत्री सुषमा

(ऊपर) पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की पत्नी श्रीमती गुरशरण कौर महात्मा गांधी के चित्र पर पुष्प चक्र अर्पित करती हुई।

(नीचे) गांधी स्मृति में जारी शांति प्रार्थना।

सेठ, डॉ. मोहिनी गिरी, गिल्ड ऑफ सर्विस की अध्यक्षा डॉ. सईदा हमीद, डॉ. ए. के. मर्चेंट विशेष तौर पर उपस्थित थे। सुश्री दीपमाला मोहन, सुश्री कुमुद दीवान, सुश्री रिनी सिंह ने कार्यक्रम में कबीर, तुलसी मीरा के भजन प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर विभिन्न धर्मगुरूओं ने सर्व धर्म प्रार्थना की। कार्यक्रम का आरंभ डॉ. गीता चन्द्रन की भरतनाट्यम प्रस्तुति से हुआ। दिल्ली स्थित संयुक्त राष्ट्र सूचना केन्द्र के श्री राजीव चन्द्रन ने संयुक्त राष्ट्र महासचिव श्री एंटोनियो गुतरस का संदेश पढ़कर सुनाया :

हम महिला अधिकारों के लिए एक मुहिम चला रहे हैं। ऐतिहासिक और संरचनात्मक असमानताओं से उत्पीड़न और भेदभाव आरंभ हुआ है और जो चारों और फैलने के लिए तैयार है। ऐसी स्थिति पहले कभी नहीं हुई।

लैटिन अमेरिका से यूरोप, यूरोप से एशिया, सोशल मीडिया में, फिल्म सेट पर, कारखाने में, सड़कों पर, महिलाएं यौन उत्पीड़न, शोषण और सभी प्रकार के भेदभाव के लिए स्थायी परिवर्तन और इस पर जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाने की मांग कर रही हैं। लिंग समानता प्राप्त करना

(ऊपर) गांधी स्मृति सर्वधर्म प्रार्थना में भाग लेते विशिष्ट अतिथिगण।

(नीचे) बनारस घराना से डॉ. कुमुद दीवान कबीर भजन प्रस्तुत करते हुए।

और महिलाओं और कन्याओं को सशक्त बनाना हमारे समय का एक महत्वपूर्ण अधूरा कार्य है और यह हमारे संसार में मानवाधिकारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है।

जहां नियम और कानून होते हैं, उन्हें अक्सर अनदेखा किया जाता है और जिन महिलाओं ने कानूनी कार्रवाई करने का प्रयास किया है, उन्हें बदनाम करने का प्रयास किया जाता है और उनकी आपत्तियों को खारिज कर दिया जाता है। हम जानते हैं कि यौन उत्पीड़न और महिलाओं से दुर्व्यवहार कार्यस्थलों, सार्वजनिक स्थानों और स्वयं के घरों में हो रहा है। यह उन देशों में हो रहा है, जो महिला समानता के अपने रिकॉर्ड पर गर्व करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र को विश्व के समक्ष एक उदाहरण स्थापित करना चाहिए....

महिलाओं के इस महत्वपूर्ण क्षण में पुरूषों को महिलाओं के साथ खड़ा होना चाहिए, उन्हें सुनना चाहिए और उनसे सीखना चाहिए। पारदर्शिता और जवाबदेही आवश्यक है यदि महिलाएं अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करें और हमारे समुदायों, समाज और अर्थव्यवस्था सभी को ऊपर उठाएं।

मैं गर्व महसूस करता हूं कि मैं इस अभियान का एक हिस्सा हूं और मुझे उम्मीद है कि इसकी गूंज संयुक्त राष्ट्र और दुनिया भर में जारी रहेगी।

## मोबाइल क्रेच के 50 साल पूर्ण होने पर कार्यक्रम आयोजित

दास्तानगोई प्रस्तुत करते श्री अंकित चड्ढा। उनकी प्रस्तुति को मंत्रमुग्ध होकर देखते उपस्थित जन।

समिति द्वारा मोबाइल क्रेच के सौजन्य से एक कार्यक्रम का आयोजन 11 मार्च, 2018 को गांधी दर्शन परिसर में किया गया, जिसमें बच्चों ने अपनी सृजनात्मक क्षमता का प्रदर्शन किया।

आज से करीब 49 साल पहले मोबाइल क्रेच ने राजघाट पर अपना पहला कदम रखा, जहां गांधी प्रदर्शनी मंडप का कार्य प्रगति पर था। निर्माण क्षेत्र में बच्चे असुरक्षित थे, प्रकृति के भरोसे थे, उन्हें नजरअंदाज किया जा रहा था और उम्र के अनुसार उन्हें सुरक्षा और देखभाल नहीं मिल रही थी।

इसको ध्यान में रखते हुए 12 मार्च, 1969 में मीरा महादेवन ने निश्चय किया कि इस जगह पर बच्चों के लिए एक शैल्टर का निर्माण किया जाए, जिसमें बच्चों की देखभाल के लिए एक समर्पित व्यक्ति को रखा जाए। यह प्रथम मोबाइल क्रेच था। इस प्रकार से ठेकेदारों से बातचीत कर और मजदूर अभिभावकों से विश्वास पाकर कार्यक्षेत्र में मोबाइल क्रेच की यात्रा आरंभ हुई।

इस अवसर पर आनंद, प्रेरणादायक अनेक कार्यक्रम हुए। अंकित चड्ढा की प्रस्तुति दास्तांगोई ने लोगों का मन मोह लिया। उन्होंने 'दास्तां–ए–खानाबदोश' के जरिए चरवाहों की भयावह कहानी को प्रस्तुत किया, जिसमें दिखाया गया कि कैसे खानाबदोश लोगों को दुनिया द्वारा नजरअंदाज किया जाता है और कितना संघर्ष उनको करना पड़ता है।

## मा पीस फाउंडेशन के बच्चों द्वारा गांधी दर्शन में पौधारोपण

गांधी दर्शन में मा पीस फाउंडेशन द्वारा किए गए पौधारोपण के अवसर पर उपस्थित समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, वरिष्ठ पत्रकार श्री अमलेश राजू, उदित आशा वेलफेयर सोसाइटी के श्री मनोज सिंहा और श्री सचिन मीणा व श्रीमती कामना झा।

गांधी दर्शन परिसर में दिनांक 12 अगस्त, 2017 को पौधारोपण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मा पीस फाउंडेशन के बच्चों ने अपने संयोजकों के साथ मिलकर पौधारोपण किए। इस अवसर पर समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, वरिष्ठ पत्रकार श्री अमलेश राजू, उदित आशा वेलफेयर सोसायटी के श्री सचिन मीणा व श्री मनोज सिन्हा, श्रीमती कामना झा सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

## सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया

समिति की ओर से 30 अक्तूबर से 4 नवम्बर, 2017 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस मौके पर

समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान ने कर्मचारियों को समाज के हित में कार्य करने, ईमानदारी कायम रखने और किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार से दूर रहने की शपथ दिलाई। इस वर्ष के सतक्रता जागरूकता सप्ताह की विषय–वस्तु थी– "मेरा दृष्टिकोण : भ्रष्टाचार मुक्त भारत।"

गांधी दर्शन में सतक्रता जागरूकता सप्ताह के दौरान स्टाफ सदस्यों को ईमानदारी से कार्य करने की शपथ दिलाते समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान।

## महात्मा गांधी समाधि राजघाट पर प्रार्थना

ऐतिहासिक दांडी मार्च की 88वीं वर्षगांठ के अवसर पर राजघाट स्थित गांधी समाधि पर प्रार्थना कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर समिति के कर्मचारियों ने निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान की अगुवाई में राजघाट जाकर, महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्टाफ सदस्यों ने शांति प्रार्थना भी की।

डांडी मार्च की 88वीं वर्षगाठ के अवसर पर समिति के स्टाफ सदस्यों ने राजघाट पर जाकर महात्मा गांधी को श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## महिला सशक्तिकरण पर नारा लेखन

समिति द्वारा "महिला सशक्तिकरण" विषय पर नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें गांधी स्मृति और दर्शन समिति व इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। इस कार्यक्रम में करीब 50 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

महिला सशक्तिकरण पर आयोजित नारा लेखन प्रतियोगिता में भाग लेते कर्मचारी।

# पुस्तक और प्रदर्शनी

**इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय में गांधीजी के जीवन पर प्रदर्शनी आयोजित।**

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय द्वारा 30वें दीक्षांत समारोह के अवसर पर 13 अप्रैल को गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति द्वारा विश्वविद्यालय के मैदानगढ़ी स्थित परिसर में एक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी के माध्यम से गांधीजी के जीवन और उनकी शिक्षाओं की जानकारी विद्यार्थियों को दी गई। कार्यक्रम के दौरान गांधी साहित्य की पुस्तक स्टाल भी लगाई गई।

**संस्कृति मंत्री द्वारा डॉ. वाई. पी. आनन्द की पुस्तक का विमोचन**

"महात्मा गांधी के सत्याग्रह का शाश्वत दर्शन समाज के अंतिम व्यक्ति की सहायता के लिए खड़े होने में निहित है।" यह शब्द केन्द्रीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा ने कहे। डॉ. शर्मा डॉ. वाई. पी. आनन्द की पुस्तक 'हिस्टोरिकल बैकग्राउंड टू द इंपोजिशन ऑफ सॉल्ट टैक्स अंडर द ब्रिटिश रूल इन इंडिया एंड महात्मा गांधी साल्ट सत्याग्रह अगेंस्ट द ब्रिटिश रूल' के विमोचन अवसर पर बोल रहे थे। यह कार्यक्रम गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति और गांधी आश्रम साबरमती के संयुक्त तत्वावधान में 13 जुलाई, 2017 को आयोजित किया गया।

(ऊपर से नीचे) केंद्रीय संस्कृति मंत्री एवं समिति के उपाध्यक्ष डॉ. महेश शर्मा, गांधी स्मृति में डॉ. वाई. पी. आनंद की पुस्तक के विमोचन अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए। (बांए से दांए) श्री सुदर्शन अयंगर, उपाध्यक्ष उच्च स्तरीय दांडी स्मृति कमेटी, श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव, संस्कृति मंत्रालय, डॉ. वाई. पी. आनंद, पुस्तक लेखक, डॉ. सुजाता प्रसाद अतिरिक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय।

इस मौके पर उपस्थित साहित्यकारों, शिक्षाविदों, कलाकारों, खिलाड़ियों और गांधीवादियों को संबोधित करते हुए डॉ. महेश शर्मा ने कहा कि चम्पारण सत्याग्रह के शताब्दी वर्ष के मौके पर 10 अप्रैल को माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को अपने दैनिक जीवन में स्वच्छाग्रह अपनाकर महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देने का आह्वान किया है।

उन्होंने बताया कि महात्मा गांधी ने देश के अधिकाधिक लोगों तक संदेश पहुंचाने के लिए नमक को इस्तेमाल किया और आजादी के इस बड़े आन्दोलन में युवाओं, बूढ़ों और समाज के हर वर्गों को जोड़ा।

अपनी पुस्तक के बारे में बताते हुए राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय के पूर्व निदेशक और उच्च स्तरीय दांडी स्मृति कमेटी के सदस्य डॉ. वाई. पी. आनंद ने इस पुस्तक में योगदान देने के लिए इससे जुड़े अनेक लोगों का धन्यवाद किया। नमक सत्याग्रह का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि गांधीजी के अनूठे दृष्टिकोण के कारण इस आंदोलन के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ी, जिसकी वजह से इस आंदोलन ने दुनिया का ध्यान खींचा।

संस्कृति मंत्रालय की सचिव श्रीमती रश्मि वर्मा ने कहा कि, "महात्मा गांधी के सत्याग्रह की अवधारणा, अन्याय का विरोध करने का एक विशेष और नायाब तरीका है। यह गांधीजी के संपूर्ण विचारों और दर्शन का ह्रदय और आत्मा है, साथ ही आजादी के आंदोलन में उनके अनूठे योगदान का नमूना है। सत्याग्रह की युक्ति द्वारा गांधीजी ने सभी प्रकार के अन्याय, असत्य और अशुद्ध कार्यों का विरोध किया।"

उन्होंने कहा, "एक प्रमुख संचारक होने के नाते गांधीजी ने आम आदमी के दैनिक जीवन की महत्वपूर्ण व उपयोगी चीज नमक को विरोध के प्रतीक के तौर पर चुना, जिसने

माननीय संस्कृति मंत्री डॉ. महेश शर्मा (केंद्र में) डॉ. वाई. पी आनंद की पुस्तक का विमोचन करते हुए। उनके साथ हैं डॉ. सुदर्शन अयंगर, उपाध्यक्ष उच्च स्तरीय दांडी स्मृति कमेटी, श्रीमती रश्मि वर्मा, सचिव संस्कृति मंत्रालय और श्रीमती सुजाता प्रसाद, अतिरिक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय।

कईयों को प्रसन्न कर दिया। लेकिन शीघ्र ही नमक ब्रिटिश सरकार के लिए एक दु:स्वप्न के रूप में परिवर्तित हो गया, जब गांधीजी ने देशवासियों का आह्वान किया और जब वे विश्व से अन्याय के विरूद्ध युद्ध में सहानुभूति जुटा रहे थे।

इससे पूर्व डॉ. सुदर्शन अयंगर, उपाध्यक्ष उच्च स्तरीय दांडी मेमोरियल कमेटी ने अपने स्वागत भाषण में लोगों को गांधीजी के जीवन से सीखने की प्रेरणा दी और पर्यटक स्थलों पर प्लास्टिक के उपयोग को बंद करने की अपील की। कार्यक्रम में संस्कृति मंत्री के अतिरिक्त सचिव श्रीमती सुजाता प्रसाद और संयुक्त सचिव श्री पंकज राग ने भी अपने विचार रखे।

### भारत छोड़ो आन्दोलन पर प्रदर्शनी

भारत छोड़ो आन्दोलन की 75वीं वर्षगांठ की पूर्व संध्या पर गांधी स्मृति में समिति द्वारा 8 से 15 अगस्त तक एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में मौहम्मद सुभान द्वारा संग्रहित अखबार कतरनों को समाहित किया गया था। इसमें भारत छोड़ो आन्दोलन के समय विभिन्न समाचार पत्रों में छपी खबरों को प्रदर्शित किया गया।

### 'हम आजाद हैं' कार्यक्रम में समिति की प्रतिभागिता

समिति द्वारा जनकपुरी के दिल्ली हाट में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करते दर्शक।

जनकपुरी स्थित दिल्ली हाट में 70वें स्वतंत्रता दिवस के मौके पर समिति द्वारा 'क्रांति से गांधी 1857–1947' नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में भारत की आजादी का संघर्ष और राजनीतिक फलक पर महात्मा गांधी के उदय को दर्शाया गया। इसके अतिरिक्त समिति के उद्यम केन्द्र 'सृजन' द्वारा खादी वस्त्रों की प्रदर्शनी भी लगाई गई। कार्यक्रम का संयोजन श्रीमती गीता शुक्ला शोध अधिकारी के नेतृत्व में समिति के श्री श्यामलाल, श्री शकील खान, श्री सुशील कुमार शुक्ला, श्री मनोज पासवान और कुमारी इंदुबाला ने किया।

चरखा कताई का जीवंत प्रदर्शन करते हुए गांधी हिन्दुस्तानी साहित्य सभा की वरिष्ठ गांधीवादी कुमारी इन्दु बाला और समिति के श्री धर्मराज कुमार।

### स्वदेशी मेला

समिति ने द्वारका के सीसीआरटी मैदान में 11 से 15 अक्तूबर तक चले स्वदेशी मेले में भाग लिया। स्वदेशी जागरण मंच द्वारा आयोजित इस मेले में श्री सुशील कुमार शुक्ला और श्री शकील खान ने सृजन स्वउद्यम केंद्र में

द्वारका में आयोजित स्वदेशी मेला की एक झलक। स्वदेशी मेला में समिति की ओर से श्री सुशील कुमार शुक्ला खादी वस्त्रों की बिक्री करते हुए।

बने खादी उत्पादों के साथ शिरकत की। मेले में नृत्य, पारंपरिक कलाओं का प्रदर्शन किया गया।

## बुद्ध के सिद्धांत शांति और एकता की खोज में हमारे मार्गदर्शक हो सकते हैं : वैंकेया नायडू

उपराष्ट्रपति श्री वैंकेया नायडू ने कहा कि बुद्ध के सिद्धांत आज भी एक चमकते सितारे की तरह हैं, जो हमें शांति और सोहार्द प्राप्ति के मार्ग में राह दिखा सकते हैं। श्री नायडू सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री बी. पी. सिंह द्वारा लिखित "21 वीं सदी की भौगोलिक राजनीति, लोकतंत्र और शांति" पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम में बोल रहे थे। इंडिया इंटरनेशल सेंटर में 30 अक्तूबर को आयोजित इस कार्यक्रम में जम्मू–कश्मीर के राज्यपाल श्री एन. एन. वोहरा और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

श्री नायडू ने इस पुस्तक के लिए श्री सिंह की प्रशंसा करते हुए कहा कि इस पुस्तक का विषय आज के बढ़ते भूमंडलीकरण, उभरते आतंकवाद और अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति के संदर्भ में प्रासंगिक है। आगे उन्होंने कहा कि यह पुस्तक एक–दूसरे पर निर्भर वैश्वीकृत दुनिया के विस्तृत मुद्दों को छूती है और बताती है कि यदि हम बुद्ध के सिद्धांतों को अपनाते हैं, तो सोहार्द और शांतिपूर्ण रहन–सहन की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

(ऊपर) भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैंकेया नायडू आईआईसी में उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए। सिक्किम के पूर्व राज्यपाल और पुस्तक के लेखक श्री बी. पी. सिंह भी अपने विचार व्यक्त करते हुए।

श्री नरेन्द्र नाथ वोरा, माननीय राज्यपाल जम्मू एवं कश्मीर (बाएं से तीसरे) माननीय उपराष्ट्रपति श्री वैंकेया नायडू (केंद्र में) श्री बी. पी. सिंह की पुस्तक का विमोचन करते हुए। उनके साथ है समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान और लेडी श्रीराम कॉलेज की पूर्व प्राचार्या प्रो. मीनाक्षी गोपीनाथ।

उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में शैक्षणिक संस्थाओं, प्रतिवादी आध्यात्मिक और सामाजिक समूह, सर्वधर्म संवाद और संयुक्त राष्ट्र जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं जैसे विषय उठाए गए हैं।

यह पुस्तक शांति और विकास की दिशा में नैतिक मूल्य, सहानुभूति और दया व उर्जा को व्यवस्थित करने की आवश्यकता पर बल जताती है।

उपराष्ट्रपति ने कहा कि इस पुस्तक के अन्य दिलचस्प अध्याय है–'लोकतंत्र और इसका महत्व' और 'सुशासन : लोकतांत्रिक भारत से एक कथा'।

उन्होंने कहा कि " उभरता विश्व : चुनौतियां और संभावनाएं" में श्री सिंह सही कहते हैं कि 21वीं सदी में शांति और सद्भाव का भविष्य प्रत्यक्ष रूप से जिन मुद्दों पर टिका है, वे हैं– पर्यावरण, ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन, परमाणु हथियार, देशों के बीच हथियारों की प्रतिस्पर्धा, भू–राजनीति और राष्ट्रवाद, धार्मिक अतिवाद और गरीबी और असमानता।

इस कार्यक्रम में सेवानिवृत राजनयिकों, कला और साहित्य के क्षेत्र से आए लोगों, लेखकों, इतिहासकारों एवं अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे। यह पुस्तक मानविकी और सामाजिक विज्ञान में विश्व के अग्रणी प्रकाशक रूटलेज द्वारा प्रकाशित की गई है।

## दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रदर्शनी का शुभारंभ

समिति द्वारा दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज बवाना में "महात्मा गांधी का युग और उनका जीवन" और "क्रांति से गांधी–राज से स्वराज" विषय पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 11 अक्तूबर, 2017 को खादी संकल्प के सहयोग से किया गया।

## चम्पारण सत्याग्रह पर मोतिहारी में प्रदर्शनी

गांधी जयंती के अवसर पर समिति द्वारा बिहार के मोतिहारी में चम्पारण सत्याग्रह पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन केंद्रीय कृषि व किसान कल्याण मंत्री श्री राधामोहन सिंह ने किया। इस प्रदर्शनी में चम्पारण सत्याग्रह पर आधारित 21 पैनल लगाए गए थे। इसका संचालन समिति की शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला ने किया।

## कनाडा के कलाकारों की गांधी स्मृति में प्रदर्शनी

समिति के संयोजन में गांधी स्मृति परिसर में महात्मा गांधी इंटरनेशनल फाउंडेशन (एमजीआईएफ) मोंट्रैल कनाडा के कलाकारों की एक प्रदर्शनी लगाई गई। इसमें एमजीआईएफ के संस्थापक निदेशक श्री सूरज सदन और उनकी युवा कलाकारों की टीम के कलाकारों की कलाकृतियों का भी प्रदर्शन किया गया। इस प्रदर्शनी का आयोजन 14 से 20 साल के युवा लोगों की प्रतिभा और विचारों को सामने लाने और महात्मा गांधी के अहिंसा के विचारों को कला के माध्यम से प्रदर्शित करने के उद्देश्य से किया गया था।

मौंट्रेल कनाडा के कलाकारों की प्रदर्शनी का एक दृश्य। साथ ही जाने माने कलाकार श्री सूरज सदन की पेंटिंग

प्रदर्शनी का उद्घाटन 9 नवम्बर, 2017 को श्रीमती गीता शुक्ला शोध अधिकारी के संयोजन में हुआ। कनाडा, अमेरिका, फ्रांस और भारत के युवा कलाकारों की कलाकृतियों का इसमें प्रदर्शन किया गया।

## हरिजन सेवक संघ में प्रदर्शनी आयोजित

हरिजन सेवक संघ की ओर से किंग्सवे कैम्प में 25–26 नवम्बर, 2017 को अखिल भारतीय रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें गांधी स्मृति और दर्शन समिति द्वारा "गांधी और सामाजिक न्याय" पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में 22 पैनल लगाए गए, जिनका संयोजन समिति के प्रदर्शनी विभाग ने किया।

## राजा गार्डन, नई दिल्ली में गांधीजी के जीवन और संदेशों पर प्रदर्शनी आयोजित

दिल्ली हॉमगार्ड के मुख्यालय में प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रो. टी. के. थॉमस उनके साथ है समिति के अधिकारीगण और (नीचे) प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए प्रो. टी. के. थॉमस।

समिति के तत्वावधान में राजा गार्डन नई दिल्ली स्थित दिल्ली होमगार्ड के मुख्यालय में 'गांधी के जीवन के संदेशों और उनके दर्शन' पर आधारित प्रदर्शनी लगाई गई। दिनांक 11–12 जनवरी को आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात शिक्षक एवं गुरू रविंद्रनाथ टैगोर फाउंडेशन के अध्यक्ष प्रो. टी. के. थॉमस ने किया। इस अवसर पर समिति के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. वेदाभ्यास कुंडू, शोध अधिकारी श्रीमती गीता शुक्ला, श्री धर्मराज आदि उपस्थित थे।

# पुस्तकालय एवं प्रलेखन

पुस्तकों, तस्वीरों, फिल्मों, दस्तावेजों को संरक्षित करने के समिति के उद्देश्यों की पूर्ति और महात्मा गांधी के विचारों को बेहतर रूप से समझने के लिए एक पुस्तकालय व प्रलेखन केंद्र स्थापित किया गया है। पुस्तकालय में गांधीजी के जीवन, विचार, कला, संस्कृति, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति, धर्म, पुरातत्व, संदर्भ पुस्तकें, विश्व एटलस, विश्वकोष और शब्दकोष सहित लगभग 10300 पुस्तकों का संग्रह है। बच्चों के लिए एक विशेष खंड है। यह नियमित आधार पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं की सदस्यता लेता है और विद्वानों, शोधार्थियों और छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। पुस्तकालय में वर्ष के दौरान अनेक नई पुस्तकें शामिल की गई।

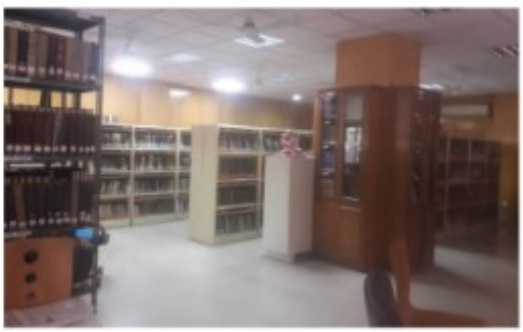

गांधी दर्शन के पुस्तकालय एवं वाचनालय का एक दृश्य।

प्रलेखन केंद्र, जो पुस्तकालय का ही एक महत्वपूर्ण भाग है, में विभिन्न विषयों की प्रेस क्लिपिंग रखी गई हैं। ये विषय हैं–गांधी, महिलाएं, बच्चे, युवा, महिलाओं के खिलाफ अपराध, पर्यावरण, भारत–पाक संबंध, सांप्रदायिकता, अंतरराष्ट्रीय मामले। प्रलेखन केंद्र को और समृद्ध बनाने के उद्देश्य से, इस वर्ष कई अन्य विषयों को भी जोड़ा गया है। पुस्तकालय के डिजिटलीकरण की प्रकिया प्रगति पर है।

## प्रकाशन

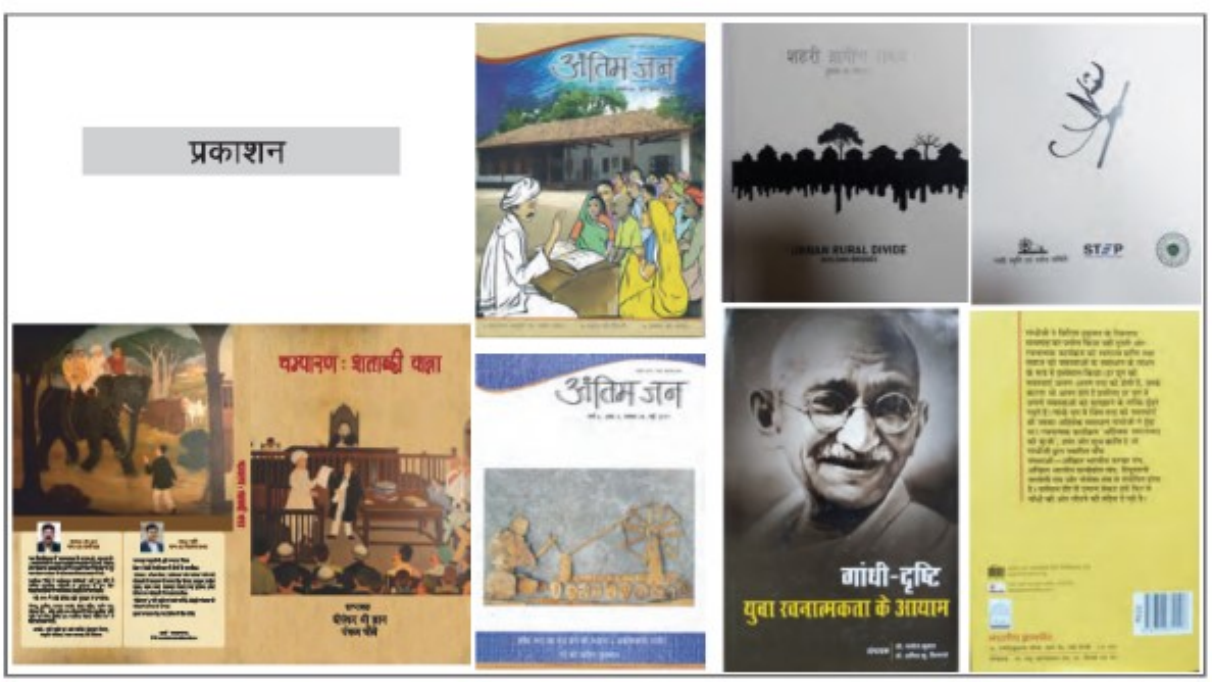

# आगन्तुक

इस वर्ष के दौरान समिति ने काफी संख्या में आगन्तुकों की मेजबानी की। उनमें से कुछ थे:

**साइप्रस गणराज्य के माननीय राष्ट्रपति श्री निकोस एनास्तासियाडस।**

गांधी स्मृति में स्थित गांधीजी के कक्ष के बारे में बतलाती डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली।

गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के बलिदान स्थल पर श्रद्धासुमन अर्पित करते श्री निकोस एनास्तासियोडस।

समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान साईप्रस के राष्ट्रपति को चरखा भेंट करते हुए।

थाइलैंड की शाही राजकुमारी सुश्री सिरीनधोरन द्वारा गांधी स्मृति में महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित।

थाइलैंड की शाही राजकुमारी सुश्री सिरीनधोरन महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, उनके साथ समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान, प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. ए. जमाल और डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली।

थाइलैंड की शाही राजकुमारी सुश्री सिरीनधोरन को गांधी स्मृति में मोहन से महात्मा प्रदर्शनी का अवलोकन करवाती डॉ. शैलजा गुल्लापल्ली।

थाइलैंड की शाही राजकुमारी सुश्री सिरीनधोरन समिति निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान को प्रतीक चिन्ह भेंट करती हुई।

**गांधी शांति मिशन केरल के प्रतिनिधि मंडल ने गांधी दर्शन में प्रदर्शनी 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' का अवलोकन किया।**

गांधी शांति मिशन केरल के प्रतिनिधियों का नेतृत्व करते श्री अंसार अली, क्यूरेटर राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय। समिति के श्री दीपक तिवारी प्रतिनिधि मंडल को प्रदर्शनी के बारे में समझाते हुए।

**श्रीलंका के माननीय न्यायधीशों का गांधी स्मृति दौरा।**

श्रीलंका के उच्च न्यायलय व उच्चतम न्यायलय के न्यायाधीश गांधी स्मृति में स्थित मल्टीमीडिया में संग्रहालय में एक वाद्य यंत्र पर अपने हाथ आजमाते हुए।

**अमेरिकी राज्य सचिव श्री रेक्स टिलरसन द्वारा महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि अर्पित।**

अमेरिकी राज्य सचिव श्री रेक्स टिलरसन समिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान से बातचीत करते हुए। उनके साथ है समिति के प्रशासनिक अधिकारी श्री एस. ए. जमाल।

सनिति के निदेशक श्री दीपंकर श्री ज्ञान के साथ गांधी स्मृति में महात्मा गांधी के बलिदान स्थल पर मौन मुद्रा में खड़े अमेरिकी राज्य सचिव श्री रेक्स टिलरसन।

(ऊपर) अमेरिकी राज्य सचिव श्री रेक्स टिलरसन को चरखा भेंट कर सम्मानित करते समिति निदेशक। (नीचे) श्री दीपंकर श्री ज्ञान श्री टिलरसन का अंगवस्त्रम से स्वागत करते हुए।

## गांधी स्मृति और दर्शन समिति में आगंतुकों का दौरा

| महीना | आगमन | विशिष्ट व्यक्तियों का दौरा |
|---|---|---|
| अप्रैल, 2017 | 23,590 | ➢ समस्त एशिया से 20 कूटनीतिज्ञों ने गांधी स्मृति संग्रहालय का दौरा 6 अप्रैल, 2017 को किया। इस दौरे का आयोजन फिनलैंड के दूतावास ने किया।<br>➢ दक्षिण कोरिया के पर्यटन मंत्री के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल ने 25 अप्रैल, 2017 को संग्रहालय में दौरा किया।<br>➢ साइप्रस के राष्ट्रपति श्री निकोस अनास्तासियाडस ने 27 अप्रैल, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। उनके साथ 20 अधिकारियों का प्रतिनिधिमंडल भी आया था। |
| मई, 2017 | 22,633 | ➢ यूएस हाउस ऑफ रिप्रजेंटेटिव की अल्पसंख्यक नेता नैन्सी पैलोसी के नेतृत्व में 11 मई, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। उनके साथ 25 अधिकारियों का प्रतिनिधिमंडल भी आया था।<br>➢ दिनांक 21 मई, 2017 को 10 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने संग्रहालय का दौरा किया। यह दौरा ब्रिटिश उच्चायोग ने संयोजित किया था।<br>➢ थाईलैंड दूतावास के 5 अधिकारियों ने संग्रहालय का दौरा दिनांक 26 मई, 2017 को किया।<br>➢ ब्यूरो ऑफ पार्लियामेंट्री स्टडीज एंड ट्रेनिंग के 32 सदस्यों ने 25 मई, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। लोक सभा सचिवालय ने यह दौरा संचालित किया था। |
| जून, 2017 | 20,232 | ➢ थाईलैंड दूतावास के 5 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 8 जून, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ ब्यूरो ऑफ पार्लियामेंट्री स्टडीज एंड ट्रेनिंग के 32 सदस्यों ने 23 जून, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। लोक सभा सचिवालय ने यह दौरा संचालित किया था। |
| जुलाई, 2017 | 17,922 | ➢ थाइलैंड के 100 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने थाइलैंड के राजकुमार के नेतृत्व में 17 जुलाई, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ अलाबामा विश्वविद्यालय के 15 विद्यार्थियों ने 22 जुलाई, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ ब्यूरो ऑफ पार्लियामेंट्री स्टडीज एंड ट्रेनिंग के 32 सदस्यों ने 28 जुलाई, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। लोक सभा सचिवालय ने यह दौरा संचालित किया था। |
| अगस्त, 2017 | 17,149 | ➢ श्रीलंका के 30 न्यायाधीशों के प्रतिनिधिमंडल ने 18 अगस्त, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ भारतीय वायु सेना के 40 अधिकारियों ने 23 अगस्त, 2017 को दौरा किया।<br>➢ अमेरिकी दूतावास के 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 23 अगस्त, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। |
| सितंबर, 2017 | 15,041 | ➢ संस्कृति मंत्री के नेतृत्व में 20 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 11 सितंबर, 2017 को गांधी स्मृति संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ भारत में ग्रीस के राजदूत श्री पैनोस कालोगेरापाउलोस ने 13 सितंबर, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ अमेरिका के राज्य सचिव श्री रेक्स डब्ल्यू. टिलरसन ने 26 सितंबर, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। |

| | | |
|---|---|---|
| अक्तूबर, 2017 | 15,131 | ➢ एप्पल इंटरनेट सॉफ्टवेयर और सर्विस के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री एड्डी क्यू की अगुवाई में 12 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने संग्रहालय का दौरा दिनांक 9 अक्तूबर, 2017 को किया।<br>➢ केरल विधानसभा के 12 सदस्यों ने 12 अक्तूबर, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ श्रीलंकाई मंत्री ने 15 अक्तूबर, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। |
| नवंबर, 2017 | 19,376 | ➢ ब्रिटेन के 3 सांसदों के प्रतिनिधिमंडल ने 8 नवंबर, 2017 को गांधी स्मृति का दौरा किया।<br>➢ ब्रिटिश वायु सेना प्रमुख की धर्मपत्नी सर तरेनचार्ड ने 17 नवंबर, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। भारतीय वायु सेना के 4 सदस्यों का दल भी उनके साथ था।<br>➢ फिनलैंड के विदेश मंत्री की अगुवाई में 24 नवंबर, 2017 को 5 सदस्यीय शिष्टमंडल ने संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ ग्रीस के विदेश मंत्री की अगुवाई में 10 सदस्यीय दल 26 नवंबर, 2017 को गांधी स्मृति संग्रहालय में पहुंचा। |
| दिसंबर, 2017 | 17,688 | ➢ 'सेवन सिटी टूर' द्वारा प्रायोजित विभिन्न देशों का 20 सदस्यीय दल 6 दिसंबर, 2017 को संग्रहालय पहुंचा।<br>➢ ब्रिटेन के विदेश मामलों के मंत्री के नेतृत्व में 8 दिसंबर, 2017 को चार सदस्यीय शिष्टमंडल ने संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ अफगानिस्तान के उपराष्ट्रपति श्री सरवर दानिश के नेतृत्व में 10 सदस्यों के दल ने 12 दिसंबर, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ ट्यूनिशिया के दूतावास के 5 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 13 दिसंबर, 2017 को संग्रहालय का दौरा किया। |
| जनवरी, 2018 | 15,790 | ➢ राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय के प्रमुख ले. जनरल वाईवीके मोहन ने 2 जनवरी, 2018 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ ताइवान के दूतावास के 5 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 7 जनवरी, 2018 को गांधी स्मृति का दौरा किया।<br>➢ राष्ट्रीय रक्षा महाविद्यालय के 90 अधिकारियों ने 12 जनवरी, 2018 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ जापान का चार सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल 17 जनवरी, 2018 को गांधी स्मृति पहुंचा। |
| फरवरी, 2018 | 16,077 | ➢ कम्बोडिया के कला और संस्कृति विभाग का 8 सदस्यीय दल 23 फरवरी, 2018 को संग्रहालय पहुंचा।<br>➢ अफगानिस्तान के 30 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 24 फरवरी, 2018 को संग्रहालय का दौरा किया। ब्यूरो ऑफ पार्लियामेंट्री स्टडीज एंड ट्रेनिंग, लोक सभा सचिवालय ने यह दौरा आयोजित किया था। |
| मार्च, 2018 | 17,461 | ➢ प्रशिया के दो सांसदों के दल ने 8 मार्च, 2018 को गांधी स्मृति स्थित संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ कोरिया के दूतावास से 15 सदस्यीय शिष्टमंडल ने 9 मार्च, 2018 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ बेनिन गणराज्य के ऊर्जा मंत्री की अगुवाई में 7 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 10 मार्च, 2018 को संग्रहालय का दौरा किया।<br>➢ अमेरिकी नौसना युद्ध महाविद्यालय के रियर एडमिरल ने 13 मार्च, 2018 को संग्रहालय का दौरा किया। |

# सेवानिवृत्त स्टाफ सदस्यों की विदाई

## श्री रोशनलाल

श्री रोशनलाल ने गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति में 1972 में अपना कार्य आरंभ किया था और 2017 में करीब 45 वर्षों की सेवा पूर्ण करने के उपरांत सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने संस्था में ड्राइवर के पद पर कार्य किया। चाहे दिन हो या रात, श्री रोशनलाल सदैव चेहरे पर मुस्कान के साथ अपनी ड्यूटी पर मुस्तैद रहते थे। वह संगीत के शौकीन थे, जब भी कोई कर्मचारी उनके साथ यात्रा करता था, तो उसे कुछ पुराने क्लासिकल गीत सुनने को मिलते थे, जो श्री रोशनलाल गुनगुनाया करते थे। समिति उनके मंगलमय जीवन की कामना करती है।

## श्री बृजपाल सिंह

कोई भी व्यक्ति जब गांधी स्मृति में प्रवेश करता था, तो उसका स्वागत श्री बृजपाल सिंह, जो वहां सफाई सेवक के तौर पर कार्यरत थे की मोहक मुस्कान के साथ होता था। समिति के एक अनुशासित कार्यकर्ता श्री बृजपाल ने समिति में अपनी सेवाओं की शुरूआत 1982 में की थी और करीब 36 सालों की सेवा के बाद जनवरी, 2018 में सेवानिवृत्तहुए। स्टाफ सदस्यों ने उन्हें भावपूर्ण विदाई दी।

## श्रीमती शाश्वती झालानी

लगभग तीन दशकों से समिति में पुस्तकाल्याध्यक्ष के रूप में कार्यरत श्रीमती शाश्वती झालानी को महात्मा गांधी के जीवन और अन्य ऐतिहासिक तथ्यों से संबंधित उनकी जानकारी के लिए, बकौल श्री एस. ए. जमाल समिति की 'रेडी रेकनर' के रूप में जाना जाता था। एक विविधताओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व, लेखक, अनुवादक, बच्चों की शिक्षक के रूप में श्रीमती शाश्वती झालानी, गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति के साथ देश के अन्य भागों और विदेशों में भी अनेक प्रकार की ऐतिहासिक और स्मरणोत्सव से संबंधित प्रदर्शनियों की परिकल्पना से संबंद्ध रहीं। उन्होंने समिति में अवलोकन हेतु आने वाले स्कूली बच्चों के लिए "गांधी को जानो" कार्यक्रम का भी नियमित संचालन किया। समिति में 1986 से 2018 तक अपनी सेवाएं देने के पश्चात, वर्ष 2018 में वे सेवानिवृत्त हुईं। समिति के सदस्यों ने उन्हें विदाई दी।

# मीडिया में

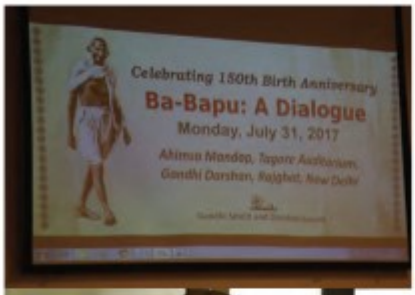

Celebrating 150th Birth Anniversary
Ba-Bapu: A Dialogue
Monday, July 31, 2017
कर्तव्य पथ पर चलने की प्रेरणा देती है गीता : बजरंग लाल
हिन्दुस्तान
बच्चों से सकारात्मक बातचीत करें माता-पिता: गीता वर्मा
8 Commandments
GARBAGE to GARDEN
Reduce Your Needs
Refuse New, Reuse
Think Recycle
Segregate Waste
Start Composting
Donate Your Compost
Spread, Share, Aware
Appreciate Others, Celebrate Efforts
मोतिहारी आसपास
गांधी स्मृति व दर्शन समिति स्वच्छता के प्रति स्कूली छात्राओं को कर रही जागरूक
प्रभात खबर
कैंपस
110 छात्रों को कुलपति ने किया सम्मानित
नुक्कड़ नाटक से दिया बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का संदेश
शिक्षकों ने कहा-आंगन से करें सफाई की शुरुआत
पर्यावरण व स्वच्छता अभियान पर
दैनिक भास्कर
जिला स्कूल में लगेगी महात्मा गांधी के सहयोगियों की प्रदर्शनी
Field visit organised for Peace Camp participants
Youth from Sweden, Colombia participate in Peace Camp
युवाओं ने सीखे रचनात्मक कार्य करने के
रचनात्मक कार्य की दो दिवसीय कार्यशाला का हुआ समापन
SNIPPETS
Role of women in nation building stressed
Rely on hard work, students told
HANS INDIA

6 दैनिक जागरण

गांधी जयंती के अवसर पर मुखिया ने लोगों को जागरुक किया

गांधी और युवा विषय पर होगा कार्यक्रम



हिन्दी पखवाड़ा
14-28 सितम्बर, 2017
गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली

कस्तूरबा गांधी की पुण्य तिथि पर नुक्कड़ नाटक आयोजित



03 हिन्दुस्तान

पूरी दुनिया अपना रही गांधी के विचार व दर्शन : कुलपति



नवभारत

प्रभात खबर 7.10.2017

जेपी विवि के कुलपति ने नेत्रहीन छात्र रौनक को लिया गोद

...जैसे जनमानस के बीच अवतरित हुए बापू



कुटीर उद्योग के माध्यम से बढ़ेंगे रोजगार

लोकमत

हॅलो नंदुरबार



स्त्री शक्ती साधना शिबिर कार्यक्रम उत्साहात

प्रभात खबर 6.10.2017 04 कैंपस

संगोष्ठी. गांधी के विचार को बढ़ावा देने के लिए बोले जयप्रकाश विश्वविद्यालय के कुलपति

युवाओं को आगे आना होगा : हरिकेश